केनेथ एंडरसन

सब लोग

खंड I

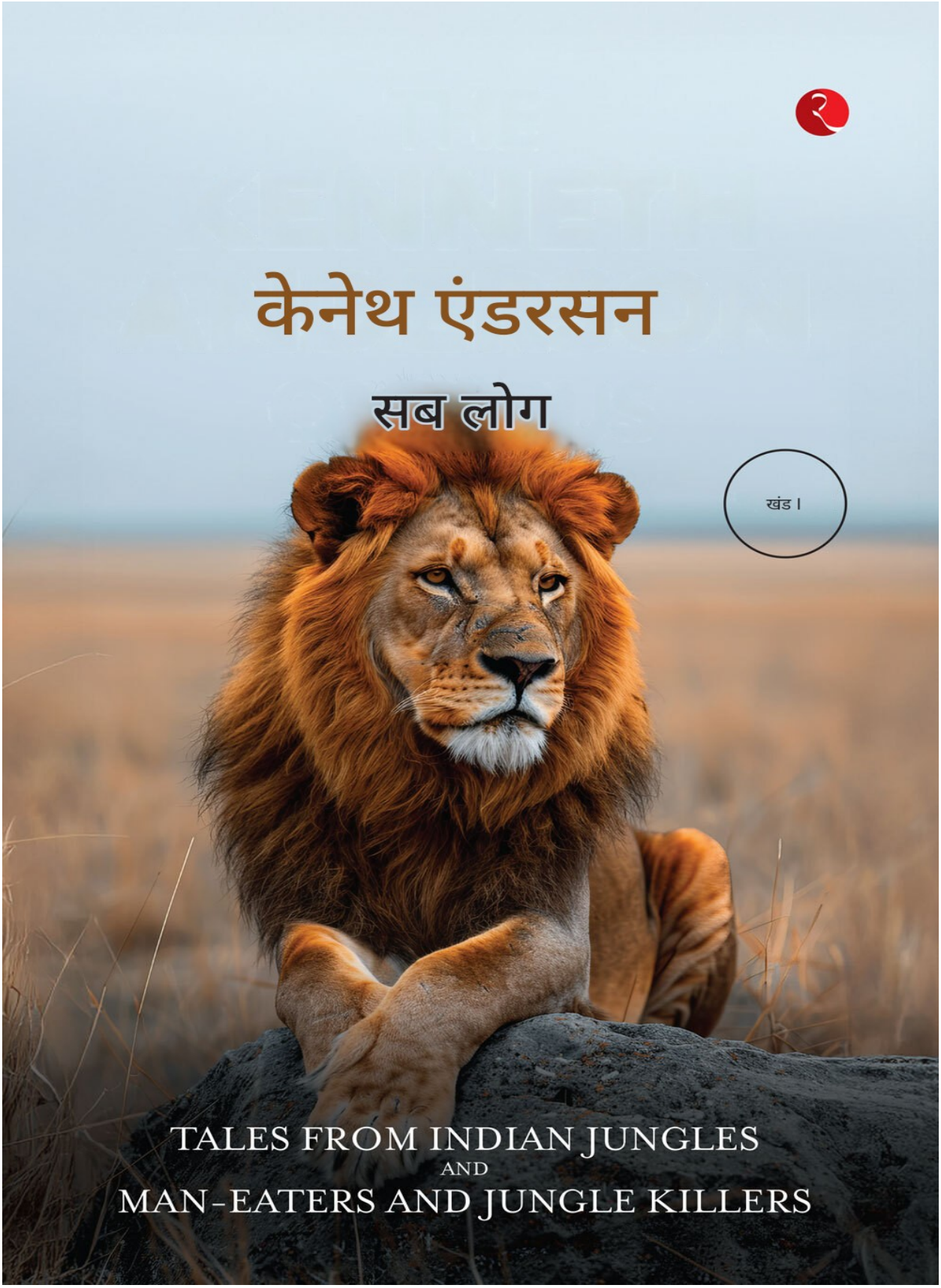

TALES FROM INDIAN JUNGLES
AND
MAN-EATERS AND JUNGLE KILLERS

THE KENNETH ANDERSON OMNIBUS

केनेथ एंडरसन (1910-74) एक शिकारी, प्रकृति प्रेमी और साहसिक कार्यों के शौकीन थे। जंगल के जीवों के प्रति उनके प्रेम ने वन्यजीवों पर कुछ बेहतरीन साहित्य को जन्म दिया और उनकी पुस्तकें क्लासिक्स के रूप में प्रशंसित हैं। उन्होंने लगभग आठ पुस्तकें और साठ लघु कथाएँ लिखी हैं जिनमें दक्षिण भारत के जंगलों में उनके वास्तविक जीवन के कई रोमांच और शिकार के कारनामों का वर्णन है। एंडरसन एक स्कॉटिश परिवार से थे जो छह पीढ़ियों से भारत में बसा हुआ था। उन्होंने अपना अधिकांश जीवन बेंगलुरु में बिताया, जहाँ वे एक विमानन कंपनी में कार्यरत थे। भारत में शिकार साहित्य में उनका अमूल्य योगदान आज भी अनगिनत वन्यजीव प्रेमियों को प्रेरित करता है।

केनेथ एंडरसन ऑम्निबस

खंड I

भारतीय जंगलों और आदमखोरों और

जंगल के हत्यारों की कहानियाँ

रूपा

द्वारा प्रकाशित
रूपा पब्लिकेशन इंडिया प्राइवेट लिमिटेड 2000, 2025
161-B/4, Gulmohar House,
यूसुफ सराय सामुदायिक केंद्र,
नई दिल्ली 110049
संस्करण कॉपीराइट © रूपा पब्लिकेशन्स इंडिया प्राइवेट लिमिटेड 2000, 2025
यह संकलन काल्पनिक और गैर-काल्पनिक दोनों प्रकार की रचनाओं का संग्रह है। काल्पनिक रचनाओं में प्रयुक्त नाम, पात्र, स्थान और घटनाएँ या तो लेखिका की कल्पना की उपज हैं या काल्पनिक रूप से उपयोग की गई हैं, और किसी भी जीवित या मृत व्यक्ति, घटना या स्थान से कोई भी समानता पूरी तरह से संयोगवश है। गैर-काल्पनिक रचनाओं में व्यक्त विचार और मत लेखिका के अपने हैं और तथ्य उनके द्वारा बताए गए हैं, जिनकी यथासंभव पुष्टि की गई है, और प्रकाशक इसके लिए किसी भी प्रकार से उत्तरदायी नहीं हैं।
सर्वाधिकार सुरक्षित।
प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना इस प्रकाशन के किसी भी भाग को किसी भी रूप में या किसी भी माध्यम से, इलेक्ट्रॉनिक, यांत्रिक, फोटोकॉपी, रिकॉर्डिंग या अन्य किसी भी प्रकार से पुन: प्रस्तुत, प्रसारित या किसी पुनर्प्राप्ति प्रणाली में संग्रहीत नहीं किया जा सकता है।
पी-आईएसबीएन: 978-81-716-7455-8
ई-आईएसबीएन: 978-81-291-2509-5
छब्बीसवाँ संस्करण, 2025
30 29 28 27 26
यह पुस्तक इस शर्त के अधीन बेची जाती है कि प्रकाशक की पूर्व सहमति के बिना, इसे व्यापारिक रूप से या किसी अन्य तरीके से, उधार नहीं दिया जाएगा, पुनर्विक्रय नहीं किया जाएगा, किराए पर नहीं दिया जाएगा या किसी अन्य प्रकार से प्रसारित नहीं किया जाएगा, सिवाय उस रूप में जिसमें यह प्रकाशित हुई है।

अंतर्वस्तु

शीर्षक पेज
कॉपीराइट पृष्ठ
अंतर्वस्तु

भारतीय जंगलों की कहानियाँ

1. भोर में घूमना
2. बेलुंडुर ओग्रे
3. अम्लिगोला का अभिजात वर्ग
4. दिगुवामेट्टा का हत्यारा
5. अलौकिक कहानियाँ
6. गेरहेट्टी तेंदुए का विचित्र मामला
7. लक्कावल्ली नरभक्षी
8. आंधी-तूफान अपने साथ क्या लेकर आया

आदमखोर और जंगल के हत्यारे

1. केम्पेकराई का लुटेरा
2. आलम बक्स और बड़ा काला भालू
3. मामंदुर नरभक्षी
4. गेरहेटी का क्रॉस्ड-टस्कर
5. संगम पैंथर
6. The Ramapuram Tiger
7. मुदियानूर का महान पैंथर
8. राजनगर का हमलावर

भारतीय जंगलों की कहानियाँ

1

भोर में घूमना

पुजारी हमें अपनी लगातार कोमल आवाजों से जगाता है, ‘दोराई, दोराई; येंचेको, नार्ल मुन्नी अगाधो;’ जिसका अर्थ है, ‘स्वामी, स्वामी; उठो, चार बज गए हैं!’

वह हमारे कानों में फुसफुसाते हैं, पहले मेरे और फिर तुम्हारे; क्योंकि अपने हाथों से हम में से किसी को भी छूना अपमानजनक माना जाता है। क्या पूजकों को, जहाँ तक मनुष्य को याद है, बहिष्कृत नहीं माना जाता, जिनके किसी भी आम इंसान के पास होना—स्पर्श करना तो दूर की बात है—अत्यंत घृणित है?

हम अचानक उठ बैठते हैं, क्योंकि जंगल में देर से जागना जीवन और मृत्यु के बीच का अंतर हो सकता है। हम आग के सुलगते अंगारों को देखते हैं जिनकी रोशनी तीन तरफ से घिरे विशाल पेड़ों के तनों तक मुश्किल से पहुँच रही है। चौथी तरफ हमें तारों से जगमगाता पानी का एक विशाल विस्तार दिखाई देता है, जो कावेरी नदी है, और हम बाढ़ की धीमी गड़गड़ाहट सुनते हैं जो हमारे पास से गुजरती है, जंगल की रात के अंधेरे से प्रकट होती है और उतनी ही तेजी से गायब हो जाती है।

हम नदी किनारे खुले में डेरा डाले हुए हैं, जंगल के छोर से कुछ ही गज की दूरी पर और नदी के किनारे से थोड़ी ही दूर। पुजारी रात भर जागता रहा, ताकि आग को जलाए रख सके, जो सोते समय हमें किसी अनचाहे हाथी के हमले से बचाए रखे, जो शायद पानी पीने आ गया हो, या शायद किसी असाधारण रूप से साहसी मगरमच्छ से। नदी किनारे की रेत, जिस पर हम सो रहे हैं, हमारे छोटे लेकिन उतने ही अप्रिय दुश्मनों जैसे सांपों और बिच्छुओं को दूर रखती है, क्योंकि वे ऐसी सतह पर रेंगना पसंद नहीं करते।

मौसम अपेक्षाकृत गर्म होने के कारण हमने अपने हल्के वस्त्र उतार दिए। अंगारों की गर्मी ने हमें ओस से बचाए रखा। मैंने चाय बनाने के लिए आग पर पानी की एक छोटी केतली रखी, यह एक ऐसा ताज़गी भरा पेय है जिसका जंगली इलाकों में रहने वाले लोग हमेशा स्वागत करते हैं। जब तक पानी उबल रहा था, मैं आपके साथ कुछ कदम चलकर पानी के किनारे तक गई ताकि हम जल्दी से अपने दांत, चेहरा और हाथ धो सकें।

जब तक हम वापस लौटे, केतली में पानी उबल रहा था, और जल्द ही हम हाथ में गर्म पानी का मग लिए बैठ गए, साथ में ठंडी मक्खन लगी चपातियाँ और कुछ पके केले (जिन्हें भारत में प्लांटैन कहा जाता है) थे - एक संपूर्ण नाश्ता, शायद राजाओं के लिए अनुपयुक्त, लेकिन अच्छे स्वास्थ्य के लिए जिसका कोई सानी नहीं है।

यह संक्षिप्त भोजन जल्द ही समाप्त हो जाता है, और अब हम उन राइफलों पर ध्यान देते हैं जिन्हें हम सुबह-सुबह पहाड़ियों की इस 'घूम' यात्रा पर ले जाने वाले हैं, जो एक चौथाई मील से भी कम दूरी से

शुरू होती है और लगातार ऊपर उठती हुई पोनाचिमालाई नामक चोटी पर जाकर समाप्त होती है, जो 5,000 फीट से अधिक ऊंची है और सीधी रेखा में लगभग छह मील दूर है।

मेरा शांत, लेकिन भरोसेमंद साथी, जो कई वर्षों से और कई रोमांचक यात्राओं में मेरे साथ रहा है, एक थोड़ी खस्ताहाल .405 विंचेस्टर राइफल, जिसका सब मज़ाक उड़ाते हैं, उसे ज़्यादा देखभाल की ज़रूरत नहीं है। मेरी ही तरह, यह भी एक पुरानी राइफल है जो मानो खुद ही अपना ख्याल रखती है। वैसे भी, यह आपकी उस 10-शॉट वाली अमेरिकी 3006 स्प्रिंगफील्ड राइफल से बहुत घटिया लगती है, जिसकी आप इतनी सावधानी से देखभाल करते हैं, यह बिल्कुल सही है।

जब हम शिविर से निकले तब भी अंधेरा था। हमारा पुजारी साथी हमारे साथ आने के लिए उत्सुक था, लेकिन चूंकि हम एक ऐसे सफर पर निकल रहे थे जिसमें मैं आपको कुछ रोचक चीजें दिखाना चाहता था, इसलिए मैंने अपने साथ लाए थोड़े से सामान की देखभाल करने के बहाने उसे पीछे छोड़ने का फैसला किया। हमारा पुजारी मित्र बायरा, जो एक सच्चा शिकारी है, अगर मैं आपको किसी विशाल सांभर हिरण को दिखाने के बजाय उसे गोली न मारूँ तो उसे बहुत बुरा लगेगा; वहीं अगर मैं आपका ध्यान चित्तीदार हिरणी की ओर आकर्षित करूँ, जो अपने बच्चे को बचाने के लिए खुद को निशाना बना रही है, तो वह मुझसे बहुत नाराज़ होगा कि मैंने गोली क्यों नहीं चलाई और माँ और बच्चे दोनों को क्यों नहीं मारा।

सौ गज के भीतर ही हवा ठंडी हो जाती है, और जैसे-जैसे हम पहली पहाड़ी की चोटी तक ढलान वाली जमीन पर चढ़ना शुरू करते हैं, हवा और भी ठंडी होती जाती है।

अभी भी अंधेरा है और हम धीरे-धीरे आगे बढ़ रहे हैं। पत्थरों पर ठोकर लगने और झाड़ियों में उलझने से हमारी चाल का पता चल जाएगा और हमारी छोटी सी सैर का पहला चरण असफल हो जाएगा। क्योंकि यह वह मौसम है जब जुमलम के पेड़ अपने बैंगनी फल बहुतायत से जमीन पर गिराते हैं, और यह कसैला फल आलसी भालुओं के लिए एक ऐसा भोजन है जिसका वे विरोध नहीं कर सकते। वे ऐसे पेड़ पर आने के लिए एक रात में मीलों का सफर तय कर लेते हैं। कल ही मैंने नदी किनारे, शिविरों से मुश्किल से दो फर्लांग की दूरी पर, जुमलम के पेड़ों का एक छोटा सा झुंड देखा, जहाँ कई आलसी भालुओं के पदचिह्न और मल थे जो हर रात गिरे हुए बैंगनी फलों को खाने के लिए वहाँ आते थे।

जिस छोटी पहाड़ी पर हम अभी चढ़ रहे हैं, वह पेड़ों के झुरमुट से सटी हुई है और वहाँ अभी भी भोजन कर रहे सुस्त भालुओं के लिए पीछे हटने का सीधा रास्ता बनेगी। अपनी आदत के अनुसार, वे सुबह होते ही ऊँची ज़मीन की ओर बढ़ना शुरू कर देंगे। वह समय अब नज़दीक आ गया है, और आकाश में क्षणिक चमक इस अनोखी घटना का संकेत देती है।

लेकिन कुछ ही मिनटों के भीतर एक बार फिर अंधेरा पूरे इलाके को घेर लेता है, जब तक कि लगभग बीस मिनट बाद पूर्वी आकाश में एक व्यापक रूप से फैलती हुई रोशनी सच्ची सुबह और एक नए दिन की शुरुआत की घोषणा नहीं कर देती।

यह झूठी सुबह न केवल जंगल में नए शिकारी को धोखा देती है, बल्कि जंगल के निवासियों को भी। जंगली मुर्गे बांग देने लगते हैं, मोर अपनी कर्कश आवाज में चिल्लाने लगते हैं, शिकार की तलाश में निकले मांसाहारी जानवर अपने मांदों में लौट जाते हैं, और लकड़बग्घे और सियार जो उनके शिकार के बचे हुए हिस्से से भोजन की उम्मीद में उनका पीछा कर रहे थे, जमीन और चट्टानों के नीचे बने अपने बिलों में लौट जाते हैं, जहां वे दिन के दौरान शरण लेते हैं।

चिड़चिड़े और लालची आलसी भालू, जो गिरे हुए फलों को चट करने में अपनी ऊर्जा लगा रहे थे, वे भी इस झूठी सुबह के धोखे में आ जाएँगे। अनिच्छा से वे उन थोड़े से फलों को छोड़ देंगे जिन्हें वे जबरदस्ती अपने गले से नीचे नहीं उतार पाए हैं और पहाड़ियों की ओर चले जाएँगे जहाँ उन्हें शांति मिलेगी। वहाँ वे दोपहर की गर्मियाँ किसी गुफा या घास के मैदान में, या शायद किसी पुराने, टेढ़े-मेढ़े पेड़ की छाया में गहरी नींद में बिताएँगे।

लेकिन हम खुद गुमराह नहीं होते और भोर के अंधेरे में क्षणिक चमक गायब होने से पहले ही अपनी जगह पर जल्दी से पहुँच जाते हैं। हमें छिप जाना चाहिए ताकि हम सुस्त भालुओं के आने की आहट सुन सकें और शायद भोर की रोशनी में उनमें से किसी एक की झलक पा सकें। उस बीस मिनट के छोटे से अंतराल के धुंधलेपन में अचानक चौंक जाना ठीक नहीं होगा।

सुस्त भालू अपने अन्य रिश्तेदारों की तरह ही गुस्सैल, उत्तेजित, द्वेषपूर्ण और आक्रामक होने के लिए बदनाम है, खासकर तब जब कोई अचानक उसके सामने आ जाए। भारत में कई वनवासियों के शरीर पर भयानक निशान हैं क्योंकि उनका सामना अचानक किसी कोने से आते हुए सुस्त भालू से हो गया या वे सोते हुए सुस्त भालू के सामने आ गए। कई लोगों ने तो उनके नुकीले पंजों के नीचे अपनी आंखें और नाक खो दी हैं।

यह चट्टान, जिस पर हम आ पहुँचे हैं, हमारे उद्देश्य के लिए बिल्कुल उपयुक्त है। यह लगभग चार फीट ऊँची और शायद छह फीट लंबी है। हम दोनों इसके पीछे छिपकर भालू के आने का इंतज़ार कर सकते हैं। बेशक, यह महज़ एक संभावना है, जो शायद पूरी हो या न भी हो, क्योंकि भालुओं के पास घूमने के लिए पूरा जंगल है और ऐसे कई रास्ते और पगडंडियाँ होंगी जिनसे वे इस विशेष दिशा से गुज़रे बिना पहाड़ी पर चढ़ सकते हैं।

हम अपनी किस्मत आजमाते हैं और कुछ मिनटों तक चुपचाप इंतजार करते हैं, सिर्फ अपनी सांसों की आवाज सुनते हुए। तभी टीले के तल पर कहीं से पत्थर के गिरने की हल्की सी आवाज आती है, जिससे हमारी उम्मीदें बढ़ जाती हैं। शायद कोई जानवर, जो आमतौर पर अपनी आदतों में अनाड़ी होता है या ऐसे पत्थरों के नीचे छिपे कीड़ों की तलाश में होता है, ऐसी आवाज करके अपनी मौजूदगी का संकेत दे सकता है। निश्चित रूप से कोई हिरण नहीं, क्योंकि वह डर जाता; और निश्चित रूप से कोई बाघ या तेंदुआ तो अपने गुजरने का संकेत नहीं देता। दूसरी संभावना हाथी की हो सकती है। यह हमें कुछ ही क्षणों में पता चल जाएगा।

अब हमें भारी साँसों की आवाज़ सुनाई दे रही है, मानो कोई बूढ़ा व्यक्ति बड़ी मुश्किल से पहाड़ी पर चढ़ रहा हो। इससे यह संदेह दूर हो जाता है कि एक सुस्त भालू सचमुच चट्टानों के नीचे बने छेदों और झाड़ियों की जड़ों को सूंघता हुआ कीड़े-मकोड़े और अन्य रसीले भोजन की तलाश में पास आ रहा है।

भोर होने के साथ ही पूर्वी आकाश में हल्की रोशनी फैलने लगी है, लेकिन जिस चट्टान के पीछे हम छिपे हुए हैं, उसके पीछे अभी भी अंधेरा है, तभी भालू हमारे पास आ जाता है। तुम मेरे दाहिनी ओर हो, और भालू तुम्हारे दाहिनी ओर, लगभग दस फीट की दूरी पर है। मैं तुम्हारा हाथ कसकर पकड़ लेता हूँ और तुम मेरी बिना कही बात समझ जाती हो कि मुझे हिलना नहीं है। हो सकता है कि वह हमें देख न पाए, क्योंकि उसकी नज़र बहुत कमज़ोर होती है। वह बहुत बहरा भी होता है। अगर हम अपनी मौजूदगी का पता चलने दें तो वह हमला कर सकता है, और हम उसे गोली नहीं मारना चाहते, क्योंकि आम तौर पर भालू हमें कोई नुकसान नहीं पहुँचाता।

भालू की गुर्राहट, बड़बड़ाहट, फुफकार और सूंघने की आवाज़ें आती-जाती रहती हैं। झाड़ियों के बीच हमें बस एक काली धुंधली आकृति दिखाई देती है; फिर भालू पहाड़ी पर चढ़ते हुए गायब हो जाता है और उसके चलने की आवाज़ें धीमी होती जाती हैं।

भोर तेज़ी से फैल रही है और नदी के उस पार पूर्व दिशा में आकाश में बदलते रंगों का एक अद्भुत नज़ारा दिखाई दे रहा है, जो गहरे भूरे और गहरे बैंगनी रंग से शुरू होकर बैंगनी, हरे, नीले, नारंगी और सिंदूरी रंग में बदलता जाता है, और अंत में दूर स्थित पर्वत चोटियों की ऊबड़-खाबड़ ऊंचाइयों के ऊपर सूर्य का किनारा उभर आता है। उसकी फैली हुई किरणें अभी इतनी तेज़ नहीं हैं कि हम उस शानदार, चमकते हुए गोले को निहारने से खुद को रोक सकें।

अभिवादन में, छोटे-बड़े, दूर-दूर के पक्षी मधुर गीत गाने लगते हैं। सैकड़ों बुलबुलों की चहचहाहट, काले-लाल कौवे-तीतर की पुकार, और मस्तिष्क-बुखार से पीड़ित पक्षी की ऊँची होती हुई चीख पहाड़ी से हमारे कानों में गूंजती है, जबकि नदी के किनारे घने जंगल से जंगली मुर्गों की चुनौती भरी आवाज, 'व्हीव! कुक-क्या-क्या-क'हुकम,' और दूर से आती मोर की मधुर आवाज, 'म्याऊं! म्याऊं!' सुनाई देती है। हम कल्पना कर सकते हैं कि वह अपनी पूंछ के शानदार पंखों को एक बड़े पंखे की तरह फैलाए, मुर्गों के झुंड के सामने इतराते और नाचते हुए चल रहा है।

क्रैक-आ-आ-आक! हमें यह आवाज़ सिर्फ़ एक बार सुनाई देती है, काफ़ी धीमी लेकिन साफ़-साफ़। कोई भारी चीज़ पहाड़ी पर चढ़ रही है, शायद कोई दूसरा सुस्त भालू, लेकिन मुझे नहीं लगता। भालू लगातार शोर मचाते रहते हैं, जबकि यह जानवर, उस शुरुआती आकस्मिक आवाज़ को छोड़कर, बाकी समय बिल्कुल शांत रहता है।

हम चट्टान के पीछे चुपचाप दुबक जाते हैं, बस हमारे सिर और आँखें दिखाई देती हैं। जंगल में छिपने का पहला रहस्य है बिल्कुल स्थिर रहना। अगर कोई जानवर आपको देख भी ले, तो भी वह आपको पहचान नहीं पाएगा, बशर्ते आप बिल्कुल स्थिर रहें। दूसरा महत्वपूर्ण कारक है हवा की दिशा। अधिकांश जंगली

जीवों में, विशेषकर हिरण परिवार के सदस्यों में, दृष्टि की तुलना में सूंघने की क्षमता कहीं अधिक विकसित होती है। यदि हवा सीधे आपकी ओर से शिकार की तरफ नहीं बह रही है, और यदि आप बिल्कुल स्थिर रहते हैं, तो आपके पास लगभग किसी भी जानवर पर सफलतापूर्वक घात लगाने का अच्छा मौका है।

कुछ ही देर बाद हमने इसे परखा, जब हमारे सामने झाड़ियाँ हल्की सरसराहट के साथ हटीं और एक विशाल सांभर हिरण का सिर और कंधे दिखाई दिए। उसके विशाल सींग एकदम समरूप रूप से फैले हुए थे, और वह इतना करीब था कि हम उनकी टेढ़ी-मेढ़ी मोटाई को देख सकते थे, जो आधार पर आपकी बांह के बराबर थी।

हिरण कुछ क्षण पहले सुस्त भालू की तुलना में हमारे अधिक करीब है, और बिल्कुल हमारे सामने है, फिर भी वह हमें नहीं देख रहा है। जिस चट्टान के पीछे हम छिपे हैं, उसके दूसरी ओर खुले स्थान में आगे बढ़ने से पहले वह सावधानी से कुछ देर रुकता है। फिर वह आगे बढ़ता है और हम उसके विशाल शरीर को उसकी पूरी भव्यता के साथ देखते हैं।

उसके गहरे भूरे रंग, गर्दन के चारों ओर घने बालों और बगल के लंबे, मोटे बालों से पता चलता है कि वह एक बूढ़ा जानवर है। उसके ये बाल उसकी त्वचा को पूरी तरह से ढकने के लिए पर्याप्त घने नहीं हैं। ये कारक और उसके विशाल सींग उसकी अधिक उम्र का संकेत देते हैं।

अब मैं आपको दिखाऊंगा कि सांभर कितना जिज्ञासु हो सकता है। अपने बगल में घास की एक मोटी डंडी तोड़कर, मैं उसके पंखदार सिरे को चट्टान के ऊपर निकालता हूँ, और उसे उंगली और अंगूठे के बीच पकड़े रहता हूँ। फिर मैं उसे घुमाना शुरू करता हूँ और हिरण पर इसका असर तुरंत होता है। यह हरकत भले ही हल्की और बिना आवाज़ वाली हो, लेकिन उसकी चौकस आँखों में तुरंत नज़र आ जाती है। वह अचानक रुक जाता है, उसके दोनों बड़े कान आगे-पीछे और फिर आगे की ओर फड़फड़ाते हैं। अधीर होकर वह अपना दाहिना पैर घुटने से मोड़कर उठाता है और ज़मीन पर ज़ोर से पटकता है। उसके खुर से पत्थर पर धातु जैसी खटक की आवाज़ आती है।

हिरण इस क्रिया को दोहराता है और मेरी घुमाई जा रही घास की डंडी को पहले से भी अधिक ध्यान से घूरता है। उसकी सारी शंकाएँ अब जागृत हो गई हैं क्योंकि उसकी अंतरात्मा उसे चेतावनी दे रही है कि कुछ अजीब हो रहा है। उसने कई बार घास की डंडियों को हवा में लहराते देखा है। लेकिन उसने कभी किसी डंडी को गोल-गोल घूमते नहीं देखा!

हम हिरण की उन टकटकी भरी आँखों के पीछे छिपे उसके विचारों को पढ़ सकते हैं। सहज प्रवृत्ति उसे सचेत करती है और भागने के लिए उकसाती है। लेकिन जिज्ञासा उसे उस घास के तने के बारे में और जानने के लिए प्रेरित करती है जो इतने विचित्र ढंग से घूम रहा है। सांभर एक कदम आगे बढ़ता है, एक मिनट तक हिचकिचाता है, और फिर आगे बढ़ता है। उसके शरीर की हर मांसपेशी तनी हुई है, पल भर में भागने के लिए तैयार; लेकिन वह अपनी जिज्ञासा पर काबू नहीं पा सकता।

हिरण और मृग परिवारों में पाई जाने वाली यह स्वाभाविक जिज्ञासा ही वह कारण है जिसके चलते हर साल हज़ारों हिरण अनुभवी शिकारियों द्वारा मारे जाते हैं। ये शिकारी वही करते हैं जो मैं इस समय कर रहा हूँ, या फिर उन्हें मौत के जाल में फंसाने के लिए कोई और चाल चलते हैं। हिरण अब इतना करीब आ चुका है कि भाले से फेंके जाने पर भी वह वहीं जम जाएगा; और वह और भी करीब आ रहा है! ज़ाहिर है, इस मूर्ख जानवर को सबक सिखाना ज़रूरी है और मैंने उसे इतना डराने का फैसला किया है कि उसकी जान ही निकल जाए।

चट्टान के पीछे से उछलकर, मैं ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाया, 'व्रोफ़! व्रोफ़! व्रोफ़!'। यह कहना कि हिरण बाघ जैसी आवाज़ वाले इस अचानक इंसान को देखकर चौंक गया, स्थिति का हल्का वर्णन होगा। वह पिछले पैरों पर खड़ा हुआ, एक पत्थर पर फिसल गया, घुटनों के बल गिर पड़ा, फिर उठ खड़ा हुआ और खतरे की एक तीखी चीख निकाली।

'ऊ-ओंक!' वह चीखता है।

फिर वह अपने सींगों को बगल में समेट लेता है ताकि वे पेड़ों की शाखाओं में न फंसें, और पहाड़ी से नीचे लुढ़क जाता है। उसकी दौड़ इतनी तेज होती है कि हम उसके कदमों की आहट को पत्थरों की खड़खड़ाहट से तब तक सुन सकते हैं जब तक वह नदी के किनारे घने जंगल में शरण नहीं ले लेता। वहाँ हिरण रुककर देखता है कि कहीं कोई उसका पीछा तो नहीं कर रहा, और फिर पूरे जंगल को चेतावनी देता है कि पहाड़ी पर खतरा और मौत मंडरा रही है।

'ऊ-ओंक! धा-अंक!' वह बार-बार गरजता है।

जुमलम के पेड़ों के झुरमुट में आराम से चर रहे लंगूर बंदरों के झुंड के रखवाले में हलचल मची हुई है। हम जहां छिपे हैं, वहां से उसकी एक झलक दिखाई देती है। वह पेड़ की चोटी पर दो पैरों पर सीधा खड़ा है और सांभर द्वारा बताए गए खतरे को देखने की पुरजोर कोशिश कर रहा है। लाख कोशिश करने पर भी वह हमें नहीं देख पा रहा है। जाहिर है, वह उलझन में है और दुश्मन की पहचान करना चाहता है। तभी वह बड़ा नर लंगूर अपने झुंड और आसपास के अन्य जंगली जीवों के प्रति अपना कर्तव्य निभाने का फैसला करता है और खतरे की चेतावनी देने में शामिल हो जाता है।

'हर्र!' वह कर्कश स्वर में चीखता है; और फिर एक क्षण बाद, लगातार 'हर्र! हर्र-हर्र!' की आवाज़ें आती हैं। जंगल में अब सचमुच हलचल मच जाती है, और नदी के उस पार से एक जंगली भेड़, जो अपनी प्यास बुझाने ही वाली थी, अचानक डर जाती है, भाग जाती है और भागते हुए कुत्ते जैसी आवाज़ में 'खर्र! खर्र! खर्र!' की आवाज़ निकालती है।

जिस पहाड़ी की ढलान पर हम छिपे हुए थे, उसके दूसरी ओर चर रहे चित्तीदार हिरणों के झुंड ने शोर सुना और चेतावनी दी। 'आओ! आओ! आओ!' मादा हिरणों ने एक-दूसरे को जल्दी-जल्दी पुकारा। दूर से एक हाथी ने तीखी आवाज में चिंघाड़ा।

अंततः उत्साह शांत हो जाता है और हम अपनी सुबह की सैर फिर से शुरू करने का फैसला करते हैं, क्योंकि छिपते रहने से कोई लाभ नहीं है। सांभर ने इतना शोर मचा दिया है कि अब हमारे रास्ते में आना संभव नहीं है।

क्या आपने चाय के पौधे जैसी नुकीली पत्तियों वाली वह झाड़ी देखी है जो केवल ऊंचे पहाड़ों पर ही उगती है? ऐसी कई झाड़ियाँ चारों ओर उगती हैं। इसे 'वेल्लारी' पौधा कहते हैं। इसकी पत्तियों को पट्टी या पुल्टिस के रूप में लगाने से गठिया के दर्द और किसी भी प्रकार की सूजन में बहुत आराम मिलता है। इस बड़े पेड़ की पांच नोक वाली पत्तियां, जो ऊपर से हरी और नीचे से चांदी जैसी सफेद होती हैं, कच्चे घावों या चोट पर लगाने पर बहुत अच्छा असर दिखाती हैं; चांदी जैसी सफेद तरफ को प्रभावित जगह पर रखा जाता है। वह छोटा पौधा जो कठोर जमीन पर उगता है, मुश्किल से एक फुट ऊंचा, चांदी जैसे भूरे रंग की, लगभग नुकीली पत्तियों वाला, जहरीले सांप के काटने का इलाज माना जाता है, और वह दूसरा छोटा पौधा जिसमें सफेद, डेज़ी जैसे फूल और दांतेदार पत्तियां होती हैं, घावों पर पत्तियों का रस निचोड़ने से खून बहना रोकने के लिए प्रसिद्ध है। यह डॉक्टर द्वारा दी गई किसी भी दवा की तरह ही तेजी से उच्च रक्तचाप को भी कम करता है।

सचमुच, जंगल हर तरह की जड़ी-बूटियों और पौधों से भरा पड़ा है, जिनके पत्ते, तने, बीज, फूल और यहाँ तक कि जड़ें भी मानव जाति को होने वाली अधिकांश बीमारियों का इलाज हैं। ये जंगल में और शहरी इलाकों में, यहाँ तक कि रेलवे ट्रैक के किनारे भी उगते हैं।

आपने अक्सर भारतीय पेरीविंकल झाड़ी के हरे पत्तों के बीच से खिलते हुए अनगिनत गुलाबी और सफेद फूलों को देखा होगा, जो लगभग हर जगह, खासकर रेलवे तटबंधों पर खूब पनपती है। इस पौधे की चालीस पत्तियों को चाय की तरह उबालकर एक बड़े कप पानी या दूध में मिलाकर प्रतिदिन पीने से इंसुलिन के स्राव में मदद मिलती है और अग्नाशय उत्तेजित होता है, जिससे मधुमेह नियंत्रित होता है। लेकिन कुछ अन्य जड़ें और पत्तियां भी हैं जो इस बीमारी के इलाज में और भी अधिक प्रभावी हैं, जिनमें से एक छोटी लता है जो हर जंगल में आम है। इसे 'शुगर किलर' के नाम से जाना जाता है क्योंकि इसकी सिर्फ एक पत्ती चबाने से ही चीनी अपनी मिठास खो देती है और मुंह में रेत जैसी लगने लगती है, यह असर लगभग तीन घंटे तक रहता है।

लेकिन हम विषयांतर कर रहे हैं और इसी बीच हम पहाड़ी की चोटी पर पहुँच गए हैं और दूसरी तरफ उतरना शुरू कर दिया है। अब हमें सावधानी से चलना होगा, क्योंकि कुछ जगहों पर ढलान बहुत ज़्यादा है, और अगर हममें से किसी ने भी कोई पत्थर गिरा दिया या कोई शोर मचाया, तो चित्तीदार हिरणों का वह परिवार, जिसने अब बोलना बंद कर दिया है और जिसे हम जल्द ही देखने की उम्मीद कर रहे हैं, ज़रूर सतर्क हो जाएगा। सौभाग्य से हवा पहाड़ी की ओर बह रही है, इसलिए उन्हें हमारी गंध नहीं आएगी।

हम छोटी पहाड़ी की तलहटी तक पहुँचते हैं और काँटेदार झाड़ियों और लैंटाना के बीच से दबे पांव चलते हुए एक घास के मैदान तक पहुँचते हैं। वहाँ, शांति से चरते हुए, कम से कम चालीस हिरणों का एक

झुंड था, जिन्हें हम देखने की उम्मीद कर रहे थे। सौभाग्य से, पहरा दे रही किसी भी मादा हिरण ने हमारे आने की सूचना नहीं दी और हम ठीक समय पर युवा रेडवुड पेड़ों के एक झुंड के पीछे रुक गए।

हमारे सामने का नज़ारा बेहद खूबसूरत है। नर हिरण झुंड के बीचोंबीच हैं, उनके सींग फैले हुए और नुकीले हैं। वे गर्व से अपना सिर ऊपर उठाते हैं और हवा को सूंघते हैं, फिर चरने के लिए नीचे झुक जाते हैं। उनके चारों ओर मादा हिरण और उनके बच्चे हैं। मादा हिरण हमेशा चौकन्ने रहती हैं, उनके कान आगे की ओर उठे रहते हैं और हल्की सी भी आवाज़ सुनने के लिए फड़फड़ाते रहते हैं। कभी-कभी कोई मादा हिरण अपना सिर और गर्दन ज़मीन पर झुकाकर घास या पत्तियां चबाती है, लेकिन तुरंत ही ऊपर उठा लेती है, हमेशा चौकस और सतर्क।

हिरण के बच्चों पर ऐसी कोई जिम्मेदारी नहीं होती और उनमें से कई को बेरहमी से और अचानक मौत का सामना करना पड़ता है, इससे पहले कि जीवित बचे लोग यह सीख सकें कि जंगल में निरंतर अस्तित्व का सबसे बड़ा रहस्य 'हर पल सतर्क रहना' है; क्योंकि मौत हर जगह घात लगाए बैठी रहती है।

वे आपस में उछल-कूद और खेल रहे हैं, एक दूसरे का पीछा करते हुए गोल-गोल घूम रहे हैं। कुछ बहुत छोटे बच्चे अपनी माताओं से चिपककर, चुपके से अपने नन्हे सिर पास लटके थनों के नीचे डुबोकर दूध पीने की कोशिश कर रहे हैं। माताएँ भी बीच-बीच में दूध पिलाना रोककर अपने नन्हे बच्चों को प्यार से चाटती हैं, लेकिन एक पल के लिए भी वे आसपास के जंगल में किसी संभावित दुश्मन की तलाश में चौकसी करना नहीं छोड़तीं। उनकी आँखें हर दिशा में टकटकी लगाए रहती हैं, कान आगे की ओर कसे रहते हैं ताकि हल्की सी भी आवाज़ सुन सकें, और नाक के नथुने खतरे की हल्की सी भी गंध को सूंघने के लिए फैले रहते हैं।

चरते हुए हिरणों के ठीक ऊपर एक पेड़ पर लंगूरों का एक छोटा परिवार बैठा है। इनमें से दो ज़मीन पर कूदते हैं और एक चित्तीदार हिरण के बच्चे का पीछा करते हैं। फिर एक लंगूर वापस एक नीची शाखा पर उछलता है और अपने पैरों से लटकते हुए, हिरण के बच्चे की पूंछ पकड़कर उसे आधा ज़मीन से ऊपर उठा लेता है। हिरण का बच्चा इस खेल का आनंद लेता है, लेकिन उसकी माँ को यह पसंद नहीं आता।

देखने में तो सब कुछ एकदम शांत, सुंदर और निर्मल लग रहा था। लेकिन हमारी नज़र बाईं ओर दूर एक बड़ी झाड़ी के नीचे हल्की सी हलचल पर पड़ी। हमने झाड़ी को और ध्यान से देखा, लेकिन हलचल बंद हो चुकी थी।

उस झाड़ी के पास चर रही एक हिरणी अपने बच्चे के साथ यह सब देख चुकी थी। उसने अचानक अपना सिर ऊपर उठाया और घूरने लगी, उसके दोनों कान आगे की ओर उठे हुए थे और थूथन कांप रही थी। फिर उसने अपना दाहिना पैर ज़मीन पर पटका और अपनी चेतावनी भरी चीख का पहला अक्षर बोला, 'आओ!'

लेकिन अब बहुत देर हो चुकी है। सुबह की सुनहरी धूप में चमकता एक लंबा-चौड़ा, धब्बों से भरा शरीर, उस झाड़ी के नीचे से निकलता है और दो छलांगों में उस नन्हे हिरण के बच्चे तक पहुँच जाता है। अगले ही पल वह मर जाता है, जबकि पैंथर उस छोटे से कांपते हुए शरीर पर घूरता और गुर्राता रहता है।

फिर हम एक ऐसा दृश्य देखते हैं जो जितना मार्मिक है उतना ही शानदार भी। हिरण के बच्चे की माँ, अपनी सुरक्षा की परवाह किए बिना, उसकी रक्षा के लिए आगे बढ़ती है।

पैंथर उस नन्हे शव को छोड़कर हिरणी पर झपट पड़ती है, उसका गला पकड़कर उसे ज़मीन पर गिरा देती है। उसके खुर हरी घास पर अपनी मृत्यु-पीड़ा की आवाज़ निकालते हैं, जो उसके फटे हुए गले से बहते खून से पहले ही गहरे लाल रंग में रंग चुकी है।

मैं तुम्हें देखता हूँ जब तुम अपनी 10 गोलियों वाली स्प्रिंगफील्ड पिस्तौल को गुर्राते हुए पैंथर पर निशाना साधने के लिए उठाते हो, ताकि तुम उस हत्या का बदला ले सको जो अभी-अभी हुई है। लेकिन मैं अपना हाथ बढ़ाकर पिस्तौल की नली पकड़ लेता हूँ और तुम्हारा निशाना चूकने की कोशिश करता हूँ।

'गोली मत चलाओ, जॉन! यह जंगल का कानून है। पैंथर ने भोजन के लिए शिकार किया है, जानबूझकर नहीं।'

पैंथर ने मेरी आवाज़ सुनी, फिर हमें देखा। अगले ही पल वह गायब हो गया। लेकिन वह वापस आएगा।

2

बेलुंडुर ओग्रे

बेलंदूर मैसूर राज्य के शिमोगा जिले में स्थित एक छोटा सा गांव है जो एक पहाड़ी की ढलान पर बसा है और टैगार्थी गांव से लगभग तीन मील दूर है।

सदियों से मैसूर का यह हिस्सा बाघों का घर रहा है, जिनकी संख्या इतनी बढ़ गई थी कि उन्होंने अपने छोटे चचेरे भाइयों, अधिक चालाक लेकिन कहीं कम शक्तिशाली तेंदुओं को लगभग खत्म कर दिया था, जो कुछ समय पहले तक इस क्षेत्र में बड़ी संख्या में घूमते थे। दरअसल, इन छोटी बिल्लियों ने अपने समय में तबाही मचाई थी। बाघों की तुलना में कहीं अधिक साहसी, चालाक और उनसे बचना कहीं अधिक कठिन था; वे छोटे होने के कारण बेहतर ढंग से छिप सकते थे; वे गांवों के आसपास आतंक मचाते थे और सूर्यास्त के बाद हर रात व्यवस्थित रूप से उन पर हमला करते थे, मुर्गियों, कुत्तों, बकरियों, भेड़ों और बछड़ों को समान रूप से तिरस्कार और भेदभाव के साथ उठा ले जाते थे।

वे मनुष्यों को शायद ही कभी नुकसान पहुंचाते थे जब तक कि वे खुद घायल न हो जाएं, लेकिन उन दुर्लभ अवसरों पर जब वे इस अपराध के दोषी होते थे, तो उनके खिलाफ प्रतिशोध लेना मुश्किल था क्योंकि क्षेत्र के घने जंगलों द्वारा उन्हें सुरक्षा प्रदान की जाती थी, जो भारी मानसूनी बारिश से अच्छी तरह से सिंचित होते थे।

मेरी कहानी की शुरुआत में, बाघों का बोलबाला था, जबकि बेलुंदुर में एक जादूगर रहता था जो हर तरह के ताबीज़ और मंत्र बनाने में माहिर था। कहा जाता था कि ये ताबीज़ किसी प्रियजन को पाने में, या इसके विपरीत, किसी ऐसे व्यक्ति से छुटकारा पाने में विशेष रूप से कारगर थे जिनसे आप उतना प्यार नहीं करते थे। यह भी अफवाह थी कि ये नौकरी पाने या याचिका को सफल बनाने में भी बहुत प्रभावी थे।

अपनी अन्य क्षमताओं के अलावा, यह जादूगर इस बात के लिए प्रसिद्ध था कि वह मंत्रों और जादू-टोनों से जंगल को 'बांध' सकता था, जिससे उस क्षेत्र में शिकार करने वाला कोई भी शिकारी पूरी तरह से असफल हो जाता था। शिकार या तो उसकी राइफल के सामने प्रकट नहीं होता था; या यदि प्रकट होता भी था, तो राइफल नहीं चलती थी; या यदि चलती भी थी, तो गोली कुछ गज की दूरी पर भी शिकार को नहीं लगती थी। मैं इस व्यक्ति से कुछ साल पहले मिला था, और मैंने अपनी पिछली कहानियों में से एक में उसके बारे में लिखा है।* अपने पेशे के अधिकांश लोगों की तरह, उसे थोड़ी चापलूसी पसंद थी। अन्यथा, मैंने उसे काफी मिलनसार पाया था और उसकी इस कमजोरी में मुझे कुछ भी गलत नहीं लगा था। आखिरकार, हम सभी को चापलूसी पसंद होती है।

लेकिन बेलंदूर के उस ‘राक्षस’ के बारे में, जिसके बारे में मैं आपको बताने जा रहा हूँ, ने अपना जीवन लगभग सामान्य तरीके से ही शुरू किया था - एक साधारण और हानिरहित बाघ के रूप में। अपने

शुरुआती दिनों में इसके बारे में कुछ भी पता नहीं था। जाहिर है, इसका ध्यान केवल चित्तीदार हिरण, सांभर और सूअर का शिकार करने और उन्हें खाने तक ही सीमित था, जो उस समय हर जगह बहुतायत में पाए जाते थे। फिर सरकार ने पशुपालन कार्यक्रमों को बढ़ावा देना शुरू किया, और जैसे-जैसे उपजाऊ चारागाह उपलब्ध होते गए, मवेशियों के झुंड लाए गए जो थोड़े ही समय में हजारों की संख्या में बढ़ गए, जिससे जंगली हिरण और सूअरों को नुकसान हुआ जो पहले बिना किसी बाधा के चरते थे।

बाद में जिसे 'राक्षस' के नाम से जाना जाने लगा, उसने जंगली जानवरों के मांस के साथ-साथ उत्तम दर्जे के गोमांस का भी स्वाद चखकर अपनी उपस्थिति दर्ज कराई, और यह प्रवृत्ति इतनी तेज़ी से बढ़ी कि उसने अन्य किसी भी प्रकार के मांस को त्याग दिया। वह मारता और खाता रहा, खाता और मारता रहा, यहाँ तक कि उसने कई मवेशियों के झुंडों को मार डाला और अंततः ग्रामीणों को लगा कि कुछ किया जाना चाहिए।

भारतीय ग्रामीण असीम धैर्यवान होते हैं, और यह गुण उनकी पूर्ण उदासीनता, त्याग की भावना और ईश्वर की इच्छा से आने वाली किसी भी विपत्ति को स्वीकार करने की क्षमता को देखकर आसानी से समझा जा सकता है। इसलिए, जब मैं आपको बताऊँ कि अंततः ग्रामीणों का इस बाघ से मन भर गया और उन्होंने इसके उत्पात को रोकने का निश्चय कर लिया, तो आप समझ जाएँगे कि यह राक्षस वास्तव में हद पार कर चुका था। उन्होंने जाल बिछाकर उसे पकड़ने और फिर मार डालने का फैसला किया।

शिकार के रास्ते के बीचोंबीच एक गहरा आयताकार गड्ढा खोदा गया; इसके मुँह को पत्तियों और टहनियों से ढके पतले, आपस में गुंथे हुए बांसों से सावधानीपूर्वक छिपा दिया गया था, और गाँव के सबसे कम मूल्यवान बछड़े को चारा बनाकर गड्ढे के दूसरे छोर पर एक खूंटी से बांध दिया गया था। गड्ढे के दोनों ओर और उससे आगे घनी झाड़ियों से घिरे होने के कारण बाघ के लिए किसी भी अन्य दिशा से चारे तक सीधे पहुँचना असंभव था, जिससे केवल एक ही रास्ता खुला रह गया था।

सब कुछ योजना के अनुरूप हुआ और तीसरी रात बाघ गड्ढे में गिर गया।

अगली सुबह बेलंदुर गाँव के सभी निवासी, जिनमें तांत्रिक भी शामिल था, अपने पुराने दुश्मन पर खुशी मनाने और उस पर जलती हुई मशालें फेंकने के लिए इकट्ठा हुए, और फिर ऊपर से भाले से वार करके उसे मार डाला। जाहिर है, किसी के पास बंदूक नहीं थी, और क्रूरता का सवाल तो किसी के मन में आया ही नहीं। आखिर क्या यह वही बाघ नहीं था जिसने उनके इतने सारे मवेशियों को मार डाला और खा लिया था?

बेलंदुर के निवासियों के पास न केवल बंदूकें नहीं थीं, बल्कि उनके पास भाले भी बहुत कम थे। मुझे बाद में पता चला कि केवल दो लोगों के पास भाले थे, या भाले जैसी कोई वस्तु थी। एक भाला छोटा था, चार फुट से भी कम लंबा और सिरे पर बिल्कुल कुंद। यह भाले से ज़्यादा लोहे की छड़ जैसा लग रहा था। दूसरा भाला असली था और स्थानीय मंदिर का था। कहा जाता है कि इसका इस्तेमाल ढाई सदी पहले किसी युद्ध में हुआ था, लेकिन अब यह लोहे की छड़ की तरह कुंद हो चुका था, क्योंकि इसका इस्तेमाल कई बार

ज़मीन से शकरकंद खोदने के लिए किया गया था। खैर, दोनों हथियारों के डंडे गड्ढे की सतह से बाघ तक पहुँचने के लिए बहुत छोटे थे, लेकिन इससे कोई फर्क नहीं पड़ता था, क्योंकि दोनों के मालिक आश्वस्त थे कि अपने-अपने हथियार के एक ही वार से वे उस जानवर को मार सकते हैं।

कहा जाता है कि इस बात पर काफी बहस हुई कि पहले हथियार कौन चलाएगा। अंततः, हालांकि मुझे नहीं पता कि किस आधार पर, लोहे की छड़ वाले ने बाजी मार ली। उसने सावधानीपूर्वक निशाना साधते हुए अपना हथियार फेंका; जैसे ही वह उसके हाथ से छूटा, उसका कुंद सिरा मुड़ गया और हथियार का किनारा, कुंद सिरे की बजाय, बाघ के पार्श्व भाग पर एक धीमी सी आवाज के साथ जा लगा।

SKETCH MAP: OGRE AND GOWNDNORAI TIGERS
(Chapters 2 and 3)

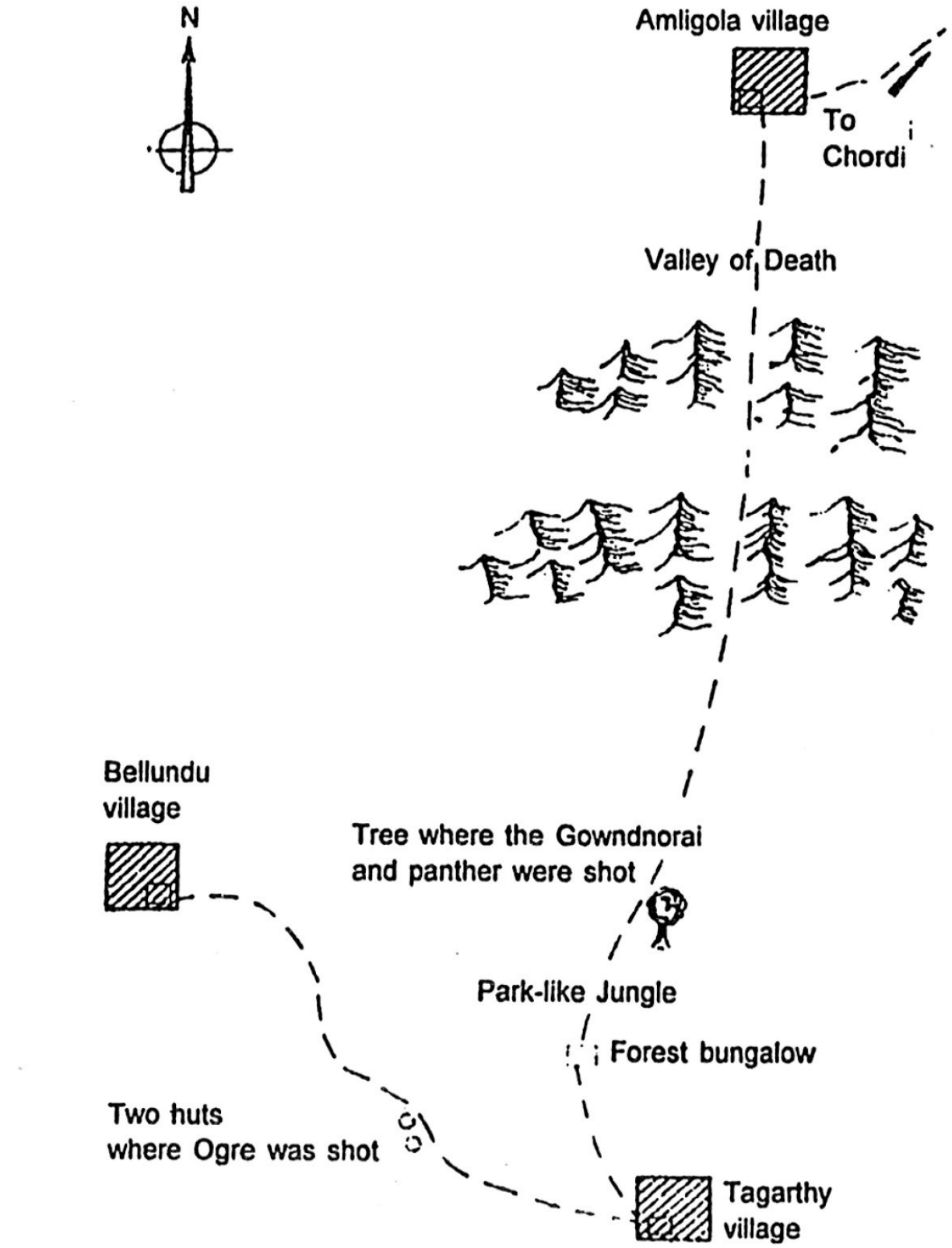

जैसा कि उम्मीद थी, बाघ ने इस तरह के व्यवहार को हल्के में नहीं लिया। उसने दहाड़कर अपना विरोध जताया और अपने उत्पीड़कों को घूरकर देखा। जब दूसरे भालाधारी ने निराश बाघ को तिरस्कार भरी निगाहों से देखा और भाला चलाने की तैयारी की, तो वहाँ मौजूद भीड़ में हल्की हंसी गूंज उठी। 250 साल पुराना भाला अपने लक्ष्य की ओर तेज़ी से बढ़ा और उसका कुंद सिरा बाघ के पिछले हिस्से में धंस गया।

अब बेलुंदुर पूरी तरह निहत्था था! और राक्षस का गुस्सा भड़क उठा। अचानक मिली ऊर्जा के बल पर, वह उछलकर गड्ढे के किनारे तक पहुँच गया और अपने अगले पंजों से उसे टटोलने लगा। उसके पंजे किनारे तक पहुँचे, उसे पकड़ लिया और नरम मिट्टी में धंसा दिए। पिछले पंजे हवा में बेतहाशा लात मारते हुए गड्ढे की दीवारों से टकराए और जानवर को ऊपर की ओर खींच लिया। और अगले ही पल बाघ आज़ाद हो गया, नरक के किसी दानव की तरह गड्ढे के मुँह से बाहर कूद पड़ा, और पहले से कहीं ज़्यादा खतरनाक हो गया।

भीड़ में से केवल एक ही व्यक्ति उसकी स्वतंत्रता के मार्ग में खड़ा था; बाकी सब भाग चुके थे। बाघ अपने सामने खड़े व्यक्ति के ऊपर से छलांग लगाकर, चारों पैर फैलाकर पीछे की ओर लात मारता हुआ आगे बढ़ा, और उसके भयानक पंजों में से एक का पंजा उस व्यक्ति की खोपड़ी के पिछले हिस्से से टकराया, इससे पहले कि वह भागने के लिए होश में आ पाता। यह केवल एक हल्की सी चोट थी, बाघ द्वारा लगाए गए बल को देखते हुए अपेक्षाकृत हल्की, क्योंकि यदि पंजा पूरी तरह से सिर पर लगता तो खोपड़ी अंडे के छिलके की तरह चकनाचूर हो जाती। लेकिन, पंजों के सिरे व्यक्ति की गर्दन के पिछले हिस्से की त्वचा में धंस गए, और बाघ के कूदने के दौरान उसके वजन ने बाकी का काम कर दिया।

फिर बाघ चला गया। वह आदमी जहाँ खड़ा था वहीं गिर पड़ा, लेकिन वह पूरी तरह जीवित था। उसकी खोपड़ी का पूरा हिस्सा, जो हड्डी से साफ-सुथरा अलग किया गया था, अब उसके चेहरे पर लटक रहा था, और उसके लंबे बाल पीछे की बजाय आगे की ओर लहरा रहे थे। उस आदमी को मरने में तीन दिन लगे, क्योंकि आखिरी पल तक वह इस उम्मीद में जी रहा था कि उसकी खोपड़ी को वापस जोड़ दिया जाएगा। वह राक्षस का पहला शिकार था, हालाँकि यह अनजाने में हुआ था।

स्वाभाविक रूप से, घाव भरने के बाद बाघ और भी चालाक हो गया। उसके लिए कई तरह के जाल लगाकर चारा डाला गया, लेकिन बाघ ने उन्हें जानबूझकर अनदेखा कर दिया। इसके बाद उसने दिन दहाड़े, आमतौर पर दोपहर के समय, मवेशियों को मारा, जब सुबह चरने के बाद झुंड आराम कर रहे होते थे और उनके रखवाले झाड़ियों की छाया में सो रहे होते थे। जो लोग जाग रहे थे या घायल जानवर की हल्की चीख सुनकर जाग गए थे, उन्होंने पहले चिल्लाकर और पत्थर फेंककर बाघ को भगाने की कोशिश की। लेकिन बाघ ने जल्द ही एक चरवाहे पर झपट्टा मारकर और उसे बुरी तरह घायल करके उसकी इन कोशिशों पर विराम लगा दिया। हैरानी की बात यह है कि वह आदमी पूरी तरह से ठीक हो गया, हालांकि

उसे जो सबक मिला वह काफी कारगर था। इसके बाद, बाघ को देखते या उसकी आवाज सुनते ही सभी चरवाहे भाग जाते थे, अपने जानवरों को उसकी दया पर छोड़कर।

बेलंदूर में हालात बद से बदतर होते चले गए। पशुपालक अब अपने पशुओं को चराने के लिए जंगल में नहीं छोड़ सकते थे, बल्कि उन्हें घर पर ही खिलाने का प्रयास करने लगे, और ज़ाहिर है, इसमें बहुत पैसा खर्च होने लगा। इसी के चलते, बेलंदूर से गोमांस की आपूर्ति कम होने से बाघ की भूख भी बढ़ गई, इसलिए उसने अपने कार्यक्षेत्र को बढ़ाकर टैगार्थी और आसपास के कुछ छोटे गांवों तक फैला दिया। मवेशी चुराने वाले के रूप में उसकी बहादुरी दूर-दूर तक फैलने लगी।

इसी तरह एक सज्जन व्यक्ति, जिन्हें हम श्री जॉनसन कहेंगे, को बाघ के बारे में पता चला।

जॉनसन रेलवे में एक अधिकारी थे, जिनका हाल ही में भारत के किसी अन्य हिस्से से इस क्षेत्र में तबादला हुआ था, जहाँ बाघ नहीं पाए जाते थे। इस वजह से वे उस जानवर का शिकार करने के लिए बहुत उत्सुक थे, जिसकी पूरे इलाके में चर्चा हो रही थी। उनके पास राइफल थी, इसलिए वे कुछ दिनों की छुट्टी लेकर बेलंदूर के लिए निकल पड़े, जो रेलवे ट्रैक से लगभग सात मील दूर था। उन्हें उम्मीद थी कि इस दौरान उन्हें सफलता मिलेगी। और यहीं से मेरी कहानी में बूढ़े बुद्धियाह, जो एक तांत्रिक थे, का प्रवेश होता है।

यह सुनकर कि एक श्वेत व्यक्ति आया है और बाघ के बारे में पूछताछ कर रहा है, बुद्धिया ने अपना औपचारिक भगवा वस्त्र धारण किया, ऐसे अवसरों के लिए रखे अपने लंबे, गंदे नकली बालों को अपने सिर के मुकुट के चारों ओर लपेटा, अपने माथे पर खूब राख मली, जिसे उसने धार्मिक महत्व के सिंदूरी चिह्नों से सजाया, अपने गले में बड़े अंबर के लकड़ी के मोतियों की माला पहनी और तेल में भीगी हुई अपनी टेढ़ी-मेढ़ी छड़ी को हाथ में पकड़े हुए जॉनसन के सामने उपस्थित हुआ और अपनी सेवाएं देने की पेशकश करते हुए दावा किया कि यदि श्वेत व्यक्ति बाघ का शिकार करने में सफल होना चाहता है तो ये सेवाएं बिल्कुल अपरिहार्य हैं।

अब मामला सचमुच बहुत सीधा-सादा था। सामान्य अनुभव वाले किसी भी व्यक्ति के लिए यह स्पष्ट था कि बूढ़ा बुद्धिया कुछ रुपये कमाने की कोशिश कर रहा था, लेकिन उससे भी बढ़कर वह अपने गांव वालों को जादूगर के रूप में अपनी महानता से प्रभावित करने का मौका ढूंढ रहा था। वह उन्हें यह महसूस कराना चाहता था कि एक गोरे आदमी को भी मदद के लिए उसके पास आना पड़ता है। अगर जॉनसन ने थोड़ी सी मनोविज्ञान और सामान्य ज्ञान का इस्तेमाल किया होता, तो वह इन बातों को समझ जाता और बूढ़े को कुछ रुपये देकर उसका मन बहला देता। इसके बजाय, जॉनसन को गुस्सा आ गया, उसने जादूगर को अपने सामने से चले जाने को कहा, और जब बुद्धिया ने गुस्से में विरोध करना शुरू किया, तो जॉनसन ने उसकी गर्दन तोड़ने की धमकी देकर मामला और बिगाड़ दिया!

इसलिए, जादूगर गुस्से में वहां से चला गया: ग्रामीणों के बीच उसकी प्रतिष्ठा, जिसे बढ़ाने के लिए वह लगातार प्रयास कर रहा था, उस गोरे आदमी के शब्दों से बुरी तरह से गिर गई थी। उसे लगा कि उसके

साथी उस पर चुपके से हंसेंगे, हालांकि उसे अब भी पूरा भरोसा था कि वे उससे इतना डरते हैं कि खुलकर ऐसा नहीं करेंगे।

दूसरी ओर, ग्रामीणों को शर्मिंदगी महसूस हुई। हालाँकि उनमें से किसी को भी बुद्धियाह पसंद नहीं था, जिसने बचपन से ही उनका लगातार शोषण किया था, फिर भी वह उनका अपना जादूगर था। उन्हीं में से एक। एक गोरे आदमी द्वारा इस तरह से बात करना और पिटाई की धमकी देना, उनके जादूगर के प्रति और साथ ही साथ स्वयं उनके और पूरे गाँव के प्रति अनादर दर्शाता था। इस प्रकार, अपने जल्दबाज़ी भरे शब्दों से जॉनसन ने मित्र बनाने के बजाय चारों ओर शत्रु बना लिए थे। ग्रामीणों ने उसे वहीं छोड़ दिया और उससे कोई वास्ता रखने से इनकार कर दिया। न ही कोई उसे बाघ को फंसाने के लिए चारा बेचने या किराए पर लेने को तैयार था।

दृढ़ निश्चयी स्वभाव के जॉनसन ने स्थानीय असहयोग के बावजूद सफल होने का निश्चय कर लिया। वे वापस टैगार्थी लौट आए, जहाँ उन्होंने बेलंदूर में दिखाई गई सूझबूझ का इस्तेमाल करते हुए दो बूढ़े बैल खरीद लिए। चरवाहों को काम पर लगाकर उन्होंने इन दोनों जानवरों को बेलंदूर के बाहरी इलाके में ले जाकर एक नाले में बाँध दिया, जिसके बारे में कहा जाता था कि वहाँ बाघ अक्सर आता-जाता है; लेकिन चूंकि ये चरवाहे टैगार्थी के थे, बेलंदूर के नहीं, इसलिए उन्हें बाघ की गतिविधियों के बारे में ज्यादा जानकारी नहीं थी।

अगली सुबह जॉनसन और उसके चरवाहे चारे के पास गए। एक चारा गायब था। यह निश्चित रूप से बाघ द्वारा नहीं लिया गया था, क्योंकि नाले की रेतीली तलहटी में बाघ के कोई पदचिह्न नहीं थे, बल्कि कई मानव पदचिह्न थे। क्या ये पदचिह्न पिछले दिन उसके अपने आदमियों ने बनाए थे, या किसी और ने? दूसरे चारे को छुआ तक नहीं गया था।

जॉनसन का यह निष्कर्ष बिल्कुल सही था कि बेलुंदुर गांव के ग्रामीणों ने उसका पहला चारा चुरा लिया था। वह भरी हुई राइफल लेकर गांव में घुस गया, बैल वापस करने की मांग की और फिर पुलिस को सूचना देने की धमकी दी। इन सब बातों पर ग्रामीणों ने मासूमियत का ढोंग किया। उन्होंने दावा किया कि रेतीली खाई में उसने जो इंसानी पैरों के निशान देखे थे, वे उसके अपने आदमियों के थे जब उन्होंने चारा बांधा था और उससे इसे गलत साबित करने को कहा। जॉनसन की चोरों को गोली मारने की गंभीर धमकियों पर भी ग्रामीणों ने अनसुना कर दिया और मुस्कुराते रहे।

दूसरे चारे के भी गायब हो जाने के डर से जॉनसन ने अपने दो आदमियों को उसके ऊपर मचान बनाने का आदेश दिया, जिस पर वह उसी दोपहर बैठ गया, शायद बाघ को पकड़ने की गंभीर उम्मीद से ज़्यादा अपने चारे को चोरी होने से बचाने के लिए। लेकिन अप्रत्याशित घटना घटी। मुझे बताया गया है कि बाघ दिन के उजाले में ही प्रकट हो गया। जॉनसन ने गोली चलाई, लेकिन वह जानवर को केवल घायल करने में सफल रहा, जो भाग गया।

अगले पूरे सप्ताह जॉनसन ने निडरतापूर्वक दृढ़ संकल्प के साथ बाघ की तलाश में जंगलों को छान मारा। कोई भी उसकी सहायता के लिए आगे नहीं आया; यहाँ तक कि उसके दो साथी भी यह कहकर उसके साथ जाने से इनकार कर गए कि यह बहुत खतरनाक है। अकेले ही, जॉनसन एक बार रास्ता भटक गया और उसे जंगल में रात बितानी पड़ी। अंत में, घोर निराशा के साथ, जॉनसन को बाघ को पकड़े बिना ही अपने कर्तव्य पर लौटना पड़ा।

उसके बाद कुछ समय तक सब शांत रहा। राक्षस प्रकट नहीं हुआ और बेलंदूर के ग्रामीणों को यह स्वीकार करना पड़ा कि उनके तमाम असहयोग प्रयासों के बावजूद, साहब ने उन्हें उस विपत्ति से छुटकारा दिला दिया था जो उनके पशुओं को भारी नुकसान पहुँचा रही थी। जादूगर बुद्धिह पहले से कहीं अधिक दुखी था। उसने अपने अभिमान और प्रतिष्ठा को और भी कम होते देखा, क्योंकि उसने शेखी बघारते हुए कहा था कि साहब बाघ को नहीं मारेंगे या मार नहीं सकते; फिर भी उन्होंने ऐसा किया और बेलंदूर को उस घृणित पशु-चोर से मुक्ति दिला दी।

इसलिए मवेशियों को प्रतिदिन चरने के लिए एक बार फिर जंगलों में ले जाया जाता था। ऐसा तब तक चलता रहा, जब तक कि अपरिहार्य घटना घटित नहीं हो गई!

एक दोपहर, जानवरों का एक झुंड गाँव की ओर तेज़ी से लौटा, लेकिन उनमें से एक सदस्य गायब था —और वह उन्नीस वर्षीय युवक भी गायब था जो उस सुबह जानवरों को चराने के लिए उनके साथ गया था। शाम तक किसी ने इस बात पर ध्यान नहीं दिया। फिर लड़के के रिश्तेदारों को उसकी थोड़ी चिंता हुई, जबकि लापता गाय के मालिक को अपने कीमती जानवर की कहीं ज़्यादा चिंता होने लगी। अगली सुबह तलाशी में गाय मृत पाई गई: उसकी गर्दन एक बड़े बाघ ने बड़ी सफाई से तोड़ दी थी, जिसके पदचिह्न उस खेत में स्पष्ट रूप से दिखाई दे रहे थे जहाँ उसे मारा गया था। सौ गज दूर, एक झाड़ी के नीचे, लापता युवक का शव मिला।

हालांकि, दोनों शवों में एक अंतर था: गाय को बाघ ने नहीं खाया था, जबकि युवक के शरीर का आधे से अधिक हिस्सा बाघ खा चुका था। वही पुरानी कहानी एक बार फिर सामने आई: एक निर्दोष बाघ घायल होकर और अपने हाल पर छोड़ दिए जाने के कारण आदमखोर बन गया था।

उसके बाद एक के बाद एक दुखद घटनाएँ घटती गईं और घटनाक्रम दोहराया गया। बेलुंदुर के लोग सूर्यास्त के समय अपनी झोपड़ियों में बंद हो जाते थे, जबकि मवेशियों को बाड़ों में भूखा रखा जाता था। बूढ़े बुद्धिया की प्रतिष्ठा अपने सबसे निचले स्तर पर पहुँच चुकी थी।

मानव शिकार की कमी के कारण बाघ ने अपना दायरा टैगार्थी और उससे भी दूर के गांवों तक फैला दिया, और तभी से उस जानवर को 'राक्षस' कहा जाने लगा। यह नाम दबी आवाज़ में, बंद दरवाजों के पीछे और केवल दिन के उजाले में ही बोला जाता था। अन्यथा, बाघ को पता चल जाता और वह उस व्यक्ति पर भयानक बदला लेता जिसने उसे बाघ कहने की हिम्मत की।

अंधेरा होने के बाद राक्षस सक्रिय हो जाता था! वह हर जगह घूमता था और बंद कमरे में भी कोई सुरक्षित नहीं रहता था। राक्षस, या उसका कोई जासूस, चमगादड़ या उल्लू के रूप में हवा में उड़ने वाली कोई बुरी आत्मा, या जंगल में रहने वाले कई शैतानों में से कोई भी, कही गई बातें सुन सकता था और उस खूंखार नरभक्षी तक खबर पहुंचा सकता था।

फिर तो इसके खिलाफ बोलने वाले व्यक्ति का सचमुच बुरा हाल हो गया! राक्षस द्वारा भयानक बदला लेने में बस कुछ ही समय बाकी था। उसका भाग्य तय हो चुका था और बचने का कोई रास्ता नहीं था। यही सर्वमान्य राय थी।

इस समय मेरे पुराने मित्र, टैगार्थी गाँव के चिकित्सा अधिकारी, डॉक्टर स्टेनली ने मुझे एक लंबा पत्र लिखा और यह कहानी सुनाई, साथ ही मुझे उस राक्षस के जीवन को समाप्त करने के प्रयास में शामिल होने का निमंत्रण दिया। इस डॉक्टर के पास केवल .12 बोर की शॉटगन थी और कोई राइफल नहीं थी। उन्होंने अपने युवा दिनों में कई बाघों का शिकार किया था, ठीक उसी तरह जैसे मैंने एक अन्य कहानी में उल्लेख किया है, संतावेरी के पोस्टमास्टर डिक बर्ड ने किया था। अब जब वे बूढ़े हो गए थे, तो उन्हें लगा कि उनकी पुरानी बंदूक, हालांकि अभी भी एक भरोसेमंद हथियार है, आदमखोर बाघ के लिए शायद पर्याप्त नहीं होगी।

तीन दिन बाद, अपनी स्टडबेकर कार से टैगार्थी पहुँचने के बाद, मैं उनसे उनके औषधालय-सह-अस्पताल के सामने वाले कमरे में मिला। सबसे पहले उन्होंने एक शानदार भोजन और ढेर सारी चाय का आग्रह किया, जिसके बाद पाइप के धुएँ के बीच हमने लगभग तीन घंटे तक पुराने दिनों की बातें कीं। स्वभाव से मैं आमतौर पर धैर्यवान हूँ, लेकिन कभी-कभी अधीर हो जाता हूँ; अंत में मैंने उस भले डॉक्टर को याद दिलाया कि एक काम करना बाकी है। ज़ाहिर है, पहला कदम बेलुंदुर जाना और वहाँ से आगे की जानकारी जुटाना था।

स्टुडेबेकर को इस गाँव तक पहुँचने में बहुत मुश्किल हुई। रास्ता, जो हमेशा से खराब था, पिछली बारिश के बाद और भी बदतर हो गया था। मेरे बगल में बैठे डॉक्टर ने कहा कि हमें पैदल ही चलना चाहिए था। आखिरकार बेलंदूर पहुँचकर, मैंने जॉनसन की नासमझी के कारण हुई गड़बड़ी को जितना हो सके ठीक करने का प्रयास शुरू किया। मैं अपनी झोपड़ी में रूठे बैठे बुद्धियाह के पास गया, उससे अपने धार्मिक वस्त्र पहनने और मेरे लिए पूजा करने तथा अपने सभी ज्ञात मंत्रों का जाप करने का अनुरोध किया, ताकि मैं आदमखोर को मार गिराने में सफल हो सकूँ, और उसे दस रुपये आकस्मिक खर्चों के लिए दिए।

वह तुरंत खुश हो गया। देखते ही देखते वह बाज़ार में चला गया, पूरी तरह सज-धज कर, और वहाँ पहुँचते ही उसने मुझसे पाँच रुपये और माँगे, ताकि एक काले मुर्गे और स्थानीय शराब 'अराक' की एक बोतल का खर्च निकल सके। मुर्गे को मारकर, पकाकर वह खुद खाने वाला था, शायद जंगल की आत्माओं को प्रसन्न करने के लिए, और अराक को भी बुद्धिया पीने वाला था, शायद उसी उद्देश्य से। बूढ़े ने कहा कि

इसके बाद ही वह आदमखोर के विनाश के मंत्रों का उच्चारण करने की स्थिति में होगा। डॉ. स्टेनली और मैं, यह जानते हुए कि वह कैसी स्थिति होगी, हमने सहमति जताने का नाटक किया।

मैंने पैसे सौंप दिए और कम से कम एक घंटे की और देरी के लिए खुद को तैयार कर लिया, क्योंकि मुर्गे के अधपका होने में इतना ही समय लगता, जबकि बुद्धियाह अपने मंत्रों का जाप करने के लिए अराक पीकर खुद को तैयार कर रहा था। लेकिन अगर जॉनसन द्वारा किए गए नुकसान की भरपाई करनी थी, तो उस बूढ़े आदमी और खासकर बेलुंदुर गांव के लोगों को खुश रखना जरूरी था।

डॉक्टर और मैं बातें कर रहे थे, तभी उस बदकिस्मत काले मुर्गे को लाया गया, हमारी आँखों के सामने उसका वध किया गया, उसे उबालकर करी बनाया गया और फिर उस लालची बूढ़े जादूगर ने उसे चट कर लिया। बिना रुके ही उसने बोतल का ढक्कन अपने मुँह से लगाकर सारा अराक पी डाला। मुझे आश्चर्य हुआ कि वह इस प्रक्रिया में घुटकर मरा क्यों नहीं।

यह सब करने के बाद, जादूगर लड़खड़ाते हुए खड़ा हुआ। वह बुरी तरह नशे में था और मुश्किल से सीधा खड़ा हो पा रहा था। लाल आँखों और एक बेजान मुस्कान के साथ, उसने अपने शरीर पर कहीं से एक गंदे कपड़े के थैले से सूखी और मुड़ी हुई जंगली लताओं से बनी एक कंगन जैसी दिखने वाली चीज़ निकाली। मेरी राइफल मांगते हुए, उसने उस कंगन को राइफल के मुंह के सिरे से लेकर बैरल की पूरी लंबाई तक तीन-चार बार घुमाया। वह इतना नशे में था कि एक-दो बार उसका निशाना चूक गया, लेकिन मैंने चुपचाप बैरल के सिरे को इस तरह घुमाकर गलती सुधार ली कि कंगन उसके चारों ओर लिपट जाए।

मंत्र का अंत हो गया। बाघ का अंत निश्चित था! वह मेरी राइफल से मारा जाएगा! बूढ़े बुद्धिया के रूप में जंगल की आत्माओं ने खूब खाया-पिया था। हमारे चारों ओर घेरा बनाकर खड़े ग्रामीणों की भीड़, जो हर छोटी-छोटी बात पर नज़र रख रही थी, ने ज़ोर से यह आश्वासन दिया। खैर, मंत्र और उनके आश्वासन ठीक समय पर समाप्त हुए, क्योंकि अगले ही पल बूढ़े बुद्धिया कुल्हाड़ी से मारे जाने की तरह ज़मीन पर गिर पड़े।

सबसे महत्वपूर्ण बात यह थी कि सद्भाव बहाल हो गया था। बुद्धियाह का सम्मान फिर से बढ़ गया था, साथ ही ग्रामीणों और बेलुंदुर गांव का भी। डॉ. स्टेनली और मुझे 'अच्छे लोग' कहकर सम्मान दिया जाने लगा, जबकि उस राक्षस की गतिविधियां क्षण भर के लिए दब गईं। उस समय वह एक साधारण बाघ से ज्यादा कुछ नहीं था, जो गोली लगने का इंतजार कर रहा था।

अब अंधेरा हो चुका था, और स्टुडेबेकर में टैगार्थी वापस जाना किसी बुरे सपने जैसा था। फिर भी हम बिना किसी टूटे हुए एक्सल या स्प्रिंग के वहाँ पहुँच गए, लेकिन हमने तय कर लिया कि अब से हम पैदल ही जाएँगे और वापस आएँगे, बजाय इसके कि गाड़ी खराब होने का जोखिम उठाएँ, जो कि अगर हमने किस्मत को ज्यादा आजमाया तो होना ही था।

स्टैनली ने टैगार्थी से दो चारे प्राप्त किए, जिन्हें हमने अगले दिन बेलंदूर जाने वाले रास्ते के पास उपयुक्त स्थानों पर बांध दिया, क्योंकि आपको याद होगा कि मैंने आपको बताया था कि उस समय तक बाघ पूरे क्षेत्र में सक्रिय था। दोपहर के भोजन के बाद हम सात मील चलकर उस गाँव तक पहुँचे, और वहाँ

हमें बिना किसी कठिनाई के तीन और जानवर अतिरिक्त चारे के रूप में मिल गए। स्पष्ट रूप से, पिछली शाम बुद्धिया के साथ हमने जो छोटा सा तमाशा आयोजित किया था, उसका अच्छा प्रभाव पड़ा था। इन चारों को उन स्थानों पर बांधा गया, जिनके बारे में ग्रामीणों ने हमें बताया था कि वहाँ अक्सर बाघ आता-जाता रहता है।

समय हमारे लिए प्रतिकूल था और हम इतनी जल्दी में थे कि उस दिन बिछाए गए पाँचों चारे में से किसी एक के ऊपर मचान नहीं लगा पाए। यह मेरी सामान्य प्रक्रिया के विपरीत था, जिसमें मैं पहले मचान बनाता हूँ और फिर उसके सामने चारा बाँधता हूँ। इस प्रक्रिया के दो फायदे हैं: पहला, अगर कोई शिकार होता है, तो वह मचान के ठीक सामने होता है और उसे हटाने की ज़रूरत नहीं पड़ती। दूसरा, मचान बनाते समय कोई शोर नहीं होता, जो शिकार होने पर होना लाज़मी होता। अगर बाघ आस-पास कहीं छिपा हो या घात लगाए बैठा हो, तो ऐसे शोर से उसे शक हो सकता है।

जब हम टैगार्थी वापस लौटे तो फिर से घना अंधेरा हो चुका था, हम आदमखोर के अचानक हमले से बचने के लिए अपनी टॉर्च से लगातार सतर्क थे, लेकिन हमें केवल एक पैंगोलिन ही मिला जो सूखे पत्तों के बीच भोजन की तलाश कर रहा था, जो इन जीवों के लिए सामान्य से बहुत पहले बाहर निकला था।

उस रात हमने जो पाँचों चारे बाँधे थे, उनमें से किसी को भी किसी ने नहीं छुआ। लेकिन तीसरे दिन सुबह देर से एक आदमी डॉक्टर के औषधालय में दौड़ता हुआ आया और बताया कि उसके चचेरे भाई को बाघ ले गया है। पीड़ित और उसकी पत्नी, हमारे सूचना देने वाले और उसकी पत्नी के साथ, बेलंदूर जाने वाले रास्ते पर थोड़ी ही दूरी पर अगल-बगल बनी दो झोपड़ियों में रहते थे। जब यह चचेरा भाई, जो सामान लेने के लिए टैगार्थी से लौट रहा था, झोपड़ियों के सामने इकट्ठा होकर बातें कर रहे उस छोटे से समुदाय के तीन अन्य सदस्यों के सामने आया, तब सूरज दोपहर के समय था। वे उसे पुकारने ही वाले थे कि वह ज़ोर से चिल्लाया और फिर हवा में गायब हो गया।

हमारे मुखबिर ने बताया कि उसने अपनी कुल्हाड़ी उठाई और अपने चचेरे भाई की पत्नी के साथ यह देखने के लिए निकल पड़ा कि आखिर मामला क्या है। उसकी पत्नी हाथ मलते हुए ज़ोर-ज़ोर से विलाप कर रही थी। उन्हें नरभक्षी का ख्याल भी नहीं आया था। बल्कि उन्हें शक था कि जंगल की किसी बुरी आत्मा ने उनके साथी को मार डाला है।

जिस जगह से वह आदमी गायब हुआ था, वहाँ पहुँचकर वे पगडंडी की नरम रेत में बाघ के पदचिह्न देखकर भयभीत हो गए। डर के मारे आगे न बढ़ पाने के कारण वे वापस लौटने ही वाले थे कि तभी उस महिला की चीखें तेज़ हो गईं, जिससे पास ही में अपने शिकार को खाने की कोशिश कर रहे आदमखोर बाघ को गुस्सा आ गया। बाघ ज़ोर से गुर्राया, जिसके बाद वह आदमी और उसकी पत्नी दोनों भाग गए। दोनों महिलाओं को झोपड़ी में खुद को बंद करने का मौका देने के लिए थोड़ी देर रुककर, वह आदमी घूम-फिरकर टैगार्थी आया और मुझे और डॉक्टर को घटना की जानकारी दी। उसने कहा कि अगर हम तुरंत आकर उसे गोली मार दें, तो वह राक्षस अभी भी वहीं होगा और उसके चचेरे भाई को खा रहा होगा।

राइफल, टॉर्च और गर्म कोट लेकर मैं अपने मुखबिर स्टैनली के साथ दौड़ पड़ा, जो अपने साथ .12 बोर की बंदूक और एक और टॉर्च लेकर आया था। उन दिनों मैं आज से छोटा था, और डॉक्टर तो और भी छोटा था, इसलिए हम दोनों झोपड़ियों तक ठीक-ठाक हालत में पहुँच गए, हालाँकि थोड़ी साँस फूल रही थी। कुछ मिनट बाद, डॉक्टर बीच में, स्टैनली उसके बाईं ओर और मैं दाईं ओर, हम उस जगह की ओर बढ़े जहाँ यह त्रासदी घटी थी, और हमने ठान लिया था कि हम आदमखोर सांप को उसके शिकार पर झकझोर देंगे।

बाघ को हमारे आने का आभास हमसे बहुत पहले ही हो गया था, क्योंकि हमें उसके खाने या हड्डियाँ टूटने की कोई आवाज़ नहीं सुनाई दी। संभवतः उसने हमें उन दो झोपड़ियों के पास पहुँचते हुए देख लिया था, जो, जैसा कि मैंने बताया, उस स्थान के ठीक सामने थीं जहाँ उस राक्षस ने अपने शिकार को पकड़ा था।

जब हम उसके काफी करीब पहुँच गए, तो आदमखोर भालू गुर्राने लगा और उसकी चीखें भयानक रूप से तेज हो गईं। साफ था कि वह हमें भगाने पर तुला हुआ था। अगर हम अभी, जब हालात ठीक हैं, पीछे हट जाते, तो सब ठीक रहता। लेकिन अगर हम आगे बढ़ते रहे, तो या तो वह हम पर झपट पड़ेगा, या आखिरी क्षण में उसका साहस टूट जाएगा और वह भाग जाएगा।

स्टैनली और मैंने एक-दूसरे को सिर हिलाकर सहमति दी, बस एक पल के लिए हिचकिचाए। मैंने अपने बाएं हाथ से उस आदमी को पीछे धकेल दिया जिसने हमें बुलाया था, और हाथ से इशारा करके उसे चले जाने को कहा। फिर हम कंधे से कंधा मिलाकर आगे बढ़े। हमें अभी तक बाघ दिखाई नहीं दे रहा था। लगातार दहाड़ें सुनाई दे रही थीं और हमारे सामने की झाड़ियाँ ज़ोर से हिल रही थीं। हम रुक गए, अपनी-अपनी बंदूकें और राइफलें कंधों पर रखे, उस हमले का इंतज़ार करते हुए जो होना ही था।

वह आया ही नहीं! आखिरी क्षण में आदमखोर बाघ ने मुठभेड़ टाल दी! वह इंसानों का पीछा करने और उन्हें मारने का आदी था। इससे पहले कभी किसी इंसान ने जानबूझकर उसका पीछा नहीं किया था और न ही उसके पास गया था। एक आखिरी दहाड़ के साथ, बाघ उस जगह से उछलकर दूर चला गया और मैं बस एक पल के लिए लाल-भूरे रंग के एक रूप को झाड़ी में भागते हुए देख पाया; फिर वह गायब हो गया। मैं गोली चला सकता था। मैंने ऐसा क्यों नहीं किया, यह मैं कह नहीं सकता, लेकिन मुझे अपनी इस गलती पर पछतावा हुआ।

बाघ सचमुच बहुत भूखा रहा होगा, क्योंकि हमने देखा कि उसने अपने शिकार का आधा से ज़्यादा हिस्सा चट कर लिया था, बस उसका सिर, हाथ, टांगें और कुछ पसलियाँ ही बची थीं। स्टेनली और मैंने एक-दूसरे से बात नहीं की। हम दोनों इतने अनुभवी थे कि जानते थे कि इंसान की आवाज़ बहुत दूर तक सुनाई देती है। इसके बजाय, मैंने चारों ओर देखा कि क्या कोई ऐसी जगह है जहाँ मैं छिप सकूँ और उस आदमखोर बाघ के लौटने का इंतज़ार कर सकूँ, अगर वह बचे हुए टुकड़े खाने के लिए वापस आने का फैसला करे।

लेकिन उस राक्षस ने अपनी अगली हरकत से मेरे सारे विचार झटक दिए, जो जितनी अप्रत्याशित थी उतनी ही अचानक भी। शायद भूख थी, या स्वभाव से ही खराब स्वभाव, या फिर शायद इसलिए कि भागते समय उसने देखा कि भीड़ नहीं बल्कि सिर्फ दो इंसान उसका पीछा कर रहे थे। खैर, वह असाधारण जानवर अचानक रुक गया, मुड़ा और हमारी तरफ बढ़ने लगा, पास आते ही उसकी दहाड़ और तेज़ हो गई। ज़मीन उसकी आवाज़ की तीव्रता से कांप उठी, और उसकी बढ़ती हुई तीव्रता से संकेत मिल रहा था कि बाघ खतरनाक रूप से करीब आ रहा है। आपको यह ध्यान रखना होगा कि इस पूरे समय हम उस जानवर को देख नहीं पा रहे थे क्योंकि वह झाड़ियों में छिपा हुआ था। हम बस झाड़ियों को ज़ोर से हिलते हुए देख पा रहे थे जैसे-जैसे वह करीब आता जा रहा था।

जो कुछ घट रहा था, वह उस सिद्धांत की पुष्टि करता है जिसे मैंने अपनी पिछली कहानियों में बार-बार दोहराया है। जंगल में कोई निश्चित नियम नहीं होते और कोई भी दो जानवर एक जैसे नहीं होते। हमारी तरह वे भी अलग-अलग प्राणी हैं; वे अलग-अलग परिस्थितियों में अलग-अलग प्रतिक्रिया देते हैं और अक्सर अप्रत्याशित घटनाएँ घटित होती हैं।

एक बार फिर कंधे से कंधा मिलाकर खड़े होकर, डॉक्टर और मैं उस आदमखोर बाघ की ओर मुड़े, जो हम पर हमला करके हमारी समस्या का समाधान कर रहा था। एक मिनट में बाघ को अपना असली रूप दिखाना ही था, और फिर सब कुछ खत्म हो जाता।

लेकिन वो पल कभी आया ही नहीं! क्योंकि राक्षस उम्मीद से कहीं ज़्यादा चालाक था। आखिरी क्षण में उसने अपना इरादा फिर बदल दिया और बिना खुद को दिखाए, हमारे और अपने भोजन के बचे हुए हिस्से के चारों ओर चक्कर लगाने लगा, और पूरी ताकत से गुर्राता और दहाड़ता रहा। अब उस जानवर की चाल साफ़ थी। हमला करने ही वाला था कि उसका साहस फिर से टूट गया। अब उसका इरादा अपने शोर से हमें भगाना था।

फिर मुझे एक विचार आया। इसकी सफलता इस बात पर निर्भर करती थी कि बाघ कितना चौकस था, उसकी याददाश्त कितनी तेज़ थी और उसकी सहज प्रवृत्ति कितनी सतर्क थी। उसने हम दोनों को आते हुए देख लिया था। यह तो स्पष्ट था। अब अगर हममें से एक चला जाए और दूसरा शिकार के अवशेषों के पास कहीं घास में छिप जाए, तो क्या बाघ को इस बात का पता चलेगा? क्या वह सोचेगा कि खतरा टल गया है और अपने शिकार की ओर लौट जाएगा? क्या वह पीछे हट रहे व्यक्ति का पीछा करके उस पर हमला करने के लिए ललचाएगा? क्या वह हमारी उस चाल को समझ जाएगा जिसमें हम पीछे रह गए व्यक्ति का पीछा करके उस पर पीछे से हमला करने की कोशिश कर रहे थे?

इस स्थिति में बहुत सी अनिश्चितताएं थीं और मैं स्वीकार करता हूं कि मुझे वे बिल्कुल भी पसंद नहीं थीं। इसके अलावा, डॉक्टर के पास केवल एक शॉटगन थी। अगर मैं उन्हें वापस जाने और मुझे पीछे छोड़ने का सुझाव देता, तो संभव था कि बाघ उनका पीछा करने का फैसला कर ले, जिससे स्टेनली को भारी नुकसान होता। दूसरी ओर, अगर मैं डॉक्टर को पीछे छोड़कर खुद चला जाता और आदमखोर बाघ मुझ

पर हमला करने के बजाय उन पर हमला कर देता, तो भी वही नुकसान होता। अंतिम उपाय के रूप में, मैं डॉक्टर को अपनी राइफल दे सकता था और उनकी बंदूक ले सकता था।

सच कहूँ तो, मुझे वह आखिरी उपाय पसंद नहीं आया। आपात स्थितियों में मैं अपनी .405 पिस्टल का इस्तेमाल करता था। इसमें कोई शक नहीं कि स्टैनली को भी अपनी शॉटगन से ऐसा ही लगता होगा। अगर हम हथियार बदल लेते, तो हम दोनों ही अपने-अपने हथियार से अपरिचित होते, और शॉटगन तो किसी आदमखोर से मुकाबले के लिए बिल्कुल भी उपयुक्त नहीं थी।

ज़ाहिर है, यही विचार स्टैनली के मन में भी चल रहे थे और उसने मेरे लिए समस्या का समाधान कर दिया। उसने मुझे फुसफुसाकर कहा कि मैं छिप जाऊं और वह चला जाएगा। बिना कुछ बोले, मैंने अपनी राइफल उसकी ओर तान दी और उसकी बंदूक छीनने की कोशिश की, लेकिन स्टैनली ने उसे मुझसे दूर कर दिया और अधीरता से झाड़ियों की ओर इशारा किया कि मैं छिप जाऊं।

बाघ अब रेंगता हुआ हमारे चारों ओर चक्कर लगा रहा था और लगातार गुर्राता और दहाड़ता जा रहा था। लगभग तीस फीट की दूरी पर एक झाड़ी थी, जिसकी ऊँचाई चार फीट से अधिक नहीं थी, और उसका आधार घास और हरियाली की घनी चादर से ढका हुआ था। वहाँ कोई और बड़ा पेड़ या चट्टान नहीं थी जो पनाह दे सके। मैं दबे पांव झाड़ी तक गया और उसके पीछे छिप गया, हथियार तैयार रखते हुए ज़मीन पर बैठ गया। हम तब तक इंतज़ार करते रहे जब तक बाघ उस दिशा के विपरीत दिशा में नहीं पहुँच गया जहाँ डॉक्टर को दो झोपड़ियों की ओर जाने वाले रास्ते पर वापस लौटना था। फिर मैंने उसे जल्दी से वहाँ से चले जाने का इशारा किया।

आदमखोर को यह बताने के उद्देश्य से कि वह जा रहा है और भोजन के लिए वापस आने का रास्ता साफ है, स्टेनली ने हल्की खांसी की और खुद से बात करते हुए धीरे-धीरे ट्रैक की ओर पीछे हटने लगा। मैंने उसे ध्यान से उस दिशा में देखते हुए देखा जहाँ आदमखोर अभी भी प्रदर्शन कर रहा था, उसकी .12 बोर की बंदूक तुरंत कार्रवाई के लिए तैयार थी, अगर जानवर हमला करता।

लेकिन स्टैनली ने बोलकर गलती कर दी थी। डॉक्टर की उम्मीद के मुताबिक, अब जब खतरा टल गया था, तो यह अनोखा जानवर अपने शिकार के पास लौटने के बजाय, एक बार फिर अप्रत्याशित काम कर बैठा। अपने शिकार के अवशेषों (और संयोग से मेरे भी) के आसपास घूमकर, बाघ डॉक्टर के पीछे चलने लगा। इससे भी बुरी बात यह थी कि उसने दहाड़ना और गुर्राना बंद कर दिया था। साफ था कि अब यह आदमखोर अपना काम करने के इरादे से आया था। उस पल वह जो भी कर रहा था, या अगले पल जो भी करने वाला था, वह चुपचाप ही करना था। स्टैनली, जिसके पास पहले से ही सिर्फ एक बंदूक थी, अब इस बात से और भी लाचार होने वाला था कि उसे पता नहीं था कि आदमखोर किस दिशा से उस पर हमला करेगा।

इस विचार ने मुझे चिंतित कर दिया। जब मेरे दोस्त की जान उस समय गंभीर खतरे में थी, तब चुपचाप झाड़ी के पीछे बैठे रहना मेरे लिए बहुत मुश्किल था। परिणामों पर विचार किए बिना ही मैंने बाघ के

पीछे चुपके से जाने का फैसला किया। उस समय मेरे इस कृत्य से बड़ी मूर्खता और कोई नहीं हो सकती थी, और मैं आपको इसका कारण बताऊंगा।

कल्पना कीजिए कि डॉक्टर एक-एक कदम पीछे हट रहा है, उसकी शॉटगन दोनों बैरल में भरी हुई है और तुरंत इस्तेमाल के लिए तैयार है, उस दिशा में निशाना साधे हुए है जहाँ उसे लगता है कि बाघ चुपके से और बिना दिखे उस पर हमला करने आ रहा है। उसे नहीं पता कि मैं झाड़ियों में अपने ठिकाने से निकलकर उसके और बाघ के पीछे आ रहा हूँ। अब खुद को बाघ की जगह पर रखिए, गुस्से के बाद अब आपने अपना संयम वापस पा लिया है। आप धीरे और चुपचाप आगे बढ़ रहे हैं, उस दखल देने वाले इंसान का अंत करने पर तुले हुए हैं जिसने आपका पीछा करने की हिम्मत की है। साथ ही, आप जानते हैं कि आप आखिरी छलांग लगाने के लिए काफी करीब हैं, लेकिन आपकी अंतरात्मा आपको चेतावनी देती है कि ऐसा करना खतरे को न्योता देना होगा। और आपको नहीं पता कि एक दूसरा इंसान भी आपका पीछा कर रहा है। उन दोनों के पीछे मैं हूँ, उतनी ही सावधानी से आगे बढ़ रहा हूँ, मेरी विंचेस्टर बंदूक भरी हुई है और बाघ की पहली झलक मिलते ही इस्तेमाल के लिए तैयार है। लेकिन मैं उसे या स्टेनली को नहीं देख पा रहा हूँ। मैं बस अपने सामने इधर-उधर झाड़ियों की हल्की सरसराहट सुन पा रहा हूँ, जैसे स्टेनली या बाघ अपनी सावधानी के बावजूद उनसे टकरा रहे हों। अंत में, यह मत भूलिए कि डॉक्टर और मेरे बीच की दूरी अब चालीस या पचास गज से अधिक नहीं हो सकती, और बाघ कहीं बीच में मौजूद है।

काश उस बाघ में थोड़ी अक्ल होती, तो उस दिन कितना मज़ा आता! उसे बस इतना करना था कि खुद को छिपा लेता और फिर दौड़ते हुए बाघ की तरह 'व्रूफ़! व्रूफ़! व्रूफ़!' की दहाड़ लगाता। स्टेनली और मैं गोली चला देते। कोई न कोई अपने साथी को गोली मार देता। शायद किस्मत से—या बदकिस्मती से—हम एक-दूसरे को ही गोली मार देते। उन दिनों मैं आज के मुकाबले कहीं ज़्यादा आसानी से खाया जा सकता था! डॉक्टर भी, भले ही उससे हल्की-सी आयोडीन की गंध आती! और अखबारों की क्या सुर्खियाँ होतीं! 'आदमखोर के पीछे शिकारियों ने एक-दूसरे को गोली मार दी! आदमखोर ने दोनों को खा लिया!'

मैं बाघ का पीछा करने में इतना मग्न था कि उस समय मुझे इन सब बातों का एहसास ही नहीं हुआ। आदमखोर बाघ, जिसे अपने पीछे आने का पता ही नहीं था, स्टैनली के पीछे लगातार लगा रहा; वहीं डॉक्टर, बाघ की धमकी भरी दहाड़ों के बाद छाई खामोशी से स्वाभाविक रूप से चिंतित था, क्योंकि बाघ के पीछे आने पर बीच-बीच में हल्की-सी सरसराहट सुनाई दे रही थी। वह सोच रहा था कि क्या वह हमले से पहले झोपड़ियों तक पहुँचने वाले रास्ते पर पहुँच पाएगा।

फिर कुछ ऐसा हुआ! डॉक्टर! डॉक्टर मौके पर पहुँच गए। बाघ ने दहाड़ते हुए सन्नाटा तोड़ दिया! कुछ दिखाई नहीं दे रहा था, लेकिन सब कुछ सुनाई दे रहा था, इसलिए मैं तुरंत समझ नहीं पाया कि आदमखोर डॉक्टर पर हमला कर रहा है या मुझ पर। डॉक्टर ने गोली चलाई और उनकी बंदूक से निकली गोलियां झाड़ियों के बीच से मेरे बेहद करीब आकर बिखर गईं। आवाज़ से भयभीत बाघ घबरा गया, मुड़ा

और पूरी रफ्तार से मेरे पास से भाग निकला। मैंने बाघ को आते देखा, राइफल को कंधे पर रखा और लगभग बिल्कुल करीब से ट्रिगर दबा दिया।

स्टैनली ने कुछ मिनट बाद मुझे बताया कि मेरी गोली उसके सिर के बिल्कुल पास से गुज़री, बस कुछ इंच की दूरी से। उसने ज़ोर देकर कहा कि गोली उसके सिर के बाल भेदने से बस इसलिए बच गई क्योंकि वह गंजा था! अनजाने में ही उस राक्षस ने लगभग वह कर दिखाया जो वह तर्क शक्ति से नहीं कर पाया था। डॉक्टर और मैं बाल-बाल एक-दूसरे को गोली मारने से बच गए।

फिर भी हमें उम्मीद बाकी थी। हम दोनों को शिकार का अच्छा खासा अनुभव था। जब हमने ट्रिगर दबाया था, तब हम दोनों गोली चलाने के लिए पूरी तरह तैयार थे। दोनों ने बिलकुल नज़दीक से गोली चलाई थी। बाघ ज़रूर पास ही बुरी तरह घायल पड़ा होगा, शायद मर भी गया हो। हममें से किसी एक ने तो उसे कम से कम घायल किया ही होगा। उत्साह में हम इस बात को भूल गए कि मैंने स्टेनली की बंदूक से निकली गोलियों की आवाज़ सुनी थी, जबकि उसने मेरी गोली की आवाज़ सुनी थी।

हमने दूर-दूर तक खोजबीन की, लेकिन खून का एक धब्बा भी नहीं मिला। न कहीं मरा हुआ या घायल बाघ दिखाई दिया, न उसकी आवाज़ सुनाई दी! तभी हमें सच्चाई समझ में आई। यह मानना भले ही कठिन था, लेकिन सच सामने था। हम दोनों चूक गए थे, हालाँकि राक्षस लगभग हमारे आमने-सामने आ गया था। स्टेनली बहुत उदास दिख रहा था। मुझे नहीं पता कि मैं कैसा दिख रहा था; लेकिन मुझे पता है कि मैं कैसा महसूस कर रहा था!

हम चुपचाप झोपड़ियों की ओर वापस चले गए, जहाँ छिपे हुए एक आदमी और दो महिलाओं को हमने सारी घटना बताई। टैगार्थी से आधा फर्लांग दूर ही थे कि निराशा से सुन्न हो चुका मेरा दिमाग फिर से काम करने लगा।

आम तौर पर, गोलीबारी के बाद बाघ लंबे समय तक उस जगह से दूर रहता है जहाँ गोलीबारी हुई थी। याद रहे, इस बाघ पर एक बार नहीं, बल्कि दो बार गोलीबारी हुई थी! इसलिए, सभी नियमों के अनुसार, उसे उस इलाके को छोड़ देना चाहिए था और वहाँ दोबारा नहीं दिखना चाहिए था। लेकिन क्या इसके विपरीत कोई छोटी सी संभावना थी? उस बाघ ने पहले ही दो मौकों पर अपना बेहद असामान्य स्वभाव दिखाया था। वह भागा और फिर मुड़कर वापस रेंगता हुआ आ गया। और जब स्टेनली के लिए अपने शिकार तक पहुँचने का रास्ता साफ था, तब भी उसने जानबूझकर उसका पीछा किया था। क्या वह एक बार फिर अपना अनोखा स्वभाव दिखाते हुए उस जगह पर लौटेगा जहाँ, कम से कम उसकी अंतरात्मा तो यही कहती है, वह दो बार बाल-बाल बचा था? इसकी संभावना 99 प्रतिशत थी। यानी बाघ के वापस लौटने की मात्र एक प्रतिशत संभावना थी!

यह ख्याल आते ही मैं थम गया। डॉक्टर भी रुक गए, सोचने लगे कि क्या बात है। मैंने उन्हें बताया। स्टेनली ने सोचते हुए अपनी भौंहें सिकोड़ीं और माथे पर शिकन डाली। फिर उन्होंने सिर हिलाया। लेकिन

वह खुद भी इतने अच्छे शिकारी थे कि इस मौके को गंवाना नामुमकिन नहीं था। इसलिए हम वापस झोपड़ियों की ओर चल पड़े।

सुरक्षा के लिए एक झोपड़ी में बंद उस आदमी और दोनों महिलाओं को हमारी जल्दी वापसी देखकर आश्चर्य हुआ। जब हमने उन्हें बताया कि हम क्यों आए थे, तो वे सचमुच खुश हुए। लेकिन उन्होंने ईमानदारी से कहा कि उन्हें नहीं लगता कि हमारे सफल होने की कोई उम्मीद थी। उस आदमी का मानना था कि बाघ अब तक कई मील दूर जा चुका होगा।

स्टैनली और मैं उस जगह पर वापस लौटे जहाँ आदमखोर बाघ के शिकार के अवशेष बिखरे पड़े थे। हमने उस जंगल के हिस्से से गुजरते हुए अत्यधिक सावधानी बरती, जहाँ डॉक्टर, बाघ और मैंने लुका-छिपी का अपना अजीब खेल खेला था। हमारे शिकार का न तो कोई निशान था और न ही कोई आवाज़।

हम सबमें राहत और निराशा का एक अजीब मिश्रण भर गया, राहत इस बात की कि राक्षस ने दोबारा हमला नहीं किया और निराशा इस भावना से कि वह शायद कभी वापस न आए।

मैंने छिपने की संभावनाओं का जो सर्वेक्षण किया था, वह भले ही जल्दबाजी में किया गया था, लेकिन उसमें संभावनाओं का सही-सही आकलन किया गया था। डॉक्टर के पीछे हटने के दौरान मैं जिस चार फुट ऊँची झाड़ी के पीछे खड़ा था, उसके अलावा छिपने की कोई और जगह नहीं थी। दिन के उजाले में आदमखोर बाघ से बचने के लिए उस झाड़ी के पीछे छिपना, जैसा कि मैंने पहले भी किया था, एक बात थी; लेकिन अंधेरा होने के बाद वहाँ टिके रहना बिलकुल अलग बात थी। बाघ, जो रात में देख सकता है, मुझे तुरंत देख लेगा जैसे ही वह अपने शिकार के बचे हुए हिस्से की ओर उस झाड़ी के ठीक सामने से छोड़कर किसी भी कोण से आएगा, जिसके पीछे मैं छिपा रहूँगा, जबकि मेरे लिए उसे देखना नामुमकिन होगा। इसके अलावा, अगर कुछ ही घंटे पहले दो बार गोली लगने के बावजूद वह वापस आ भी जाता है, तो आदमखोर बाघ निस्संदेह बेहद सावधानी से आएगा और मैं उसे सुन नहीं पाऊँगा। अंत में, उस छोटी सी झाड़ी के पीछे किसी भी तरह का आश्रय बनाना संभव नहीं था जिससे मेरी मौजूदगी का तुरंत पता न चल जाए।

मैं क्या कर सकता था? आदमखोर बाघ के वापस आने की उस छोटी सी संभावना को भी मैं छोड़ना नहीं चाहता था। आत्महत्या करना, और वह भी बाघ के जबड़ों में सबसे दर्दनाक तरीके से, तो मैं और भी ज्यादा अनिच्छुक था।

हम चुपचाप इस मामले पर विचार करते रहे और कोई हल निकलता नहीं दिख रहा था, तभी अचानक डॉक्टर को एक विचार आया। क्या पास की झोपड़ियों में रहने वाले उस आदमी और दो महिलाओं की मदद से, ठीक उसी जगह पर एक संकरा गड्ढा खोदना संभव नहीं होगा जहाँ मानव अवशेष बिखरे हुए थे? वह उस गड्ढे में छिप जाएगा जो उसे छुपाने के लिए काफी चौड़ा और गहरा होगा, बाघ के लौटने का इंतजार करेगा और फिर उसे बिल्कुल करीब से गोली मार देगा।

इस योजना को अमल में लाने में कई बाधाएँ आईं। पहली बाधा यह थी कि बाघ को गड्ढा दिख जाए और वह भाग जाए; इससे भी बुरी बात यह थी कि बाघ उसकी जाँच-पड़ताल करने का फैसला कर ले।

दूसरी बात यह थी कि गड्ढे में छिपा आदमी बाघ से छिपा हुआ था, लेकिन बाघ भी उस आदमी से छिपा हुआ था, जिसे बाघ पर गोली चलाने के लिए सीधा खड़ा होना पड़ता। इस दौरान बाघ उसे देख लेता, मानो वह ज़मीन से बाहर निकल रहा हो। ऐसा होने पर बाघ डर तो जाता, लेकिन साथ ही साथ बहुत गुस्सा भी हो जाता। इसके बाद क्या होता, यह इस बात पर निर्भर करता कि ऊपर बताई गई प्रतिक्रियाओं में से कौन सी हावी होती है।

खैर, इसके बारे में और सोचने का कोई फायदा नहीं था। मौका और जोखिम उठाना ही पड़ेगा, नहीं तो पूरी योजना रद्द करनी पड़ेगी। समय बीत रहा था और दोपहर के 3 बज चुके थे। हमें जल्दी काम करना होगा। हम जल्दी से झोपड़ियों में वापस गए, जहाँ रहने वालों ने खुशी-खुशी हमारी मदद करने की पेशकश की, लेकिन बताया कि उनके पास खोदने के लिए किसी भी तरह के औजार नहीं हैं। डॉक्टर, जो गाँव के चिकित्सक के रूप में काफी प्रभावशाली थे, ने इस समस्या का समाधान निकाला और तुरंत टैगार्थी लौट गए। वहाँ से वे कुछ ही समय में छह सहायकों के साथ वापस आ गए, जिनमें से दो के पास कुल्हाड़ी, दो के पास लोहे की छड़ें और दो के पास बड़ी टोकरियाँ थीं जिनमें खोदी गई मिट्टी को इकट्ठा किया जा सके। पहले के तीन सहायकों और हमारे साथ, हम ग्यारह लोग काम पर लग गए, और नतीजा यह हुआ कि आश्चर्यजनक रूप से जल्दी ही गड्ढा खोद दिया गया और सारी मिट्टी निकालकर दूर फेंक दी गई।

मुझे पता था कि योजना के जनक होने के नाते, स्टेनली ने खुद बैठने के लिए गड्ढा तैयार किया था। मुझे यह भी पता था कि कितना भी समझाने पर भी वह नहीं मानेगा। अगर मैं उसे यह समझाने की कोशिश करता कि उसकी शॉटगन इतने खतरनाक शिकार के लिए कारगर हथियार नहीं है, तो वह जवाब देता कि इतनी नज़दीकी दूरी पर तो यही सही हथियार है। और मैं उसके दावों की सच्चाई को नकार भी नहीं सकता था, क्योंकि वास्तव में, बिल्कुल नज़दीकी दूरी पर .12 बोर की बंदूक के अपने फायदे होते हैं। इसलिए मैंने एक बार के लिए निष्क्रियता को स्वीकार कर लिया और टैगार्थी में रात बिताई।

मेरे साथ रवाना होने से पहले हमारे सहायक अपना औजार समेट ही रहे थे कि किस्मत ने एक बार फिर इस विचित्र घटनाक्रम में अपना खेल खेला। दो आदमी अचानक हमारे सामने आ गिरे, जो डॉक्टर की तलाश में टैगार्थी से दौड़ते हुए आए थे। एक गांव का पटेल था, जो इतने ज़िम्मेदार पद के लिए काफी युवा था; दूसरा उसका नौकर था। पटेल ने बताया कि उसकी गर्भवती पत्नी कुएं से पानी का घड़ा लाते समय फिसलकर गिर गई। उसका गर्भपात हो गया है और उसे बहुत खून बह रहा है। डॉक्टर को तुरंत आना चाहिए।

जब वह बोल ही रहा था, तभी उस युवक ने स्थिति का जायजा लिया और समझ गया कि स्टेनली बाघ का सामना करने के लिए तैयार हो रहा है। इसलिए अपनी बात को और प्रभावी बनाने के लिए, वह ज़ोर-ज़ोर से विलाप करने लगा कि डॉक्टर, जो उसका सबसे अच्छा दोस्त है, उसे तुरंत उसकी पत्नी की जान बचाने के लिए आना चाहिए, और साथ ही साथ उसने उस औरत को ज़िद्दी औरत कहकर कोसना शुरू कर दिया। उसने कितनी बार उसे वज़न न उठाने के लिए कहा था, खासकर कुएँ से पानी का घड़ा। क्या वह गाँव का

मुखिया नहीं था? क्या उसके पास इस काम के लिए पर्याप्त नौकर नहीं थे? फिर भी अपनी ज़िद्दीपन में वह उसकी बात नहीं सुनती थी। अब यही नतीजा निकला। और बाघ की बात छोड़ो; क्या उसकी पत्नी की जान ज़्यादा महत्वपूर्ण नहीं थी?

स्टैनली ने मेरी तरफ देखा, उसके चेहरे पर निराशा साफ झलक रही थी। फिर उसने प्यार से मेरा हाथ कसकर पकड़ लिया।

'शुभकामनाएं, एंडी,' उसने बुदबुदाते हुए कहा, 'और कृपया सावधान रहना। क्या तुम मेरी बंदूक का इस्तेमाल करना चाहोगे?'

'धन्यवाद, डॉक्टर,' मैंने जवाब दिया, 'आप जानते ही हैं। बूढ़ी विनी से काम चल जाएगा।'

एक मिनट के भीतर ही स्टैनली और समूह के बाकी सदस्य, जिनकी संख्या बढ़कर बारह हो गई थी, नज़रों से ओझल हो गए। मैं मृत व्यक्ति के अवशेषों के साथ अकेला रह गया।

शाम ढलने लगी थी और एक पल भी गंवाने का समय नहीं था। मैंने तैयार किए गए गड्ढे में प्रवेश किया, तल पर बैठ गया और ऊपर आसमान के एक वृत्त को देखने लगा। मैंने अपनी भरी हुई और तैयार विंचेस्टर पिस्तौल को इस तरह झुकाया कि उसका बट मेरी दाहिनी जांघ से सटा हुआ था और फोरसाइट-गार्ड मेरे सामने वाले गड्ढे की दीवार से टिका हुआ था। हमने स्टैनली की .12 बोर की बंदूक को एक खास स्थिति में मापकर यह सुनिश्चित कर लिया था कि उसका अगला सिरा जमीन से ऊपर दिखाई न दे।

जिस योजना को बनाने और उसे अंजाम देने की जल्दबाजी और उत्साह में, जो अब मुझे धीरे-धीरे समझ में आने लगी थी कि काफी अजीब थी, हम इस बात को भूल गए थे कि गड्ढे के अंदर बहुत गर्मी होगी। आसपास की मिट्टी दिन भर सूरज की किरणों के संपर्क में रही थी, हवा अंदर नहीं जा पा रही थी, और मेरा शरीर गड्ढे के किनारों के बिल्कुल करीब होने के कारण, हवा का संचार कहीं भी नहीं हो पा रहा था। जल्द ही मुझे बहुत पसीना आने लगा।

सौभाग्य से उन दिनों टैगार्थी के आसपास या मैसूर राज्य के उत्तर-पश्चिम में स्थित किसी भी जिले में जंगली हाथी नहीं थे। वे ऐसे दिन थे जब सैकड़ों बाघ घूमते थे, लेकिन अब परिस्थितियाँ बदल गई हैं और मांसाहारी जानवर दुर्लभ हो गए हैं, लेकिन अपने जंगली रूप में 'जंबो' ने उन जंगलों में अपना विचरण बढ़ा दिया है और हाथियों के झुंडों ने अब वहाँ अपना घर बना लिया है, जहाँ कभी कोई हाथी नहीं हुआ करता था।

मुझे याद है कि उस गड्ढे के अंदर सन्नाटा पसरा हुआ था और रात को सोने के लिए बैठते हुए मोर, जंगली मुर्गे और अन्य पक्षियों की चहचहाहट भी मुश्किल से सुनाई दे रही थी। आदमखोर बाघ की किसी हल्की सी आवाज़ से भी उसके आने की आहट सुनने की उम्मीद करना नामुमकिन था। मैं उसे तभी सुन पाता जब वह पास में दहाड़ता या गुर्राता, और वह राक्षस ऐसा करने वाला नहीं था—कम से कम मुझे यही लग रहा था, जब तक कि मुझे याद नहीं आया कि बाघ ने कुछ ही घंटे पहले ठीक ऐसा ही किया था। काश वह चुपचाप आने के बजाय फिर से ऐसा ही करता!

लगभग अंधेरा हो चुका था जब मेरे सिर के ऊपर आकाश के घेरे को पार करते हुए एक लंबी काली आकृति चुपचाप गुजरी। एक नाइटजार, पंख फैलाए, उस जगह के ऊपर से नीची उड़ान भर रहा था, जाहिर तौर पर उन कीड़ों को खाने की संभावना तलाशने के लिए जो पहले से ही इकट्ठा होकर मानव हड्डियों से लटके हुए मांस के टुकड़ों पर भोजन कर रहे थे और बाघ के दुर्भाग्यपूर्ण शिकार के शव के कुछ हिस्सों को खा रहे थे। मैं नीली मक्खियों की भिनभिनाहट सुन सकता था जो मेरे सिर के ऊपर के छेद के ऊपर से उड़कर उस गंदगी पर बैठ रही थीं, जबकि सड़ते हुए मांस की दुर्गंध, जो दिन भर धूप में तपते रहने से और भी बढ़ गई थी, जमीन से चिपकी हुई और एक अदृश्य, घिनौने तरल की तरह छेद में बहती हुई प्रतीत हो रही थी।

क्या बाघ आएगा? क्या वह तुरंत खाना शुरू कर देगा? या उसे कुछ असामान्य होने का आभास हो जाएगा? हो सकता है वह दूर किसी झाड़ी की आड़ से हमें देख रहा हो। हो सकता है उसे उसी क्षण पता चल गया हो कि उसका एक कट्टर दुश्मन, एक आदमी, कहीं जमीन में छिप गया है। अब बाघ के लिए उस दुश्मन को खोदकर निकालने और खा जाने का बेहतरीन मौका होगा। यह सोच बिल्कुल भी उत्साहजनक नहीं थी!

ऊपर जहाँ अंडाकार आकाश फैला हुआ था, वहाँ अब दो तारे टिमटिमाते हुए मुझ पर पड़ रहे थे और मैं समझ गया कि रात हो चुकी है। वे ऊपर इतने शांत और निर्मल प्रतीत हो रहे थे मानो नीचे गड्ढे में मेरी दयनीय स्थिति से बेखबर हों। मेरे विचार उन्हीं तारों पर केंद्रित हो गए और मैं सोचने लगा कि पृथ्वी के अन्य दूरस्थ कोनों में उस क्षण घट रही अन्य त्रासदियों पर भी वे तारे इतनी निष्पक्षता से टिमटिमा रहे होंगे।

अगले ही पल, वे दोनों तारे एक अशुभ संकेत देने लगे। वे दो क्रूर आँखों में बदल गए जो शत्रुतापूर्ण प्रत्याशा से मेरी ओर घूर रही थीं। किस बात की?

मैंने खुद को इस निराशाजनक विचार से मुक्त करने और कुछ और सोचने के लिए मजबूर किया। यह आश्चर्यजनक है कि खतरे में होने पर, जैसा कि मैं उस समय था, मन में कितने अजीब और अक्सर अप्रासंगिक विचार आते हैं। शायद यह प्रकृति का घबराहट से बचाव का तरीका है। मैंने सोचा कि क्या स्टेनली पटेल की पत्नी की जान बचा पाएगा।

तभी मैंने पहली बार वह आवाज सुनी: धीमी लेकिन स्पष्ट रूप से भारी सांस लेने की आवाज।

यह ज़रूर बाघ होगा! इसने मुझे ढूंढ लिया था और मेरे छिपने की जगह से मुझे बाहर खींचने के लिए पेट के बल रेंग रहा था। अनायास ही मेरा हाथ राइफल की ओर बढ़ गया। धातु और लकड़ी का स्पर्श, उस भयानक गड्ढे में हर चीज़ की तरह गर्म, मेरे मन को बहुत सुकून दे रहा था।

आवाज कुछ देर के लिए बंद हो गई। फिर अचानक एक तेज फुफकार सुनाई दी, और फिर सन्नाटा छा गया। क्या यह कोई पैंथर गुजर रहा था?

मैंने पहले ही बताया है कि इस इलाके में तेंदुओं की संख्या बहुत कम थी क्योंकि बाघों ने उन्हें खाकर यहाँ से भगा दिया था। फिर भी, यहाँ-वहाँ एक-दो तेंदु दिख जाते थे, और हो सकता है कि कोई तेंदुआ

संयोगवश वहाँ से गुजर रहा हो और उसकी नज़र शिकार पर पड़ गई हो, और वह चुपके से आगे बढ़कर एक टुकड़ा छीनने की कोशिश कर रहा हो। तेज़ साँसें और फुफकार की आवाज़ निश्चित रूप से किसी तेंदु की ही हो सकती है, जो बाघ के शिकार को चुराने के इरादे से आया हो।

काफी देर तक मुझे कुछ सुनाई नहीं दिया। फिर एक धीमी, घिसने जैसी आवाज़ आई, मानो मेरे सिर के ऊपर ज़मीन पर कुछ सरक रहा हो। क्या कोई बड़ा साँप इसका कारण हो सकता है? कोई हमाद्याद? इन जंगलों में, जहाँ की वनस्पति और जंगल दक्षिण के जंगलों से अलग, 'नम' किस्म के थे, ऐसे कई साँप पाए जाते थे।

सन्नाटा छा गया, मैं कान लगाकर हल्की से हल्की आवाज़ सुनने की कोशिश कर रहा था और आँखें ऊपर बने छेद की धुंधली रोशनी को तब तक घूरती रहीं जब तक कि उनमें दर्द नहीं होने लगा। दोनों तारे अब भी मुझ पर टिमटिमा रहे थे, लेकिन तिरस्कार से या उपहास से, यह मैं नहीं जानता था। मैंने देखा कि वे ऊपर बने वृत्त के किनारे की ओर खिसक गए थे और जल्द ही मेरी नज़रों से ओझल हो जाएँगे, जिससे पता चलता था कि जब मैंने उन्हें पहली बार देखा था तब से समय बीत चुका था। मुझे उनकी संगति की कमी खलेगी और तब मैं सचमुच अकेला हो जाऊँगा। क्या उनकी जगह दूसरे तारे ले लेंगे, मैंने सोचा?

यही विचार मेरे मन में चल रहा था कि आखिरकार सन्नाटा टूट गया। एक ज़ोरदार चटकने की आवाज़ आई और आदमखोर उस हड्डी को कुतरने लगा जिसे उसने अभी-अभी तोड़ा था।

भोजन करते हुए बाघ की आवाज़ उसके मूड को दर्शाती है। आमतौर पर यह अत्यंत संतुष्टि का भाव होता है, और भोजन के दौरान चबाने, कुतरने, मांस को फाड़ने और चीरने की आवाज़ें लगातार आती रहती हैं। यदि दूसरा बाघ मौजूद हो, या शिकारी बाघिन अपने शावकों के साथ हो, तो बहुत गुर्राहट और लड़ाई होती है, साथ ही दूसरे बाघ या शावक के बहुत करीब आने पर धमकी भरे गुर्राने की आवाज़ें भी आती हैं। माँ का प्यार बहुत गहरा होता है—और ऐसे उदाहरण भी हैं जहाँ बाघिन ने अपने शावकों के लिए अपना जीवन बलिदान कर दिया है—लेकिन खाने के समय, सहज प्रवृत्ति बाघिन को बताती है कि भोजन को जल्दी साझा नहीं करना चाहिए, और उसे अपने साथी, या यहाँ तक कि अपने शावकों को भी पास आकर बचा हुआ भोजन खाने देने से पहले पेट भरकर खाने के लिए प्रेरित करती है।

मेरे ऊपर मंडराता बाघ गुर्राने लगा। तब मुझे समझ आ गया कि वह अकेला नहीं हो सकता। शायद उसके साथ उसके बच्चे हों, या शायद कोई दूसरा बाघ भी हो। स्थिति बेहद जटिल थी और मेरी उम्मीद से कहीं ज़्यादा पेचीदा। शाम को जब स्टैनली के मन में गड्ढे में बैठने का विचार आया था, तब हममें से किसी ने भी इस संभावना पर विचार नहीं किया था।

मैंने आगे क्या करना है, इस बारे में बहुत सोचा। ज़ाहिर है, बाघ पर निशाना लगाने के लिए, मुझे पहले उसे छेद के किनारे से झाँककर देखना होगा और फिर राइफल को छेद से बाहर निकालकर ज़मीन पर रखकर निशाना साधना होगा। इस पूरी प्रक्रिया में काफ़ी हलचल करनी पड़ेगी; शायद कोई आवाज़ भी निकल जाए; राइफल ज़मीन से टकरा सकती है। चरता हुआ जानवर मुझे सुन लेगा और मेरे हथियार को

निकालने से पहले ही हमला कर देगा। अगर बाघ का मुँह दूसरी तरफ़ हो, तो शायद उसकी नज़र से बचने की थोड़ी सी उम्मीद हो सकती है।

लेकिन वहाँ एक दूसरा बाघ भी मौजूद था। अगर मेरे सिर और कंधों को, और फिर राइफल को ज़मीन से निकलते हुए देख लेते, तो शावक भी भेद खोल देते। यह सोचना तो कल्पना और भाग्य पर बहुत ज़्यादा निर्भर था कि मेरे ऊपर मौजूद सभी जानवर मेरी तरफ पीठ करके गलत दिशा में देख रहे होंगे। और अगर मेरे ऊपर दो बाघ हों, तो उनमें से आदमखोर कौन होगा? यह तो एक बेतुका सवाल है: ज़ाहिर है, जो खा रहा होगा वही। लेकिन क्या दोनों बाघों में आदमखोरी की आदत थी, या सिर्फ़ एक में? मुझे गलत बाघ को नहीं मारना चाहिए। इसलिए, कोई जोखिम न लेते हुए मुझे दोनों को गोली मारनी होगी।

दूसरा विकल्प यह था कि चुपचाप गड्ढे में बैठा रहूँ, जानवरों को अपना भोजन समाप्त करने दूँ और फिर उन्हें अपने काम पर जाने दूँ, और फिर दिन समाप्त कर दूँ। लेकिन मैं यहाँ आदमखोर बाघ को मारने आया था; उससे छिपने नहीं। मैंने उस आदमी के बारे में सोचा जिसे उसने मारा था और अब खा रहा था। जब स्टैनली और गाँव वाले सुबह आकर देखेंगे कि ज़मीन बाघ के पैरों के निशानों से ढकी है, उस आदमी के टुकड़े पूरी तरह से खा लिए गए हैं, और मैं गड्ढे में छिपा हुआ हूँ, तो वे मेरे बारे में क्या कहेंगे?

मैंने मन ही मन कहा, "चलो शुरू करते हैं," और एक-एक मिलीमीटर करके, अगर इतनी धीमी गति से चलना सचमुच संभव हो सकता है, तो मैंने अपने पैरों को सहारा देने के लिए सही जगह पर रखना शुरू किया। फिर धीरे-धीरे, बहुत धीरे-धीरे, मैंने खुद को ऊपर उठाना शुरू किया, अपने सिर को ज़मीन के स्तर तक लाने की कोशिश की। इसमें ही काफी समय लग गया, क्योंकि मुझे ज़रा सी भी आवाज़ नहीं करनी थी, और इतनी देर तक घुटनों के बल बैठने से मेरी जांघें और टांगें अकड़ गई थीं। बाघ खाना खाता रहा, बीच-बीच में गुर्राता और दहाड़ता रहा ताकि दूसरे बाघ को, या शायद उसके शावकों को, दूर रख सके।

अंततः मैं घुटनों और पंजों के बल आ गया और अपने दोनों हाथों को नीचे की ओर फैलाकर अपनी फैली हुई उंगलियों पर अपना वजन टिकाने की कोशिश की। फिर बहुत धीरे-धीरे मैंने खुद को ऊपर उठाना शुरू किया।

समय बीत चुका था और मेरे हाथों और पैरों पर पड़ने वाला तनाव दिखने लगा था। लेकिन मुझे जल्दी नहीं करनी चाहिए। अब भी, जैसे-जैसे मेरे कान ऊपर की सतह के करीब आते गए, बाघ की दहाड़ें और तेज़ होती गईं। मैं डरने लगा था।

अपने वजन को संभाले रखने के लगातार तनाव से मेरे हाथ कांपने लगे थे, तभी मुझे एहसास हुआ कि मेरा सिर लगभग ज़मीन के स्तर तक पहुँच गया है। मैं और देर नहीं कर सकता था, क्योंकि अगर बाघ या बाघ मेरी तरफ देख रहे होते तो वे मुझे देख लेते, जबकि मैं उन्हें नहीं देख पाता। इसलिए मैंने जल्दी से अपना सिर ऊपर उठाया, जब तक कि मेरी आँखें ज़मीन के स्तर तक नहीं पहुँच गईं।

मेरे सामने एक भयानक दृश्य प्रकट हुआ। सौभाग्य से, इतने लंबे समय तक गड्ढे के अंधेरे में बैठे रहने के कारण मेरी आँखें अँधेरे की आदी हो गई थीं, इसलिए मैं देख सका कि कुछ ही फीट की दूरी पर,

एक विशालकाय बाघ पेट के बल लेटा हुआ था और अपने अगले पंजों के बीच पकड़े हुए शिकार के किसी हिस्से को चबा रहा था। इससे भी बुरा यह था कि एक और आकृति, जो पूरी तरह से फैली हुई थी, मुझसे थोड़ी दूर और शिकार कर रहे बाघ से कुछ फीट की दूरी पर, उसके सामने थी और चिंतित होकर देख रही थी कि बाघ कैसे एक के बाद एक निवाला निगल रहा है। यह दूसरा बाघ, जो पहले बाघ के सामने था, मेरी ओर भी देख रहा था और मेरे सिर का ऊपरी हिस्सा ज़मीन से बाहर निकलते हुए देखना उसके लिए असंभव नहीं था।

उसने हैरानी से गुर्राया और झट से अपने पैरों पर खड़ा हो गया। मैं एक खिलौने की तरह अपने बिल में घुस गया, अपनी राइफल उठाई और ऊपर की ओर देखा, यह उम्मीद करते हुए कि शायद एक या दोनों बाघ बिल के मुहाने पर हमला कर रहे हों। मैं सोच रहा था कि चुपचाप बैठा रहूँ या जल्दी से खुद को और राइफल को ज़मीन पर उठाकर गोली चलाने का जोखिम उठाऊँ, लेकिन मुझे याद आया कि बाहर एक नहीं बल्कि दो बाघ थे। इसलिए मैंने डर के मारे अपना इरादा बदल दिया और चुपचाप बैठे रहने का फैसला किया।

यह सब कुछ ही सेकंडों में घट गया, लेकिन उस दौरान दावत उड़ा रहा बाघ निष्क्रिय नहीं रहा। अपने साथी की गुर्राहट सुनकर और उसे उछलते हुए देखकर, इस जानवर को यह पता नहीं था कि मेरे दिखने के कारण ही वह उत्तेजित हुआ था। उसने सोचा कि उसके साथी ने शिकार में हिस्सा पाने के लिए लड़ने का फैसला कर लिया है। फिर एक और ज़ोरदार दहाड़ सुनाई दी, जिसके बाद एक भयानक शोर मच गया, क्योंकि दावत उड़ा रहा बाघ, जो स्पष्ट रूप से आदमखोर था, उस बाघ पर टूट पड़ा जिसने मुझे देख लिया था।

मैंने मन ही मन कहा, अब मेरा मौका है, क्योंकि उनका ध्यान इतना भटका हुआ था कि वे मुझे नोटिस ही नहीं करेंगे।

मैंने झट से खुद को उठाया। पहले राइफल, फिर सिर और कंधे ज़मीन पर आ गए। एक पल के लिए, जानवरों की लड़ाई से उठी धूल के कारण मैं कुछ भी देख या कर नहीं पा रहा था। लेकिन न तो कोई बाघ नज़र आ रहा था और न ही कोई गुर्राहट या दहाड़ सुनाई दे रही थी।

मुझे समझ नहीं आया। शायद दूसरा बाघ पहले बाघ का पीछा करते हुए भाग गया हो। लेकिन अगर ऐसा होता, तो मुझे कम से कम कुछ आवाज़ें तो सुनाई देनी चाहिए थीं, जैसे एक जानवर दूसरे को भगा रहा हो, गुर्राहट और दहाड़। शायद उन्होंने राइफल देखी हो, या फिर मेरे सिर का ऊपरी हिस्सा छेद से बाहर निकलते देखा हो, और इस अचानक दृश्य को देखकर भाग गए हों। तब भी गुर्राहट और दहाड़ की आवाज़ें आनी चाहिए थीं; कम से कम जाने की कुछ आवाज़ें तो आनी चाहिए थीं।

जंगल एकदम शांत था। मुझे समझ नहीं आ रहा था; यह बहुत अजीब था। तभी मेरे मन में ख्याल आया कि अगर आदमखोर ने अपने साथी को भगा दिया है, तो वह बचे हुए शिकार को खत्म करने के लिए

ज़रूर वापस आएगा। इसलिए मैं वापस बिल में छिप गया और उसके लौटने और खाने की आवाज़ें सुनने का इंतज़ार करने लगा।

मेरा इंतज़ार व्यर्थ गया। लगभग आधा घंटा बीत चुका था कि मुझे एक तेज़, लगातार चीख सुनाई दी। इसने सन्नाटा तोड़ दिया, आवाज़ तेज़ होती गई, फिर सिसकियों में बदल गई और शांत हो गई। फिर मुझे दूसरी चीखें और चिल्लाहटें सुनाई दीं, और एक गहरी और तीखी आवाज़ भी सुनाई दी। ये आवाज़ें पास की दो झोपड़ियों में रहने वाले उस आदमी और दो महिलाओं में से एक की थीं। वे मदद के लिए चिल्ला रहे थे।

तभी मुझे समझ आया कि क्या हुआ था। दूसरी औरत को आदमखोर बाघ ले गया था! अपने साथी को दावत से भगाते हुए, या शायद मेरी राइफल और मुझे ज़मीन से निकलते देख तेज़ी से भागते हुए, वह आदमखोर बाघ उन दो झोपड़ियों के पास से ज़रूर गुज़रा होगा जहाँ वह आदमी, उसकी पत्नी और मृत बाघ की विधवा पनाह लिए हुए थे। लेकिन उस राक्षस ने अपना दूसरा शिकार कैसे पाया? शायद वह इतने गुस्से में था कि उसने उसे उस झोपड़ी से घसीट कर बाहर निकाल लिया जिसमें वह सो रही थी। यह बाघ इतना भूखा तो बिल्कुल नहीं था कि ऐसा करे, क्योंकि वह तो इतनी देर से दावत उड़ा रहा था।

मैं असमंजस में था कि क्या करूँ। क्या मुझे वहीं रहना चाहिए, या झोपड़ियों की ओर जल्दी जाना चाहिए? दोनों ही स्थिति में, मैं कुछ खास नहीं कर सकता था। इस बात की बहुत कम संभावना थी कि आदमखोर सांप अपने पहले शिकार की हड्डियों पर वापस लौटेगा, जब उसके पास एक नया शिकार मौजूद होगा। और अंधेरे के कारण मैं दूसरे शिकार को अंजाम नहीं दे पाऊँगा। वह तो सूर्योदय के बाद ही संभव होगा।

मैंने वहीं रुकने का फैसला किया। यह संभव था कि दूसरा बाघ—जिसे भगा दिया गया था—मेरे ऊपर पड़े थोड़े से अवशेषों की ओर लौट आए। अगर ऐसा हुआ तो मैं गोली चला दूंगा; भले ही वह स्वयं राक्षस न हो, यह दूसरा बाघ निश्चित रूप से समय के साथ आदमखोर बन जाएगा। मुझे याद आया कि कुछ ही समय पहले वह बेचैनी से मानव अवशेषों को खाने के अवसर की प्रतीक्षा कर रहा था, हालांकि दावत उड़ाते हुए आदमखोर ने उसे रोक रखा था।

उसके बाद मैंने पूरी रात नींद नहीं ली, असहनीय गर्मी और मेरे घर में डेरा डाले हुए छोटी-छोटी चींटियों और अन्य कीड़ों के डंक से परेशान था। कुछ भी नहीं हुआ, और लगभग चार बजे तक सन्नाटा छाया रहा। तभी एक लकड़बग्घे ने मेरे ऊपर पड़ी हड्डियों को खोज निकाला और हंगामा मच गया। लकड़बग्घे ने बाघों की गंध सूंघ ली और जान गया कि वह चोरी का अक्षम्य अपराध करने जा रहा है। उसे यह भी पता था कि मालिक या मालिकों द्वारा पकड़े जाने का मतलब मौत होगा। इसलिए वह अपनी भूख मिटाने और मारे जाने के डर के बीच असमंजस में था, और इसी असमंजस में उसने ज़ोरदार आवाज़ निकाली, जिससे पूरे जंगल को पता चल गया कि वह एक बड़ी दुविधा में फंसा हुआ है। मैं उस जीव को तेज़ी से गोल-गोल दौड़ते हुए और हर तरह की दुविधा की अजीब आवाज़ें निकालते हुए सुन सकता था। 'ची-आह! ची-ए! ची-ए!' वह बड़बड़ाया, फिर दूर की गड़गड़ाहट जैसी गुर्राहट की आवाज़ निकाली। 'गुडू-गुडू-

ग्रू!' फिर उसने इस पूरे मामले पर शोक व्यक्त करने का फैसला किया: 'मी-ए!' "मी-ए! मी-ए!" उसने एक बिल्ली की तरह भोजन के लिए गिड़गिड़ाते हुए दयनीय स्वर में कहा।

लेकिन समस्या अनसुलझी ही रही: बाघ दिखाई नहीं दिया, लेकिन किसी भी क्षण आ सकता था, और अगर वह देर तक रुका रहा तो लकड़बग्घे का वह आखिरी पल होगा। इन सब बातों से मुझे मनोरंजन मिला और मेरा ध्यान उस भयानक त्रासदी से हट गया जो मेरे इतने करीब घटी होगी और मैं हस्तक्षेप करने में असमर्थ था।

मेरे ऊपर का खुला हिस्सा झूठी सुबह की रोशनी से थोड़ा उजाला हो गया, इससे पहले कि वह लकड़बग्घा, जो अब तक शोर मचाता रहा था, आखिरकार हिम्मत जुटाकर खाना शुरू करे। मैंने कुछ देर के लिए कुछ हड्डियों के चटकने की आवाज़ सुनी, फिर शायद उसके डरपोक दिल में डर लौट आया, क्योंकि मुझे उसके जाने की धीमी आवाज़ सुनाई दी। मैं उस बेचारे जानवर को तेज़ी से खिसकते हुए देख सकता था, उसके जबड़ों के बीच एक इंसान की हड्डी, जिसे वह बाद में चट्टानों के बीच अपने सुरक्षित ठिकाने में या ज़मीन में किसी गड्ढे में कुतरने वाला था, इस खतरे और मंडराती मौत की जगह से दूर।

मैंने असली सूर्योदय का इंतज़ार किया और फिर बड़ी सावधानी से अपनी विनचेस्टर राइफल और खुद को ज़मीन से ऊपर उठाया। रास्ता साफ़ था और मैंने अपने जकड़े हुए पैरों को उस भयानक गड्ढे से बाहर निकाला, कुछ मिनट इधर-उधर पैर पटके ताकि रक्त संचार सामान्य हो सके, और फिर झोपड़ियों की ओर चल पड़ा यह देखने के लिए कि क्या हुआ था। वहाँ मुझे एक भयानक दृश्य दिखाई दिया।

डर से कांपते हुए उस आदमी और उसकी पत्नी ने, जो अभी भी झोपड़ियों में से एक के कोने में छिपे हुए थे, मुझे एक बेहद भयावह कहानी सुनाई। आदमखोर के शिकार की विधवा के साथ, उन्होंने दोनों झोपड़ियों में से एक में सोने का फैसला किया था, जो उन्हें दोनों में से ज़्यादा सुरक्षित लगी। आदमी ने फर्श के बीचोंबीच, सभी दीवारों से बराबर दूरी पर सोने का पूरा ध्यान रखा था, जबकि उसकी पत्नी उसके बाईं ओर सोई थी। दूसरी महिला को मजबूरी में कहीं अकेले सोना पड़ा था। इसलिए वह थोड़ी दूरी पर लेट गई थी। स्वाभाविक रूप से वह थोड़ी घबराई हुई ज़रूर रही होगी, लेकिन शर्म के मारे वह आदमी के दाईं ओर नहीं लेट सकती थी, इसलिए उसे दंपति से यथासंभव दूर सोना पड़ा। इसलिए वह झोपड़ी की दीवार के पास और उनके पैरों के सामने लेट गई।

झोपड़ी तुलनात्मक रूप से छोटी थी। लगभग बारह फीट चौड़ी और बारह फीट लंबी, चौकोर थी। झोपड़ी के बीच में सो रहे पति-पत्नी के लिए छह फीट और उनके पैरों को आराम देने के लिए तीन फीट की अतिरिक्त जगह छोड़कर, दूसरी महिला दीवार से ज़्यादा से ज़्यादा एक गज की दूरी पर लेटी हुई थी। भारत के नम क्षेत्रों में ऐसी झोपड़ियों की दीवारों का निचला हिस्सा ज़मीन से कुछ इंच ऊपर रखा जाता है ताकि दीमक रात भर में उन पर चढ़कर दिन के उजाले में झोपड़ी के बड़े हिस्से को नष्ट न कर दें। इस प्रक्रिया से ज़मीन के स्तर पर चारों ओर थोड़ी सी खुली जगह रह जाती है।

झोपड़ी के बहुत करीब से गुज़रा आदमखोर जानवर, जो शायद अपने साथी का पीछा कर रहा था या मुझसे भाग रहा था, संभवतः बहुत गुस्से में था। उसने इस छोटे से छेद से सो रही महिला की एक झलक देखी होगी, या उसकी उपस्थिति को भांप लिया होगा, और उसे बाहर खींचने का फैसला किया होगा। उसने अपना एक पंजा छेद के नीचे डाला, महिला को पकड़ा और उसे बाहर खींचना शुरू कर दिया।

उसकी चीखें और विलाप, जो मैंने सुने थे, ने उसके दोनों साथियों को जगा दिया था, जिन्होंने मदद के लिए चिल्लाना और पुकारना शुरू कर दिया था। इसी बीच आदमखोर उस औरत का सिर और गर्दन झोपड़ी से बाहर खींचने में कामयाब हो गया था और उसका गला फाड़कर उसे मार डाला था। लेकिन उसका बाकी शरीर अंदर ही फंसा रह गया था, क्योंकि मरते समय वह औरत झोपड़ी की दीवार को सहारा देने वाले दो बांसों से लिपट गई थी। ये बांस टूट गए थे और उनमें से एक का सिरा उसकी साड़ी और जैकेट को छेदते हुए उसकी कमर के मांस में घुस गया था, जिससे उसका शरीर बांस की दीवार से चिपक गया था।

उसकी चीख-पुकार और उसके साथियों के शोरगुल से मचे कोलाहल ने मानो बाघ को डरा दिया हो; बाघ ने अपना इरादा बदल दिया और शिकार को छोड़ दिया। मेरे सामने पड़ी उस स्त्री का शव एक भयानक दृश्य था। बाघ के पंजों ने उसकी छाती को छेद दिया था और एक स्तन को चीर कर रख दिया था। फिर उस राक्षस ने उसके गले को चीरते हुए उसकी श्वास नली को फाड़ दिया था, जिससे उसकी गर्दन की हड्डियाँ और त्वचा बच गई थीं ताकि उसका सिर पूरी तरह से धड़ से अलग न हो जाए। वह अपने ही खून के तालाब में पड़ी थी, जिसका अधिकांश हिस्सा सूखी मिट्टी में समा गया था, सिवाय कुछ जगहों पर जमे हुए खून के।

बचे हुए दो लोग, पति-पत्नी, डर से कांपते हुए झोपड़ी के एक कोने में दुबके बैठे थे, मानो किसी भी क्षण आदमखोर बाघ के लौटने की आशंका से बेहाल हों। दरअसल, वे इतने भयभीत थे कि उन्हें इस बात का भी एहसास नहीं था कि बाहर दिन का उजाला हो चुका है। मेरे आने की आहट सुनकर और यह सोचकर कि उन्होंने बाघ को लौटते हुए सुना है, वे डर के मारे कांपने लगे।

मैंने उन्हें दिलासा देने के लिए ज़ोर से आवाज़ लगाई। तभी वह आदमी और औरत झोपड़ी के दरवाज़े पर झपटे, उसे खोला और बाहर भागे, जहाँ वे ज़मीन पर गिर पड़े और डर और राहत के मारे काँपते और रोते रहे। वे पूरी तरह से बेहाल थे और अपनी कहानी सुनाने के लिए उन्हें शांत होने में काफी समय लगा।

मैं झोपड़ी में दाखिल हो चुका था और अंदर के भयानक दृश्य का जायजा ले ही रहा था कि स्टैनली और कुछ अन्य लोग, जिन्होंने पिछली शाम हमारी मदद की थी, वहाँ पहुँच गए। स्टैनली पूरी रात जागा हुआ था, लेकिन उसे मेरी राइफल की कोई आवाज नहीं सुनाई दी, जिसकी आवाज टैगार्थी गाँव तक सुनाई देती। इसलिए उसने यह निष्कर्ष निकाला कि बाघ वापस नहीं आया था—या मैं मारा गया था—और वह यह पता लगाने के लिए जल्दी कर रहा था कि क्या हुआ था।

मुझे डर है कि मेरे पहले सवाल ने डॉक्टर साहब को चौंका दिया: 'पटेल की पत्नी कैसी हैं?'

मेरी बेतुकी बात सुनकर वह थोड़ा दुखी हुआ, फिर बुदबुदाया, 'वह सुरक्षित है। लेकिन हुआ क्या है?' मैंने उसे पूरी कहानी बताई। जल्द ही हमारी योजनाएँ बन गईं।

हमने बचे हुए दोनों लोगों और उनके सामान को झोपड़ी से बाहर निकाला, जिसके लिए ज़्यादा समझाने-बुझाने की ज़रूरत नहीं पड़ी, और उन्हें सलाह दी कि वे हमारे दल के बाकी लोगों के साथ गाँव लौट जाएँ। स्टैनली दूसरी झोपड़ी में छिप जाएगा, जबकि मैं उस झोपड़ी में छिप जाऊँगा जिसमें मारी गई महिला का शव था। आम तौर पर, आदमखोर बाघ के अपने शिकार के पास लौटने की उम्मीद की जा सकती है, लेकिन चूंकि वहाँ एक दूसरा बाघ भी था जो आदमखोर हो सकता था, या शायद पहले से ही हो, इसलिए डॉक्टर उससे निपटने के लिए मौजूद रहेगा।

हमने अपनी योजना सावधानीपूर्वक बनाई। सबसे पहले, हममें से कोई भी उस दिशा में गोली नहीं चलाएगा जहाँ दूसरा छिपा हुआ है। दूसरे, अगर स्टेनली को पहले एक या दोनों बाघ दिख जाएँ, तो उसे तब तक गोली नहीं चलानी थी जब तक कि असली आदमखोर अपने शिकार के शव के पास न पहुँच जाए, ताकि मुझे असली अपराधी पर निशाना लगाने का मौका मिल सके। जैसे ही मैंने गोली चलाई, डॉक्टर को दूसरे बाघ को गोली मारनी थी, अगर वह अभी भी नज़र में हो। ये सावधानियाँ आखिरी क्षण में गलती से बचने के लिए ज़रूरी थीं, क्योंकि अगर डॉक्टर पहले गोली चला देता, तो वह गलत बाघ को गोली मार सकता था और आदमखोर भाग सकता था। हमें सबसे पहले ओग्रे को मारना था, हालाँकि मैंने जो कारण पहले ही बताए हैं, उनके चलते दूसरे बाघ को भी मारना ज़रूरी था। लेकिन आदमखोर को पहले मरना था और हम उसके भागने का जोखिम नहीं उठा सकते थे।

मैं पूरी रात नींद न आने के कारण थका हुआ था, जबकि स्टेनली उतना थका हुआ नहीं था, हालाँकि उसने रात का अच्छा-खासा समय पटेल की पत्नी की देखभाल में बिताया था। इसलिए यह तय हुआ कि मैं भोजन और कुछ देर आराम करने के लिए टैगार्थी वापस जाऊँ और तीन बजे तक लौट आऊँ। मैं डॉक्टर का दोपहर का भोजन और हम दोनों के लिए बाद में खाने के लिए कुछ खाना, साथ ही पानी, चाय और वह टॉर्च भी लाऊँगा जो स्टेनली ने अपनी बंदूक के बैरल पर लगा रखी थी। यह समझदारी भरा कदम था कि हम में से कोई एक पहरा दे, कहीं ऐसा न हो कि कोई बाघ दिन के उजाले में शिकार पर लौट आए।

तभी मेरे मन में एक और विचार आया। मैंने स्टैनली को बताया और वह मान गया। हमने एक झोपड़ी से एक बोरी ली और पहले हुए शिकार के अवशेषों की ओर चल पड़े। मेरी योजना थी कि मैं वहाँ बचे हुए सभी अवशेषों को हटा दूँ, ताकि अगर दोनों में से कोई एक या दोनों उस पुरानी जगह पर दोबारा आने की सोचें, तो उन्हें कुछ भी न मिले। इससे वे झोपड़ियों की ओर आने के लिए मजबूर हो जाएँगे, जहाँ हम छिपे होंगे।

जब हमने अपने आदमियों को यह काम करने को कहा तो थोड़ी सी अड़चन आ गई। ऊँची जाति के होने के कारण वे घबरा गए और साफ इनकार कर दिया। हमारे पास स्टैनली और मेरे अलावा कोई चारा

नहीं था कि हम यह काम खुद करें। स्टैनली को कोई आपत्ति नहीं थी, क्योंकि वह डॉक्टर था, लेकिन मेरे लिए यह एक अप्रिय काम था। मांस का जो थोड़ा-बहुत हिस्सा बचा था, वह दो दिन पुराना था और उससे भयानक बदबू आ रही थी। इसके अलावा, नीली मक्खियों ने बचे हुए मांस में अंडे दे दिए थे और तेज धूप में उनमें से अनगिनत कीड़े निकल आए थे। मांस कीड़ों के उबलते हुए ढेर से ढका हुआ था।

हमने सारे टुकड़े-टुकड़े इकट्ठा करके बोरी में डाल दिए। चूंकि हमारे किसी भी अनुयायी ने उसे छूने से इनकार कर दिया, इसलिए मुझे इस भारी बोझ को अपने कंधे पर लादकर गांव तक ले जाने का दुर्भाग्यपूर्ण काम करना पड़ा। यह देखकर आश्चर्य हुआ कि वे टुकड़े कितने भारी निकले, जबकि वे अपने मालिक का बहुत छोटा सा हिस्सा ही थे।

मुझसे भयानक बदबू आ रही थी और मैं पसीने से तरबतर था; सड़ते हुए मांस और हड्डियों से कोई चिपचिपा तरल पदार्थ बोरी से रिस रहा था। जब मैंने अपना भयानक बोझ स्थानीय पुलिस चौकी के प्रवेश द्वार पर रखा, तो वह मेरे हाथों, कंधों और गर्दन पर लगा हुआ था। पहरे पर तैनात कांस्टेबल मुझे हैरानी से घूर रहा था। अपने जीवन में पहली बार वह इतना अचंभित था कि उसने बयान नहीं मांगा। मुझे बयान अच्छी तरह याद था, लेकिन मैंने उसे याद दिलाने की परवाह नहीं की। मैं क्यों याद दिलाता? वैसे भी, जब सब-इंस्पेक्टर और मुख्यालय के अन्य अधिकारी टैगार्थी पहुंचेंगे, तो खूब हंगामा होने वाला था। हमने त्रासदी स्थल से शव क्यों हटाया था? पुलिस को कैसे पता चलेगा कि उस आदमी को बाघ ने मारा था? क्या उसकी हत्या हुई थी? शायद उसने आत्महत्या की थी? इन सवालों के जवाब बाद में देने के लिए काफी समय है। मुझे बस नहाना, खूब सारी चाय पीना, गरमा गरम खाना और थोड़ी नींद चाहिए थी।

मैं डॉक्टर के छोटे से कमरे में जल्दी से पहुँचा, जहाँ उन्होंने मुझे अपने साथ रहने के लिए आमंत्रित किया था, और उनके नौकर को एक गैलन चाय बनाने का आदेश दिया। फिर मैंने अपने बदबूदार कपड़े उतार दिए और कमीज़ धोई। उसके बाद मैंने स्नान किया, और क्या शानदार स्नान था!

कम से कम दो पौंड वजन कम होकर बाहर निकला, मैंने चाय पीनी शुरू की और लगभग दो क्वार्ट पी ही ली थी कि डॉक्टर के नौकर ने गंभीरता से सुझाव दिया कि दोपहर के भोजन के लिए थोड़ी जगह छोड़ दूं। लेकिन जब मैं मेज से उठा तो दोपहर का भोजन कुछ भी नहीं बचा था। मैंने देखा कि नौकर के मन में मेरे लिए एक नया सम्मान पैदा हो गया था, क्योंकि मैं बहुत अधिक खाने वाला व्यक्ति था।

मैंने लड़के से कहा कि डॉक्टर का दोपहर का खाना अलग रख दे और हम दोनों के लिए रात का खाना बना दे, और कहा कि मैं तीन बजे तीनों भोजन लेकर दोनों झोपड़ियों में चला जाऊँगा। उदास होकर उस लड़के ने सिर हिलाया और नाराज़गी से कहा कि दोपहर का खाना बचा ही नहीं है। मैंने सारा खा लिया था। इसलिए मैंने उसे दोपहर का खाना और दो रात का खाना बनाने के लिए पैसे दिए। और मैंने उससे कहा कि मुझे ठीक 2:30 बजे जगा दे।

जब उसने मुझे जगाया तो लगभग तीन बज चुके थे, लेकिन चूंकि भोजन तैयार था और पैक किया हुआ था, साथ ही चाय की दो थर्मस और पानी की दो कैंटीन भी थीं, इसलिए मुझे केवल डॉक्टर की टॉर्च

उठानी थी और उसे भोजन और थर्मस के साथ एक बड़े बैग में रखना था, कैंटीन और अपनी राइफल को अपने कंधों पर टांगना था और झोपड़ियों के लिए निकल पड़ना था।

तेज़ चलते हुए मैं जल्द ही वहाँ पहुँचा तो मुझे एक बहुत भूखा डॉक्टर मिला जिसे बाघों के बारे में कोई खबर नहीं थी। उसने जल्दी से अपना दोपहर का भोजन निगल लिया जबकि हमने दबी आवाज़ में अपनी योजनाओं पर चर्चा की और थोड़ा पानी पिया। चाय के थर्मस हमने रात के लिए बचाकर रखने का फैसला किया।

चार बजे हम अलग हो गए; मैं पास की झोपड़ी में गया जहाँ महिला का शव पड़ा था, अपने साथ राइफल, टॉर्च, खाना और चाय की एक थर्मस व आधा पानी लेकर, स्टेनली को दूसरी झोपड़ी में चाय, पानी और खाने के उसके हिस्से के साथ छोड़ दिया। सबसे दूर वाले छोर पर, जहाँ शव पड़ा था, उससे यथासंभव दूर जाकर, मैंने सुबह होने तक चौदह घंटे की लंबी निगरानी की तैयारी में खुद को आराम से बिठा लिया।

मुझे घंटों तक पालथी मारकर बैठने की आदत है, लगभग बिना हिले-डुले और बिना आवाज़ किए। शिकार के लिए जागते समय यह आदत बहुत ज़रूरी है। ज़रा सी भी हलचल या हल्की सी भी आवाज़ किसी भी जंगली जीव, जानवर या पक्षी को आपकी मौजूदगी का पता दे देगी। अगर आपका शिकार कोई ऐसा जानवर है जिसकी सूंघने की शक्ति बहुत तेज़ है, तो हवा की दिशा का भी ध्यान रखना होगा, और हवा जितनी तेज़ होगी, आपकी गंध उतनी ही दूर तक फैलेगी। इसी कारण भारत में हिरण का शिकार करने वाले शिकारी तेज़ हवा वाली रात में शायद ही कभी बाहर निकलते हैं। बारिश से गंध दूर तक नहीं फैलती, लेकिन बाघों को छोड़कर बाकी सभी जानवर भी बारिश से बचने के लिए आश्रय लेते हैं, और अगर बारिश बहुत तेज़ हो तो बाघ और हाथी भी अपनी गतिविधि सीमित कर लेते हैं।

चूंकि बाघों की सूंघने की क्षमता बहुत कम होती है, इसलिए मुझे इस बात की चिंता नहीं थी। मुझे बस इस बात का ध्यान रखना था कि आदमखोर बाघ मेरी मौजूदगी को न तो देख पाए और न ही उसकी आवाज़ सुन पाए। पिछली रात के घटनाक्रम और उससे हुए डर के बाद, हम उम्मीद कर सकते थे कि दोनों बाघ बहुत सतर्क होंगे। यह देखना अद्‌भुत है कि कैसे सहज प्रवृत्ति एक आदमखोर बाघ को असहाय और निहत्थे संभावित शिकार और उसकी जान लेने की कोशिश कर रहे शिकारी के बीच अंतर करने में सक्षम बनाती है।

धूप से सुरक्षित रहने के कारण शव से अभी तक दुर्गंध नहीं आ रही थी, और झोपड़ी के अंदर का वातावरण सुखद था, जिससे पिछली रात की भीषण गर्मी और तंग जगह की तुलना में काफी राहत मिली थी। मेरे चारों ओर सन्नाटा पसरा हुआ था, क्योंकि आदमखोर भालू के डर से टैगार्थी और आसपास के कई मील दूर स्थित गांवों के चरवाहों ने अपने पशुओं को चराने के लिए जंगलों में ले जाने की अपनी सामान्य आदत छोड़ दी थी।

दोपहर खामोशी में गुज़री, सिवाय मक्खियों की भिनभिनाहट के, जिन्होंने मृत शरीर को खोज निकाला था और कच्चे मांस में अंडे देने में व्यस्त थीं। शाम का अंधेरा झोपड़ी के अंदर और गहरा हो गया

और जल्द ही देखना मुश्किल हो गया, हालांकि मैं बाहर बची हुई दिन की रोशनी को देख पा रहा था, जो झोपड़ी की दीवारों के आधार और फर्श के बीच कुछ इंच की जगह से मेरे चारों ओर दिखाई दे रही थी।

पैंथर और जंगली बिल्लियों की बड़ी प्रजातियों की कमी के कारण, जंगली मुर्गे, जो आमतौर पर इन जानवरों का शिकार होते हैं, इस क्षेत्र में बड़ी संख्या में जमा हो गए थे और उनकी आवाजों के साथ-साथ मोर और मोर की आवाजों ने मुझे बताया कि सूरज डूबने वाला है। चुपचाप, मैंने रात के खाने के लिए लाया हुआ भोजन खाया और चाय पी।

कुछ देर बाद पक्षियों की चहचाहट धीमी पड़ गई, और उसकी जगह पास में मौजूद चित्तीदार हिरणों के झुंड की आवाज और थोड़ी दूर पर मौजूद एक सांभर हिरण की घुंह सुनाई देने लगी। इससे मुझे पता चला कि सूरज डूब चुका है, हालांकि अब तक मेरी झोपड़ी के अंदर काफी अंधेरा हो चुका था।

कुछ ही देर में चिड़ियों ने चिढ़ाने वाली आवाज़ें निकालनी शुरू कर दीं और घाटी के तल पर बहने वाली छोटी सी धारा में एक बगुला विलाप करने लगा। तब मुझे पता चला कि सचमुच रात हो चुकी है, और अब मुझे उस झोपड़ी के अंदर कुछ भी दिखाई नहीं दे रहा था। अगर आदमखोर भालू आकर उस औरत के शव को उठाने लगा, तो मुझे अपनी मशाल का इस्तेमाल करना ही पड़ेगा।

इससे एक समस्या खड़ी हो गई। जब मैं टॉर्च जलाता, तो उसकी रोशनी झोपड़ी की दीवार के अंदरूनी हिस्से से टकराकर मेरी आँखों में वापस आ जाती। मैं दीवार के पार या दीवार व ज़मीन के बीच के गैप से नहीं देख पाता। दूसरे शब्दों में, आदमखोर बाघ मुझे दिखाई नहीं देता। यह सोचकर मुझे चिंता होने लगी और मैंने अपनी स्थिति बदलने का फैसला किया। मैं ज़मीन पर लेट गया, जितना हो सके उस महिला के शरीर के उस हिस्से के पास जो अंदर था। इससे मुझे बहुत फायदा होता। राइफल को अपने सामने ज़मीन पर फैलाकर रखने से, बाघ के आने पर मुझे बस इतना करना होता कि राइफल की नली जानवर की दिशा में करके ट्रिगर दबा देना होता। आदमखोर बाघ जब महिला के शव को झोपड़ी से बाहर खींचना शुरू करता, तो वह शोर मचाए बिना नहीं रह सकता था, क्योंकि जैसा कि आपको याद होगा, पिछली रात की हाथापाई में झोपड़ी की दीवार के एक बांस का सिरा उसके मांस में धंस गया था। बाघ को शरीर को इस रुकावट से छुड़ाना पड़ता।

चाय की थर्मस और अपना हथियार लेकर मैं दबे पांव रेंगता हुआ उस औरत के शव तक पहुंचा और उसके बगल में लेट गया। राइफल मेरे सामने ज़मीन पर पड़ी थी, बट मेरी बगल में थी और बैरल का सिरा उसके छेद से कुछ ही इंच दूर था। अचानक मेरा कंधा किसी ठंडी, सख्त और अकड़ी हुई चीज़ से छू गया। वह शव का पैर था और मैं कुछ इंच पीछे हट गया।

तीन घंटे बीत गए और बाघ का कोई अता-पता नहीं था। दस बज चुके थे। बाघ आमतौर पर आठ बजे के आसपास अपने शिकार के पास लौट आते हैं; तेंदुआ तो उससे भी बहुत पहले लौट आते हैं, और मुझे लगने लगा था कि हमारे शिकार झोपड़ियों से दूर ही रहना चाहते हैं, तभी तीन घंटे पहले जिस पैर ने मेरे कंधे को छुआ था, उसने फिर से उसे छुआ।

इससे भी बुरी बात यह थी कि वह ठंडी, अकड़ी हुई टांग अब साफ तौर पर हिल रही थी। वह न केवल मेरे कंधे से रगड़ रही थी, बल्कि धीरे-धीरे आगे भी बढ़ रही थी।

मुझे कोई आवाज़ सुनाई नहीं दे रही थी। लेकिन पैर फिर से हिल गया! मेरे रोंगटे खड़े हो गए। दहशत ने मुझे जकड़ लिया। मैं घुटनों के बल रेंगकर उस भयानक, क्षत-विक्षत मानव आकृति से जितना हो सके दूर भागने ही वाला था जो अचानक जीवित हो उठी थी। तभी होश आया। मैं कांप रहा था और मेरे चेहरे से पसीना बह रहा था, तभी मुझे समाधान मिला। पैर और उसका मालिक न तो जीवित हुए थे, न ही अपनी मर्जी से हिले थे। आदमखोर उसे हिला रहा था!

मुझे कुछ दिखाई नहीं दे रहा था। राइफल की नली आगे करके अंधाधुंध गोली चलाने का कोई मतलब नहीं था; इससे तो बाघ डरकर कहीं और चला जाता। ज़्यादा से ज़्यादा मैं उसे घायल कर सकता था। मुझे पहले यह सुनिश्चित करना था कि मैं किस पर गोली चला रहा हूँ।

तभी मुझे अपने बहुत करीब, थोड़ा दाहिनी ओर से एक हल्की सी खरोंचने की आवाज़ सुनाई दी। मुझे अभी भी कुछ दिखाई नहीं दे रहा था। मेरा मन टॉर्च जलाने का हुआ, लेकिन मुझे याद आया कि ऐसा करने से मेरी आँखें चौंधिया सकती हैं। फिर भी, यह पता लगाना बहुत ज़रूरी था कि खरोंचने की आवाज़ कहाँ से आ रही थी और किस वजह से आ रही थी।

मैंने एक बेहद मूर्खतापूर्ण काम किया। देख न पाने के कारण, मैंने सोचा कि शायद मैं महसूस कर सकूँ कि क्या हो रहा है, और इसी सोच के साथ, मैंने अपना दाहिना हाथ बहुत धीरे-धीरे खुजली की दिशा में आगे बढ़ाया।

मुझे ज़्यादा दूर नहीं जाना पड़ा। मेरी उत्सुक उंगलियाँ किसी रोएँदार, किसी रेशेदार चीज़ से छू गईं, और अगले ही पल सब कुछ तहस-नहस हो गया। आदमखोर बाघ, शायद पिछली रात अपने शिकार के शरीर को छुड़ाने में हुई कठिनाई को याद करते हुए, या शायद लाश पर बेहतर पकड़ बनाने की कोशिश में, दीवार के नीचे की दरार में अपना पंजा बढ़ा चुका था और किसी ठोस चीज़ को पकड़ने की कोशिश कर रहा था। उसके पंजे की यही हरकत उस खरोंचने की आवाज़ का कारण थी जो मैंने कुछ देर पहले सुनी थी। जब मेरी उंगलियाँ उसकी त्वचा को छूईं, तो भूतों के बारे में न जानते हुए भी, बाघ समझ गया कि झोपड़ी के अंदर कोई जीवित प्राणी है।

एक साधारण बाघ तो भाग जाता। लेकिन वह दैत्य, जो साधारण बाघ नहीं था और हमेशा अप्रत्याशित काम करता था, अपना आपा खो बैठा। उसने एक भयानक दहाड़ मारी, फिर झोपड़ी की दीवार को अपने जबड़ों में जकड़ लिया और उसे फाड़ना शुरू कर दिया।

उसके बाद मेरा काम आसान हो गया। मेरे सामने एक बड़ा सा छेद दिखाई दिया और मेरी टॉर्च की रोशनी में एक भयानक बाघ दिखाई दिया, जिसके मुंह में अभी भी दीवार की चटाई ठूंसी हुई थी। अपने लक्ष्य तक पहुंचने के लिए बस कुछ ही इंच की दूरी बची थी, तभी मेरी .405 राइफल की गोली उसके गले में जा लगी; फिर मैं अपनी राइफल लेकर इधर-उधर लुढ़कता रहा ताकि जो कुछ भी मेरे पीछे आने वाला था,

उससे बच सकूं। मैं झोपड़ी के आखिरी छोर के पास ही था जब वह राक्षस उस छेद से अंदर घुस आया। लेकिन मेरे पास उसके सिर में दो और गोलियां दागने का समय था। मरते हुए जानवर को ज़मीन पर तड़पते देख मैं झोपड़ी के दरवाजे की ओर भागा, उसे खोलकर बाहर कूद गया, और तभी मेरे सामने एक और भयानक दृश्य आ गया।

एक और बाघ वहाँ था, लगभग बीस फीट दूर और दूर वाली झोपड़ी के एक छोर पर! लेकिन वह ज़मीन पर लेटा हुआ था, एक तरफ़ फैला हुआ और अभी भी तड़प रहा था। स्टैनली ने दूसरे बाघ को लगभग बेहद नज़दीक से, अपनी शॉटगन के दोनों बैरलों से एक साथ चलाई गई घातक गोलियों से मार गिराया था। मेरी अपनी राइफ़ल के शोर और मेरे खुद के उत्साह के कारण, मैं स्टैनली की गोलियों की आवाज़ बिल्कुल नहीं सुन पाया था।

डॉक्टर ने बाद में बताया कि उन्होंने आदमखोर बाघ की दहाड़ सुनी, उसके बाद मेरी पहली गोली चलने की आवाज़ आई। फिर झोपड़ी की दीवार के ढहने की आवाज़ आई। हमारे समझौते की अवहेलना करते हुए, वह मेरी मदद के लिए दौड़े, और वहाँ उन्होंने दूसरे बाघ को कुछ ही गज की दूरी पर उनके सामने खड़ा देखा, जो अपने साथी को देख रहा था और स्पष्ट रूप से तय नहीं कर पा रहा था कि क्या करे। उन्होंने अपनी घातक गोलियों से भरी शॉटगन की दोनों नालें बाघ के दिल में दाग दीं, जिससे वह तुरंत मर गया।

जैसा कि हमें संदेह था, आदमखोर बाघिन निकली और दूसरा जानवर उसका साथी था।

टैगार्थी में भोर तक खूब धूमधाम और जश्न मनाया गया, और अगले दिन जब यह खबर बेलुंदुर पहुँची तो बूढ़ा बुद्धिह गर्व से इतराता फिरा। क्या वह सभी जादूगरों में सबसे महान नहीं था? क्या उसके मंत्रों ने आदमखोर सांप और उसके साथी का अंत नहीं कर दिया था? बुद्धिह सचमुच बहुत खुश था। एक जादूगर के रूप में उसकी प्रसिद्धि एक बार फिर आसमान छू रही थी, और वह मुर्गे की करी की कई दावतों और बेलुंदुर गाँव की मशहूर शराब की कई और बोतलों का लुत्फ़ उठा सकता था। दोपहर तक वह बुरी तरह नशे में धुत था, जब मैंने उसे धन्यवाद देने के लिए फोन किया।

---

*नौ नरभक्षी और एक बदमाश देखें।

3

अमलिगोला का अभिजात

इस कहानी के शीर्षक से आपको लग सकता है कि जिस प्राणी के बारे में मैं आपको बताने जा रहा हूँ, वह कुलीन और भययोग्य होगा और अमलीगोला नामक स्थान से आया होगा, लेकिन शायद आप यह अनुमान न लगा पाएँ कि कहानी वास्तव में एक बहुत बड़े बाघ के बारे में है, जिसमें कुछ ऐसे गुण थे जो निश्चित रूप से कुलीनता से परे थे। आपमें से बहुत कम लोगों ने अमलीगोला के बारे में सुना होगा, क्योंकि यह मैसूर राज्य के शिमोगा जिले के सुदूर जंगलों में स्थित है और मेरी कहानी के समय यह मात्र एक छोटा सा गाँव था।

कन्नड़ भाषा में लोग उसे 'गौंडनोराई' कहते थे, जिसका अर्थ लगभग 'कुलीन' होता है। उसे यह उपाधि उस समय के उसके अप्रत्याशित व्यवहार के कारण मिली जब वह पहली बार गाँव के आसपास के घने जंगलों में प्रकट हुआ था। अफवाह थी कि वह टैगार्थी के जंगलों से आया था, जो बाघों के लिए प्रसिद्ध स्थान है और गाँव से केवल आठ मील दूर है; जबकि कुछ अन्य लोगों का कहना था कि वह करादिबेट्टा बाघ अभयारण्य से भटक गया था, जिसे उसने अपने साथियों की अधिकता और भोजन की होड़ के कारण गुस्से में छोड़ दिया था।

ऐसा लगता है कि 'गौंडनोराई' को यह सब पसंद नहीं था। बाघ प्रजाति के आम लोगों के साथ मेलजोल रखना ही काफी बुरा था, लेकिन जब अक्सर ऐसा होता था कि युवा और फुर्तीले बाघ उसका शिकार छीन लेते थे, या फिर एक नवोदित बाघिन पूरा शिकार बिगाड़ देती थी और शिकार को भगा देती थी, तो उसे लगता था कि अब बेहतर है कि वह अधिक सुरक्षित जंगलों में चला जाए, जहाँ उसकी प्रजाति के बाघ कम हों और उसके शिकार के लिए अधिक जानवर उपलब्ध हों।

आमलिगोला से लगभग दो मील दूर जंगल में एक छोटी सी पहाड़ी है जो इस गांव से टैगार्थी जाने वाले रास्ते के किनारे स्थित है, और एक शाम लगभग पांच बजे, इसी रास्ते से घर लौट रहे लकड़हारे यह देखकर आश्चर्यचकित रह गए कि एक बाघ पहाड़ी की एक चट्टानी चोटी पर आराम कर रहा था, और पश्चिम में ऊंचे सागौन के पेड़ों के पीछे डूबने से पहले सूरज की किरणों का आनंद ले रहा था, जबकि सूरज को डूबने में अभी एक घंटा बाकी था।

उन्होंने अपने कदम तेज़ कर दिए। सभी जानते थे कि ये घने जंगल बाघों का घर हैं, हालाँकि ऐसे जानवर दिन के उजाले में शायद ही कभी दिखाई देते हैं। जिस बाघ को वे अब देख रहे थे, सौभाग्य से काफ़ी दूरी से, वह एक विशालकाय जानवर था और उसकी सुस्त उदासीनता को देखकर ऐसा लग रहा था कि उसे उनकी मौजूदगी की ज़रा भी परवाह नहीं थी। वे ज़ोर-ज़ोर से बातें कर रहे थे और वह उन्हें देख और सुन

सकता था, लेकिन वह गर्म चट्टान पर लेटा रहा और बड़ी सी जिज्ञासा से अपना विशाल सिर उनकी ओर घुमाता रहा।

इसलिए लकड़हारों ने बेहतर यही समझा कि वे अंधेरा छाने से पहले ही घर लौट जाएं। सूरज डूबने और जंगल की हल्की रोशनी के अंधेरे में घुल जाने के बाद ऐसे राक्षस के सामने उनका कोई बचाव नहीं हो पाता।

इसके बाद अक्सर ऐसा होता था कि चरवाहे, लकड़हारे और वन रक्षक शाम के समय लगभग उसी समय उसी ऊंचे स्थान पर इस बाघ को धूप सेंकते हुए देखते थे और वह उन्हें बिल्कुल बेपरवाही से देखता रहता था, जब वे जंगल से गुजरते थे या उस पगडंडी का अनुसरण करते थे जो आमलिगोला की ओर जाने वाली पहाड़ी के आधार के चारों ओर घूमती थी।

उनमें से किसी को भी याद नहीं था कि उन्होंने पहले कभी किसी बाघ को ऐसा करते देखा हो। तेंदुए अक्सर उसी चट्टान पर, और दूसरी चट्टानों पर, शाम के समय धूप सेंकते हुए देखे गए थे; लेकिन बाघ कभी नहीं। बड़े मांसाहारी जानवर इतने चालाक और इतने डरपोक होते हैं कि वे राइफल की आसान गोली के सामने इस तरह खुद को उजागर नहीं करते।

धूप सेंक रहे बाघ पर किसी ने गोली नहीं चलाई, इसका बहुत अच्छा कारण यह था कि उस समय अमलीगोला में किसी के पास राइफल नहीं थी, जबकि दूरी इतनी अधिक थी कि साधारण थूथन से चलने वाली बंदूकें वहां से नहीं चलाई जा सकती थीं, हालांकि कुछ बंदूकें, बेशक बिना लाइसेंस के, स्थानीय ग्रामीणों के पास थीं।

पहले कुछ महीनों तक यह दिखने में सीधा-सादा बाघ चित्तीदार हिरणों और जंगल के अन्य जंगली जीवों पर ही ध्यान केंद्रित किए संतुष्ट रहा। फिर, जैसा कि पश्चिमी घाट के इतने करीब स्थित और भारी वर्षा वाले इस क्षेत्र में शायद ही कभी होता था, एक साल दक्षिण-पश्चिम मानसून विफल हो गया और जंगल सूख गया। घास सूख गई, खेत बंजर पड़े रहे, और घास और अनाज खाने वाले जंगली जीव उन क्षेत्रों में जाने के लिए मजबूर हो गए जहाँ थोड़ा पानी और उनके पेट भरने के लिए कुछ घास मिल सके। मवेशियों के झुंड, जो अब तक हिरणों के साथ चरते थे और बाघ द्वारा अब तक परेशान नहीं किए गए थे, अब खुद को अकेला पा रहे थे।

फिर भी, यह बाघ अपने भोजन के मामले में बहुत चुनिंदा था। वह झुंडों को छोड़कर गांव के पोस्टमास्टर-सह-स्कूल शिक्षक के खेत में भटक गया, जहां उसने मालिक के विशाल सफेद बैल को मार डाला। यह बैल हर हफ्ते बाजार के दिन उसकी गाड़ी को सागर कस्बे तक 19 मील की दूरी तक खींचकर ले जाता था। बाघ ने न केवल अपने पंजे के एक ही वार और गर्दन मरोड़कर उस विशाल बैल को मार डाला, बल्कि शिकार को अपनी पीठ पर लादकर दिन दहाड़े ही ले गया और खेत को जंगल से अलग करने वाले छह फुट चौड़े नाले को बड़ी आसानी से पार कर गया।

खेत पोस्टमास्टर के घर के पीछे था, और मालिक अपने छोटे से कुएँ पर कपड़े धो रहा था, और उसने यह सब अपनी आँखों से देखा। उसने ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाया, इस उम्मीद में कि बाघ डरकर अपना शिकार छोड़ देगा, हालाँकि इससे कोई फ़ायदा नहीं होता क्योंकि सफ़ेद बैल पहले ही मर चुका था। लेकिन, बाघ ज़रा भी विचलित नहीं हुआ। वह उसी शान से उसी गति से नाले की ओर बढ़ा, मृत बैल उसकी पीठ पर था, उसने नाले को पार किया और जंगल में गायब हो गया।

बाघ ने फिर से शिकार किया, और उसके बाद कई बार ऐसा किया, लेकिन हैरानी की बात यह है कि हर बार उसका शिकार एक अकेला, विशाल बैल या एक मोटी, सुंदर गाय होती थी। उसने कभी भी झुंडों पर हमला नहीं किया, जैसा कि उससे पहले अन्य बाघों और तेंदुओं ने किया था, जो पहुँच के भीतर पहले जानवर को चुनकर मार डालते थे।

इस बाघ ने अपने शिकार की तलाश और चयन में काफी समय बिताया, और उसे हमेशा सबसे बड़ा जानवर ही चुनना होता था, जो उसके अपने विशाल आकार के अनुपात में हो, जिसका पता उसके द्वारा खेतों और जंगल की ओर जाने वाले रास्तों की हवा से उड़ने वाली रेत में छोड़े गए विशाल पदचिह्नों से चलता है।

उस समय मैं टैगार्थी गया था, जो मेरी पसंदीदा जगह थी, जहाँ मुझे गौंडनोराई और उसके विशाल आकार के बारे में पता चला। चूंकि यह जानवर सामान्य शिकार कर रहा था, इसलिए मेरा उसे परेशान करने का कोई इरादा नहीं था, लेकिन उसके असाधारण आकार की बार-बार सुनाई जाने वाली कहानियों ने मुझे उसे देखने की उत्सुकता जगा दी।

इसलिए एक अंधेरी रात को मैं पैदल ही घने जंगल से होकर आमलिगोला जाने वाले जंगल के रास्ते पर निकल पड़ा, आपात स्थिति में राइफल मेरी पीठ पर थी, मेरे हाथ में तीन सेल वाली टॉर्च थी और मेरी जेब में कुछ अतिरिक्त सेल थे।

मुझे वह रात अच्छी तरह याद है। रास्ते में, मशाल की किरण चित्तीदार हिरणों और सांभर की हरी आँखों की रोशनी को प्रतिबिंबित कर रही थी, जो मशाल की रोशनी से बचने की कोशिश में ऊपर-नीचे हो रहे थे; जंगली सूअर की अकेली लाल आँख जो रोशनी का सामना करने से इनकार कर रही थी और भाग रही थी; एक बैल-बाइसन की चौड़ी नीली आँखों की रोशनी जो मेरे गुजरते समय उदास निगाहों से घूर रहा था; एक पैंथर की लाल-सफेद आँखों की रोशनी जो एक छोटी झाड़ी के पीछे छिप गई और फिर ऊपर से मुझे झाँक रही थी; और एक सुस्त भालू की गुलाबी-नीली आँखें जो अपने पिछले पैरों पर बैठकर मुझे देख रहा था जब मैं अपने रबर के जूतों में दस फीट से भी कम दूरी पर धीरे-धीरे गुजर रहा था।

आमलिगोला से सटे खेतों में प्रवेश करते ही मेरी मुलाकात गौंडनोराई से हुई और मैंने उसे तुरंत पहचान लिया, हालांकि मैंने उसे पहले कभी नहीं देखा था। दो विशाल प्रकाश के धब्बे चमकदार तारों की तरह सफेद-लाल रंग में चमक रहे थे, जो छोटी पहाड़ी से नीचे आती रात की हवाओं के साथ धीरे-धीरे हिलती घासों के ठीक ऊपर लटके हुए थे। ऐसा लग रहा था मानो वह सौ गज दूर हो।

यह बाघ वास्तव में विशालकाय था।

जब मैं टॉर्च की रोशनी लगातार उस पर टिकाए हुए उसे देखने के लिए रुका, तो गौंडनोराई ने बिना पलक झपकाए मेरी ओर देखा। हमारी निगाहें एक-दूसरे पर टिकी रहीं और लगभग दस मिनट तक ऐसा ही चलता रहा। फिर बाघ ने एक अजीब हरकत की। धीमी सी गुर्राहट के साथ, और उसकी आँखें अभी भी सामने से आ रही तेज किरणों में चमक रही थीं, गौंडनोराई मेरी ओर चलने लगा।

कोई साधारण बाघ ऐसा नहीं करता; वह तो उछलकर भाग जाता। कोई घायल बाघ, या यहाँ तक कि आदमखोर बनने की क्षमता रखने वाला बाघ भी ऐसा नहीं करता; वह तो भयंकर दहाड़ते हुए मेरी ओर दौड़ता, या फिर सीधे मुकाबले से बचते हुए जंगल में गायब हो जाता।

गौंडनोराई ने ऐसा कुछ नहीं किया। वह धीरे-धीरे, अडिग और दृढ़ता से मेरी ओर बढ़ा, उसके थोड़े से खुले मुंह से एक कर्कश आवाज निकली, उसके धारीदार चेहरे पर क्रोध या भय का कोई निशान नहीं था।

एक बात जल्द ही स्पष्ट हो गई। यह विचित्र जानवर, चाहे उसका कारण कुछ भी हो, स्पष्ट रूप से मशाल के बिल्कुल पास आने और यह पता लगाने के लिए दृढ़ संकल्पित था कि आखिर यह सब क्या है।

मुझे यह स्वीकार करना होगा कि उसके रवैये ने मुझे थोड़ा विचलित कर दिया। मेरा उस दरिंदे को गोली मारने का कोई इरादा नहीं था, क्योंकि उसने मानव जाति को कोई नुकसान नहीं पहुँचाया था। लेकिन जब वह मेरी टॉर्च के बिल्कुल पास आकर उसके पीछे एक आदमी को देखेगा, तो वह क्या करेगा, इसका कोई अंदाजा नहीं था।

बाघ अब पचास गज से भी कम दूरी पर था और धीरे-धीरे करीब आ रहा था, तभी मेरे मन में ये विचार कौंधे और उसके अजीब व्यवहार का कारण समझ में आया। क्रिसमस आने में सिर्फ चार दिन बचे थे और यह उनके प्रजनन का मौसम था। निस्संदेह बाघ नर था, और एक बाघिन कहीं पास ही बैठी थी, इस दृश्य को प्रशंसा भरी निगाहों से देख रही थी, क्योंकि उसकी निगाहों में गोवंडनोराई अपनी शक्ति और खतरे के प्रति अनादर का प्रदर्शन कर रहा था।

प्रजनन के मौसम में अपने नवयुवतियों के साथ बाघों का सामना होने पर वे बेहद खतरनाक हो सकते हैं। अपनी शान दिखाने की तीव्र इच्छा और प्रेम-प्रसंग में खलल डालने वाले किसी भी घुसपैठिए के प्रति उनकी स्वाभाविक घृणा, साथ ही अपने साथी को किसी भी प्रकार के नुकसान का डर, मिलकर उन्हें विनाशकारी प्राणी बना देते हैं जो घुसपैठिए, चाहे वह मनुष्य हो या जानवर, को नष्ट कर देंगे।

फिर मन में यह चिंताजनक विचार आया कि कहीं बाघिन अपने साथी की सहायता के लिए अंधेरे में मेरे पीछे-पीछे न आ रही हो। मैं अपनी टॉर्च की रोशनी गौंडनोराई की आँखों से हटाना नहीं चाहता था, कहीं ऐसा करने से वह मुझ पर हमला न कर दे; साथ ही, मेरे पीछे बाघिन की मौजूदगी की आशंका ने मुझे कोई और विकल्प नहीं छोड़ा था।

मैंने जोखिम उठाते हुए तेज़ी से पीछे मुड़ा और टॉर्च की रोशनी को जंगल में दाईं ओर एक छोटे से अर्धवृत्त में घुमाते हुए पीछे की ओर ले गया। और सच में, बाघिन ठीक वहीं थी। वह एक विशालकाय बिल्ली की तरह अपने पिछले पैरों पर बैठी थी, ठीक मेरे पीछे, अपने साथी के आने का इंतज़ार कर रही थी।

उसके बाद बाघ के अजीब व्यवहार का कारण स्पष्ट हो गया। वह बाघिन के पास जा रहा था जब मैं अचानक उन दोनों के बीच आ गया, और उसकी संभोग की तीव्र इच्छा उसे अपने इरादे से नहीं रोक पाई। मुझे इस बात का पूरा अंदाजा था कि जब वह मुझे अपने और अपनी साथी के बीच खड़ा देखेगा तो क्या करेगा। अब वहाँ से निकल जाना ही बेहतर था!

मैंने तुरंत और तेज़ी से यही किया, जितना हो सके चुपचाप और तेज़ी से बगल में हटते हुए, साथ ही टॉर्च की रोशनी बाघ पर ही टिकाए रखी। गौंडनोराई अचानक रुक गया और उसकी गुर्राहट एक तेज़ दहाड़ में बदल गई। इससे भी बुरी बात यह थी कि मुझे अपने पीछे बाघिन की दहाड़ सुनाई दे रही थी। ऐसा लग रहा था कि एक साथ हमला होने वाला है।

मैंने अपने बाएं हाथ से भरी हुई राइफल को कंधे से उतारा, बट को अपने कंधे पर टिकाया और हथियार की नली से जुड़ी दूसरी टॉर्च का बटन अपने अंगूठे से दबाया। दोनों टॉर्च की किरणें एक पल के लिए एक साथ चमकीं, और मैंने ट्रिगर पर अपनी दाहिनी तर्जनी उंगली रखने से पहले तीन सेल वाली टॉर्च को अपनी पतलून की जेब में रख लिया।

शायद दो मशालों की एक साथ जलती रोशनी ने ही आपदा को टाल दिया। हो सकता है कि गौंडनोराई को यह दृश्य पसंद न आया हो, और उन्हें अचानक दूसरी रोशनी के प्रकट होने से संभावित खतरे का आभास हो गया हो, जहाँ कुछ क्षण पहले केवल एक ही रोशनी थी। गुर्राते हुए वह तिरछे होकर अपनी साथी की ओर बढ़ा, और स्थिति को समझते हुए, मैंने दोनों मशालें जलाए रखते हुए उसके पीछे-पीछे चलना शुरू कर दिया। जैसे ही वह उसके पास पहुँचा, दोनों जानवर मेरी ओर मुड़ गए। अब सफेद-लाल आँखों के दो जोड़े गुस्से से मेरी ओर घूर रहे थे।

फिर मैं भागने के लिए पीछे की ओर चलने लगा। कहना आसान है, करना मुश्किल। क्या आपने कभी घोर अंधेरे में, घुमावदार पगडंडी पर, घनी घास और जंगल के बीच से पीछे की ओर चलने की कोशिश की है, आपके बाएं हाथ में राइफल कंधे पर अजीब तरह से टिकी हुई हो, अंगूठा टॉर्च के बटन पर दबा हो, और दाहिने हाथ में एक और टॉर्च हो जो राइफल को अपनी जगह पर रखने में मदद कर रही हो, जबकि आपके सामने दो बाघ संभोग कर रहे हों और स्वभाव से ही गुस्सैल हों?

मैं कुछ दूर तक इस चाल में कामयाब रहा, लेकिन चूंकि दोनों बाघों ने मेरा पीछा करने की कोई इच्छा नहीं दिखाई, इसलिए मैं कुछ सेकंड के लिए पगडंडी पर तेजी से चलने के लिए मुड़ा और फिर वापस आकर देखने लगा कि बाघ क्या कर रहे हैं। वे उसी जगह पर थे, जाहिर तौर पर मेरे जाने से खुश थे।

जल्द ही मैं अमलिगोला पहुँच गया और अपने मित्र मुखिया की झोपड़ी में जाकर मैंने उसे अपनी आपबीती सुनाई। मुखिया रामैया विधवा थे और उन्होंने मुझे रात भर अपने साथ रहने का निमंत्रण दिया। उन्होंने सुझाव दिया कि शायद दिन के उजाले में मैं बाघों का बेहतर ढंग से अध्ययन कर सकूँ।

कई मग दूध और कुछ बासी वड़ाई (तीखे स्वाद वाले छोटे केक) जो उसने मुझे दिए, के साथ-साथ रामिया और मैंने बातें शुरू कीं, लेकिन थोड़ी ही देर में जंगल से तेज़ दहाड़ और गुर्राहट की आवाज़ आई जिससे पता चला कि बाघों का मिलन शुरू हो चुका है। शोर काफी देर तक जारी रहा। फिर कुछ देर शांति छाई रही, जिसके बाद शोर फिर से शुरू हो गया। ऐसा तब तक चलता रहा जब तक हम सो नहीं गए।

अगली सुबह मुझे जाँच-पड़ताल करने की कोई जल्दी नहीं थी, क्योंकि मुझे पता था कि दोनों अपने कठिन मिलन सत्रों के बाद आराम कर रहे होंगे और मेरा जल्दी पहुँच जाना टकराव को जन्म दे सकता था। इसके अलावा, रामिया की झोपड़ी में बिताई बेचैन रात के बाद मुझे बहुत नींद आ रही थी।

लगभग दस बजे मैं जागा और रामिया के अब सख्त हो चुके वड़ाई के एक और दौर के बाद, कम से कम तीन कप कॉफी पीने के बाद (जो कि चाय की जगह, जिसे मैं बहुत पसंद करता) कन्नड़ गांव वालों का सामान्य पेय है, मैंने पिछली रात के शोरगुल भरे मिलन स्थल की जाँच करने की तैयारी की। रामिया ने ज़रूरी काम का बहाना बनाकर मेरे साथ आने से मना कर दिया, इसलिए मैं अकेला ही निकल पड़ा।

जिस जगह से आवाज़ें आ रही थीं, जब मैंने आखिरकार उसे ढूंढ लिया, वह शायद एक फर्लांग से थोड़ी ज़्यादा दूर थी। वहाँ पहुँचकर पता चला कि दोनों बाघों ने अपने प्रेम-संबंध में कितनी ऊर्जा लगाई थी। हालाँकि साल के इस समय ज़मीन काफ़ी सख्त होती है, फिर भी वह खरोंचों से भरी और ढेलों में खुदी हुई थी, और उछल-कूद करते जानवरों की हरकतों से छोटी झाड़ियाँ जड़ समेत उखड़ गई थीं।

इस जगह से ज़मीन घनी वनस्पति से भरी एक गहरी खाई में उतरती थी, जहाँ एक पेड़ की छाल पर खरोंच के निशान और ताज़ा गोबर के ढेर (जो पैंथर के विपरीत, बाघ मिट्टी से ढकने के बजाय खुला छोड़ देता है) उस रास्ते का संकेत देते थे जिससे प्रेमी खाई में दाखिल हुए थे। जिज्ञासावश मैंने उनका पीछा किया, हालाँकि मैं जानता था कि मैं जो कर रहा हूँ वह जल्दबाजी भरा है; इसलिए राइफल तैयार रखते हुए और हर झाड़ी के पीछे देखने की कोशिश करते हुए, मैं चुपचाप आगे बढ़ा, इस बात का ध्यान रखते हुए कि मेरे रबर के तले वाले जूते किसी सूखे पत्ते या टहनी पर न पड़ें।

जैसे ही मैं उस घाटी में उगे विशाल वृक्षों की छाया में पहुँचा, मृत्यु की मीठी-सी दुर्गंध मेरी नाक में आई और मैं समझ गया कि मैं किसी मृत जानवर के पास पहुँच रहा हूँ। कुछ ही गज आगे बढ़ने पर मुझे वह मिल गया। एक विशाल जंगली मादा सुअर के आंशिक अवशेष, जिसे गौंडनोराई ने मार डाला था और जिस पर दो बाघों ने भूख से दावत उड़ाई थी, क्योंकि बाघों को सूअर का मांस बहुत पसंद होता है। मादा सुअर होने के बावजूद, उसने संघर्ष किया था, जैसा कि जमीन पर उसके खुरों के निशानों से पता चलता था।

मैंने मादा सुअर का बहुत ध्यान से निरीक्षण नहीं किया, क्योंकि आप यकीन मानिए कि मैं चारों ओर चौकन्ना था ताकि उन भयानक प्रेमियों में से कोई भी मुझे चौंका न दे। इसी दौरान मेरी नज़र तीस गज दूर

एक जंगली बेर की झाड़ी के पत्तों के बीच से कुछ सफेद चीज़ पर पड़ी। मैं उस वस्तु के पास गया और पता चला कि वह एक मादा सांभर की श्रोणि की हड्डी थी जिसे बाघों ने पिछली रात अपने उत्पात के दौरान आधा खा लिया था। यह जानने का कोई तरीका नहीं था कि दोनों जानवरों में से - मादा सुअर या सांभर - पहले मारा गया था, लेकिन यह स्पष्ट था कि सांभर को कुछ दूरी पर मारा गया था और फिर गौंडनोराई उसे अपनी साथी के लिए उस स्थान पर लाया था, क्योंकि कोई भी जंगली जानवर उस जगह के पास नहीं आता जहाँ पहले से ही किसी का शिकार किया गया हो।

एक शाखा से नीचे उतरकर ज़मीन पर आते-जाते तीन कौवों की मौजूदगी से संकेत मिला कि थोड़ी दूरी पर एक तीसरा शिकार भी हुआ है। कौवों का ज़मीन पर उतरना इस बात का संकेत था कि कोई भी बाघ आस-पास नहीं था। यह शिकार एक चित्तीदार हिरण निकला जिसे गौंडनोराई जनजाति कहीं और मारकर घाटी में ले आई थी। हिरण का बहुत कम हिस्सा ही खाया गया था, क्योंकि तब तक बाघ इतना भर चुके थे कि वे मांस का थोड़ा-थोड़ा स्वाद चखने से ज़्यादा कुछ नहीं कर पाए।

लेकिन अभी मेरा शिकार ढूंढना खत्म नहीं हुआ था। दरअसल, चित्तीदार हिरण और मादा हिरण के शव के ठीक बीच में पड़ी एक और मादा सांभर की लाश से मेरा पैर टकरा गया। इस सांभर का बहुत कम हिस्सा बचा था, क्योंकि बाघों ने उसका अधिकांश भाग खा लिया था। अब मुझे लगभग यकीन हो गया था कि यह सांभर, न कि मादा हिरण, जैसा कि मैंने सोचा था, उन चार शिकारों में से पहला था। मादा हिरण उसके बाद आई थी, ज़मीन पर उसके खुरों के निशान बता रहे थे कि मरने से पहले उसने संघर्ष किया था। उसे मरे हुए सांभर के पास नहीं आना चाहिए था। शायद किसी बाघ ने उसका पीछा किया होगा। दूसरे सांभर और चित्तीदार हिरण को बाद में उस जगह पर लाया गया था, क्योंकि मुझे कहीं भी ज़मीन पर घसीटने के निशान नहीं दिखे, जिससे यह स्पष्ट होता कि बाघ अपने शिकारों को एक-एक करके अपनी पीठ पर लादकर ले गया था। अगर मुझे उसके आकार का और सबूत चाहिए था, तो वह यहीं था।

जंगल के रहस्यमय दृश्यों के तथ्यों को तर्क से सुलझाने में एक अजीब सी संतुष्टि मिलती है, और मुझे यह तब महसूस हुआ जब मैं अपने निष्कर्ष पर पहुँचा। वह खाई वास्तव में एक कत्लखाना थी; मौत की दुर्गंध हवा में फैली हुई थी, और अचानक मैं डर गया।

मुझे किसी चीज से आगाह हुआ कि कोई मुझे देख रहा है। मैं तेजी से पीछे की ओर भागा और एक पेड़ से पीठ टिकाकर खुद को पीछे से होने वाले हमले से बचाने लगा। फिर मैंने आसपास की हर झाड़ी और पेड़ के तने को ध्यान से देखना शुरू किया।

जैसे-जैसे दिन बीतते गए और सूरज बादलों से रहित आकाश में ऊपर चढ़ता गया, जंगल में हवा का एक झोंका भी नहीं आया। समय बीतने के साथ-साथ गर्मी बढ़ती जा रही थी, हालाँकि पेड़ों के कारण मैं उसे देख नहीं पा रहा था। सन्नाटा पसरा हुआ था; यहाँ तक कि घाटी के किनारे ऊँचे पेड़ों से आवाज़ कर रहे दो झींगुर भी अब चुप थे। कौवों ने मुझे देख लिया था और वे चुपचाप उम्मीद भरी निगाहों से सब कुछ देख रहे थे, उनके सिर थोड़े एक तरफ झुके हुए थे, चोंच थोड़ी खुली हुई थी और गर्मी से वे हाँफ रहे थे। ऐसा लग रहा

था मानो जंगल साँस रोककर बैठा हो, किसी नाटक के अगले दृश्य का इंतज़ार कर रहा हो जो किसी भी पल शुरू हो सकता था।

मेरी नजर के कोने से मैंने घास का एक नाजुक और पंख जैसा गुच्छा देखा, जो अचानक एक पल के लिए हिला और फिर स्थिर हो गया। उस उमस भरी सुबह में उसका हिलना उचित नहीं था, जब तक कि जमीन के पास तने पर किसी चीज का दबाव न पड़ा हो।

वह चीज जरूर बाघों में से एक होगी!

अधिकांश बाघ—यहाँ तक कि आदमखोर बाघ भी—अगर उन्हें यह महसूस हो जाए कि किसी इंसान ने उनकी मौजूदगी का पता लगा लिया है, तो हमला करने में हिचकिचाते हैं। वे अचानक हमला करने का फायदा उठाना पसंद करते हैं। मुझे यह अपने अनुभव से पता था, इसलिए मैंने अपनी आँखें पूरी तरह खोल लीं और उस जगह को घूरकर देखा जहाँ घास हिली थी। इससे बाघ को पता चल जाएगा कि मैंने उसकी छिपी हुई जगह का पता लगा लिया है।

एक पल के लिए मुझे कुछ दिखाई नहीं दिया। फिर घास के पीछे से दो काले उभार धीरे-धीरे उठते हुए दिखाई दिए, जिनके सिरे सफेद थे, और मैं समझ गया कि मैं एक बाघ के कान देख रहा हूँ। एक क्षण बाद, जानवर ने अपना सिर थोड़ा और ऊपर उठाया और मैं बाघों में से एक की भयानक आँखों में देख रहा था। मैं जानता था कि यह मादा बाघिन थी। उसका सिर उसके साथी के आकार के नर बाघ के सिर से बहुत छोटा था। अब बस बाघ का ही सामना करना था। वह शायद इस समय कहीं छिपा हुआ था, मुझे नहीं पता कहाँ, अचानक हमला करने के लिए हिम्मत जुटा रहा था, कम से कम इसलिए कि वह पास से देख रही बाघिन को यह साबित कर सके कि वह कितना बहादुर प्राणी है।

कुछ नहीं हुआ, बाघिन घास के ऊपर से मुझे देखती रही, और थोड़ी देर बाद मुझे उम्मीद होने लगी कि शायद वह अकेली हो। हो सकता है उसका साथी पाँचवें शिकार की तलाश में गया हो!

लगभग दस मिनट बाद बाघिन एक अजीब सी आवाज़ निकालने लगी। मैं कह सकता हूँ कि वह म्याऊँ कर रही थी, लेकिन वह आवाज़ इतनी कर्कश और भारी थी कि इस शब्द से उसका सही वर्णन नहीं हो पाता। वह अपने साथी को बुला रही थी। चूंकि उसने अब तक मुझ पर हमला नहीं किया था, यह स्पष्ट था कि बाघिन में अकेले हमला करने का साहस नहीं था। बाघ के आने पर क्या होगा, यह तो बिलकुल अलग बात होगी।

मैंने समझदारी से काम लेते हुए फैसला किया और मैं उस पेड़ के तने के पीछे छिप गया जिसके सहारे मैं अब तक खड़ा था। फिर मैं पीछे हटने लगा।

अगले ही पल मेरे पीछे खाई के ऊपर से एक ज़ोरदार दहाड़ सुनाई दी, जिससे मुझे पता चला कि बहुत देर हो चुकी है। गौंडनोराई आ चुका था। उसकी साथी की म्याऊं जैसी आवाज़ों से उसे आगाह मिला कि सब कुछ ठीक नहीं है। अब मैं उसे सूखी पत्तियों और झाड़ियों को चीरते हुए, तेज़ी से मेरी ओर आते हुए सुन सकता था।

मैं वैसे तो अच्छा पर्वतारोही नहीं हूँ, लेकिन हिम्मत ने मुझे फुर्ती दी और मैंने राइफल कंधे पर टांगे हुए बड़ी तेज़ी से पेड़ पर चढ़ गया। पहली शाखा ज़मीन से मुश्किल से आठ फीट ऊपर थी। मैं वहाँ पहुँचा और ऊपर चढ़ने की कोशिश की, तभी राइफल अजीब तरह से मेरे कंधे से फिसलकर मेरी कोहनी में आ गिरी। मैंने उसे फिर से कंधे पर टांगा, और उतनी ही तेज़ी से वह एक बार फिर नीचे फिसल गई।

गौंडनोराई मेरे पेड़ के नीचे आ पहुंचा और मेरी हरकतों से उसने ऊपर की ओर देखा और मुझे पहचान लिया। मैंने फैसला किया कि मुझे उसका सामना करना होगा और अपनी बांह में रखी राइफल को कंधे पर रखना होगा। मुझे उम्मीद थी कि वह तुरंत मुझ पर हमला करेगा, लेकिन हैरानी की बात यह थी कि उसने ऐसा कुछ नहीं किया। इसके बजाय वह जमीन पर बैठ गया, ऊपर देखा और गुर्राता रहा, गुर्राता रहा और गुर्राता रहा।

अब जब मैं इस बारे में सोचता हूँ, तो मुझे लगता है कि मैंने बड़ी मूर्खता की थी, अपना इरादा बदल लिया और ऊपर चढ़ने की कोशिश करने का फैसला किया, लेकिन फिर भी मैं ज्यादा दूर नहीं जा सका। मैं शायद सात फीट और चढ़ पाया, जब मुझे एहसास हुआ कि मैं पतली शाखाओं की सीमा तक ही पहुँच पाया हूँ। इसी समय, बाघिन, अपने साथी द्वारा दी गई सुरक्षा से आश्वस्त होकर, प्रकट हुई और उछल-कूद करते हुए उसकी ओर बढ़ी, जब तक कि वे दोनों लगभग पंद्रह फीट नीचे नहीं आ गए।

मुझे उम्मीद थी कि कोई भी बाघ मेरा पीछा नहीं करेगा, क्योंकि जिस डाल से मैं बड़ी मुश्किल से चिपका हुआ था, वह इतनी कमजोर थी कि और वजन सहन नहीं कर सकती थी। ऊपर चढ़ने की अपनी मूर्खता के कारण मैं खुद को एक खतरनाक स्थिति में डाल चुका था। मुझे अपने दोनों हाथों और घुटनों से डाल को कसकर पकड़ना पड़ा, और इससे मेरी राइफल का इस्तेमाल करना नामुमकिन हो गया, जिसे मैं कंधे से उतार भी नहीं सकता था, क्योंकि अगर मैंने अपना हाथ छोड़ा तो मैं पेड़ से गिर जाऊंगा। इसके अलावा, मेरे हाथों और पैरों की मांसपेशियों पर बहुत ज्यादा दबाव था, और मैं ज्यादा देर तक इस स्थिति में नहीं रह सकता था।

मुझे ख्याल आया कि मैं जोर से चिल्लाकर बाघों को भगाने की कोशिश करूँ। यह तरकीब शायद कामयाब हो जाए; लेकिन ऐसा भी हो सकता है कि न हो। मेरी आवाज से जानवर चिढ़ सकते हैं, खासकर बाघ, जो अब तक एक सज्जन की तरह व्यवहार कर रहा था।

कुछ मिनटों बाद दोनों बाघों ने आपसी सहमति से मामला सुलझा लिया और शांतिपूर्वक साथ-साथ चले गए। पाँच मिनट और बीतने का इंतज़ार करते हुए मैं सावधानी से नीचे उतरा, लेकिन नाले के किनारे चढ़कर गाँव की ओर चलने के बाद भी मुझे दोनों में से किसी भी जानवर का कोई निशान नहीं मिला। मैं गौंडनोराई और उसके साथी का जीवन बचाने के लिए वास्तव में आभारी हूँ।

कुछ ही समय बाद मैं टैगार्थी की ओर वापस लौट रहा था, यह सोचकर कि मैंने बाघ को आखिरी बार देखा और सुना था। लेकिन जैसा कि मुझे जल्द ही पता चला, मेरा यह विचार पूरी तरह गलत था।

बैंगलोर में आए मुझे अभी एक महीना भी नहीं बीता था कि अमलीगोला के मुखिया ने, जिनके साथ मैंने गौंडनोराई और उसके साथी की बातें सुनते हुए रात बिताई थी, मुझे एक पोस्टकार्ड लिखा। वह पोस्टकार्ड भेजने के लिए टैगार्थी तक पैदल चलकर गए थे। उन्होंने मुझे बताया कि बड़ा बाघ बहुत ही साहसी होता जा रहा है और मुझसे उसे मारने के लिए आने की विनती की। उन्होंने कहा कि गौंडनोराई के आदमखोर बनने में बस कुछ ही समय बाकी है।

मैं उन बाघों के शिकार का विरोध करता हूँ जिन्होंने कभी मनुष्य को परेशान नहीं किया है, और मैं मुखिया के उस डर को स्वीकार नहीं करने वाला था जो अभी तक हुआ ही नहीं था; गौंडनोराई बाघ शायद कभी आदमखोर न बने और मेरे पास उस जानवर को गोली मारने का कोई औचित्य नहीं था जिसने दो मौकों पर मेरी जान बचाई थी।

संयोगवश मेरे पास कुछ दिन का खाली समय था और मुझे अपने उपकारक, उस विशाल बाघ को एक बार फिर देखने से ज्यादा सुखद कोई और काम सूझ नहीं रहा था। लेकिन जब मैं अमलिगोला पहुँचा, तब तक हालात बदल चुके थे, हालाँकि रामैया के पत्र लिखे जाने के कुछ ही दिन बीते थे। वह बड़ा बाघ और भी ज्यादा साहसी हो गया था और गाँव वालों के कीमती मवेशियों को मार रहा था। रामैया पहले ही अपना सबसे अच्छा बैल खो चुका था, और अब गौंडनोराई ने उसके दूसरे सबसे अच्छे बैल को भी मार डाला।

मुखिया का धैर्य पहले से ही टूट चुका था और यह सब कुछ हद से ज़्यादा हो गया था। मेरे आने का इंतज़ार किए बिना, रामैया लगभग बीस मील दूर कुम्सी कस्बे के लिए रवाना हो गया, अपने चचेरे भाई से .12 बोर की बंदूक उधार ली और बाघ के अगले शिकार के लिए आमलिगोला के बाहरी इलाके में आने पर घात लगाने के लिए तैयार हो गया। पहले भी कई बार सफल हो चुका गौंडनोराई (बाघ) पूरी तरह से बेखबर होकर जाल में फंस गया और रामैया की उधार ली हुई बंदूक से निकली गोलियों की बौछार उसके चेहरे पर लगी। बाघ फिर भयानक दहाड़ मारते हुए भाग गया। घाव से उसका गुस्सा इतना उग्र था कि उसने खेत में ग्रामीणों द्वारा अनाज खाने वाले पक्षियों को भगाने के लिए बनाए गए बांस के चबूतरे को पूरी तरह से तोड़ दिया, जो बाघ के जंगल में वापस भागते समय उसके रास्ते में खड़ा था।

उस पूरे दिन और रात, और उसके बाद की दो रातों तक, रामैया और उसके साथियों को घायल बाघ की दर्द भरी दहाड़ें सुनने के लिए मजबूर होना पड़ा, क्योंकि वह जंगल में अपनी पीड़ा और क्रोध को व्यक्त कर रहा था, जबकि वे अपनी झोपड़ियों के अंदर दुबके हुए थे।

मुझे पता नहीं था कि क्या हुआ था, क्योंकि टैगार्थी में किसी ने मुझे कुछ नहीं बताया था। पाँचवें दिन की शाम को मैं अमलीगोला पहुँचा। आठ मील तक मैं जंगल में बेखबर चलता रहा, बिना कुछ देखे-सुने। उस रात हमें बाघ की आवाज़ नहीं सुनाई दी, लेकिन छठे दिन की सुबह रामैया के गलत समय पर चले निशाने का पहला नतीजा सामने आया।

रात के नौ बज चुके थे और मैं टैगार्थी लौटने के लिए निकलने ही वाला था कि तभी एक आदमी लड़खड़ाते हुए अमलिगोला में आया और गांव की मुख्य सड़क की इकलौती गली में गिर पड़ा। उसने

बताया कि वह और एक अन्य व्यक्ति कुछ मील दूर स्थित चोर्डी गांव से भोर से ठीक पहले निकले थे और अमलिगोला जा रहे थे, तभी अपनी मंजिल से लगभग दो मील दूर उन्होंने एक बाघ को उनका पीछा करते देखा। बाघों से परिचित होने और यह न जानने के कारण कि गौंडनोराई घायल हो गया है, वे ज्यादा विचलित नहीं हुए, लेकिन चलते समय पीछे सतर्क रहने का फैसला किया।

अगले दो-तीन सौ गज तक उन्हें कुछ भी दिखाई नहीं दिया। फिर उन्हें बाघ की एक झलक मिली, और इस बार वह उनसे तीस गज से अधिक पीछे नहीं था। जानवर के कुछ नुकसान पहुंचाने के इरादे को भांपते हुए, दोनों आदमी भागने लगे, तभी बाघ दहाड़ा और उन पर हमला कर दिया।

आमलिगोला में लड़खड़ाते हुए पहुंचा वह आदमी महज़ इसलिए बच गया क्योंकि वह तेज़ दौड़ रहा था। उसने बताया कि कैसे बाघ ने उसके साथी को, जो उससे बस एक गज पीछे दौड़ रहा था, तेज़ी से पकड़ लिया। उसके दोस्त की मरते समय की चीख ने उसे पीछे मुड़कर देखने पर मजबूर कर दिया और उस भाग्यशाली लकड़हारे ने कहा कि उसने जो दृश्य देखा वह हमेशा के लिए उसकी याद में बसा रहेगा। बाघ का चेहरा भयानक था। वह बुरी तरह घायल था और खून से लथपथ था। उसे नहीं लगता था कि जानवर की आंखें बची थीं: उसने जिस शिकार को पकड़ा था, उस पर जो क्रूरता दिखाई थी, वह सचमुच भयानक थी। अब पीछे मुड़कर देखने की हिम्मत न करते हुए, वह आदमी अपनी पूरी ताकत से आमलिगोला की ओर भागा और बुरी तरह थककर वहां पहुंचा।

घायल गौंडनोराई ने अपना पहला शिकार मार डाला था। हमने जो सुना था, उसके अनुसार रामिया की गोलियों ने उस बेचारे जानवर को अंधा कर दिया था।

बिना देर किए, मैं उस जगह की ओर भागा जहाँ हमला हुआ था, रामैया और बचा हुआ लकड़हारा अनिच्छा से मेरे साथ आए। बाघ बहुत भूखा रहा होगा; उसने अपने शिकार का अधिकांश हिस्सा वहीं खा लिया था। फिर उसने हमारे आने की आहट सुनी होगी, क्योंकि हमारे पहुँचने से शायद कुछ ही मिनट पहले वह बचे हुए हिस्से को लेकर झाड़ियों में भाग गया। हम जानते थे कि बाघ ने पेट भरकर खाया था, क्योंकि उसके शिकार का सिर, हाथ और पैर इधर-उधर बिखरे पड़े थे, जो भरपेट भोजन का स्पष्ट संकेत था।

रास्ता ताजा था, लेकिन झाड़ियाँ घनी थीं। रामिया और लकड़हारा कन्नड़ थे और जंगल में रहने वाले या शिकारियों जैसे नहीं थे। उन्होंने आगे आने से साफ इनकार कर दिया। इसलिए मैं टूटी हुई झाड़ियों और उनके शिकार की झुकी हुई शाखाओं के सहारे उनके पीछे-पीछे चलने लगा। तेजी से आगे बढ़ते हुए आगे और दोनों तरफ अचानक हमले से बचाव करना मुश्किल था।

अपने विशाल आकार के बावजूद, गौंडनोराई ने लड़ने के लिए रुकने का फैसला नहीं किया। शायद हाल ही में लगी चोट और दर्द के कारण वह किसी अन्य सशस्त्र व्यक्ति से मुठभेड़ का जोखिम नहीं लेना चाहता था। यह आश्चर्यजनक है कि कैसे एक जंगली जानवर किसी ऐसे इंसान की मौजूदगी को भांप लेता है जो उसके लिए खतरा हो सकता है और उसे किसी असहाय, निहत्थे या शत्रुतापूर्ण विचार न रखने वाले व्यक्ति से अलग पहचान लेता है।

पगडंडी घने जंगल से होते हुए हल्की झाड़ियों में जा पहुँची, जहाँ आगे बढ़ना और भी मुश्किल हो गया, और फिर एक खड़ी ढलान से नीचे उतरते हुए, जहाँ बाघ आखिरकार एक संकरी खाई में कूद गया, जो किसी जलधारा से कम नहीं थी। यहाँ मुझे हाथों और घुटनों के बल नीचे उतरना पड़ा और कुछ ही गज के भीतर जंगल इतना घना हो गया कि आगे जाना असंभव हो गया। किसी भी हालत में, पीछा करना व्यर्थ था क्योंकि ऐसी परिस्थितियों में मैं अपने शिकार को पकड़ने की कभी उम्मीद नहीं कर सकता था।

मैं निराश तो था, लेकिन दो बातें अब निर्विवाद रूप से सिद्ध हो चुकी थीं। पहली बात, रामैया की गोलियों से गौंडनोराई पूरी तरह अंधा नहीं हुआ था। इसलिए वह मानव जाति के लिए एक बड़ा खतरा बना हुआ था और तब तक बना रहेगा जब तक वह अपने घावों से पूरी तरह उबरकर दोबारा मवेशियों और जंगली जानवरों का शिकार करना शुरू नहीं कर देता। हालांकि, ऐसा होने की संभावना बहुत कम थी, क्योंकि एक बार जब कोई बाघ मानव मांस का स्वाद चख लेता है और उसे पता चल जाता है कि मनुष्य को मारना कितना आसान है, तो वह इस आदत को शायद ही कभी छोड़ता है। दूसरे शब्दों में, यह एक आदमखोर बाघ अपने भयानक करियर की शुरुआत में था। दूसरी बात, अपने विशाल आकार के बावजूद, इस बाघ में लड़ने का जज़्बा नहीं था, इसलिए वह आम बाघों की तुलना में अधिक कायर, चालाक, मायावी और पकड़ में आना कहीं अधिक कठिन साबित होने की संभावना थी, जो आमतौर पर अधिक साहसी होते हैं और इसलिए खुद को खतरे में डालने के लिए अधिक प्रवृत्त होते हैं।

मेरी दोनों अटकलें कितनी सही थीं, यह अपेक्षाकृत कम समय में ही स्पष्ट हो गया। आमलीगोला में मेरा प्रवास लंबा नहीं हो सका क्योंकि मुझे उस विमान कारखाने में काम पर लौटना था जहाँ मैं उस समय कार्यरत था। इसलिए, रामिया को निर्देश देकर कि वह मुझे घटित घटनाओं की सटीक जानकारी देता रहे, मैं अगली सुबह बैंगलोर लौट आया।

रामिया को दोबारा लिखने में देर नहीं लगी। उन्होंने बताया कि गौंडनोराई एक खतरनाक और मायावी जानवर में बदल गया था। अब वह छोटी पहाड़ी की ढलानों पर सबके सामने धूप सेंकने नहीं जाता था। अब उसका कोई निशान नहीं दिखता था, न ही उसकी कोई आवाज सुनाई देती थी। केवल उसके विशाल, तश्तरी जैसे पंजों के निशान ही उसके गुजरने का संकेत देते थे, और हर बार जब कोई यात्री यात्रा पर निकलता था, तो वह अपने गंतव्य तक नहीं पहुंच पाता था।

रामैया ने बताया कि बाघ आमलिगोला से टैगार्थी जाने वाले पैदल मार्ग के सबसे सुनसान हिस्से में मंडराने लगा था, जहाँ से वह यात्रियों के समूह में से आखिरी व्यक्ति को झपट लेता था। ऐसा तीन बार हो चुका था, और अब लोग इस रास्ते से जाना पसंद नहीं करते थे। वे टैगार्थी जाने के लिए 25 मील का गोलाकार रास्ता अपनाना पसंद करते थे।

मैंने खुद भी कई बार उस शॉर्टकट का इस्तेमाल किया था, इसलिए मुझे वह जगह ठीक से पता थी जिसका जिक्र रामिया ने किया था। यह दो छोटी पहाड़ियों के बीच से गुजरती एक घाटी में एक ढलान थी,

जहां ऊंचे बांस और घनी सदाबहार झाड़ियाँ थीं, जो बाघ को राहगीरों के समूह पर घात लगाकर हमला करने के लिए आदर्श आवरण प्रदान करती थीं।

अगले दिन मैं टैगार्थी के लिए रवाना हुआ, एक मील दूर स्थित खूबसूरत जंगल में बने वन विभाग के विश्राम गृह में कार खड़ी की और अमलीगोला तक आठ मील के पैदल मार्ग पर चल पड़ा, जो उस घाटी से होकर गुजरता था जिसे अब मृत्यु घाटी कहा जाता था, जहां से गौंडनोराई बाघ अपने हमले करता था। दोपहर के ठीक दो बज रहे थे और मौसम सुहाना और बादल छाए हुए थे। बाघ के सुबह-सुबह निकलने के लिए परिस्थितियां बिल्कुल अनुकूल थीं।

मुझे धीरे-धीरे और सावधानी से आगे बढ़ना था और मैंने आम्लिगोला पहुँचने का समय लगभग छह बजे या ज़्यादा से ज़्यादा आधे घंटे बाद तय किया, ठीक उस समय जब अंधेरा इतना बढ़ जाता था कि कुछ दिखाई नहीं देता था। उसके बाद बाहर रहने पर मुझे टॉर्च का इस्तेमाल करना पड़ता, और यह जानते हुए कि मैं एक बहुत ही शर्मीले और चालाक जानवर से निपट रहा हूँ, मुझे लगा कि वह उस समय खुद को दिखाने की संभावना कम रखेगा, और शायद उस समय हमला करना पसंद करेगा जब उसे लगे कि यात्री तैयार नहीं है।

पहले एक मील तक, रास्ता खूबसूरत पार्क जैसे इलाके से होकर गुजरता है, और यहाँ मोर, जिन्होंने प्रजनन के मौसम के बाद अपने पूंछ के पंख गिराने के बाद अभी-अभी अपने नए पंख उगाना शुरू किया था, झाड़ियों के नीचे खोजबीन कर रहे थे और जैसे ही मैं एक मोड़ से निकला, वे जोर-जोर से आसमान की ओर अपने पंख फड़फड़ाने लगे।

धीरे-धीरे वनस्पति घनी होती गई, पेड़ ऊँचे होते गए और झाड़ियाँ भी घनी होती गईं। दूसरे मील के बाद, मुझे केवल आगे का रास्ता ही दिखाई दे रहा था और मैं पीछे की ओर बस एक सरसरी नज़र डाल पा रहा था। मेरे बाएँ और दाएँ घने हरे रंग की दीवार ने एक गज से अधिक दूरी पर सब कुछ छिपा रखा था।

जिस खतरनाक घाटी के बारे में मैंने बात की है, जहां गौंडनोराई ने तीन बार घात लगाकर हमला किया था, वह अभी भी तीन मील आगे थी, जो मेरे आने वाले रास्ते के लगभग पांचवें मील से शुरू होती थी, और मेरे गंतव्य, अम्लिगोला तक पहुंचने में अभी तीन मील और बाकी थे।

जैसे-जैसे मैं इस घाटी के करीब पहुँचता गया, वनस्पति और भी घनी होती गई। दरअसल, इस तरह के जंगल आमतौर पर बाघों को पसंद नहीं आते, वे उस पार्क जैसे इलाके को पसंद करते हैं जहाँ से मैं पहले ही गुजर चुका था। बाइसन, हाथी, सांभर और भौंकने वाले हिरण यहाँ के निवासी हैं, ये बिल्लियाँ खुले जंगलों को चुनती हैं जहाँ उनके मुख्य शिकार, जैसे चित्तीदार हिरण, जंगली सूअर और गाँव के मवेशी, वहाँ उगने वाली भरपूर घास चरते हैं। यह गौंडनोराई की चालाकी का एक और संकेत था जिसने उसे अपनी प्रजाति की आदत से हटकर ऐसी जगह पर रहने के लिए प्रेरित किया जहाँ उसे घात लगाने के लिए अधिकतम सुरक्षा मिल सके।

अंततः मैं पहाड़ी की तलहटी में उतर आया, जिसकी नींव मृत्यु घाटी की शुरुआत को दर्शाती है। अगले पहाड़ी पर चढ़ाई शुरू होने वाले रास्ते तक तीन-चौथाई मील, या शायद सात फर्लांग की दूरी है, और घने बांस और हरी-भरी झाड़ियाँ दोनों ओर संकरे रास्ते को भारी दबाव से घेरे हुए हैं।

मैं एक पल के लिए रुका और मुट्ठी भर रेत उठाई, जिसे मैंने कंधे तक उठाया और फिर धीरे-धीरे अपनी उंगलियों से गिरने दिया। हवा बहुत कम थी, लेकिन जो भी थोड़ी बहुत थी, वह रेत को थोड़ा-थोड़ा करके मेरी बाईं ओर धरती की तरफ ले जा रही थी। इसलिए हवा दाईं से बाईं ओर बह रही थी, और अगर बाघ हमला करता, तो वह लगभग निश्चित रूप से रास्ते के बाईं ओर से हमला करता, न कि दाईं ओर से। मेरा यह अनुमान जंगल के एक मूलभूत नियम पर आधारित था।

बिल्ली प्रजाति के जानवर हिरण और ऐसे जीवों का शिकार करते हैं जिनकी सूंघने की शक्ति बहुत तीव्र होती है। हवा के विपरीत दिशा से ऐसा करने पर उनका शिकार करने का प्रयास विफल हो जाता है, क्योंकि हवा के झोंके उनकी उपस्थिति का पता लगा देते हैं और उनका शिकार भाग जाता है। इसलिए मांसाहारी जानवरों ने सहज प्रवृत्ति से यह सीख लिया है कि वे हमेशा हवा के विपरीत दिशा से ही शिकार की ओर बढ़ें, ताकि हमला करने से पहले उनकी गंध से ही उनका पता न चल जाए।

हिरणों के विपरीत, आत्मरक्षा के लिहाज़ से मनुष्य में सूंघने की क्षमता न के बराबर होती है, और एक आम इंसान किसी बाघ या तेंदुआ की गंध को, चाहे वह एक गज की दूरी पर ही क्यों न छिपा हो, हवा की दिशा चाहे जो भी हो, नहीं पहचान पाएगा। लेकिन बाघ को यह बात पता नहीं होती, इसलिए वह किसी मनुष्य का पीछा करने के लिए भी वही नियम अपनाता है जो वह जंगल के किसी अन्य प्राणी का पीछा करने के लिए अपनाता है। इसी कारण, मुझे लगभग पूरा यकीन था कि अगर गौंडनोराई मुझ पर हमला करने आएगा, तो वह बाईं ओर से हमला करेगा; और कायर होने के कारण, उसके पीछे से हमला करने की संभावना दस में से एक थी।

इन सभी बातों को तर्क के आधार पर स्थापित करने के बाद, मैं किसी भी संभावित घटना के प्रति सतर्क रहते हुए चुपचाप रास्ते पर आगे बढ़ने लगा।

शुरुआती एक चौथाई मील का सफर डर से भरा था। मैं थोड़ी-थोड़ी देर में पीछे मुड़कर देखता था कि कहीं कोई मेरा पीछा तो नहीं कर रहा। एक बार जब मैंने पीछे मुड़कर देखा, तो मैंने देखा कि जिस झाड़ी के पास से मैं अभी गुजरा था, वह अचानक ज़ोर से हिली और फिर स्थिर हो गई।

मैं घूम गया। मुझे पता था कि मैं झाड़ी के नीचे नहीं देख सकता; वह बहुत घनी थी। लेकिन मैं उसके ऊपरी हिस्से को देख सकता था। बाघ झाड़ी के बीच से छलांग नहीं लगा सकता, उसे छलांग लगाने से पहले शाखाओं को पार करने के लिए धीरे-धीरे आगे बढ़ना पड़ता है, और जब वह धीरे-धीरे आगे बढ़ता है तो झाड़ियों के ऊपरी हिस्से हिलते हैं। यदि आप शाखाओं के ऊपरी हिस्सों को देखते रहेंगे तो आप उन्हें हिलते हुए देख पाएंगे, तब आपको पता चल जाएगा कि बाघ आ रहा है।

रास्ते के किनारे के बिल्कुल पास एक शाखा का ऊपरी सिरा थोड़ा सा हिल गया, जैसे किसी चीज ने उसके आधार को छू लिया हो। मैंने मन ही मन कहा, "बस यही है," और अपनी .405 पिस्तौल कंधे पर रख ली।

कुछ ही क्षण बाद शाखा और अधिक स्पष्ट रूप से कांप उठी और एक जंगली सूअर पूरी तरह से सामने आ गया। मुझे देखते ही वह अचानक मेरी ओर मुड़ गया, उसकी गर्दन के बाल रीढ़ की हड्डी की तरह खड़े हो गए, सिर नीचे झुका हुआ था और उसके नुकीले दांत मेरी ओर थे, उसकी छोटी लाल आंखें गुस्से से ऊपर की ओर देख रही थीं।

मुझे हंसी आ रही थी, लेकिन मैंने राहत की सांस ली। मेरे बाईं ओर से सूअर का प्रकट होना इस बात का संकेत था कि बाघ आस-पास कहीं नहीं था।

मुझे बिना हिले-डुले खड़ा देखकर और उसकी ओर कोई हरकत न करते हुए, सूअर ने सोचा कि मैं शायद हानिरहित हूँ, हालाँकि मुझ पर गंभीर संदेह ज़रूर किया जाना चाहिए। अपना सिर झुकाए हुए, ताकि ज़रूरत पड़ने पर मुझ पर नज़र रख सके और हमला कर सके, सूअर रास्ते को पार करके दाईं ओर घनी झाड़ियों में घुस गया, पत्तों को ज़ोर से रगड़ते हुए। अगले ही पल वह गायब हो गया।

इस बार मैंने सचमुच राहत की सांस ली। मैं फिर से आगे बढ़ा, शायद राहत ने मुझे थोड़ा कम सतर्क बना दिया था, और जल्द ही घाटी के अंत के करीब पहुँच गया। मुझे सामने कुछ भी दिखाई नहीं दिया; मैंने पीछे मुड़कर देखा, लेकिन वहाँ भी कुछ नहीं था। मैंने फिर से सामने देखा, तभी किसी चीज़ ने मुझे पीछे मुड़ने के लिए प्रेरित किया।

और मेरे बाईं ओर हरे रंग की दीवार से, जिसे मैं अभी-अभी पार कर चुका था, गौंडनोराई, या यूँ कहें कि उसका सिर, उभर रहा था। उसने एक भी आवाज़ नहीं की थी। मैंने अपनी राइफल कंधे पर रखी और तिरछी नज़र से बैरल की ओर देखा।

लेकिन बाघ अब वहाँ निशाना साधने के लिए नहीं था। उसकी सहज प्रवृत्ति और जन्मजात कायरता ने उसे आगाह कर दिया कि यहाँ कोई निहत्था राहगीर नहीं है। वह उतनी ही खामोशी से गायब हो गया जितनी खामोशी से वह आया था।

आत्मविश्वास ने मुझे साहसी बना दिया और मैंने उसे देखने के लिए आगे कदम बढ़ाया। तभी एक धीमी सी गुर्राहट सुनाई दी, और फिर कुछ गज दूर झाड़ियों में पत्तों की सरसराहट से मुझे पता चला कि वह बड़ा बाघ लड़ने के लिए नहीं रुकेगा। वह भाग रहा था।

मैं अंधेरा होने से कुछ ही देर पहले अमलिगोला पहुंचा और वहां पहुंचकर मैंने आश्चर्यचकित रामिया को अपने साहसिक कारनामे के बारे में बताया।

मुझे अगले दिन क्या करना है, यह ठीक से समझ नहीं आ रहा था। रामिया ने कहा कि मवेशियों को चारा बनाकर रखना बेकार है, क्योंकि गौंडनोराई उन्हें देखेंगे भी नहीं। वैसे भी, अमलिगोला में बहुत कम

मवेशी थे, और उनके मालिक इस उद्देश्य से उन्हें बेचना नहीं चाहते थे। अगर मुझे चारा खरीदना था, तो मुझे अगली सुबह टैगार्थी वापस जाने का इंतजार करना पड़ता।

उस दोपहर गौंडनोराई ने अपना ही नियम तोड़ दिया। शायद उसे बहुत भूख लगी थी। हो सकता है उसने सोचा हो कि मेरे रहते हुए घाटी में कुछ समय के लिए रहना उसके लिए खतरनाक होगा। इसलिए उसने उस पार्क जैसे जंगल में एक आदमी को मार डाला जिसके बारे में मैंने आपको बताया है, जो टैगार्थी वन विश्राम गृह से लगभग एक मील दूर था जहाँ मैंने अपनी कार खड़ी की थी। पीड़ित के तीन साथी मुझे खबर देने के लिए घाटी से जल्दी से आए। वे जानते थे कि जब बाघ अपने शिकार को खा रहा था तब घाटी पार करना सुरक्षित था। जब वे पहुँचे तब दोपहर के लगभग तीन बज रहे थे और मुझे घटना स्थल तक पहुँचने के लिए सात मील का सफर तय करना था। हमें साढ़े चार बजे के कुछ देर बाद उस आदमी का बचा हुआ हिस्सा मिला।

गौंडनोराई ने झाड़ी के पीछे से, जिसके बीचोंबीच एक जंगली काजू का पेड़ उग रहा था, अपने शिकार पर अपेक्षित तरीके से हमला किया, उसे मार डाला और उसी झाड़ी में वापस ले गया, जहाँ उसने काम शुरू किया और शरीर के आधे से अधिक हिस्से को खा लिया। पीड़ित के आगे चल रहे तीनों व्यक्ति लगभग दौड़ते हुए आमलिगोला तक पहुँचे।

वहाँ उगने वाला जंगली काजू का पेड़ बहुत ही सौभाग्यशाली साबित हुआ। उसकी अनेक शाखाओं और बड़े पत्तों के कारण मचान का निर्माण जल्दी और आसानी से हो गया। हालाँकि मैंने खुद से शर्त लगाई थी कि गौंडनोराई कभी नहीं आएगा, क्योंकि वह बहुत ही चालाक था, और मचान बनाते समय आदमियों द्वारा चुपचाप काम करने के तमाम प्रयासों के बावजूद मचान का शोर उसे ज़रूर सुनाई दिया होगा, जहाँ वह लेटा हुआ था, शायद बहुत दूर नहीं, फिर भी उसके आने की थोड़ी सी संभावना बनी हुई थी। छह बजे तक मैं मचान में था, जो इतने कम समय में बनकर तैयार हुआ था, उसे देखते हुए काफी आरामदायक था, और तीनों आदमी उस एक मील की दूरी तय करके टैगार्थी वापस चले गए, जो उन्होंने उस दुर्भाग्यपूर्ण आदमी के साथ तय की थी, जो अब झाड़ी के पीछे बुरी तरह घायल पड़ा था।

यह वसंत ऋतु थी और जल्द ही अंधेरा छाने लगा। एक घंटे के भीतर ही मेरे नीचे जमीन पर पड़े शव के अवशेष मेरी नजरों से ओझल हो गए। चांदनी नहीं थी और मैं अपनी राइफल की नली पर लगी टॉर्च पर निर्भर था, ताकि अगर बाघ वापस आए तो वह दृश्य को रोशन कर सके।

लगभग एक घंटे तक सन्नाटा छाया रहा, सिवाय कुछ रात्रि पक्षियों की आवाज़ों और पेड़ के चारों ओर मंडराते बड़े चमगादड़ों के पंखों की फड़फड़ाहट के। मैंने अपनी घड़ी के चमकदार डायल पर नज़र डाली। आठ बज रहे थे, वह समय जब बाघ आमतौर पर अपने शिकार के पास लौटते हैं!

ठीक समय पर, पूर्व दिशा में स्थित पार्क जैसे घने जंगल से चित्तीदार हिरणों का एक झुंड खतरे की चेतावनी देने लगा। उनकी चीखें अभी धीमी ही हो रही थीं कि मेरे ठीक नीचे झाड़ियों में एक जानवर हिलने

लगा। गौंडनोराई आ चुका था। अगले ही पल वह खाना शुरू कर सकता था और फिर मुझे मौका मिल जाता।

ठीक उसी क्षण मुझे एक बाघ की दहाड़ सुनाई दी, लेकिन वह कम से कम सौ गज या उससे भी अधिक दूर था; निश्चित रूप से मेरे नीचे नहीं था। तो गौंडनोराई के पास एक साथी था!

इस तथ्य ने कई उलझनें खड़ी कर दीं। क्या वाकई यही आदमखोर था? मुझे उसकी कायरता याद आ गई। शायद कोई दूसरा बाघ ही असली आदमखोर था। या शायद दोनों को ही यह आदत थी!

मेरे विचारों में तब खलल पड़ा जब मेरे नीचे मौजूद जानवर गुर्राया; फिर पूरी रफ्तार से भाग निकला। उसके बाद मुझे दोनों बाघों की कोई आवाज नहीं सुनाई दी और मैंने सोचा कि वे दोनों चले गए हैं, तभी नौ बजने से कुछ मिनट पहले एक टहनी टूटने की आवाज आई और उसके बाद हड्डियों के चटकने की आवाज सुनाई दी। एक बाघ वापस आ गया था। इसलिए मैंने गोली चलाने की तैयारी में धीरे से राइफल को अपने कंधे पर उठाया।

पल भर में अफरा-तफरी मच गई। मेरे ठीक पीछे अंधेरे से लगातार गर्जनाएं सुनाई दीं, ठीक नीचे से खांसने और गुर्राने की आवाज आई, और इसके बाद एक भारी शरीर के पेड़ के तने पर बेतहाशा चढ़ने की आवाज सुनाई दी, जिस पर मैं बैठा था। लगभग उसी क्षण एक दूसरा शरीर पेड़ से टकराया, जिससे पेड़ हिल गया और तने को फाड़ने लगा।

पेड़ ऐसे हिल रहा था मानो किसी तूफान ने उसे हिला दिया हो और मुझे लगा कि मैं मचान से बाहर फेंक दिया जाऊँगा। मेरे पैरों के ठीक नीचे से आती दहाड़ें, गुर्राहटें और दहाड़ें सुनकर मैं दहशत में आ गया। जल्दी से राइफल की नली नीचे की ओर करके मैंने टॉर्च का बटन दबाया। रोशनी ने अंधेरे को चीरते हुए सिर्फ दो फीट नीचे एक पैंथर पर पड़ी। लेकिन वह नीचे की ओर देख रहा था।

मैंने बंदूक की नली को थोड़ा सा हिलाया, और अब, मैंने गोवंडनोराई की धधकती आँखों में देखा, जिनमें उस पेड़ पर हमला करने की हिम्मत कभी नहीं होती जिस पर मैं छिपा हुआ था, अगर शिकार से बचकर आया पैंथर उसमें शरण न लेता। दोनों जानवरों को नहीं पता था कि पेड़ पर पहले से ही मैं मौजूद था।

पहला निशाना आसान था—आँखों के बीचोंबीच। गाउंडनोराई दहाड़ते ही पीछे की ओर गिर पड़ा। दूसरा भी आसान था। पैंथर चौंककर ऊपर देखने लगा, जिससे उसे एक और आसान निशाना मिल गया, वह भी आँखों के बीचोंबीच। मैं उसे छोड़ नहीं सकता था, हालाँकि मैं ऐसा करना चाहता था। वह किसी इंसान का शिकार खा रहा था और शायद खुद भी आदमखोर बन जाए।

गौंडनोराई शायद अब तक का सबसे बड़ा बाघ था जिसे मैंने मारा था; और निश्चित रूप से सबसे कायर भी।

4

दिगुवामेटा का हत्यारा

अगर आप आंध्र प्रदेश राज्य के गुंटकल जंक्शन से मीटर-गेज रेलगाड़ी से दक्षिण-पूर्व दिशा में यात्रा करें, तो आप नंदीयाल नामक बड़े शहर से गुजरेंगे और कुछ ही देर बाद घने जंगलों से आच्छादित और अनेक धाराओं से घिरे पहाड़ी क्षेत्र में प्रवेश करेंगे। इन धाराओं पर से गुजरते हुए आप बसवपुरम और चेलामा के वन स्टेशनों पर थोड़ी देर रुकेंगे और दो सुरंगों को पार करेंगे, जिनमें से एक छोटी और दूसरी बहुत लंबी है। अंत में आप एक हरे-भरे घाटी को एक सुरम्य ऊंचे पुल से पार करेंगे, जहां दूर-दूर तक पेड़ों की चोटियां दिखाई देंगी। कुछ मील आगे आपको रेल की दाहिनी ओर एक विशाल पत्थर का जलस्तंभ दिखाई देगा, जो हमेशा पानी से भरा रहता है। इसके बगल में ही 'बाहरी' संकेत लगा है जो दिगुवामेटा रेलवे स्टेशन के आगमन की सूचना देता है, जहां पहाड़ और जंगल समाप्त होते हैं और खेती योग्य मैदान फिर से शुरू हो जाते हैं।

'हत्यारे' की गतिविधियाँ इस स्टेशन से लेकर घाटी में स्थित उस बहुत लंबी सुरंग तक फैली हुई थीं, जिसे लंबे पुल द्वारा पार किया जाता था, लेकिन यह विशेष रूप से टपकते पानी के स्तंभ और उसके बगल में स्थित 'बाहरी' सिग्नल के आसपास के क्षेत्र में सक्रिय थीं।

चेलामा और दिगुवामेटा के बीच के जंगलों के प्रति मेरे मन में हमेशा से एक खास लगाव रहा है, इसलिए नहीं कि वहाँ शिकार या मांसाहारी जानवर बहुतायत में पाए जाते हैं, बल्कि इसलिए कि वहाँ का वातावरण बिल्कुल शांत और एकांत है, और पूर्वी घाट के इस हिस्से में फैले जंगलों में रहने वाले चेंचु जनजाति के लोग बहुत ही मिलनसार हैं। मैंने पाया है कि आंध्र प्रदेश का आम ग्रामीण भी, कुल मिलाकर, मैसूर राज्य के ग्रामीणों की तुलना में कहीं अधिक मिलनसार होता है, जहाँ मैं रहता हूँ, जबकि मद्रास राज्य के लोगों का स्वभाव इन दोनों के बीच का होता है।

इसके अलावा, यहां की वनस्पति की प्रकृति दक्षिण में उगने वाली वनस्पति से काफी अलग है, और हालांकि यहां हाथी या बाइसन नहीं पाए जाते हैं, यह क्षेत्र नीलगाय या ब्लू-बुल की वह दक्षिणी सीमा है जहां सांभर हिरण की तरह दिखने वाला मृग प्रजाति का एक बड़ा जानवर पाया जाता है।

तो एक दिन मैं दिगुवामेटा के लिए ट्रेन से रवाना हुआ, लंबी सुरंग और लंबे पुल से गुज़रते हुए, जो हमेशा से मेरे लिए एक बचपन का आकर्षण रहे थे, सिग्नल और टपकते पानी के स्तंभों से बचते हुए, मैं अपने छोटे से बिस्तर, कैंप किट और राइफल के साथ दिगुवामेटा में उतरा। कुछ बच्चों ने मेरा बिस्तर और कैंप किट छीन लिया, और राइफल को कंधे पर टांगकर हम उस सड़क पर चलने लगे जो रेलवे ट्रैक के समानांतर उस दिशा में जाती थी जहाँ से ट्रेन अभी आई थी।

वन बंगले तक शायद आधा मील की दूरी थी, जो इतनी पुरानी इमारत होने के बावजूद आश्चर्यजनक रूप से आरामदायक था; इसके दक्षिण में सागौन के पौधों का बागान था, पूर्व और उत्तर में जंगल था, जबकि पश्चिम में रेलवे स्टेशन की ओर जाने वाली सड़क थी, और उसके बाद फिर से रेलवे लाइन थी, जैसा कि मैंने अभी बताया। सिग्नल और पानी का खंभा बस आधा फर्लांग की दूरी पर थे। मेरे पुराने दोस्त, वन बंगले के रखवाले अलीम खान ने द्वार पर अपनी चौड़ी मुस्कान के साथ मेरा स्वागत किया, साथ ही बच्चों को मेरे सामान लाने के लिए जल्दी करने को कहा।

बंगले में कमरों के दो सुइट थे, और हमेशा की तरह अलीम ने मुझे बेहतर वाले सुइट में ठहराया, जो सड़क और रेलवे ट्रैक की ओर खुलता था। यह बेहतर इसलिए था क्योंकि इस सुइट से जुड़े बाथरूम में शॉवर लगा हुआ था, जबकि दूसरे वाले में नहीं था।

अलीम मुसलमान था और उसकी सिर्फ़ दो पत्नियाँ थीं, जबकि उसके कई सह-धर्मियों की चार पत्नियाँ थीं, जो कि कानूनी तौर पर एक मुसलमान के लिए अधिकतम संख्या है। उसने मुझे पहले भी बताया था कि उसे लगता है कि दो पत्नियाँ ही काफ़ी हैं। बिना देर किए उसने इन दोनों महिलाओं को बुलाया और उन्हें एक साथ हैंडपंप चलाने को कहा। यह यंत्र एक बड़े कुएँ से पानी खींचकर मेरे बाथरूम की छत पर बने जस्ता के पानी के टैंक में भरता था। आधे घंटे तक, जब मैं अपना सामान खोल रहा था और फिर चौकीदार द्वारा जल्दी से बनाई गई चाय पी रहा था, मैं हैंडपंप की खट-खट-खट की आवाज़ और दोनों पत्नियों की आपस में बहस और फिर झगड़ा सुन सकता था, क्योंकि दोनों एक-दूसरे पर पंपिंग में अपना हिस्सा न करने का आरोप लगा रही थीं। बाथरूम की छत से पानी गिरने की आवाज़ से झगड़ा समाप्त हुआ। टैंक पूरी तरह भर गया था!

फिर आखिरकार मुझे वह बहुप्रतीक्षित शावर बाथ का सुख मिला, या यूं कहें कि एक के बाद एक कई शावर बाथ, ठंडे पानी की पतली धारें मेरे शरीर पर बह रही थीं। बाहर का तापमान 100 डिग्री फारेनहाइट से भी ऊपर था और आंध्र प्रदेश की चिरस्थायी धूप पड़ रही थी, लेकिन उस बाथरूम के अंदर इतनी ठंडक, इतनी नमी और इतना सुकून था। यह सोचकर मेरे चेहरे पर एक शरारती मुस्कान आ गई कि मैं उन दो महिलाओं द्वारा मेरे लिए इतनी मेहनत से निकाले गए उस कीमती पानी को कितनी बेरहमी से बर्बाद कर रहा था।

तरोताज़ा होकर, बरामदे में एक आरामकुर्सी पर आराम से लेटकर, मैंने सुकून से अपनी पाइप का कश लिया और एक के बाद एक कई मग चाय पी। एक मालगाड़ी भारी आवाज़ करते हुए गुज़री, दोनों सिरों पर एक-एक इंजन था, आगे वाला इंजन अपनी चिमनी से काले धुएं के बादल उड़ाता हुआ पूरी ताकत से खींच रहा था, जबकि पीछे वाला इंजन बेफिक्र होकर चल रहा था, मानो उसे किसी बात की परवाह ही न हो।

अलीम खान मेरी कुर्सी के बगल में ज़मीन पर एड़ियों के बल बैठ गया और मुझे अपनी पारिवारिक परेशानियों के बारे में बताने लगा। उसकी इकलौती बहन के पति, जो एक वन रक्षक थे, की तपेदिक से

अचानक मृत्यु हो गई थी, जिससे उनकी पत्नी और दो बच्चे बेसहारा हो गए थे। वे तुरंत अलीम के पास शरण लेने आए थे और अब समस्या गंभीर हो गई थी। अलीम की पहली पत्नी के तीन बच्चे थे, दूसरी के दो; और अब उसकी बहन, उसके दो बच्चों और खुद अलीम को मिलाकर कुल चार वयस्क और सात बच्चों का पेट पालना उसकी मामूली तनख्वाह पर निर्भर था।

क्या मैं कुछ कर सकता था? अलीम ने बताया कि दो बच्चों के बावजूद, उसकी बहन अब भी सुंदर, आकर्षक, सुडौल, मिलनसार स्वभाव की और एक अच्छी पत्नी बनने के सारे गुण रखती थी। एक पल के लिए मैं ललचा गया और आँखें बंद करके सोचने लगा। इस्लाम अपनाने की घोषणा करना कितना मजेदार होगा! मैं अलीम की बहन से शादी कर सकता था और इस तरह दो और पत्नियाँ पा सकता था। बैंगलोर में एक पत्नी के साथ, कुल चार पत्नियाँ हो जातीं।

फिर खर्च का पहलू मेरे लिए एक गहरा झटका साबित हुआ, और उसके परिणामस्वरूप आने वाली परेशानियाँ उससे भी कहीं ज़्यादा गंभीर थीं। मैं अपनी इस दयनीय स्थिति को देखकर भयभीत हो गया, और फिर यह याद करके मुस्कुरा उठा कि यह सब तो सिर्फ़ अनुमान पर आधारित था।

मैंने जल्दी से अलीम से कहा कि मैं बैंगलोर में एक उपयुक्त उम्मीदवार की तलाश करूंगा, और फिर उतनी ही जल्दी से विषय बदल दिया। क्या वहाँ कोई बाघ या तेंदुआ थे?

उन्होंने बताया कि दस दिन पहले ही एक सरकारी अधिकारी ने जीप में सवार होकर, स्पॉटलाइट की मदद से, विश्राम गृह से दो सौ गज की दूरी पर वन विभाग की अग्निशमन रेखा पर एक बाघ का शिकार किया था। आपको बता दें कि यह अग्निशमन रेखा पश्चिम से पूर्व की ओर फैली हुई थी। यह बंगले के उत्तर-पश्चिम में स्थित सड़क से शुरू होकर एक फर्लांग दूर पूर्व दिशा में दो मील दूर एक अन्य सड़क तक जाती थी, जो जंगल से होकर गुजरती थी और दिगुवामेटा को लगभग चालीस मील दूर स्थित गोंडाचेरुवु नामक एक छोटे से गाँव से जोड़ती थी।

अलीम ने यह भी बताया कि आसपास एक पैंथर घूम रहा था और यह जानवर परेशानी पैदा करने लगा था। सुबह-सुबह विश्राम गृह के आसपास उसके पैरों के निशान दिखाई देते थे और तीन हफ्ते पहले वह उसके कुत्ते को पीछे के बरामदे में उसके सोने की जगह से उठा ले गया था। उसने आगे बताया कि उसकी बहन अपने दो बच्चों के साथ-साथ अपने कुत्ते को भी लाई थी और पैंथर ने अलीम द्वारा अपनी बहन को दिए गए उस कमरे के दरवाजे के ठीक बाहर उस पर हमला कर दिया था। लेकिन गांव के आम कुत्तों के मुकाबले यह जानवर काफी बड़ा था, और इसका दिल भी बड़ा था। उसने पैंथर पर इतनी भयंकर आक्रामकता से हमला किया कि पैंथर तेजी से भाग निकला और कुत्ता उसका पीछा करने लगा। अलीम और उसकी बहन दोनों ने चांदनी रात में यह दृश्य देखा था।

फिर भी, चौकीदार ने कहा कि वह इस स्थिति से खुश नहीं था और उसे लगता था कि पैंथर हिम्मत जुटाकर वापस आएगा और अंततः कुत्ते को ले जाएगा। लेकिन सबसे ज्यादा चिंता उसे वहां मौजूद सात

बच्चों की मौजूदगी से थी, जिनमें से दो तो बिल्कुल छोटे बच्चे थे। अगर पैंथर बहुत ज्यादा साहसी हो गया—या भूखा हो गया—तो वह उनमें से किसी एक को लेकर भाग सकता था।

कई लोगों ने मुझसे पूछा है कि मैं भारत छोड़कर इंग्लैंड, ऑस्ट्रेलिया या कनाडा क्यों नहीं चला जाता। मैंने इस सवाल का जवाब देने की कोशिश की है, लेकिन मुझे नहीं लगता कि मैं किसी को भी समझा पाया हूँ। दिगुवामेटा में उस दोपहर आरामकुर्सी पर लेटे हुए यह विचार मेरे मन में फिर से आया। इंग्लैंड, ऑस्ट्रेलिया या कनाडा में, या दुनिया में कहीं और, शायद अफ्रीका या दक्षिण अमेरिका को छोड़कर, मुझे भारत जैसी परिस्थितियाँ कहाँ मिलेंगी? ट्रेन या सड़क मार्ग से कुछ घंटों की यात्रा मेरे बैंगलोर स्थित घर को दो सौ मील के दायरे में स्थित कई पर्वत श्रृंखलाओं की ठंडी जलवायु से, या उससे भी करीब स्थित मैदानी इलाकों की उमस भरी गर्मी से अलग करती है; पश्चिम में घने जंगलों से, जहाँ भारी वर्षा होती है, और पूर्व में अत्यंत शुष्क, अर्ध-मरुस्थलीय क्षेत्रों से; शहरों की लाखों की भीड़ से और घर से पचास मील के भीतर स्थित जंगल के एकांत से; शहरों की विविध भाषाओं और बोलियों से और वनवासियों की लगभग अस्पष्ट शब्दावली से। घर की सुरक्षा और आराम से लेकर अचानक बीमारी, सांप के काटने या किसी जंगली जानवर के हमले से होने वाली मौत के निरंतर खतरे तक, दुनिया में और कहाँ भारत जैसा समय इतना कम महत्व रखता है? दुनिया में और कहाँ परिणाम इतने कम महत्वपूर्ण होते हैं? इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि आप कैसे कपड़े पहनते हैं या पहनते भी हैं या नहीं! जीवन की मूलभूत आवश्यकताएं ही मायने रखती हैं। बाकी सब कुछ इसके साथ ही आता है, कभी भरपूर मात्रा में तो कभी न के बराबर; लेकिन वास्तव में इससे कोई खास फर्क नहीं पड़ता और किसी भी चीज की कोई जल्दी नहीं होती। जन्म का समय होता है और मृत्यु का, और दोनों घटनाएं अपरिहार्य हैं। इसके अलावा, मृत्यु जीवन का अनुसरण करती है और जीवन मृत्यु का, इसलिए वास्तव में इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि आप कहाँ से शुरू करते हैं और कहाँ समाप्त करते हैं, क्योंकि अंततः सब कुछ एक ही बात पर आकर समाप्त होता है।

मेरे दोस्त यह बात नहीं समझ पाते जब मैं उन्हें बताता हूं कि इन्हीं चीजों की वजह से मुझे भारत से प्यार है, और मुझे नहीं लगता कि मैं इसे कभी छोड़ूंगा।

मेरी तल्लीनता उस समय भंग हो गई जब वन रेंज अधिकारी साइकिल पर सवार होकर अलीम खान को यह सूचना देने आए कि उन्हें खबर मिली है कि जिला वन अधिकारी (डी.एफ.ओ.) दिगुवामेटा से गुजर रहे हैं और अगली रात विश्राम गृह में बिताएंगे। क्या मेरे पास बंगले में रहने की लिखित अनुमति थी?

मुझे मना करना पड़ा, और रेंज अधिकारी दंग रह गया। मैंने अतिक्रमण का अक्षम्य अपराध किया था। मैं बिना अनुमति के सरकारी इमारत में था। उसने गहरी साँस ली और फिर मुझे तुरंत बाहर निकलने को कहा।

यहां मुझे वही कठिनाई महसूस हुई जो मैंने कई जंगलों में बने कई वन बंगलों में झेली थी। इसीलिए मैंने कई क्षेत्रों में इतनी सारी ज़मीनें खरीदी हैं, ताकि मैं अधिकारियों की दखलंदाज़ी के बिना शांति से डेरा

डाल सकूं, उस सर्वव्यापी भय से मुक्त होकर जो अनादिकाल से देश के कोने-कोने में मंडराता रहा है, ब्रिटिश राज के दिनों में भी मंडराता रहा और स्वतंत्रता के बाद तो और भी अधिक हावी हो गया है।

मैंने रेंज ऑफिसर की चापलूसी की और देखते ही देखते वो मेरे इशारों पर नाचने लगा। उसने भी सहमति जताते हुए कहा, "जी हाँ, महोदय, ये वरिष्ठ अधिकारी जो दौरे पर आते हैं, वाकई बहुत झंझट पैदा करते हैं। क्यों (और मेरी सज्जनता को जानते हुए उसने मुझे भरोसे में बताया) कि जब वे आते हैं तो बिल्कुल काम नहीं करते। काम तो वो और उसके मातहत ही करते हैं। ये दौरे तो बस पैसे कमाने का बहाना होते हैं, जब उनके पास पैसों की कमी होती है। इस बात का सबूत ये है कि ये 'दौरे' हमेशा महीने के आखिरी हफ्ते में ही होते हैं।" बेशक, मैं रात बंगले में रुक सकता था, लेकिन मुझे वादा करना होगा कि मैं अगले दिन दोपहर से पहले चला जाऊंगा, वरना अगर रक्षा अधिकारी को पता चला कि मैं बिना इजाज़त के बंगले में हूँ तो वो बहुत बड़ी मुसीबत में पड़ जाएगा।

मैंने वादा किया और फिर पूछा कि क्या गाँव में कहीं कोई खाली कमरा है। रेंज अधिकारी को ऐसा नहीं लगा।

बातचीत के इस मोड़ पर मैंने बताया कि मुझे कई अन्य क्षेत्रों में भी इसी तरह की परेशानियाँ झेलनी पड़ी थीं, इसलिए मैंने लगभग हर जंगल में छोटे-छोटे भूखंड खरीदना शुरू कर दिया था और उस समय मेरे अपने बीस से अधिक शिविर स्थल थे। यह सुनकर वह खुश हो गया। उसने बताया कि राजस्व विभाग में उसका एक मित्र है, जिसके पास रेलवे स्टेशन के ठीक बाहर कई एकड़ जमीन है। उसकी सिफारिश पर, रेंजर को पूरा विश्वास था कि उसका यह मित्र, जिसका नाम रंगा रेड्डी था, मुझे खुशी-खुशी एक छोटा सा भूखंड उपहार के रूप में मुफ्त में दे देगा, जो तंबू लगाने के लिए काफी बड़ा होगा।

एक घंटे के भीतर हम अपने मित्र के घर पहुँच गए। वहाँ हमने कॉफ़ी पी और हमें दो-दो डोसे खाने के लिए मजबूर किया गया। फिर रंगा रेड्डी हमें अपनी ज़मीन पर ले गए, जो रेलवे स्टेशन से एक चौथाई मील आगे और रेलवे लाइन के पूर्व में थी, और मुझे अपनी पसंद की कोई भी जगह, जहाँ भी मैं चाहूँ और जितनी ज़रूरत हो, चुनने के लिए आमंत्रित किया।

खेत उपजाऊ काली मिट्टी से बना था, जो कृषि के लिए अच्छा था। हमें खेत के दूर कोने में जाकर एक खाली ज़मीन का टुकड़ा ढूंढना पड़ा, जो बंजर पड़ा था और जिसकी मिट्टी खेत के बाकी हिस्से जितनी उपजाऊ नहीं थी। आख़िरकार, मुझे तो बस एक शिविर स्थल चाहिए था और मैं अपने नए दोस्त को किसी भी मूल्यवान चीज़ से वंचित नहीं करना चाहता था। थोड़ी दूरी पर एक छोटी नदी बह रही थी, जबकि मुख्य सड़क एक तरफ से उस ज़मीन को घेरे हुए थी। एक आदर्श शिविर स्थल! दस सेंट ज़मीन मेरी ज़रूरतों के लिए काफ़ी होगी।

मैंने मालिक को अपनी पसंद बताई। उन्होंने मुस्कुराते हुए जवाब दिया कि मैं वह ज़मीन ज़रूर ले सकता हूँ। वे अगले दिन मुझे अपनी जीप में बारह मील दूर गिद्दालुर कस्बे तक ले जाएँगे, जहाँ मेरे स्वामित्व का औपचारिक पंजीकरण करवाना होगा।

मैंने कीमत पूछी। उन्होंने जवाब दिया, बिल्कुल मुफ्त। मैंने कहा, यह तो बिल्कुल ठीक नहीं है। इसके अलावा, यह कानूनी खरीद नहीं होगी; उन्हें कुछ कीमत तो चुकानी ही होगी। श्री रेड्डी ने हिचकिचाते हुए कहा, 'पांच रुपये,' और मैंने कहा, 'नहीं, पचास रुपये ले लीजिए।'

वह दहशत से पीछे हट गया। 'ऐसी बेकार ज़मीन के लिए दोस्त से पचास रुपये लेना!' आखिरकार हम तीस रुपये पर सहमत हो गए, जो अंग्रेजी मुद्रा में दो पाउंड से भी कम है।

अगली सुबह हम गिद्दालुर स्थित रजिस्ट्रार कार्यालय में उसके खुलने के समय ही पहुँच गए थे। आधे घंटे बाद मैं दिगुवामेटा में दस सेंट जमीन पर बने अपने शिविर स्थल का गर्वित मालिक बन गया!

हालांकि, मैंने आपको ज़मीन की खरीद के बारे में बताकर घटनाओं का कुछ पूर्वाभास कर दिया है। मुझे घटनाओं के सही क्रम में यह बताना चाहिए था कि उस रात क्या हुआ जब मैं उस आग की लकीर के किनारे थोड़ी देर टहलने के बाद विश्राम गृह लौटा था जहाँ हाल ही में बाघ को गोली मारी गई थी। यह आग की लकीर एक गहरे नाले को पार करती थी जो एक बहती हुई धारा का तल था, जहाँ शुष्क मौसम होने के कारण पानी का बहाव एक गज से अधिक चौड़ा नहीं था। दोनों किनारों पर कीचड़ में एक मध्यम आकार के पैंथर के पदचिह्न थे। यह जानवर, अपनी प्रजाति के अन्य जानवरों की तरह, पानी में चलने से कतराता था, इसलिए वह कूदकर पार गया था।

मुझे लगा कि शायद यह वही जानवर हो जिसके बारे में अलीम ने मुझे बताया था। पैरों के निशान जंगल में बने लॉज की ओर जा रहे थे और शायद पिछली रात ही बने थे। फिर मैंने झुककर उन्हें और करीब से देखा और मेरा विचार बदल गया। कुछ जगहों पर पुराने जलमार्गों और धाराओं के किनारे उगने वाली गहरे हरे रंग की फफूंद की परत दोनों किनारों पर पानी के किनारे तक फैली हुई थी, और पैंथर के वजन से वह परत उस तरफ से दब गई थी जहाँ से जानवर कूदा था और उससे कहीं ज़्यादा गहराई से उस किनारे पर जहाँ वह उतरा था। गहरे हरे रंग की फफूंद का दोनों तरफ से अभी भी दबा हुआ होना बहुत महत्वपूर्ण था। बाकी जगहों पर वह अपनी सीधी स्थिति में वापस क्यों नहीं आई? अगर पैंथर ने पिछली रात छलांग लगाई होती, जैसा कि मैंने पहले सोचा था, तो ऐसा हो जाता। केवल एक ही निष्कर्ष निकल सकता था: तथ्यों से साफ पता चलता था कि पैंथर एक या दो घंटे पहले ही नदी पार कर चुका था।

अब शाम के छह बज चुके थे, इसलिए जानवर सूर्यास्त से काफी पहले, चार-पाँच बजे के बीच इस रास्ते से गुजरा होगा। अगर ऐसा है, तो वह इस समय बंगले के आसपास ही होगा, जब तक कि वह रेलवे ट्रैक पार करके पानी की टंकी की तरफ न चला गया हो। मैं अपनी सैर रोककर वापस मुड़ गया, यह सोचकर कि क्या रात में मुझे उसकी आवाज सुनाई देगी।

मैं घर से लाया हुआ ठंडा भुना हुआ गोमांस खाने बैठा ही था कि यह घटना घटी। ठीक शाम के 7:45 बज रहे थे; मुझे याद है क्योंकि मैंने अभी-अभी अपनी घड़ी में चाबी भरी थी, जो मेरी आदत है खाना खाते समय। अलीम की बहन का कुत्ता मेरे पास आकर बैठ गया और मेरी कुर्सी के पास अपने पिछले पैरों पर

बैठा था, मेरी थाली से जूठा खाना मिलने की उम्मीद में बड़ी श्रद्धा से मेरी ओर देख रहा था। मैंने उसे एक सूखी चपाती का टुकड़ा दिया।

अधिकांश कुत्ते निवाला निगल जाते और और खाने की तलाश करते, लेकिन यह प्राणी, गाँव के अन्य आवारा कुत्तों की तरह, निवाला लेकर बाहर अकेले में उसका आनंद लेने का फैसला किया। वह बरामदे में भागा, और फिर मैंने कुत्ते की धीमी गुर्राहट सुनी, जिसके बाद एक ज़ोरदार चीख सुनाई दी।

मेरी राइफल केंद्रीय भोजन कक्ष से जुड़े शयनकक्ष में थी, और उसे लेने का समय नहीं था। यह समझते हुए कि पैंथर ने हमला कर दिया है और अगर मुझे कुत्ते को बचाना है तो मुझे तुरंत कार्रवाई करनी होगी, मैं बरामदे की ओर भागा, जहाँ चाँदनी में मैंने ठीक समय पर देखा कि एक चित्तीदार आकृति बरामदे के ऊँचे चबूतरे से नीचे कूदी, उसके जबड़ों में कुत्ता था, जो अभी भी जीवित था और संघर्ष कर रहा था।

हमलावर को डराने के लिए ज़ोर से चिल्लाते हुए, मैंने हाथ में आई पहली चीज़, सरकारी इमारतों में रखी जाने वाली लकड़ी की सख्त कुर्सियों में से एक, उस झुके हुए शरीर पर फेंक दी। भागता हुआ तेंदुआ केवल पंद्रह फीट दूर था जब कुर्सी सीधे उस पर गिरी, लेकिन तेंदुआ ने बेचारे कुत्ते को नहीं छोड़ा। इसके विपरीत, वह कुत्ते को कसकर पकड़े हुए ही उछलने लगा।

मैं राइफल लेने के लिए दौड़कर बेडरूम में गया, जल्दी से उसमें गोलियां भरीं और पैंथर की दिशा में चल पड़ा। आंगन में तेज चांदनी थी, इसलिए मैंने अपनी टॉर्च को हथियार से जोड़ने का इंतजार नहीं किया। इसमें समय लगता, और कुत्ते को बचाने के लिए एक पल भी बर्बाद नहीं किया जा सकता था।

लेकिन बंगले के चारों ओर फैले जंगल में पहुँचते ही मामला बिल्कुल बदल गया। पेड़ों की घनी पत्तियों से छाए अंधेरे ने मुझे चारों ओर से घेर लिया, जिसमें कहीं-कहीं चाँदनी की किरणें छलक रही थीं। मुझे जल्द ही एहसास हो गया कि झाड़ियों और अंधेरे में इधर-उधर भटकने से पैंथर और डर जाएगा और शिकार को और दूर ले जाएगा। वैसे भी, कुत्ते की जान बचाने के लिए बहुत देर हो चुकी थी। इसलिए मैं एक पेड़ की छाया में बैठ गया, इस बात से नाराज़ था कि मैंने राइफल पर टॉर्च क्यों नहीं लगाई। ऐसा करने में समय तो लगता, लेकिन कम से कम मैं देख तो पाता।

पैंथर को जब एहसास हुआ कि मैंने उसका पीछा करना छोड़ दिया है, तो उसने सोचा होगा कि मैं चला गया हूँ, क्योंकि दस मिनट के भीतर ही उसने खाना शुरू कर दिया। वह ज़्यादा दूर भी नहीं था, क्योंकि मुझे बीच-बीच में उसकी धीमी गुर्राहट सुनाई दे रही थी, जो मांस के फटने और हड्डी के टूटने की आवाज़ के साथ बदल रही थी। मैं दुविधा में था कि जानवर के पास चुपके से जाऊँ या टॉर्च लेने बंगले में वापस जाऊँ, और जैसा कि अक्सर दुविधा में होने पर होता है, मैंने गलत काम चुना।

धीरे-धीरे उठकर, अंधेरे में सावधानी से कदम बढ़ाते हुए, ताकि कोई आवाज़ न निकले, मैं बीच-बीच में सुनाई देने वाली आवाज़ों की ओर दबे पांव बढ़ा। मैंने पुराने शिकारी की तरह आवाज़ों के आने तक ही आगे बढ़ने और आवाज़ बंद होते ही रुक जाने का नियम अपनाया। क्योंकि जब कोई जानवर, जिसका आप पीछा कर रहे हैं, खा रहा हो या किसी भी तरह की आवाज़ कर रहा हो, तो इस बात की संभावना कम होती

है कि वह आपके आने पर होने वाली आवाज़ों को सुन पाए, चाहे वे कितनी भी हल्की क्यों न हों। लेकिन अगर वह चुप रहे तो उसके आपको सुनने की संभावना कहीं अधिक होती है।

उस रात मैं पैंथर के काफी करीब आ गया था। मुझे नहीं लगता कि वह मुझसे पाँच गज से ज़्यादा दूर रहा होगा, जब किस्मत, जिसने अब तक मेरा साथ दिया था, ने अचानक मेरा साथ छोड़ दिया। संयोगवश, इसने तीन निर्दोष लोगों की जान ले ली। किसी भालू, सूअर या पैंगोलिन ने ज़मीन में गड्ढा खोद रखा था। अंधेरे में मुझे वह दिखाई नहीं दिया और मैंने अपना बायाँ पैर सीधे उस गड्ढे में डाल दिया, जिससे मैं झटके से गिर पड़ा। मैं आगे की ओर लड़खड़ाया, और पैंथर को पता चल गया कि मैं वहाँ हूँ। खाँसते हुए गुर्राते हुए वह भाग गया, और मैंने उसे झाड़ियों में भागते हुए सुना।

खुद को उस स्थिति से निकालकर मैं आगे बढ़ता रहा, जब तक कि मुझे उस कुत्ते का शव नहीं मिल गया जिसे पैंथर खाने लगा था। ज़मीन के अंधेरे में मुझे उसकी आकृति धुंधली सी दिखाई दे रही थी। जब मैं विश्राम गृह लौटा, तो अलीम और उसका परिवार कुत्ते को ढूंढते हुए बाहर आ चुके थे और सोच रहे थे कि मैं कहाँ चला गया था।

मैंने अपनी टॉर्च .405 पिस्तौल की नली पर टिकाई और चौकीदार के साथ वापस लौटा। कुत्ते का केवल एक चौथाई हिस्सा ही खाया गया था। अलीम अवशेषों को बंगले में वापस ले गया और कहा कि वह उन्हें सुबह दफना देगा, जबकि मैंने पैंथर की तलाश करने का फैसला किया।

अब टॉर्च की मदद से जंगल में घूमना आसान हो गया था, और मैंने इमारत के चारों ओर एक फर्लांग के दायरे में दो घंटे से अधिक समय तक छानबीन की। मुझे पैंथर का कोई निशान नहीं दिखा, जबकि सूअरों के एक छोटे झुंड की मौजूदगी से पता चला कि चित्तीदार बिल्ली इस इलाके से पूरी तरह दूर चली गई थी। सड़क के दूसरी ओर और सिग्नल के पास रेलवे ट्रैक के किनारे, कुछ चित्तीदार हिरण और एक अकेली नीलगाय शांति से चर रहे थे, तभी अचानक एक इंजन की तीखी सीटी और एक मालगाड़ी की भारी गड़गड़ाहट से उनकी शांति भंग हो गई।

पैंथर जा चुका था। अगली सुबह जब कुत्ते के बचे हुए हिस्से को दफनाया गया तो महिलाओं और बच्चों ने खूब रोया। थोड़ी देर बाद, तय समझौते के अनुसार, मैं विश्राम गृह से निकला और रेंजर के क्वार्टर पर रुका ताकि उससे एक पुराना तंबू उधार ले सकूँ, जिसे उसने मुझे देने का वादा किया था।

दो घंटे के भीतर ही तंबू लग गया और मैंने अपनी नई जगह पर डेरा डाल दिया। बाज़ार से खरीदे गए दो मिट्टी के बर्तन तंबू के एक कोने में रखे थे, जिनसे पीने और धोने का पानी चलता था। तंबू के बाहर पत्थरों से बने दो चूल्हे मेरी ज़रूरतों के लिए काफ़ी थे, एक से चाय और दूसरे से खाना पकाया जाता था। ज़मीन ही मेरा बिस्तर थी; पास ही बहने वाली नदी पीने और नहाने के पानी का स्रोत थी; रात में रोशनी के लिए एक छोटी लालटेन थी। मुझे और क्या चाहिए था? मैं जब चाहूँ आ-जा सकता था! कम से कम दिगुवमेत्ता के लिए तो मैं हमेशा के लिए अधिकारियों और सरकारी नियमों-कानूनों से मुक्त हो गया था। मैं बहुत खुश और संतुष्ट था।

बस एक ही चीज़ गड़बड़ हो सकती थी। अगर बारिश हो जाती, तो काली कपास की मिट्टी कीचड़ में बदल जाती और चिपचिपी दलदल बन जाती। मैं कैंपकॉट लाना भूल गया था क्योंकि मेरा इरादा जंगल के बंगले में रुकने का था। इसलिए, सचमुच, मैं मुसीबत में पड़ जाता।

उस दोपहर, गिद्दलूर से लौटने के बाद, एक जीप तेज़ी से सड़क पर आई और जैसे ही वह मेरे तंबू के पास से गुज़री, मैंने आगे और पीछे लगे तख्तों पर बड़े-बड़े सफेद अक्षरों में 'आंध्र वन विभाग' लिखा देखा। ड्राइवर के बगल में बैठे व्यक्ति का सांवला चेहरा मुझे घूर रहा था। ज़िला वन अधिकारी आ गए थे!

बाद में शाम को मैं शिष्टाचार भेंट के लिए विश्राम गृह गया। मुझे सरकारी अधिकारी भले ही नापसंद हों, लेकिन भारत में अगर आप स्वतंत्र रूप से घूमना-फिरना चाहते हैं तो उनसे संपर्क बनाए रखना जरूरी है।

रक्षा अधिकारी एक युवा व्यक्ति थे, जो सेवा में लगभग नए थे और कॉलेज की पढ़ाई पूरी करने, प्रशिक्षण लेने और प्रांतीय केंद्रों में से एक में विभागीय परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद सीधे विभाग में भर्ती हुए थे। बहुत जल्द ही मुझे पता चल गया कि उन्हें जंगल के जीव-जंतुओं के बारे में कुछ भी नहीं पता था और बाघों और तेंदुओं की भयानक क्रूरता के बारे में उनके मन में आम धारणाएँ ही थीं।

अलीम ने उसे पिछली रात कुत्ते के साथ हुई घटना के बारे में बताया था, लेकिन उसने कहानी में मेरी भूमिका का खुलासा नहीं किया था, और न ही सबसे महत्वपूर्ण बात यह थी कि मैं उस बंगले में रह रहा था।

तो फिर रक्षा अधिकारी ने मुझे घटना का बढ़ा-चढ़ाकर वर्णन किया, जिसमें यह भी बताया कि कैसे पैंथर अलीम की छाती पर कूद पड़ा और वहाँ सो रहे कुत्ते को उठाकर ले गया। मैंने यह सब भोलेपन से, बल्कि आश्चर्य भरे भाव से सुना। जाहिर है, उसे यह बात समझ में नहीं आई कि लोग आमतौर पर अपनी छाती पर इतने भारी-भरकम कुत्तों को रखकर नहीं सोते।

हालांकि, नतीजा यह हुआ कि रक्षा अधिकारी ने मुझे पैंथर का शिकार करने के लिए आमंत्रित किया। उन्होंने मुझसे पूछा कि मैं कहाँ ठहर रहा हूँ और यह जानकर उन्हें बहुत आश्चर्य हुआ कि मेरे पास दस तंबू हैं और मैं अपनी ही जगह पर डेरा डाले हुए हूँ। उन्होंने बड़ी उदारता से सुझाव दिया कि मैं बंगले के दूसरे हिस्से में रहूँ और वहाँ की सुविधाओं का आनंद लूँ।

शर्म से सिर झुकाए हुए मैंने उन्हें याद दिलाया कि मेरे पास 'सरकारी वन लॉज में रहने की आधिकारिक अनुमति' नहीं है, और चालाकी से कहा कि इस मामले में उनके विभाग के नियम बहुत सख्त हैं। अनुमति केवल वन संरक्षक या जिले के कलेक्टर द्वारा ही दी जा सकती है।

मेरा नया दोस्त नाराज़ हो गया। क्या वह खुद डी.एफ.ओ. नहीं था? क्या उसकी अनुमति काफी नहीं थी? संरक्षक और संग्रहकर्ता भाड़ में जाएं! उसने कहा, 'तुम अभी बंगले पर आओ; आज रात हम साथ में खाना खाएंगे।'

तो मैं वहीं लौट आया जहाँ से मैंने शुरुआत की थी, लेकिन अब एक मेहमान के रूप में, क्योंकि मैं एक आवारा की तरह चला गया था। इतना ही नहीं, और मुझे पूरा यकीन है कि यह महज़ किस्मत की बात

थी, मुझे एक बार फिर इमारत के पश्चिमी या स्नानघर वाले हिस्से में जगह मिल गई। और यह वाकई सौभाग्य की बात थी कि मैं बंगले की शरण में ठीक समय पर लौट आया, क्योंकि उस रात बहुत तेज़ बारिश हुई थी। अगली सुबह, मेरा शिविर स्थल काली मिट्टी के समुद्र में तब्दील हो गया था।

रक्षा अधिकारी ने अलीम के कहने पर, मेरी इच्छा के विरुद्ध, गाँव से एक कुत्ता लाने को कहा और चौकीदार को निर्देश दिया कि उसे इमारत के लगभग दस गज पीछे उगे सागौन के पेड़ से बाँध दे। वह चाहता था कि मैं ही उस लुटेरे को पकड़ूँ। मुझे कुत्तों को चारा बनाना पसंद नहीं है। वे बहुत संवेदनशील होते हैं और बाँधे जाने पर डर से काँपने लगते हैं, क्योंकि उन्हें अपने ऊपर मंडरा रहे खतरे का एहसास हो जाता है।

रक्षा अधिकारी के पास कोई बंदूक नहीं थी, लेकिन वह मेरे साथ भोजन कक्ष में एक और कुर्सी पर बैठ गया। दरवाज़ा आधा खुला रखने से हम बाहर की हर चीज़ को साफ़ चाँदनी में देख सकते थे, जबकि भोजन कक्ष के अंधेरे में पैंथर शायद हमें न देख पाए।

आप यकीन मानिए कि मैं पूरी सतर्कता से नज़र रख रहा था, क्योंकि मैं नहीं चाहता था कि कुत्ते की जान जाए। कुत्ते ने खतरे को भांपते हुए और ठंडी हवा से परेशान होकर ज़ोर-ज़ोर से भौंकना और रोना शुरू कर दिया। अगर पैंथर उस समय आधे मील या उससे भी ज़्यादा दूरी के दायरे में होता, तो वह उसकी आवाज़ ज़रूर सुन लेता।

रात 11 बजे के कुछ देर बाद रक्षा अधिकारी को हल्की नींद आने लगी और आधी रात से पहले ही वह अपने बिस्तर पर चले गए। सुबह दो बजे के कुछ देर बाद, जब चाँद पेड़ों के पीछे छिप गया, तो लंबी-लंबी परछाइयाँ पड़ने लगीं और कुत्ते को छिपाने लगीं, जिसने अपनी किस्मत मान ली थी। उसने भौंकना बंद कर दिया था और गहरी नींद में सो रहा था, मेरी नज़रों से ओझल। अगर पैंथर अब हमला कर दे, तो मैं उस आवारा कुत्ते को मरने से नहीं बचा पाऊँगा। फिर भी मैं तब तक हिचकिचाता रहा जब तक चाँद पश्चिम के जंगल के पीछे छिप नहीं गया और चारों तरफ़ घना अंधेरा नहीं हो गया। फिर मैं अपनी कुर्सी से उठा, कुत्ते को खोला, जो मुझे देखकर खुशी से अपनी पूंछ हिला रहा था, उसे अंदर ले आया और खुद सो गया।

अगले दिन दोपहर के भोजन के बाद, डीएफओ नंदीयाल के लिए अपनी वापसी यात्रा पर रवाना हो गया, जबकि मैंने अलीम को अपना बैंगलोर का पता और कुछ स्टांप लगे डाक लिफाफे देकर आधी रात की ट्रेन पकड़ ली। ये लिफाफे मैं हमेशा ऐसे ही कामों के लिए अपने साथ रखता हूँ। मैंने चौकीदार को हिदायत दी कि अगर कोई असामान्य घटना घटे तो मुझे पत्र लिख दे। मुझे आभास था कि उस पैंथर के बारे में अभी सब कुछ पता नहीं चला है। लेकिन यात्रा समाप्त होने से पहले ही मैं उस घटना को पूरी तरह भूल गया।

लगभग चार महीने बाद जब अलीम का पत्र मेरे पास पहुँचा तो मुझे आश्चर्य हुआ। उसमें लिखा था कि एक रेलवे कर्मचारी को लंबे पुल और पानी के स्तंभ के बीचोंबीच, जहाँ बाहरी सिग्नल स्टेशन बिल्कुल पास में था, एक जंगली जानवर ने मार डाला था। पत्र में यह भी लिखा था कि वहाँ कोई पटरियाँ नहीं मिलीं और कर्मचारी का शरीर आधा खा लिया गया था। फिर उसमें आगे बताया गया कि इस बात पर मतभेद था कि

किस जानवर ने यह अपराध किया था। कुछ लोगों का कहना था कि हत्यारा बाघ था; कुछ का कहना था कि वह भालू था। कुछ अंधविश्वासी लोगों ने बुरी आत्मा को दोषी ठहराया, लेकिन अलीम खुद मानता था कि यह पैंथर था। क्या मैं आकर उस जीव को मार डालूँगा, चाहे वह कुछ भी निकले?

मैंने जवाब दिया कि चूंकि यह हत्या पुरानी घटना है और शायद किसी क्रोधित भालू के साथ आकस्मिक मुठभेड़ का महज़ नतीजा हो सकती है, इसलिए दिगुवामेटा जाना इस समय कोई काम का नहीं होगा; लेकिन मैंने उनसे आग्रह किया कि अगर आगे कुछ और पता चले तो वे दोबारा लिखें।

अगला पत्र लगभग एक महीने बाद आया। इसमें बताया गया कि जल स्तंभ के प्रभारी गैंगर ने सूर्यास्त से पहले रेलवे स्टेशन लौटने की आदत बना ली थी। वह और एक अन्य गैंगर, जिसका काम हर शाम ठीक छह बजे 'बाहरी' सिग्नल के लिए तेल का दीपक जलाना था, हमेशा सिग्नल के नीचे मिलते और साथ लौटते थे। जब से वे दोनों मित्र बने थे, तब से यह उनकी नियमित आदत बन गई थी।

जिस शाम यह पत्र लिखा गया था, उससे एक शाम पहले यह मुलाकात नहीं हो पाई थी। दूसरे गैंगर ने संकेत मिलते ही दीपक जलाया, लोहे की सीढ़ी से नीचे आया, लेकिन पानी की टंकी के पास उसका दोस्त कहीं नहीं मिला, जिसे वहाँ उसका इंतज़ार करना चाहिए था। यह सोचकर कि वह सो गया होगा, उसने ज़ोर से उसका नाम पुकारा, 'राम! राम!'

कोई जवाब नहीं आया, इसलिए दूसरे सिपाही ने किसी खतरे की आशंका न जताते हुए अपने साथी की तलाश में निकल पड़ा। उसे पानी के टैंक को सहारा देने वाली पत्थर की संरचना के आधार पर शव मिला। शव का ज़्यादा हिस्सा खाया नहीं गया था: बस छाती से थोड़ा सा। और यद्यपि छह बज चुके थे, फिर भी इतनी रोशनी थी कि वह पानी के टैंक से बहकर आई मिट्टी में कई पदचिह्न देख सका, जो एक-दूसरे को काट रहे थे। ये पदचिह्न किसी पैंथर के थे।

गिरोहपाल अपनी जान बचाने के लिए तेजी से भागा और स्टेशन पहुंचने तक लगातार दौड़ता रहा।

‘तुरंत आओ,’ अलीम के पत्र का समापन जल्दबाजी भरे लहजे में हुआ। ‘एक आदमखोर पैंथर हमारे बीच है!’

दुर्भाग्यवश, उस दिन मेरे कुछ ज़रूरी काम थे, इसलिए मैंने अगली सुबह जल्दी निकलने का फैसला किया। मैंने कार से यात्रा की ताकि देरी न हो और मैं अपना टेंट, सामान और शिविर स्थल पर रहने के लिए आवश्यक सभी चीज़ें साथ ले जा सकूँ। मैं अपने अभियान के बीच में बंगले से निकाले जाने की परेशानी दोबारा नहीं मोल लेना चाहता था। इसके अलावा, जब किसी आदमखोर जानवर, विशेषकर पैंथर का शिकार कर रहे हों, तो सरकार के उन नियमों का पालन करना संभव नहीं है जो यात्रियों के बंगले या वन विश्राम गृह में तीन दिन से अधिक ठहरने पर रोक लगाते हैं।

मैं उसी शाम घर लौटा था, अपना सामान पैक कर चुका था और खाना खाने ही वाला था कि बाहर साइकिल की घंटी सुनाई दी। तभी मेरा नौकर थंगावेलु एक टेलीग्राम और मेरे हस्ताक्षर के लिए संदेशवाहक की पुस्तिका लेकर अंदर आया।

मैंने जल्दी से हस्ताक्षर किए और टेलीग्राम का कवर फाड़कर खोला तो मुझे अब तक का सबसे अप्रिय झटका लगा: 'पैंथर ने बहन के बच्चे को मार डाला। तुरंत आओ। अलीम।'

भोर होने से पहले ही मैं अपने रास्ते पर निकल चुका था।

अगर आप कभी दिगुवामेटा स्थित वन विश्राम गृह जाएँ, तो इमारत के दक्षिण-पूर्वी कोने पर, उससे बीस गज की दूरी पर, आपको एक पत्थर की पटिया के नीचे एक छोटी सी कब्र दिखाई देगी। पत्थर पर केवल एक शब्द खुदा है: 'शरारत'। कहानी यह है कि कई साल पहले, ब्रिटिश राज के दिनों में, एक ब्रिटिश वन अधिकारी, या शायद कोई संग्रहकर्ता, अपने छोटे कुत्ते 'शरारत' के साथ उस बंगले में रह रहा था। अचानक एक तेंदुआ उस पर झपटा और उसे उठाकर ले जा रहा था, तभी अंग्रेज ने गोली चलाई और उसकी बंदूक से निकली गोलियों से तेंदुआ और उसका कुत्ता दोनों मारे गए। अपने पालतू जानवर की याद में और उसके शोक में, उस अधिकारी ने उसे वहीं दफना दिया जहाँ उसकी मृत्यु हुई थी और बाद में एक खुदा हुआ समाधि-पत्थर लाकर उस स्थान पर रख दिया।

जब मैं अपनी कार से उतर रहा था, तभी अलीम ने मुझे हाल ही में हुई एक दुखद घटना की कहानी सुनाई। उसकी बहन की बड़ी बेटी को 'शरारत' की कहानी सुनाई गई थी और उसने हर सुबह कब्र पर जंगली फूलों का एक छोटा गुच्छा रखने की आदत बना ली थी। उस सुबह, किसी कारणवश, वह पत्थर की पटिया पर अपने द्वारा इकट्ठा किए गए फूल रखना भूल गई थी, और उसे देर शाम को लगभग अंधेरा होने पर याद आया। इस बीच, फूलों का छोटा गुच्छा काफी मुरझा चुका था।

'पियरी' नाम की उस लड़की ने अपनी माँ, अलीम की बहन को अपनी चूक के बारे में बताया और कहा कि वह तुरंत कब्र पर फूल चढ़ा देगी। उसकी माँ ने जवाब दिया कि अंधेरा हो रहा है और आदमखोर उसे पकड़ लेगा। इसके अलावा, फूल पहले ही मुरझा चुके थे; वह अगली सुबह कब्र पर ताजे फूल चढ़ा सकती थी।

बिना परवाह किए, पीयरी मुरझाते फूलों को उठाकर भाग गई। वह अपने गंतव्य तक पहुँच गई होगी, क्योंकि फूलों का छोटा गुच्छा वहीं मिला। किसी ने कोई आवाज़ नहीं सुनी; न चीख, न सिसकी, न गुर्राहट। बच्चा वापस नहीं आया।

घबराई हुई उसकी माँ ने उसे आवाज़ दी, लेकिन कोई जवाब न मिलने पर उसने बगल के कमरे से अलीम और उसकी दोनों पत्नियों को बुलाया। चौकीदार ने एक छड़ी उठाई और चारों, दो लालटेन लेकर, उस छोटी सी कब्र पर गए, जहाँ उन्हें फूल तो मिले, लेकिन बच्ची का कोई निशान नहीं था। कुछ ही दूरी पर कांच के मोतियों का बिखरा हुआ ढेर और उन्हें पिरोने वाली डोरी पड़ी थी। और, ज़ाहिर है, थोड़ा आगे जाकर खून की कुछ बूँदें भी मिलीं!

अलीम और तीनों महिलाएं जल्दी से गांव गए थे, और काफी देर बाद रेंजर, कुछ वन रक्षकों और कुल्हाड़ी, लाठी, चाकू और लालटेन से लैस काफी संख्या में लोगों के साथ वापस लौटे। किसी के पास बंदूक नहीं थी।

उस रात उन्होंने झाड़ियों में बड़े बेतरतीब ढंग से तलाशी ली, लेकिन कुछ नहीं मिला, क्योंकि हर कोई पैंथर से डरा हुआ था। अगली सुबह उन्होंने फिर से तलाशी ली। इस बार उन्हें हत्यारे के पदचिह्न और बच्चे के शरीर के निशान मिले, जहाँ उसे घनी झाड़ियों से घसीटा गया था। उन्हें कपड़े के कुछ फटे-पुराने टुकड़े भी मिले। उसके बाद, आदमखोर और शिकार के सभी निशान गायब हो गए थे।

अलीम ने कहा कि मुझे विश्राम गृह में ही रहना चाहिए और अपने तंबू में रहते हुए पैंथर के हमले के खतरे से बचना चाहिए। मैंने ऐसा करने से साफ इनकार कर दिया, लेकिन तभी उसने मुझे एक ऐसा विचार दिया जो जितना साहसी था उतना ही खतरनाक भी। उसने मुझे प्रस्ताव दिया कि अगर मैं अपनी राइफल को एक खंभे के पीछे छिपाकर बरामदे में लेट जाऊं, तो वह रात भर शरारती पैंथर की कब्र पर चारा बनकर बैठा रहेगा। उसने कहा कि पैंथर की मौजूदगी का एहसास होते ही वह धीरे से आवाज लगाएगा। तब मैं अपनी टॉर्च जलाकर उसकी रोशनी चारों ओर घुमाकर, रोशनी में जानवर की आंखें या आकृति देखकर उसे गोली मार सकता था। उस समय चांद नहीं था, रातें एकदम अंधेरी थीं।

अलीम की योजना बेहद साहसी थी, लेकिन पूरी तरह से बेतुकी और मूर्खतापूर्ण थी। भला उसे आदमखोर पैंथर की मौजूदगी का एहसास समय रहते हो पाएगा और हमले से पहले वह मुझे चेतावनी दे पाएगा! उसे तब तक कुछ भी पता नहीं चलेगा जब तक कि वह उस पर हमला न कर दे, और तब तक बहुत देर हो चुकी होगी। इससे भी बुरी बात यह थी कि मैं गोली नहीं चला पाऊँगा, क्योंकि अगर मैंने ऐसा किया तो शायद गोली उसे लग जाएगी, पैंथर को नहीं। मान लीजिए कि अलीम को पैंथर के आने का आभास हो भी जाए और वह मुझे पुकार भी दे, तो भी आदमखोर पैंथर कभी सामने नहीं आएगा।

'नहीं!' मैं बार-बार दोहराता रहा, 'नहीं, नहीं, नहीं!' लेकिन साथ ही मैं सोच रहा था कि अलीम की योजना में संभावनाएं हैं और इससे मुझे एक विचार आया: मुझे भारतीय कपड़े पहनकर शरारती जानवर की कब्र पर बैठने से कोई नहीं रोक सकता! मेरे सामान्य कपड़े आदमखोर को डरा सकते हैं, क्योंकि पैंथर बेहद चालाक और धूर्त होते हैं, लेकिन भारतीय वस्त्र उसे धोखा दे देंगे। किसी और को खतरा न होने के कारण, मुझ पर हत्या का आरोप नहीं लगाया जा सकता था; न ही आत्महत्या का कोई विचार हो सकता था। अगर आदमखोर आ भी जाए, और मुझे पहले से इसकी जानकारी न हो, तो आत्महत्या का सवाल ही नहीं उठता, क्योंकि मैं आरोप का जवाब देने के लिए वहां मौजूद ही नहीं रहूंगा। इसलिए मैंने अलीम को अपनी योजना बताई और अब विरोध करने की बारी उसकी थी।

लेकिन हमेशा की तरह इन मामलों में मेरी ही मर्ज़ी चली, और सूर्यास्त के समय मैं मिसचीफ की समाधि पर पालथी मारकर बैठा था, अलीम के सबसे गंदे कपड़े पहने हुए, मेरा चेहरा और हाथ कोयले से काले हो चुके थे, और माथे पर एक गंदा कपड़ा पगड़ी की तरह बंधा हुआ था। राइफल पास ही ज़मीन पर चुपचाप पड़ी थी, उस पर टॉर्च लगी हुई थी, जिसे पत्तों की हल्की परत से ढका गया था ताकि आदमखोर उसे देख न सके। आप यकीन मानिए कि मैंने विश्राम गृह की तरफ पीठ करके बैठने का पूरा ध्यान रखा था ताकि मैं तीन तरफ से जंगल देख सकूँ।

सूर्यास्त का समय और सूर्योदय का समय जंगल में बिताए गए सबसे सुखद क्षणों में से एक है, खासकर उन लोगों के लिए जो जंगल और उसमें रहने वाले जंगली जीवों से मोहित हैं। यही वह समय होता है जब दिन के पक्षियों के मधुर गीत सुनाई देते हैं। रात्रि के जीव और पक्षी मानो दिन के अपने साथियों से प्रेरणा लेते हैं और अंधेरे में स्वागत की उनकी पुकारें अपने घोंसले में बैठे साथियों की पुकारों के साथ मिल जाती हैं और सूर्योदय के साथ धीरे-धीरे मंद पड़ जाती हैं।

लेकिन इस समय मेरा मन ऐसे संगीत को सुनने का नहीं कर रहा था, हालांकि यह हमेशा मुझे मंत्रमुग्ध कर देता है, क्योंकि मेरे कान, मन और नसें कातिल के आने की प्रतीक्षा में तल्लीन थीं। यही वह घड़ी थी, सूर्यास्त का समय, जब वह हरकत में आएगा। ठीक इसी क्षण उसने बेचारी छोटी पीयरी को अगवा किया था, और पूरी संभावना थी कि वह किसी और शिकार की तलाश में उसी जगह पर वापस आएगा जहाँ उसने उसे मारा था। ऐसे विचार मेरे मन में आए और मुझे लगातार बढ़ते खतरे के अहसास से भर दिया।

जल्द ही घना अंधेरा हो गया। मेरे पीछे स्थित विश्राम गृह, हालांकि इतना करीब था, घने जंगल की पृष्ठभूमि में एक धुंधली सी आकृति जैसा दिख रहा था। ऊपर आकाश में, पेड़ों की चोटियों के बीच खाली जगहों में तारे टिमटिमा रहे थे, जो हल्की हवा के साथ धीरे-धीरे हिल रही थीं। थोड़ी दूरी पर बांसों का एक लंबा झुंड आसमान की ओर बढ़ रहा था, उनके विशाल पंख जैसे तने चारों दिशाओं में धरती की ओर झुके हुए थे, मानो एक सुंदर लेकिन विशाल गुलदस्ता हो।

तभी मुझे बाईं ओर हल्की सरसराहट सुनाई दी। थोड़ी देर बाद फिर वही आवाज़ आई, ऐसा लगा जैसे कुछ ही दूरी पर किसी झाड़ी से आ रही हो। मैंने आँखें गड़ाकर देखा, पर घने काले जंगल के बीच झाड़ी का धुंधला सा धब्बा ही दिखाई दिया। मेरा हाथ मेरे पैरों के पास रखी भरी हुई राइफल पर था, और बिजली की तेज़ी से मैंने उसका बट कंधे पर रखा और अपने बाएं अंगूठे से स्विच को ज़ोर से दबा दिया। एक तेज़ किरण अंधेरे को चीरती हुई निकली और उसमें छोटी-छोटी आँखें चमक उठीं, जो माणिक की तरह चमकदार थीं, मासूम नाराज़गी से भरी हुई। जिसे मैंने आदमखोर समझा था, वह असल में भारत में, खासकर आंध्र प्रदेश में पाए जाने वाले बड़े काले बिच्छुओं में से एक था, जो सूखे पत्तों को सरसराते हुए कीड़ों की तलाश कर रहा था।

ये जीव आठ इंच तक लंबे होते हैं, इनका रंग गहरा काला से लेकर बहुत गहरा हरा तक होता है, ये छोटे-छोटे, कांटेदार बालों से ढके होते हैं, इनके आगे केकड़े जैसे विशाल पंजे होते हैं और एक लंबी खंडित पूंछ होती है, जिसके सिरे पर सुई जैसी नुकीली नोक होती है। इस जीव का डंक चौबीस घंटे तक असहनीय पीड़ा देता है और कमजोर हृदय वाले लोगों की मृत्यु का कारण बन सकता है।

रोशनी पड़ते ही बिच्छू अपनी जगह पर रुक गया और झुंझलाहट से फुफकारा। मैंने मुट्ठी भर मिट्टी उठाई और बिच्छू पर फेंक दी, जो फुफकारते हुए फिर भाग गया। फिर मैंने टॉर्च बंद कर दी, राइफल को सावधानी से अपने पैरों के पास ज़मीन पर रख दिया और जो पत्ते मैंने हटाए थे उन्हें टटोलते हुए उसे हल्के से फिर से ढक दिया, मन ही मन बड़बड़ाते हुए।

यह पूरी घटना बेहद दुर्भाग्यपूर्ण थी। बिच्छू ने टॉर्च जलाकर मुझे अपनी स्थिति का खुलासा करने पर मजबूर कर दिया था। अगर पैंथर आस-पास कहीं भी होता तो उसे रोशनी दिख जाती, और आदमखोरों की उस अनोखी प्रवृत्ति के कारण, जो शिकार होने का आभास कर लेते हैं, वह जानवर तेजी से भाग जाता और अब बहुत दूर चला गया होता।

कहते हैं कि बिच्छुओं की दो से ज़्यादा आँखें होती हैं। मैं सोचने लगा कि क्या सच में ऐसा होता है और उसकी कौन सी आँख मेरी टॉर्च की रोशनी को पकड़ कर परावर्तित कर रही होगी, तभी मुझे एक इंजन की सीटी सुनाई दी जो बाहरी सिग्नल तक पहुँचने से ठीक पहले मोड़ पर मुड़ रहा था। मालगाड़ी ज़ोरदार आवाज़ के साथ रुकी और इंजन-चालक ने फिर से सीटी बजानी शुरू कर दी, पहले छोटी-छोटी तेज़ आवाज़ों में और फिर एक लंबी सीटी में जिससे पूरा जंगल हिल गया। मुझे आवाज़ें भी सुनाई दे रही थीं, चालक और उसके फायरमैन आपस में बात कर रहे थे। वे ज़रूरत से ज़्यादा उत्साहित लग रहे थे और काफी शोर मचा रहे थे।

मुझे समझ नहीं आ रहा था कि आखिर ये सब क्या हो रहा है, तभी मुझे इसका हल सूझा। स्टेशन में प्रवेश करने वाली ट्रेन के लिए 'बाहरी' सिग्नल 'ऊपर' होना चाहिए, क्योंकि नंदीयाल जाने वाली यात्री ट्रेन विपरीत दिशा से आ रही थी। इसका मतलब था कि आधी रात हो चुकी थी और समय मेरी उम्मीद से कहीं ज्यादा तेजी से बीत गया था।

लोगों की आवाज़ें आती रहीं, तभी मुझे दूर से यात्री ट्रेन के इंजन की हॉर्न की आवाज़ सुनाई दी, और फिर स्टेशन पर उसके आने की आवाज़ आई। मालगाड़ी के चालक ने सीटी बजाई और अपनी ट्रेन को आगे बढ़ाया, जो धीरे-धीरे खड़खड़ाती हुई चल पड़ी। कुछ मिनट बाद, नीचे की ओर जाने वाली यात्री ट्रेन तेज़ गति से नंदीयाल की ओर रवाना हुई।

मुझे जिस शांति की उम्मीद थी, वह नहीं आई, क्योंकि जल्द ही मुझे फिर से आवाजें सुनाई देने लगीं, जो तेज होती गईं। कुछ लोग लालटेन लिए विश्राम गृह के द्वार से अंदर आए और इमारत की ओर बढ़ने लगे। आदमखोर को गोली मारने की सारी उम्मीदें खत्म हो जाने से मैं चिढ़ गया और शरारती जानवर की कब्र से उठकर बरामदे की ओर बढ़ा, जहां अलीम भी मेरे साथ आ गया, जो जाग रहा था और सुन रहा था। पता चला कि उस समूह में स्टेशन मास्टर, रेंजर, मालगाड़ी का ड्राइवर, गार्ड और एक दमकलकर्मी शामिल थे।

वे सब घबराए हुए थे और उन्होंने बताया कि लंबी सुरंग से बाहर निकलते ही इंजन की हेडलाइट से पटरी के किनारे एक कुचला हुआ मानव शरीर दिखाई दिया। यह देखकर चालक ने अनुमान लगाया कि पहले की किसी ट्रेन ने पटरी पार करने की कोशिश कर रहे किसी व्यक्ति को टक्कर मार दी होगी। चूंकि उस समय उसकी ट्रेन धीमी गति से चल रही थी, इसलिए उसने रुककर जांच करने का फैसला किया, ताकि बाद में उस व्यक्ति की हत्या का आरोप उस पर न लगे। हालांकि, चालक और उसके दमकलकर्मियों को

यह देखकर निराशा हुई कि उस व्यक्ति को ट्रेन ने कुचला नहीं था। बल्कि, उसे किसी जानवर ने खा लिया था, जैसा कि उसकी कुतरी हुई हड्डियों के बिखरे होने से स्पष्ट था।

ट्रेन गार्ड, जो तब तक उनके साथ आ चुका था, ने सुझाव दिया कि शव किसी घुमंतू चेंचु जनजाति के व्यक्ति का हो सकता है, क्योंकि वह केवल एक लंगोटी में लिपटा हुआ था। पैंथर के उत्पातों के बारे में सुनकर, ड्राइवर और उसके साथियों ने दिगुवामेटा स्टेशन मास्टर को सूचित करने का निर्णय लिया, जो घटना की सूचना टेलीग्राम द्वारा अधिकारियों को दे सकता था। उन्होंने ऐसा किया ही था कि स्टेशन मास्टर को पता चला कि मैं वहीं पास में हूँ और आदमखोर पैंथर को गोली मारने आया हूँ, इसलिए उसने अपना संदेश भेजने से पहले रेंजर और मुझे पहले सूचित करने का निर्णय लिया।

तो मैं सही था! पैंथर सचमुच बहुत दूर था। शायद वह उस रात बंगले के पास आया ही नहीं था। शायद वह ठीक उसी समय आया था जब बड़े बिच्छू ने मुझे झूठा आगाह किया था। हो सकता है उसने मेरी टॉर्च की रोशनी देखी हो, भाग गया हो, सुरंग के पास चेनचू से मिला हो और उसे मार डाला हो। लेकिन यह लगभग असंभव था, क्योंकि सुरंग मेरे बैठने की जगह से काफी दूर थी। यह भी संभव था कि चेनचू कोई यात्री था जिसने आदमखोर पैंथर के बारे में नहीं सुना था, या शायद उसने सुना था और इसी वजह से उसने सुरंग के अंदर सोने का फैसला किया था, यह सोचकर कि यह एक सुरक्षित जगह है जहाँ पैंथर कभी नहीं आएगा।

मैंने अपने मुखबिरों को धन्यवाद दिया और कहा कि मैं अपनी तरफ से पूरी कोशिश करूंगा। उनके चले जाने के बाद, क्योंकि कब्र के पास और अधिक देर रुकने का कोई फायदा नहीं था, मैंने थोड़ी देर सोने का फैसला किया और अलीम को निर्देश दिया कि वह मुझे चार बजे के बाद जगा दे।

वह जागता रहा होगा, क्योंकि जब उसने मुझे फोन किया तो चार बजने में कुछ ही मिनट बाकी थे। हमने चाय बनाई और कुछ बिस्कुट खाए, जिसके बाद हम अंधेरे में रेलवे ट्रैक के किनारे एक-एक करके चलने लगे। अगर आदमखोर बाघ होता, तो ऐसा करना बेहद खतरनाक होता, क्योंकि आदमखोर बाघ लगभग हमेशा कतार में सबसे पीछे वाले व्यक्ति को ही ले जाता है। पैंथर के मामले में खतरा कम था: वह जितना डरपोक होता है, उतना ही चालाक भी होता है, वह हमला करने से पहले अकेले और असहाय शिकार का इंतजार करता है, और एक से अधिक लोगों की मौजूदगी में खुद को दिखाने से बचता है।

भोर होते-होते हम लंबे पुल पर पहुँचे। यहाँ हमें लगभग दस मिनट तक इंतज़ार करना पड़ा, जब तक कि इतनी रोशनी नहीं हो गई कि हम पुल पार करने की कोशिश कर सकें, क्योंकि यह एक जोखिम भरा काम था, जिसमें पटरियों के बीच एक स्लीपर पर कदम रखते हुए आगे बढ़ना पड़ता था। घाटी और नीचे दूर तक फैले पेड़ों की चोटियों को देखने की हिम्मत ही नहीं हो रही थी, क्योंकि हमें स्लीपरों के बीच की खुली जगहों से उनकी झलक दिख रही थी।

दूसरे छोर तक की दूरी अंतहीन लग रही थी, लेकिन आखिरकार हम वहाँ पहुँच गए। थोड़ी ही दूर पर सुरंग का प्रवेश द्वार था, जो एक विशाल काले गड्ढे जैसा दिखता था। वहाँ पहुँचने से ठीक पहले, हमारे बाईं ओर और पटरी के पास, एक चेंचु के क्षत-विक्षत अवशेष पड़े थे।

जांच से पता चला कि आदमखोर जानवर अपने शिकार पर वापस लौटा होगा, या तो मालगाड़ी के गुजरने के बाद या शायद बाद में, यात्री ट्रेन के विपरीत दिशा में जाने के बाद, क्योंकि शरीर का जितना हिस्सा खाया गया था, उतना मुझे बताया नहीं गया था। सिर, पैर और हाथ धड़ से अलग होकर इधर-उधर बिखरे पड़े थे, जिससे आदमखोर जानवर के वापस आने की एक संभावना (हालांकि बहुत मजबूत नहीं) बची थी।

ठीक उसी क्षण दूर से आती गड़गड़ाहट जैसी आवाज़ ने हमारे विचारों को अचानक भंग कर दिया। यह आवाज़ सुरंग के मुहाने से आ रही थी, जो धीरे-धीरे तेज़ होती गई और फिर एक निरंतर गर्जना में बदल गई। दिगुवामेटा जाने वाली सुबह की यात्री ट्रेन आ रही थी। मैंने झट से मन बना लिया और अलीम को अपने पीछे आने का इशारा किया। मैं सुरंग से कुछ गज दूर पटरी पर दौड़ा ताकि ड्राइवर मुझे देख सके। मैं पटरियों के बीच खड़ा हो गया और इंजन के आगे के हिस्से को, जो धुएं के गुबार उड़ाता हुआ सुरंग से बाहर निकला, ज़ोर-ज़ोर से हाथ हिलाने लगा।

जब ड्राइवर ने मुझे देखा तो ट्रेन तेज़ी से चल रही थी। उसने ब्रेक लगाए और मैं पटरियों से हटकर निकल गया, लेकिन ट्रेन के रुकने से पहले ही आधी ट्रेन निकल चुकी थी। मैंने ड्राइवर और गार्ड को, जो ट्रेन के दोनों सिरों से दौड़ते हुए आए, संक्षेप में स्थिति समझाई और उनसे कहा कि वे अलीम को साथ ले जाएं और दिगुवामेटा स्टेशन मास्टर को बताएं कि वे रेंजर से स्थानीय पुलिस के माध्यम से आदेश जारी करने को कहें कि उस रात किसी को भी पुल या सुरंग के पास न जाने दें। मैं आदमखोर सांप के संभावित लौटने का इंतज़ार करने वाला था। मैंने अलीम को जल्दी से निर्देश दिए और उससे कहा कि वह हम दोनों के लिए खाना, चाय और कंबल लेकर वापस आए। दोपहर 2 बजे के कुछ ही देर बाद एक यात्री ट्रेन आने वाली थी, और वह सुरक्षित रूप से उसमें बैठ सकता था।

जब मैं बोल रहा था, तब बहुत सारे यात्री मेरे आस-पास जमा हो गए, यह जानने के लिए कि क्या हो रहा है। इनमें से कुछ अब शव को देखने पर अड़े हुए थे, जिसके कारण ड्राइवर को अपनी यात्रा जारी रखने में पंद्रह मिनट से अधिक का समय लग गया। मैंने ट्रेन को लंबे पुल से गुजरते हुए देखा, जो खड़खड़ाती हुई मोड़ पर गायब हो गई।

बेहद कम समय में गिद्धों ने अवशेषों को खोज लिया। पहले तो एक गिद्ध मेरे ऊपर आसमान में एक छोटे से बिंदु के रूप में दिखाई दिया, फिर जल्द ही अन्य बिंदु भी दिखाई दिए। इसके बाद उनके पंखों से हवा की तेज़ सरसराहट सुनाई दी और वे ज़मीन पर झपट्टा मारकर अपने संभावित भोजन से कुछ ही फीट की दूरी पर भारी कदमों से उतरे, जिसकी ओर वे बेढंगे ढंग से लड़खड़ाते हुए बढ़ने लगे।

सुरंग के मुहाने पर बैठकर, मेरे पास पटरी पर बिछी बजरी में गोला-बारूद का भरपूर भंडार था। मैंने उन पत्थरों को साहसी गिद्धों पर फेंका, और इतनी नज़दीक से मैंने कई सीधे निशाने लगाए, जिससे वे अवांछित पक्षी दूर रहे। इस तरह समय बीतता गया और दिगुवामेटा जाने वाली एक मालगाड़ी सुरंग से तेज़ी से गुज़र गई। ड्राइवर ने मुझे, जो मुहाने के एक तरफ बैठा था, या बिखरे हुए चेंचु के अवशेषों को, देखा तक नहीं, हालांकि उसने पटरी के दोनों ओर जमा हुए गिद्धों की असामान्य संख्या को अवश्य ही देखा होगा।

यह मार्ग व्यस्त नहीं था और दोपहर दो बजे के कुछ देर बाद तक कोई और ट्रेन नहीं आई। उस ट्रेन में अलीम के लिए चाय, मेरा दोपहर का खाना और हम सबके लिए रात के लिए एक-एक कंबल था। ड्राइवर ने अलीम को उतरने के लिए ट्रेन रोकी और फिर खुद अपने दमकलकर्मियों, गार्ड और यात्रियों की भीड़ के साथ नीचे उतरा, ताकि उस शव को देख सके जिससे अब तक बहुत बदबू आ रही थी।

'शुभकामनाएं' की आवाज़ों के बीच ट्रेन फिर से गरजती हुई चली गई, एक घंटे बाद एक मालगाड़ी भी उसके पीछे-पीछे चली गई, जिसके बाद हमें अपने हाल पर छोड़ दिया गया। गिद्धों ने अब तक अपना काम निराशाजनक समझकर छोड़ दिया था और निराश होकर उड़ गए थे, हमें रात के लिए अपनी योजनाएँ बनाने के लिए अकेला छोड़कर।

छिपने के दो संभावित स्थान थे। पहला था सुरंग का मुँह; दूसरा, प्रवेश द्वार के ठीक ऊपर कहीं। यह निर्धारित करने के लिए कि दोनों में से कौन सा स्थान पकड़े जाने की संभावना कम रखता है, मैंने खुद को उस आदमखोर की जगह पर रखकर सोचा। सहज प्रवृत्ति और उस इलाके से लंबे समय से जुड़े रहने के कारण उसे यह बात पता होगी कि विशालकाय राक्षस, गरजते-चिल्लाते और धुआँ उगलते हुए, समय-समय पर धरती में बने उस छेद से निकलते हैं। इसलिए वह निश्चित रूप से छेद को बहुत ध्यान से और लंबे समय तक देखता रहेगा, इससे पहले कि वह खुद को दिखाने की हिम्मत करे; इस गहन निगरानी के दौरान वह हमें देख ही लेता, क्योंकि मुझे अलीम को अपने साथ रखना था। उसे कहीं और भेजने का कोई रास्ता नहीं था, और उसे निहत्थे घर लौटने के लिए कहना बेहद खतरनाक होता।

इसलिए हमारा निष्कर्ष स्पष्ट था: हम पहाड़ी पर कहीं छिप जाएँगे, सुरंग के मुहाने के ठीक ऊपर जितना संभव हो सके, इस उम्मीद में कि पैंथर दुश्मन को देखने के लिए ऊपर की ओर न देखने के सामान्य नियम का पालन करेगा। सुरंग के प्रवेश द्वार के ऊपर की ज़मीन धीरे-धीरे ढलान वाली थी और अधिकतर मोटी घास और खरपतवारों से ढकी हुई थी, जिसमें कहीं-कहीं छोटे-छोटे पेड़ थे। यह काफी पथरीली थी और चारों ओर बड़ी-बड़ी चट्टानें बिखरी पड़ी थीं, जिनका आकार फुटबॉल से लेकर एक आदमी की ऊँचाई तक था।

इस सुरक्षित आश्रय से मिली सुविधा के लिए आभारी होकर, हमने मिलकर जल्द ही पत्थरों का एक छोटा सा सहारा बना लिया। हमने उसे सुरंग के प्रवेश द्वार से थोड़ा ऊपर एक दीवार की तरह कतार में खड़ा कर दिया, जो इतनी ऊँची थी कि उसके पीछे लेटने पर हम छिप सकें। इन पत्थरों के बीच हमने दो छेद बनाए, एक अलीम के लिए और दूसरा मेरे लिए, जिनसे हम नीचे रास्ते के किनारे पड़े अवशेषों और

उसके आसपास के इलाके पर नज़र रख सकें। बेहतर नज़ारा देखने और निशाना लगाने के लिए मुझे अपने बनाए हुए खुरदुरे पत्थर के चबूतरे के ऊपर से देखना पड़ता। अगर मैं राइफल को छेद से निकालने की कोशिश करता, तो हो सकता है कि बैरल पत्थर से टकराकर आवाज़ करे। पैंथर यह आवाज़ सुनकर ऊपर देख लेता और हमें देख लेता। हमारी स्थिति का एक ही नुकसान था कि हम नीचे की ओर झुके हुए थे, हमारी एड़ियाँ हमारे सिर से ऊपर थीं।

हम चार बजे तक अपनी जगह पर पहुँच गए थे, सूरज की तेज़ गर्मी हम पर पड़ रही थी और ज़मीन आग की तरह गर्म थी। हम अपने कंबलों पर लेट गए, लेकिन वे जल्द ही असहनीय रूप से गर्म हो गए, और ढलान की असुविधा अब महसूस होने लगी। मुझे लगता है, मेरे पूरे शरीर में समान रूप से रक्त के वितरण के बजाय, मेरे सीने और सिर में लगातार रक्त जमा होने के कारण, मुझे घुटन महसूस होने लगी, जो सूर्यास्त के करीब आते-आते और भी बढ़ गई। इससे मैं बेचैन होने लगा, और मैंने देखा कि अलीम भी बेचैन हो रहा था, जिससे मुझे लगा कि वह भी मेरी तरह असहज महसूस कर रहा है। अगर केवल दो घंटों के छोटे से समय में ही मुझे इतनी घुटन महसूस हो रही थी, तो यह स्पष्ट था कि हमें जल्द ही अपनी जगह बदलनी पड़ेगी।

अब अंधेरा होने लगा था, और हमें अभी भी चेंचु के अवशेष दिखाई दे रहे थे, तभी हमारे पीछे पहाड़ी की चोटी से एक हिरण ने तेज आवाज में पुकारा। ‘खर्र!’ वह चिल्लाया, ‘खर्र! खर्र! खर्र!’

वह कर्कश स्वर में भौंकता रहा, लेकिन हिला तक नहीं। इसलिए, जो कुछ भी उसने देखा था, वह स्पष्ट रूप से सुरक्षित दूरी पर था, जिससे वह खतरे का संकेत देते हुए अपनी जगह पर डटा रहा। एक मोर ने ज़ोर से आवाज़ निकाली और हमारे पीछे एक पेड़ पर बैठे अपने ठिकाने से उड़ गया और ज़ोर-ज़ोर से पंख फड़फड़ाते हुए दूर चला गया। मैंने उसे अपनी आँखों के कोने से देखा जब वह फैले हुए पंखों के साथ लंबे रेलवे पुल के नीचे घाटी में चला गया।

उसके बाद सन्नाटा छा गया और लगभग अंधेरा छाने ही वाला था कि हमारे पीछे पहाड़ी पर कहीं से एक जंगली मुर्गी अचानक 'कोक! कोक! कोक! कोक!' की कर्कश आवाज करते हुए फड़फड़ाती हुई निकली। मुझे अपने पीछे हो रही यह हलचल बिल्कुल अच्छी नहीं लगी। निस्संदेह, कोई ऐसा जानवर जो खतरे की घंटी बजाने वाले जीवों के लिए खतरा था, हमारे पीछे कहीं मौजूद था। यह कोई बाघ या तेंदुआ हो सकता था, लेकिन कहीं अधिक संभावना यही थी कि वह आदमखोर ही हो।

अगले कुछ मिनटों में इतना अंधेरा हो गया कि चेनचू दिखना बंद हो गया, हालांकि मैं रेल पटरी के किनारे गिट्टी की एक लकीर देख पा रहा था, जो मेरे नीचे सुरंग से दूर एक धुंधली धूसर पट्टी की तरह फैली हुई थी। जब मैं अभी भी देख ही रहा था, तभी मुझे अपने पीछे कहीं एक छोटा पत्थर लुढ़कने की आवाज़ सुनाई दी। आवाज़ धीमी थी, लेकिन जंगल में किसी भी आवाज़ को ध्यान से सुनने की मेरी आदत ने उसे पकड़ लिया।

नीचे पड़े गिट्टी को देखने के लिए आँखें गड़ाए हुए, मैंने अपना सिर बाईं ओर घुमाया और असहज होकर पीछे की ओर देखा। मेरे बगल में बैठा अलीम भी ऐसा ही कर रहा था। तभी मेरे मन में एक ख्याल आया: शायद आदमखोर जानवर रास्ते पर चलते हुए नीचे पड़े छोटे ग्रेनाइट के पत्थरों में से किसी एक को हटा दिया हो। हो सकता है कि जानवर सुरंग से ही गुजरा हो और प्रवेश द्वार पर रखे पत्थरों में से किसी एक को खिसका दिया हो। कितनी अच्छी बात है कि हमने सुरंग के मुहाने पर न बैठने का फैसला किया!

मैं इसी तरह खुद को बधाई दे रहा था कि तभी एक भयानक विचार मेरे मन में आया: शायद पैंथर हमारे नीचे था ही नहीं। हो सकता है उसने हमें ऊपर पहाड़ी की चोटी से देख लिया हो और ठीक उसी क्षण पीछे से हमारी ओर रेंग रहा हो, अंतिम हमला करने से पहले पर्याप्त करीब आने का इंतजार कर रहा हो।

उस क्षण सारी अटकलें धराशायी हो गईं जब मेरे नीचे की धरती कांप उठी। गहरी गड़गड़ाहट एक लंबी गर्जना में बदल गई, और कुछ ही क्षण बाद मेरे सामने धरती से चिंगारियों और काले धुएं की बौछार निकली, मानो एक हल्का इंजन, जो पीछे की ओर चल रहा था, सुरंग के मुहाने से तेज़ी से बाहर निकला हो। चूंकि यह इंजन पीछे की ओर चल रहा था, इसलिए चालक अपनी हेडलाइट का उपयोग नहीं कर सका, और हमें उसके आने की कोई चेतावनी नहीं मिली। इंजन की काली आकृति अंधेरे में गायब हो गई और बाकी सभी आवाज़ें सुनाई देना बंद हो गईं।

तभी पैंथर ने हमला करने का फैसला किया और वह हमारे पीछे से आया, नीचे से नहीं। शायद उसे हममें से केवल एक ही दिखाई दिया और इसलिए वह यह समझ नहीं पाया कि वास्तव में दो लोग मौजूद थे, क्योंकि वह आदमखोर की तरह उछलता हुआ आया, लेकिन बिना कोई आवाज़ किए, जबकि आम पैंथर हमला करते समय ज़ोर-ज़ोर से भौंकता और खांसता है।

जब वह हमारी ओर झपटा, तो हमें केवल उसके कोमल पंजों की कठोर ज़मीन पर पड़ने की धीमी सी आवाज़ सुनाई दी, एक हल्की सी खरोंच, खोखली सी गड़गड़ाहट, जिसने हमें अचंभित कर दिया। एक पल और रुकता तो वह हम पर टूट पड़ता, लेकिन तभी उसे पता चला कि वह जहाँ एक व्यक्ति पर हमला करने की उम्मीद कर रहा था, वहाँ दो लोगों पर हमला कर रहा है। पैंथर दो गज दूर रुक गया, और गुस्से में गुर्राने और दहाड़ने लगा। तब, और केवल तभी, हमें पता चला कि आदमखोर सचमुच आ चुका है।

इसके बाद क्या हुआ, मुझे ठीक से याद नहीं। मुझे पता है कि अलीम चीखते हुए उछल पड़ा और मैं खतरे से बचने के लिए अपनी अंतरात्मा की आवाज सुनते हुए इधर-उधर लुढ़कता रहा। लेकिन मुझे इतना जरूर याद है कि मैंने अपनी टॉर्च जलाई और पैंथर के चेहरे पर एकदम करीब से गोली चलाई। तभी वह उछलकर आगे बढ़ा, हमारे बीच से गुजरा और जिस सुरंग के ऊपर हम बैठे थे, उसके किनारे से नीचे गिर गया, जहां से नीचे रेलवे ट्रैक पर ज़ोरदार आवाज़ हुई।

आधी रात को नीचे जाने वाली बस का चालक कुछ देर बाद अपनी हेडलाइट की रोशनी में जो दृश्य देखा, उसे देखकर दंग रह गया। दो आदमी चाय पी रहे थे। उनके बीच एक मरा हुआ पैंथर पड़ा था, और थोड़ी ही दूरी पर एक आदमी के क्षत-विक्षत अवशेष और हड्डियाँ बिखरी थीं। मुझे यकीन है कि वह

सेवामुक्त होने के बाद भी इस दृश्य को लंबे समय तक याद रखेगा। भला आदमी होने के नाते, उसने अलीम और मुझे, साथ ही मरे हुए पैंथर को भी दिगुवामेटा तक लिफ्ट दे दी।

चावल के आटे से बना एक तला हुआ चपटा केक।

5

अलौकिक कहानियाँ

कई लोगों ने मुझसे पूछा है कि क्या जंगलों में बिताए वर्षों के दौरान मुझे कोई रहस्यमय अनुभव हुए हैं, और इस बारे में मेरे विचार क्या हैं कि क्या ऐसी चीजें सच हैं या काल्पनिक हैं, या शायद अतिरंजित कल्पना की उपज हैं।

मुझे सच में समझ नहीं आता कि शिकार के अनुभवों और वन विद्या का संबंध तंत्र-मंत्र से क्यों है, लेकिन किसी न किसी तरह यह जुड़ा हुआ है। मुझसे कहीं अधिक अनुभवी अन्य शिकारियों ने इस तरह की कुछ रोचक घटनाओं का वर्णन किया है और हमारे पास उन पर संदेह करने का कोई ठोस कारण नहीं है। मुझे स्वयं भी कुछ विचित्र अनुभव हुए हैं और मैंने उन्हें पहले ही बताया है, जैसे कलहट्टी वन बंगले के मृत चौकीदार की घटना।* सौभाग्य से उस समय मैं अकेला नहीं था; मेरा बेटा डोनाल्ड मेरे साथ था। हम दोनों ने चौकीदार को इतनी स्पष्टता से देखा जितनी स्पष्टता से मैं इस कागज को देख सकता हूँ; जबकि उसे बहुत पहले ही गोली मारकर दफना दिया गया था!

फिर कैप्टन नेइड का मामला था, जिन्होंने एक प्राचीन मंदिर से एक पुराना दीपक हटा दिया था। इसके कुछ ही समय बाद उन्हें बुखार से गंभीर रूप से बीमार पड़ गए और दीपक को वापस उसकी जगह पर रखने के बाद ही वे ठीक हुए। लगभग उसी इलाके में एक लड़की रहती थी जिस पर बुरी आत्माओं का साया था, जिसके कारण वह हर बार शाम का खाना खाने की कोशिश करते समय पत्थर उगलती थी। मैंने यह सब अपनी आँखों से देखा और एक धार्मिक चिकित्सक द्वारा उसका इलाज होते हुए भी देखा। इन दोनों घटनाओं का विवरण मैंने अपनी पिछली पुस्तक में दिया है।**

मैं तंत्र-मंत्र का विशेषज्ञ नहीं हूँ और मुझे लगता है कि जिस विषय के बारे में किसी को कोई जानकारी न हो, उस पर राय देना बहुत मूर्खतापूर्ण है। इसलिए मैं केवल दक्षिण भारत के लोगों की कुछ मान्यताओं को दर्ज करना चाहता हूँ। बेशक, यह उन लोगों के सवालों का जवाब नहीं है जिन्होंने मुझसे व्यक्तिगत राय पूछी है। वास्तव में, मेरे पास कोई जवाब नहीं है।

प्रायद्वीप के दक्षिणी भाग में शायद सबसे प्रचलित मान्यता पति-पत्नी के रूप में विद्यमान दुष्ट आत्माओं के एक जोड़े में है। तमिल भाषा में स्त्री को मिन्नीस्पुरम और मलयालम में यक्षी कहा जाता है। यह सर्वमान्य है कि स्त्री अत्यंत शत्रुतापूर्ण और मनुष्यों, विशेषकर अन्य महिलाओं के लिए खतरनाक होती है, जबकि पुरुष आमतौर पर काफी हानिरहित होते हैं, कम से कम तमिल मान्यताओं के अनुसार। यह दृष्टिकोण मानव जाति के पुरुषों और महिलाओं के संबंध में हमारे अपने दृष्टिकोण से काफी मिलता-जुलता है। लेकिन मलयाली लोग अलग सोचते हैं: उनका कहना है कि यक्षिणियाँ (स्त्री आत्माएँ) और गंधर्व (पुरुष आत्माएँ) दोनों ही मनुष्यों के लिए अत्यंत खतरनाक हैं।

तमिलों का मानना है कि मिनीस्पुरम (स्त्री) किसी भी रूप या आकार को धारण कर सकती हैं, चाहे वह पशु हो या मनुष्य, और अक्सर धुंधली सफेदी या कालेपन के ऊंचे खंभों के रूप में प्रकट होती हैं। मलयाली कहते हैं कि यक्षिणियां आमतौर पर अधिक सुंदर रूप में प्रकट होती हैं, जैसे कि आकर्षक नग्न स्तन वाली महिलाएं, कमर के नीचे अर्ध-पारदर्शी लुंगी पहने हुए, उनके बाल लंबे और पीठ पर लहराते हुए, इस प्रकार उनकी खोखली पीठ को छुपाते हैं जो इन आत्माओं की विशेषता है। ऐसी कहानियां प्रचलित हैं कि कैसे एक पुरुष या युवक रात में घर लौटते समय इन धुंधली प्राणियों में से किसी एक से मिला और उसके पास जाने के लिए प्रलोभित हुआ; फिर उसे सिर या पीठ पर प्रहार किया गया, खून की उल्टी होने लगी और चौबीस घंटे के भीतर उसकी मृत्यु हो गई। अन्य लोगों को कुओं या तालाबों के किनारे तक प्रलोभित किया गया और फिर उन्हें अंदर धकेल दिया गया।

दो नंबूदरी (पश्चिमी तट के ब्राह्मण पुजारी) की एक कहानी है, जिनका सामना दो यक्षिणियों से हुआ जो सुंदर कन्याओं के रूप में थीं। उन्होंने उन कन्याओं से बात की और उन्हें अपने घर आने का निमंत्रण मिला। पुजारी आकर्षित हुए और पता चला कि दोनों कन्याओं का घर वाकई बहुत सुंदर था। दोनों नंबूदरी एक-एक कन्या के साथ अलग-अलग कमरों में गए। लेकिन किसी अज्ञात कारण से उनमें से एक घबरा गया: प्रेम करने के बजाय उसने अपने हाथ में अपना निजी ताबीज, ताड़ का पत्ता जिस पर पवित्र शब्द 'नघरी' खुदा हुआ था, कसकर पकड़ लिया।

अगले कमरे से खिलखिलाहट की आवाज़ आई, जो अचानक रुक गई और उसके बाद हड्डियों के चटकने की आवाज़ सुनाई दी। लड़की ने पुजारी को छुआ तक नहीं, बल्कि उससे विनती की कि वह ताड़ का पत्ता फेंक दे और प्रेम करे, और अपने नग्न शरीर को दिखाकर प्रलोभन को और भी बढ़ा दिया। लेकिन पुजारी, जो अब पूरी तरह से शंकालु हो चुका था, अपने पत्ते से मजबूती से चिपका रहा।

अचानक बगल वाले कमरे से आ रही चरमराहट की आवाज़ बंद हो गई, जिसके बाद लड़की क्रोधित हो उठी, उसने पुजारी को ज़ोर-ज़ोर से गालियाँ दीं, उसके चेहरे पर एक ज़ोरदार थप्पड़ मारा और आँखों से ओझल हो गई। घर भी गायब हो गया! और पुजारी ने खुद को अँधेरे में अपने दोस्त के क्षत-विक्षत शरीर के साथ अकेला पाया।

पिशाचवाद में विश्वास, लेकिन एक विशेष रूप में, आम है। यूरोपीय पिशाचों की तरह खून चूसने के बजाय, भारतीय पिशाच, जो केवल रात में प्रकट होता है और दिन भर धरती में सोता है, रात में अकेले आदमी का पीछा करने में माहिर है; जब वह रुकता है तो वह भी रुक जाता है और जब वह चलता है तो वह भी चलने लगता है। यह सिलसिला आदमी के गंतव्य से सौ गज की दूरी तक जारी रहता है, और फिर पिशाच हमला करता है! यह पीछे से हमला करता है, फिर अपने शिकार के टुकड़े-टुकड़े करके उसका मांस खा जाता है। बचने का एकमात्र तरीका है एक पवित्र शब्द बोलना और खींची हुई छुरी से पिशाच पर पलटवार करना। पिशाच एक घायल जानवर की तरह चीखेगा। उसे तब तक बार-बार चाकू मारना होगा जब तक वह गिर न जाए, और फिर वह खून के तालाब में गायब हो जाएगा। या ऐसा कहा जाता है!

व्यापार में अपार सफलता और भरपूर धन-संपत्ति अर्जित करने के साथ-साथ कई तरह की दौलत जमा करने का अधिकार तब प्राप्त होता है जब कोई व्यक्ति अपनी पत्नी को एक विशेष प्रकार की आत्मा को सौंपने के लिए सहमत हो जाता है, जो बदले में परिवार को अपार धन प्रदान करती है। सांसारिक पति को अपनी पत्नी से अलग रहना पड़ता है और उसके साथ यौन संबंध नहीं रखना चाहिए, हालांकि उसे उससे बात करने और कभी-कभार उसके साथ भोजन करने की अनुमति होती है।

पत्नी को अलग घर में रहना पड़ता है; रात नौ बजे दरवाजे बंद कर दिए जाते हैं और सांसारिक पत्नी को खिड़कीविहीन शयनकक्ष में जाना पड़ता है। जल्द ही एक धुंधली सी आकृति प्रकट होती है जो आत्मा-पति का रूप धारण कर लेती है। वह सुबह तीन बजे तक उसके साथ रहता है, क्योंकि यही वह समय है जब सभी सम्मानित आत्माओं को प्रेत रूप में उसी तरह विदा होना पड़ता है जैसे वे आई थीं, जबकि कम सम्मानित पुरुष अपने जूते हाथों में लिए चुपके से घर लौट जाते हैं!

कई साल पहले, मैं रंगून से आए एक यहूदी परिवार को जानता था। पति हार्डवेयर का व्यापार करता था। उसकी पत्नी और तीन बच्चे थे। उनकी शादी को काफी समय हो गया था और व्यापार अच्छा नहीं चल रहा था। फिर कहा जाता है कि उन्होंने एक आध्यात्मिक पति से समझौता किया, जिसे पत्नी पसंद आ गई, क्योंकि तीन बच्चों के बावजूद भी पत्नी का रूप-रंग अभी भी सुंदर था। यह स्पष्ट नहीं है कि पत्नी ने यह समझौता चाहा था या व्यापार में रुचि रखने वाले पति ने।

नियमों के अनुसार, वह एक अलग घर में रहने लगी, रात नौ बजे दरवाजे बंद कर लेती और सुबह तीन बजे तक अपने आध्यात्मिक पति के साथ समय बिताती। उसका सांसारिक पति और तीनों बच्चे रात भर दूसरे घर में सोते थे, लेकिन दिन में उससे मिलने आते थे। व्यापार में तरक्की हुई। उनके हाथ में जो भी आता, वह फलता-फूलता और सोने में तब्दील हो जाता। यह परिवार रंगून के सबसे समृद्ध और बेहद धनी परिवारों में से एक बन गया।

फिर एक दोपहर कुछ ऐसा हुआ। सांसारिक पति-पत्नी साथ थे। बच्चे बाहर गए हुए थे। पत्नी अब भी सुंदर थी और पुरानी आदतें इतनी प्रबल थीं कि उन पर काबू पाना मुश्किल था। दोनों पति-पत्नी अंतरंग हो गए।

उस रात नौ बजे के बाद पत्नी के घर में बहुत हंगामा हुआ। पति की आत्मा प्रकट हुई और वह बहुत क्रोधित और ईर्ष्यालु था। उसने पत्नी को बुरी तरह पीटा और कहा कि वह फिर कभी यहाँ नहीं आएगा। लेकिन वह नहीं आया और परिवार की किस्मत लगातार बिगड़ती चली गई। उनका व्यापार पूरी तरह ठप हो गया। उन्हें अपना सब कुछ बेचना पड़ा और रंगून के सबसे अमीर परिवारों में से एक से वे सबसे गरीब परिवारों में से एक बन गए।

ऐसे मामले भी सामने आए हैं जिनमें आत्मा-पत्नियां रात में आती हैं। लेकिन क्या ये भौतिक धन लाती हैं, या भौतिक गरीबी और मुसीबतें लाती हैं, जैसा कि आमतौर पर उनकी सांसारिक समकक्ष करती हैं, यह पूरी तरह से स्पष्ट नहीं है।

मुझसे अक्सर पूछा जाता है कि क्या काले जादू में कोई सच्चाई है, और मेरे करीबी दोस्तों के जीवन में इसके कई उदाहरण हैं। मैं पहले ही ओस्सी ब्राउन के मामले का जिक्र कर चुका हूं, जिसका गवाह बनने में मुझे बहुत अनिच्छा हुई थी।*

लगभग बीस साल पहले मैंने कुछ ऐसा किया था जो मुझे नहीं करना चाहिए था; लेकिन अब मुझे यह स्पष्ट नहीं है कि मैंने संबंधित व्यक्ति को नाराज़ किया था या मैं उसके प्रभाव में आ गया था। आप चाहें तो इसे मेरी अवचेतन कल्पना कह सकते हैं। लेकिन दो सप्ताह से अधिक समय तक, ठीक सुबह 3 बजे, मैं एक भयानक, घुटन भरी अनुभूति के साथ जाग जाता था, मानो कोई मुझे गले से जकड़ रहा हो। फिर मुझे खिड़की के बाहर भारी कदमों की आहट सुनाई देती थी—किसी के सेना के बूट पहने हुए चलने की धीमी, सधी हुई चाल। मैं कई बार लाठी लेकर—यहाँ तक कि बंदूक लेकर भी—बाहर भागा। फिर भी तेज चाँदनी में कुछ भी दिखाई नहीं देता था, और कदमों की आहट बंद हो जाती थी। जैसे ही मैं अंदर लौटता, कदमों की आहट फिर से शुरू हो जाती। यह लगभग दस मिनट तक चलती रहती थी।

एक रात हालात बेकाबू हो गए। मैं लगभग दम घुटते हुए उठा। मुझे कदमों की आहट सुनाई दी। हमेशा की तरह मैं बंदूक लेकर बाहर भागा और हर जगह तलाशी ली। कुछ भी नहीं मिला। मैं वापस आया तो कदमों की आहट फिर से शुरू हो गई। मैंने खिड़की बंद कर दी और ताला लगा दिया। सब कुछ बहुत अजीब था, लेकिन मैंने इसे नजरअंदाज करने का फैसला किया। बिजली की बत्ती बंद करके मैं बिस्तर पर लेट गया।

अगले ही पल कोई नरम चीज़ मेरे मच्छरदानी से टकराई और ज़मीन पर गिर गई। मैं बिस्तर से उछलकर उठा और लाइट जलाई। ज़मीन पर गीली मिट्टी का एक गोला पड़ा था, जो मेरी मुट्ठी जितना बड़ा था। ये कहाँ से आया? खिड़की तो बंद थी। मेरी पत्नी और बच्चे बगल वाले कमरे में गहरी नींद में सो रहे थे।

इस स्तर पर मैंने इस मामले में कुछ करने का निश्चय किया—कुछ ऐसा जो मैं सामान्यतः कभी करने के बारे में नहीं सोचता।

बैंगलोर में एक संत रहते हैं, जिन्होंने ज्योतिषी, चोरी की संपत्ति वापस दिलाने वाले और तंत्र-मंत्र करने वाले के रूप में काफी प्रसिद्धि प्राप्त की है। परामर्श के लिए उनकी फीस एक रुपया (लगभग एक शिलिंग और चार पेंस) है, जिसे पान के पत्ते पर रखकर उन्हें देना होता है—न अधिक, न कम। मैंने इस व्यक्ति के बारे में बहुत कुछ सुना था और उसे एक चालाक बदमाश समझा था।

मैं उससे मिलने गया। उसकी बड़ी-बड़ी काली आँखें और बड़ी-बड़ी मूंछें थीं। इसके अलावा उसमें कुछ भी खास नहीं था। मैं उसके कमरे में गया और पान के पत्ते पर अपना एक रुपया रख दिया, उस समय मैं खुद को शहर का सबसे बड़ा मूर्ख महसूस कर रहा था।

मेरी ओर देखते हुए उन्होंने शांत भाव से कहा: 'आपको रात में कदमों की आहट सुनकर परेशानी हो रही है। हाल ही में आप पर मिट्टी का गोला फेंका गया था। आप पर जादू कर दिया गया है'—(और यहाँ

उन्होंने संबंधित व्यक्ति का वर्णन किया) 'क्योंकि आपने उस व्यक्ति को वह देने से इनकार कर दिया जो उसने माँगा था।'

आप कहेंगे, इसे समझाना आसान है। शायद मन पढ़ना ही इसका जवाब है; या सम्मोहन का कोई रूप; या दोनों। आप बिल्कुल सही हो सकते हैं। लेकिन सुनिए आगे क्या हुआ।

उन्होंने मुझसे कहा, 'घर जाओ। अपनी खिड़की से सूरज उगने की दिशा में छह कदम नापो। फिर जमीन में एक फुट तक खोदो। तुम्हें कुछ मिलेगा। उसे नष्ट कर दो। फिर तुम्हें कोई परेशानी नहीं होगी।'

मैं गुस्से से भरा घर लौटा। मैंने अपने हाथों में फावड़ा उठाया और मेरा गुस्सा और बढ़ गया। मैंने अपनी खिड़की से पूरब की ओर छह कदम नापे और खोदना शुरू कर दिया। अब मैं सिर्फ गुस्से में ही नहीं था, बल्कि यह भी सोच रहा था कि मैं इतना मूर्ख कैसे बन गया। लेकिन मुझे कुछ मिला, और मैंने लगभग एक फुट गहरा खोदा था। मुझे मिट्टी से बनी एक गुड़िया मिली जो ज़मीन में दबी हुई थी। एक भद्दी सी गुड़िया जिसका सिर, हाथ और पैर बेढंगे थे। लेकिन उसके सिर पर इंसानी बाल चिपकाए गए थे और उसमें एक कील ठोंकी गई थी। कील के नुकीले सिरे पर एक सूखा नींबू का छिलका था जिसे लगभग आधा काट दिया गया था। इंसानी बाल बिल्कुल मेरे अपने बालों जैसे दिख रहे थे।

मैं दंग रह गया; और मैंने उस चीज़ को जला डाला! अगली सुबह तीन बजे मुझे कदमों की आहट नहीं सुनाई दी, और न ही कभी सुनाई दी!

अब, उस द्रष्टा को यह कैसे पता चला? यह मन-पढ़ने की क्षमता तो नहीं हो सकती थी, क्योंकि मुझे खुद उस गुड़िया के बारे में पता नहीं था। और न ही उसने पहले से कोई योजना बनाई होगी, क्योंकि उसे कैसे पता चलता कि मैं उससे सलाह लूँगा?

कई वर्षों बाद, मैंने यह घटना एक ऐसे व्यक्ति को बताई जो ऐसे मामलों में रुचि रखता था। उसने मुझे बताया कि मानव बालों वाली मिट्टी की गुड़िया मुझे ही दर्शाती है। सिर में ठोंकी गई कील इस बात का प्रतीक थी कि मंत्र मेरे मन, मेरी तर्क शक्ति के विरुद्ध किया गया था। यदि ऋषि ने मुझे गुड़िया का पता न बताया होता और श्राप दूर न किया होता, तो मैं निश्चित रूप से कुछ ही समय में पागल हो जाता!

इस घटना ने मुझे इतना आकर्षित किया कि मैंने इन मामलों की पूरी तरह से जांच करने का फैसला किया। चूंकि मेरा यह मित्र काला जादूगर और तंत्र-मंत्रियों के बीच लोकप्रिय था, इसलिए मैंने उससे और अधिक जानकारी देने के लिए, वास्तव में, मुझे अपने समूह में शामिल करने के लिए दबाव डालना शुरू कर दिया। लेकिन उसने साफ इनकार कर दिया!

मुझमें एक ऐसी आदत है जिसके बारे में मुझे नापसंद करने वाले लोग जमकर शिकायत करते हैं। यह है ज़िद्दीपन और दृढ़ता। मेरा दोस्त जितना मना करता, मैं उतना ही उसे परेशान करता। आखिरकार, उसने मुझे सिल्वर आर्मलेट बिरादरी का सदस्य बना लिया!

मेरे पास चांदी का बाजूबंद है जिसे मैं विशेष अवसरों पर पहनती हूँ, और इसे छूने की अनुमति किसी और को नहीं है। मैं आपको समाज के सभी रहस्यमय अनुष्ठानों के बारे में नहीं बता सकती क्योंकि मैंने उन्हें प्रकट न करने की शपथ ली है; लेकिन मैं आपको दीक्षा समारोहों की संक्षिप्त जानकारी दे सकती हूँ।

पहली विधि के अनुसार, अमावस्या की रात (जो अमावस्या से पहले की रात होती है) किसी पुराने कब्रिस्तान में जाना होता है—कब्रिस्तान जितना पुराना हो उतना अच्छा। नौसिखिए को आधी रात के बाद अकेले जाना होता है, अपने साथ या तो एक जीवित काला मुर्गा और उसका गला काटने के लिए एक चाकू ले जाना होता है, या यदि उसे मुर्गे का गला काटने में झिझक महसूस होती है, तो उसके बदले में कुछ किलो सूअर की आंतें और जिगर ले जाना होता है।

उसे श्मशान में प्रवेश करना होगा, और कपूर आदि जलाकर संक्षिप्त पूजा करने के बाद, मुर्गे का गला काटना होगा और फिर पूरे पक्षी को, पंख समेत, उंगली भर टुकड़ों में काटना होगा। या, यदि वह सूअर का जिगर और आंतें लाया है, तो उसे टुकड़ों में काटना होगा। इसके बाद उसे पीछे मुड़े बिना श्मशान में चलना होगा, और इन टुकड़ों को एक-एक करके अपने बाएं और दाएं कंधों पर फेंकते हुए, अपनी इच्छानुसार किसी भी बोली में, जितनी गंदी भाषा वह सोच सकता है, उतनी गंदी भाषा का प्रयोग करना होगा। 'इसे लो, तुम—और इसे खाओ,' इत्यादि। इससे आत्मा या निराकार सत्ता उसकी ओर आकर्षित होती है।

इसके बाद नौसिखिया घर जाता है और एक और अनुष्ठान करता है जिससे यह आत्मा उसकी सेवक बन जाती है।

आपने भारत में ऐसे संतों के चमत्कारों के बारे में सुना और पढ़ा होगा जो हवा से किसी भी प्रकार के फल, धन, मिठाई और यहाँ तक कि कुछ दवाइयाँ भी प्रकट कर सकते हैं। ये सब कुट्टी शैतान नामक एक प्रकार के छोटे जिन्न की सहायता से संभव होता है, जिनमें से एक व्यक्ति से पचास-पचास के अनुबंध के आधार पर जुड़ जाता है। वे दोनों एक-दूसरे के सेवक बन जाते हैं और जीवन भर के लिए बंध जाते हैं। तमिल और मलयालम में कुट्टी शब्द का अर्थ 'छोटा' होता है, जबकि उर्दू और हिंदी में शैतान शब्द का अर्थ 'राक्षस' होता है - चार भाषाओं का एक विचित्र संयोजन। यह आत्मा 'तत्वीय' श्रेणी में आती है, लेकिन स्वयं को प्रकट करने के लिए तीन से चार इंच से अधिक ऊँचाई वाले एक छोटे काले व्यक्ति का रूप धारण कर लेती है।

किसी भी रात आधी रात के बाद, विशेषकर अमावस्या की रात, जब यह दृश्य दिखाई देने लगता है, तो भैंसों के झुंड वाले बाड़े में छिपे हुए किसी व्यक्ति को एक विचित्र हलचल दिखाई देती है। वह देखता है कि कोई चीज एक जानवर की पीठ से दूसरे जानवर की पीठ पर झटक रही है। यह किसी बड़े पतंगे या शायद किसी छोटे चमगादड़ जैसी दिखती है, लेकिन जाहिर तौर पर इसके पंख नहीं हैं! यह एक भैंस की पीठ पर नाचती है, दूसरी पर छलांग लगाती है, झूलती है, गायब हो जाती है और फिर किसी दूसरी भैंस की

पीठ पर प्रकट हो जाती है। लेकिन जानवर इसे न तो देख पाते हैं, न ही इसकी उपस्थिति को महसूस कर पाते हैं।

यह कुट्टी शैतान अपने प्राकृतिक परिवेश और अवस्था में है। यदि देखने वाला इतना देखकर संतुष्ट हो जाता है, तो सब ठीक है। लेकिन यदि वह उन महान पुरुषों की तरह बनना चाहता है जो मानो 'हवा से' कुछ भी उठा सकते हैं, तो वह आग से खेल रहा है! क्योंकि ऐसा करने के लिए उसे कुट्टी शैतान को अपने भीतर समाहित करना होगा। उसे उस तात्विक आत्मा के साथ एक 'सौदा' करना होगा: एक वादा कि वे जीवन भर एक-दूसरे की सेवा करेंगे। सौदा करना तो आसान है; लेकिन उससे बाहर निकलना लगभग असंभव है।

सौदा करने के लिए उसे भैंसों के पास जाकर उस नन्ही परी को छीनने और पकड़ने का नाटक करना होता है—हालाँकि असल में वह ऐसा कभी नहीं कर सकता—और मन ही मन उस कुत्ति शैतान की सेवा पाने की इच्छा पर ध्यान केंद्रित करना होता है। उसे एक संदेश मिलता है, कभी-कभी पहले प्रयास में ही और कभी-कभी दो-तीन बार असफल होने के बाद—जो आमतौर पर उसके अवचेतन मन और फिर चेतन मन को टेलीपैथिक संदेश होता है—कि आगे क्या करना है। आमतौर पर संदेश में उसे लकड़ी, हाथीदांत, हड्डी या किसी अन्य पदार्थ से एक छोटी काली गुड़िया बनाने (या खरीदने) का निर्देश दिया जाता है, जिसे उसे अपने घर में किसी मेज या शेल्फ पर रखना होता है, और जलती हुई मोमबत्तियों, अगरबत्ती, कपूर और अन्य चीजों से प्रतिदिन उसकी पूजा करनी होती है। यह छोटी सी मूर्ति कुत्ति शैतान का प्रतीक है, और यह अनुष्ठान उस बंधन को पक्का करता है जिसके द्वारा परी उसकी सेवा करने के लिए सहमत होती है।

फिर वह व्यक्ति जो चाहे मांग सकता है और पा सकता है, बशर्ते वह उसे एक निश्चित समय सीमा के भीतर, जैसे एक या दो महीने में लौटाने के लिए सहमत हो जाए। लेकिन उसे मुफ्त में कुछ नहीं मिलेगा। वह छोटी परी उसे पैसे, सेब, सिरदर्द की दवा, पका हुआ भोजन, यहाँ तक कि खराब कार के लिए पेट्रोल भी लाकर देगी। लेकिन हर चीज तय समय पर लौटानी होगी। अन्यथा, वह व्यक्ति, चाहे वह कोई भी हो, उसे खो बैठेगा!

यह परी अपने संरक्षक के लिए केवल एक ही नि:शुल्क सेवा करती है। यह उसे आने वाले खतरे से आगाह करती है और उससे बचाने का उपाय करती है। लेकिन इस परी द्वारा माँगी गई कीमत बहुत अधिक है। इसके कारण संरक्षक की आयु कम हो जाती है; वह किसी स्त्री से संबंध नहीं रख सकता; उसे रात में मुश्किल से ही सोने दिया जाता है; वह कभी धन अर्जित नहीं कर सकता, हालाँकि उसे अपनी वर्तमान आवश्यकताओं के लिए पर्याप्त धन मिलता है; उसके अपने परिवार के साथ अच्छे संबंध नहीं रहते; वह हमेशा एक घुमक्कड़, बेचैन और कभी स्थिर न हो पाने वाला व्यक्ति बना रहता है।

सिल्वर आर्मलेट के भाईचारे के सदस्य के रूप में, मैं आपको आश्वस्त कर सकता हूं कि काला जादू अध्ययन करने के लिए एक आकर्षक विषय है - लेकिन अगर इसे अपनाया जाए तो यह एक कठोर और निर्दयी गुरु साबित हो सकता है!

मेरा एक और अच्छा दोस्त है, जो सेना से सेवानिवृत्त डॉक्टर है और द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान भारतीय चिकित्सा सेवा में कर्नल था। उसने मुझे एक कहानी सुनाई, जिसके बारे में वह मुझे यकीन दिलाता है कि वह बिल्कुल सच है। मद्रास में तैनात रहते हुए, उसकी मुलाकात दो भाइयों, मोहम्मद बे और अली बे से हुई, जो मिस्र के थे। उसकी मोहम्मद बे से दोस्ती हो गई, लेकिन उसे लंबे समय तक यह पता नहीं था कि दोनों भाई तांत्रिक थे और उन्होंने मिस्र में एक कुशल गुरु के अधीन प्रशिक्षण प्राप्त किया था।

जब कर्नल को यह पता चला, तो उसने मजाक में अपने दोस्त से कहा, "ओह, तो तुम मुझे एक आत्मा दिखा पाओगे। मैं एक आत्मा को देखने के लिए तरस रहा हूँ और वर्षों से कोशिश कर रहा हूँ, लेकिन सफलता नहीं मिली है।"

मोहम्मद बे ने गंभीरता से उत्तर दिया, “मैं न केवल तुम्हें एक आत्मा दिखाऊंगा, बल्कि उसे जीवन भर के लिए तुम्हारा सेवक बना दूंगा, जो तुम्हारी हर इच्छा पूरी करेगा और तुम्हारे लिए सौभाग्य लाएगा। लेकिन एक पक्की शर्त है। कभी भी, किसी भी समय, इस आत्मा सेवक का इस्तेमाल किसी दूसरे को नुकसान पहुंचाने या किसी भी प्रकार के बुरे उद्देश्य के लिए मत करना। अगर तुमने ऐसा किया, तो वह तुम पर पलटवार करेगा और तुम्हारी मृत्यु निश्चित है, और वह भी अत्यंत दर्दनाक तरीके से। क्या तुम सहमत हो?”

डॉक्टर ने हंसते हुए कहा, 'आप मुझ पर भरोसा कर सकते हैं। यह प्रस्ताव बहुत आकर्षक है और मुझे इसमें बेहद दिलचस्पी है।'

मोहम्मद बे ने फिर एक राइटिंग पैड और पेंसिल मांगी, और ये सामग्री मिलने पर वे कुछ देर तक काम में लगे रहे। कर्नल ने बड़ी कृपा करके मुझे वह कागज का पन्ना दिया जिस पर मिस्रवासी ने बीस साल से भी पहले अपना चित्र बनाया था, और मैंने उसे हूबहू कॉपी करके पृष्ठ 129 और 130 पर छाप दिया है।

मिस्र के जादूगर द्वारा बताए गए मंत्र, या आत्माओं को बुलाने के शब्द

आह, आह, शरहील वा बुरहुदे वा नुदाजू वा अस्किरह इफ अलुए अयव्हेल कदामु मा अमुरो बी ही मिट शाइन हथल कागदी बी ह्यकी शरहील उस फुर या रूह (तीन बार) था-अल (तीन बार) बिल अमुरो (सात बार)।

उत्तर दिशा की ओर मुख करके प्रारंभ करें। फिर दाईं ओर या पूर्व दिशा की ओर मुड़ें और ऊपर दिए गए शब्दों को सात बार पढ़ें। फिर वापस उत्तर दिशा की ओर मुड़ें। फिर बाईं ओर या पश्चिम दिशा की ओर मुड़ें और शब्दों को सात बार पढ़ें। फिर वापस उत्तर दिशा की ओर मुड़ें। इसके बाद दाईं ओर मुड़कर विपरीत या दक्षिण दिशा की ओर मुख करें और शब्दों को सात बार पढ़ें। फिर वापस उत्तर दिशा की ओर मुड़ें और शब्दों को एक बार फिर सात बार पढ़ें। चारों दिशाओं में यह पूरा करने के बाद, अपने चुने हुए कब्रिस्तान

की दिशा में मुड़ें और शब्दों को इक्कीस बार पढ़ें। अंत में, धीरे-धीरे सांस लें, थोड़ी देर सांस रोकें और फिर धीरे-धीरे तीन बार सांस छोड़ें, हर बार उस आध्यात्मिक अभिव्यक्ति पर ध्यान केंद्रित करें जो इस अभ्यास को सिखाने वाले व्यक्ति द्वारा चाही गई हो, या जिसे आप स्वयं देखना चाहते हों।

इस प्रक्रिया का पालन बाईस दिनों तक करना है, जिसकी शुरुआत इस प्रकार होनी चाहिए कि तेईसवाँ दिन मंगलवार या शुक्रवार को पड़े। यही वह दिन है जिस दिन कब्रिस्तान जाना है। दूसरे शब्दों में, निर्देशों का पालन बाईस दिनों तक करें, और यह प्रक्रिया सोमवार या गुरुवार को समाप्त होनी चाहिए। अगले दिन (मंगलवार या शुक्रवार) कब्रिस्तान जाना है।

नीचे दिए गए चित्र को कागज के एक टुकड़े पर ट्रेस करके, मोड़कर लॉकेट या वॉलेट में सौभाग्य के लिए रखा जा सकता है:

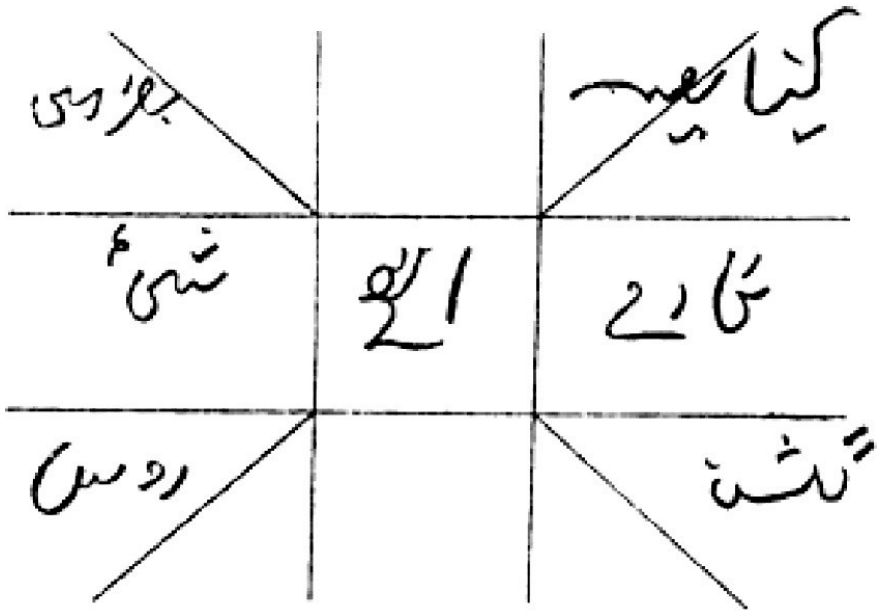

मोहम्मद बे ने समझाया, 'मैंने इसे रोमन-अरबी में लिखा है ताकि आप इसे पढ़ सकें।' (रोमन-अरबी अरबी का वह रूप है जिसमें अरबी को रोमन अक्षरों में ध्वन्यात्मक रूप से लिखा जाता है)। 'इसके बाद अंग्रेजी में निर्देश दिए गए हैं। कृपया इनका अक्षरशः और पूरी ईमानदारी से पालन करें।'

'अंतिम दिन की शाम तक गुलाबों की एक बड़ी माला तैयार करने का आदेश दें, और उस दिन आधी रात से नब्बे मिनट पहले स्नान करके साफ सफेद कमीज और सूट पहन लें। मैं आपको 11:30 बजे बुलाऊंगा और आगे क्या करना है, यह बताऊंगा। एक और बात। आपको उस अंतिम दिन उपवास रखना होगा, लेकिन आप सुबह और शाम को एक-एक कप दूध पी सकते हैं। इससे ज्यादा कुछ नहीं।'

‘अब चलिए गणना शुरू करते हैं कि तेईसवाँ दिन कौन सा है।’ इस पर मिस्रवासी ने दीवार पर टंगे एक बड़े कैलेंडर की ओर रुख किया, पेंसिल की नोक से कैलेंडर पर दिनों की गिनती करते हुए कुछ गणनाएँ कीं, और अंत में एक दिन और तारीख का नाम बताया।

उन्होंने रहस्यमय ढंग से कहा, 'तैयार रहो,' और डॉक्टर ने सहमति जताई।

निर्देशों का अक्षरशः पालन किया गया, लेकिन इस दौरान कर्नल मोहम्मद बे से कभी नहीं मिले। तीसरे सप्ताह के अंत में उन्हें लगा कि उनका मित्र जानबूझकर उनसे बच रहा है। उन्हें आश्चर्य हुआ कि क्या यह सब एक मज़ाक था।

अंतिम दिन आ गया। कर्नल द्वारा मंगवाई गई गुलाबों की माला शाम तक तैयार हो गई थी। रात 10:30 बजे उन्होंने स्नान किया और फिर साफ सफेद कपड़े पहने। उन्होंने मुझे बताया कि उन्हें खुद पर मूर्खता का एहसास हुआ।

ठीक रात 11:30 बजे, एक कार उनके पुराने जमाने के आवास के बरामदे के नीचे आकर रुकी और मिस्रवासी नीचे उतरे। वे भी सफेद कपड़े पहने हुए थे।

‘डॉक्टर, माला ले आइए,’ उसने सहज स्वर में कहा, ‘हमें आधी रात तक वहाँ पहुँचना होगा।’

पता नहीं वे कहाँ जा रहे हैं, इसलिए डॉक्टर ने निर्देशानुसार काम किया। पंद्रह मिनट में वे कब्रिस्तान पहुँच गए और गुलाबों की माला लिए डॉक्टर अपने साथी के पीछे-पीछे छोटे गेट से अंदर चले गए। चारों ओर घना अंधेरा था, बस तारों की हल्की रोशनी दिखाई दे रही थी। कब्रिस्तान के अंदर मिस्रवासी एक पल के लिए रुका। फिर वह कुछ दूर तक कब्रों के बीच चला, मानो किसी खास कब्र की तलाश में हो, और डॉक्टर उसके पीछे-पीछे चले। आखिरकार उन्हें वह कब्र मिल ही गई। एक कब्र जिस पर ग्रेनाइट की पटिया और एक गोल पत्थर लगा था। अंधेरा इतना घना था कि आगे कुछ दिखाई नहीं दे रहा था।

मोहम्मद बे ने निर्देश दिया, ‘डॉक्टर, समाधि के पत्थर पर माला डालिए और अपनी भुजाएँ छाती पर बाँधकर कब्र के चरणों में खड़े हो जाइए। मैं बगल में खड़ा रहूँगा। अब, चाहे कुछ भी हो जाए, डरिए मत। मैं यहाँ हूँ; मुझ पर भरोसा रखिए। हमें आधी रात तक इंतजार करना होगा।’

कुछ मिनट बाद दूर से आती एक घड़ी की घंटी बजी और बारह बज गए। लेकिन मोहम्मद बे ने कुछ मिनट तक कोई प्रतिक्रिया नहीं दी। फिर वह किसी ऐसी भाषा में कुछ बुदबुदाने लगे जिसे डॉक्टर समझ नहीं पाए, लेकिन उन्हें लगा कि वह अरबी है। शब्द लयबद्ध स्वर में निकल रहे थे और मिस्रवासी मानो समाधि में लीन थे।

यह सिलसिला कुछ देर तक चलता रहा, फिर अचानक कुछ गड़बड़ हो गई। मंत्रोच्चार अचानक रुक गया, और उसके बाद मिस्रवासी ने गुस्से में कुछ शब्द कहे, फिर कुछ देर रुककर और भी गुस्से भरे शब्द कहे। ऐसा लग रहा था मानो वह किसी अदृश्य व्यक्ति से तीखी बहस कर रहा हो, जिसकी आवाज़ सुनाई नहीं दे रही थी।

मिस्रवासी और भी उत्तेजित हो गया। उसने अपने हाथ हिलाए। ऐसा लग रहा था मानो वह अपशब्दों का प्रयोग कर रहा हो। फिर उसने कब्र पर थूका। अगले ही पल वह ग्रेनाइट की शिला पर ऐसे गिर पड़ा जैसे किसी ने उसे कुल्हाड़ी से पटक दिया हो। धुंधली रोशनी में उसका शरीर कांप रहा था, और उसके गले से भयानक, घुरघुराहट की आवाजें आ रही थीं। डॉक्टर घबरा गया और भागने ही वाला था, उसके मन में बस यही ख्याल था कि किसी तरह अपनी जान बचाकर भाग जाए।

उस समय उनकी पेशेवर शिक्षा उनके काम आई। आखिर वे एक डॉक्टर थे। मिस्रवासी को मिर्गी का दौरा, दिल का दौरा या किसी अन्य प्रकार की बीमारी हो सकती थी। वहाँ रुकना उनका चिकित्सीय कर्तव्य था। साथ ही, यह भयावह विचार भी मन में आया कि अगर मिस्रवासी को अकेला छोड़ दिया गया तो उसकी मृत्यु हो सकती है। जब उसका शव मिला, और अगर कभी यह पता चला कि डॉक्टर कब्रिस्तान में उसके साथ थे, तो उन पर हत्या का आरोप लग सकता था।

इसलिए वह आगे दौड़ा, अपने साथी के शरीर को पकड़ा जो अभी भी छटपटा रहा था और जिससे भयानक सिसकियां और कराहें निकल रही थीं, और उसे उठाने का प्रयास किया।

डॉक्टर ने कसम खाकर कहा कि उनका सामना एक ऐसी शक्ति से हुआ जो उनसे कहीं अधिक शक्तिशाली थी और उस व्यक्ति को दबाए हुए थी। फिर संघर्ष हुआ और उसके बाद मिस्रवासी हांफते हुए बोला: 'गुलाबों की माला, मुझे दे दो।'

डॉक्टर ने अपने साथी को छोड़ा, समाधि के पत्थर से माला उतारी और उसे ज़मीन पर गिरे हुए आदमी की ओर फेंक दिया। वह आदमी अभी भी मिर्गी के दौरे की तरह ग्रेनाइट की पटिया पर रेंग रहा था, तभी मोहम्मद बे ने माला को टुकड़े-टुकड़े कर दिया। और जैसे-जैसे माला बिखरती गई, ऐसा लगा मानो काला जादूगर स्थिति पर अपना नियंत्रण पा रहा हो।

अंततः वह खड़ा हुआ, उसके बाल बिखरे हुए थे और वह हांफ रहा था। उसके माथे पर एक गहरा घाव था, जहाँ उसका माथा ग्रेनाइट की पटिया से टकरा गया था, और वहाँ से खून बह रहा था।

‘अब सब ठीक है, डॉक्टर,’ उसने हांफते हुए कहा, ‘लेकिन चलिए यहां से चलते हैं। मैं आपको कार में बताऊंगा।’

दोनों आदमी जल्दी से कार की ओर भागे और डॉक्टर के घर की ओर वापस जाने लगे। कर्नल तब तक इंतजार करते रहे जब तक कि उनका साथी शांत नहीं हो गया। आखिरकार मिस्रवासी बोला।

‘आत्मा तो आ ही गई। वास्तव में, कई आत्माएँ थीं। लेकिन वे विचित्र रूपों में थीं, अजीब जानवरों जैसी दिखती थीं। उन सभी ने आपकी सेवा करने की पेशकश की। लेकिन मैंने ज़िद की कि केवल एक ही आत्मा हो, और वह भी मानव रूप धारण करे। उन्होंने इनकार कर दिया, और इस बात पर अड़े रहे कि सभी आपसे जुड़ जाएँ और अपने वर्तमान विचित्र रूपों में ही रहें। मैंने इसकी अनुमति नहीं दी। बहस हुई और अचानक उनके नेता ने मुझे नीचे गिरा दिया और वे सब मुझ पर टूट पड़े, मेरा गला घोंटने लगे। अगर आपने मुझे माला न फेंकी होती जिससे जादू टूटा, तो मैं मारा जाता।’

आप कहेंगे कि मिस्रवासी ने डॉक्टर को धोखा देने के लिए बड़ी चालाकी से अभिनय किया। मकबरे के पत्थर से माथे पर लगा घाव तो निश्चित रूप से एक अनपेक्षित दुर्घटना थी। शायद वह खून नहीं था, बल्कि कुछ चुपके से लगाया गया था!

मैं इस बात से पूरी तरह सहमत हूँ, और यह एक तर्कसंगत स्पष्टीकरण भी है। लेकिन याद रखिए, उस मिस्रवासी ने अपने मित्र से कभी पैसे या कोई एहसान नहीं माँगा था। तो फिर उसने यह सब क्यों किया?

भारत के कई परिवार, विशेषकर पश्चिमी तट पर रहने वाले, मानते हैं कि उनकी रक्षा 'देवता' करते हैं। ये कोई बुरी आत्माएं, जिन्न या देवता नहीं हैं। इन्हें श्रेष्ठ आध्यात्मिक प्राणी माना जाता है। इनमें से प्रत्येक की पहचान एक विशेष सुगंधित फूल की खुशबू से होती है, जो कहीं से भी आती है। कुछ अपने साथ चमेली की खुशबू लाते हैं; यह बहुत आम है और मैंने स्वयं कई बार ऐसे कमरों और स्थानों में इसे सूंघा है जहाँ किसी भी प्रकार के फूल नहीं थे। कहा जाता है कि श्रेष्ठ प्राणी गुलाब या अन्य सुगंध लाते हैं।

अमावस्या की रात—नए चाँद से पहले की रात, महीने की सबसे अँधेरी रात—काला जादू-टोना करने के लिए चुनी जाती है, और ऐसी ही रातों में कई भारतीय परिवार अपने संरक्षक आत्माओं की उपस्थिति को महसूस और सुनते हैं। ये आत्माएँ भारी जंजीर के घिसटने या खनकने की आवाज़ से, या स्त्री आत्मा के मामले में, कंगन के आपस में टकराने की हल्की आवाज़ से प्रकट होती हैं। मुख्य संरक्षक आत्मा घर में घूमते हुए व्यक्ति की तरह आवाज़ करके, बीच-बीच में अंगूठे को उंगलियों से चटकाकर, या फिर सधे हुए, भारी कदमों से अपनी उपस्थिति का संकेत देती है।

भारत में सभी धर्मों में आत्माओं के अस्तित्व और तंत्र-मंत्र में विश्वास समाहित हो गया है। मेरी राय में, सभी धर्म, अपने मूल रूप में, शुद्ध और दिव्य उत्पत्ति के थे: हिंदू धर्म, बौद्ध धर्म, इस्लाम और ईसाई धर्म, सभी सर्वोच्च सत्ता की ओर मार्ग प्रशस्त करते थे। लेकिन एक ओर पुरोहितवाद और दूसरी ओर अंधविश्वास और तंत्र-मंत्र इन सिद्धांतों में इस कदर घुलमिल गए हैं कि इनके कई अनुयायी एक ऐसे धर्म का पालन करते हैं जो मूल धर्म के सिद्धांतों से बहुत भिन्न है, और कुछ मामलों में तो बिल्कुल विपरीत है।

भारत में कई ईसाई धर्मान्तरित लोगों, चाहे वे रोमन कैथोलिक हों या प्रोटेस्टेंट, की मान्यताएँ और प्रथाएँ वास्तव में धर्म, अंधविश्वास और तंत्र-मंत्र का एक विचित्र मिश्रण हैं। ये लोग स्वाभाविक रूप से सभी धर्मों के अधिकांश धर्मनिष्ठ पुरोहितों के लिए निराशा का कारण हैं, हालाँकि दुर्भाग्य से यहाँ-वहाँ कुछ ऐसे भी हैं जो विकृत मान्यताओं को कुप्रथा की हद तक बढ़ावा देते हैं ताकि नरक की आग का भय पैदा कर सकें और अपने अनुयायियों को वश में रख सकें।

संत एंथोनी, जिन्हें जीवित रहते हुए सर्वत्र परम परोपकारी माना जाता है, भारत में अनेक लोगों द्वारा दूसरों से बदला लेने और प्रार्थना द्वारा लाभ प्राप्त करने का अचूक साधन माने जाते हैं। उनके माध्यम से भयानक प्रतिशोध और शत्रुओं को उचित या अभद्र तरीकों से पराजित करने की प्रार्थना की जाती है, जिनमें कष्टदायी बीमारी और दीर्घायु मृत्यु भी शामिल है। संत एंथोनी को खोई हुई या चोरी हुई संपत्ति की प्राप्ति और दोषी चोर को अनेक प्रकार की हिंसा द्वारा दंडित करने का मुख्य साधन भी माना जाता है। संत एंथोनी

से अपराधी या शत्रु को दंडित करने के लिए जिन दंडों का अनुरोध किया जाता है, उनमें से कुछ इतने घृणित और किए गए अपराधों के अनुपात से परे होते हैं। उदाहरण के लिए, एक पौंड चावल चुराने के प्रतिशोध में, संत एंथोनी से ज्ञात या अज्ञात चोर को हैजा और प्लेग जैसी भयानक बीमारियाँ देने का अनुरोध किया जाता है।

मेरी सेविका रोमन कैथोलिक धर्म में परिवर्तित हो चुकी है, लेकिन संत एंथोनी के माध्यम से खोई हुई वस्तु को वापस पाने की उसकी विधि इस प्रकार है। चोर को ढूंढने के लिए, प्रार्थना करने वाले को पहले स्नान करना चाहिए। फिर उसे संत की मूर्ति को धोना चाहिए, या (यदि उसके पास मूर्ति नहीं है) तो संत के चित्र को ढकने वाले कांच को धोना चाहिए। संत की प्रतिमा को पानी के बजाय दूध से नहलाना अधिक प्रभावी माना जाता है। यह अनुष्ठान मंगलवार को सूर्यास्त के समय किया जाना चाहिए। इसके बाद, मूर्ति या चित्र के चरणों में चार मोमबत्तियाँ जलाई जाती हैं, जिनके सामने फूल चढ़ाए जाते हैं और धूप जलाई जाती है। एक छोटा सिक्का कपड़े में बांधकर चित्र के फ्रेम के ऊपर या मूर्ति के चरणों में रखा जाता है।

फिर संत से प्रार्थना की जाती है कि वे चोर को ढूंढने, धन या संपत्ति वापस दिलाने, या अपराधी को कड़ी सजा देने की कृपा प्रदान करें। इसके साथ ही यह प्रतिज्ञा भी की जाती है कि यदि प्रार्थना स्वीकार हो जाती है, तो संत के नाम पर तेरह भिखारियों को किसी न किसी रूप में दान दिया जाएगा। यह दान धन, वस्त्र या भोजन के रूप में हो सकता है। संत से ऐसी प्रार्थनाएं तेरह दिनों तक प्रत्येक शाम सूर्यास्त के समय की जाती हैं। ऐसा माना जाता है कि कुछ छोटी-मोटी कृपाएं आठ दिनों के भीतर पूरी हो जाती हैं, जबकि अधिक मूल्यवान वस्तुओं जैसी बड़ी कृपाओं में अधिक समय लग सकता है, लेकिन संत की ओर से कार्रवाई एक महीने के भीतर अवश्य ही दिखाई देगी।

मेहनत से कमाए गए पैसों से खरीदी गई खोई हुई संपत्ति या चोरी हुए पैसे की वापसी सुनिश्चित करने के लिए संत एंथोनी की मूर्ति या चित्र के सामने लगातार तेरह शामों तक धूप के साथ एक मोमबत्ती जलाना चाहिए।

भारत के कुछ हिस्सों में, विशेषकर पुराने हैदराबाद राज्य में, संत एंथोनी से की जाने वाली ये प्रार्थनाएँ अधिक ज़ोरदार रूप ले लेती हैं। संत की प्रतिमा के पैर रस्सी से बाँध दिए जाते हैं, जिसका अर्थ है कि प्रार्थना करने वाला तब तक प्रतिमा नहीं छोड़ेगा जब तक उसकी इच्छा पूरी न हो जाए। सबसे कठोर—और मज़ेदार—उदाहरण जो मैंने देखा है, वह काज़ीपेट नामक स्थान पर रहने वाले एक बूढ़े एंग्लो-इंडियन द्वारा अपनाई गई प्रक्रिया है। वह एक पूर्व सैनिक थे और शायद सोचते थे कि संत एंथोनी को समय-समय पर थोड़ा अनुशासन सिखाने की ज़रूरत है। यदि निर्धारित समय के भीतर उनकी इच्छा पूरी नहीं होती, तो संत की प्रतिमा के साथ कठोर व्यवहार किया जाता था। प्रतिमा को बगीचे में लगे इमली के पेड़ से बाँध दिया जाता था और उस पर मिर्च पाउडर और अन्य तीखे पदार्थों का मिश्रण लेप दिया जाता था। उनका उद्देश्य यातना देकर संत से इच्छा पूरी करवाना था, और ऐसा होने पर वह बूढ़ा सैनिक प्रतिमा को वापस घर के अंदर ले आता, उसे धोता, दूध से स्नान कराता और फिर से उसके आसन पर स्थापित कर देता था।

इसी प्रकार, कुंवारी मरियम की मूर्तियों और तस्वीरों से भी सामान्य कृपा की प्रार्थना की जाती थी। गुरुवार को पहली प्रार्थना के लिए उपयुक्त दिन माना जाता था, जिसे लगातार आठ दिनों तक दोहराया जाना था।

भारत में कैंची को इस प्रकार बांधने की पुरानी अंग्रेज़ी विधि का व्यापक प्रचलन है कि कैंची के दोनों लूप दो व्यक्तियों की उंगलियों पर टिके रहें और दोषी व्यक्ति का नाम लेने पर घूमने लगें। इसी प्रकार, अगरबत्ती के पात्र के ऊपर माला लटकाने की प्रथा भी प्रचलित है, जिसमें क्रॉस सीधे आग के ऊपर रहता है; ऐसा माना जाता है कि दोषी व्यक्ति का नाम लेने पर माला हिलने लगती है।

जिन कब्रिस्तानों में भारतीय ईसाईयों को दफनाया जाता है, वहां अक्सर मृतकों के रिश्तेदारों को कुछ निश्चित दिनों में कब्र पर दूध और भोजन की भेंट लेकर आते देखा जाता है, संभवतः दिवंगत आत्मा को उच्च लोकों की लंबी यात्रा में सहारा देने के लिए।

इन बातों का उल्लेख करने का मेरा उद्देश्य यह दर्शाना है कि भारत में अंधविश्वास और प्राचीन रीति-रिवाज किस प्रकार ईसाई धर्म से गहराई से जुड़े हुए हैं। अंधविश्वास, आस्था और अज्ञात का भय सभी समुदायों और सभी धर्मों में व्याप्त है। उच्च वर्ग के हिंदुओं में यह अधिक व्यापक रूप धारण कर लेता है, फिर भी उतना ही शक्तिशाली है। जन्म से ही बच्चे की कुंडली को सर्वोपरि माना जाता है और विवाह निर्धारण में इसकी प्रमुख भूमिका होती है—लड़का और लड़की विवाह समारोह से पहले शायद ही कभी एक-दूसरे को देखते हैं—और नक्षत्र पुरुष के जीवन भर महत्वपूर्ण भूमिका निभाते रहते हैं। कैलेंडर पर महीने के प्रत्येक दिन के लिए समय की दो सूचियाँ स्पष्ट रूप से अंकित होती हैं, जिन्हें क्रमशः राहुकालम् और गुलिगैकलम कहा जाता है, जिनका अर्थ है 'बुरा समय' और 'शुभ समय'। कोई भी हिंदू, और कई गैर-हिंदू भी, राहुकालम् या 'बुरे समय' में घर से निकलने या किसी व्यवसाय या यात्रा पर जाने का सपना भी नहीं देख सकते। वह धैर्यपूर्वक उस समय के बीतने और शुभ समय आने तक प्रतीक्षा करेगा। फिर वह अपने उद्यम पर निकल पड़ेगा, सफलता के प्रति पूर्ण आत्मविश्वास और विश्वास से परिपूर्ण। एक ऐसी अंगूठी जो स्त्री-स्त्रियों को आकर्षित करने में जादुई गुण रखती है, कभी-कभी तो उन्हें अत्यधिक शर्मिंदगी भी उठानी पड़ती है, उसे निम्नलिखित तरीके से बनाया जा सकता है। मैंने इस सूत्र को लिखने में बहुत मेहनत की है, या आप इसे जो भी कहना चाहें। एकमात्र समस्या यह है कि इसमें शामिल मंत्रों को सीखना और आत्मसात करना आवश्यक है। यह रहस्य इतना मूल्यवान है, संभवतः इसलिए कि इसका प्रतिफल इतना बड़ा है, कि अब तक कोई भी मुझे ये मंत्र बताने को तैयार नहीं है, ताकि मैं उन्हें सीखकर दोहरा सकूँ। लेकिन मैं अभी भी किसी ऐसे व्यक्ति की तलाश में हूँ जो इस रहस्य को साझा करने को तैयार हो।

हालांकि, आपको मध्यम आकार का गहरे रंग का जीवित मीठे पानी का कछुआ प्राप्त करना होगा। यह बहुत मुश्किल नहीं है। लगभग एक रुपये में कोई आपको एक कछुआ लाकर दे देगा। ये ग्रामीण इलाकों के मीठे पानी के कुओं में बहुतायत में पाए जाते हैं।

एक जीवित कछुआ प्राप्त करने के बाद, कुछ सूखे कद्दू के बीज लें जो आसानी से अंकुरित हो सकें। ये बीज किसी भी बीज विक्रेता से आसानी से मिल सकते हैं, या बाजार से खरीदे गए किसी भी कद्दू से भी प्राप्त किए जा सकते हैं, हालांकि बाद की स्थिति में, बीज अच्छी तरह से सूखे होने चाहिए।

इसके बाद, बेचारे कछुए को केंचुए या छोटा मेंढक जैसे कुछ खाने का लालच दें। जब वह खाने के लिए अपनी गर्दन खोल से बाहर निकाले, तो एक तेज़ चाकू से उसके सिर के ठीक पीछे और गर्दन के ऊपरी हिस्से पर वार करके उसे काट दें; यानी, ध्यान रखें कि गर्दन का एक अच्छा-खासा हिस्सा बाहर निकला रहे। जब उसकी सारी हलचल बंद हो जाए, तो गर्दन के कच्चे हिस्से में लगभग आधा दर्जन सूखे कद्दू के बीज अच्छी तरह से भर दें। फिर कछुए को सीधा ज़मीन में गाड़ दें, ताकि बीजों सहित गर्दन का हिस्सा ज़मीन की सतह से लगभग दो इंच नीचे रहे। फिर उस जगह पर हर दिन थोड़ा-थोड़ा पानी डालें।

कद्दू के बीज, या उनमें से कुछ, अंकुरित हो जाएँगे। सबसे अच्छे और स्वस्थ बीजों का चयन करें। दूसरी कोंपल निकलने तक प्रतीक्षा करें, और फिर कछुए के सड़ते हुए गर्दन के ठूंठ से पूरे पौधे को उसकी जड़ों सहित सावधानीपूर्वक उखाड़ लें। जड़ों से गंदगी साफ करें, और पौधे को, जड़ों सहित, नीचे की ओर बने खांचे से होते हुए एक छल्ले के खोखले भाग में कसकर डालें, जिसे आपने पहले से तैयार कर लिया हो।

कोई भी अंगूठी चलेगी, लेकिन चांदी या तांबे की अंगूठी सबसे अच्छी होती है। अंगूठी के चारों ओर यथासंभव गहरी खोखली खांच काटनी चाहिए।

पौधे को उसकी जड़ों समेत जितना हो सके खोखले खांचे में डालने के बाद, उसे सीलिंग वैक्स या किसी अन्य प्रकार के लैकर या चिपचिपे पदार्थ से सील कर दें जो सूखकर सख्त हो जाए। अंगूठी को सील करवाने के लिए किसी जौहरी के पास न भेजें, क्योंकि सील करने के लिए धातु को पिघलाने में वह जो गर्मी देगा, उससे अंदर का पौधा जल जाएगा।

इस प्रकार तैयार और सीलबंद अंगूठी का उपयोग अगली अमावस्या तक नहीं किया जाना चाहिए। इससे पहले वाली रात, यानी अमावस्या की रात, आधी रात को अंगूठी पर ग्यारह बार एक मंत्र का जाप करना होता है, और तब यह उपयोग के लिए तैयार हो जाती है। ऐसा कहा जाता है कि महिलाओं को आकर्षित करने और उन्हें शर्मिंदा करने में इसकी प्रभावशीलता जीवन भर बनी रहती है।

यह विषय तब तक पूरा नहीं होगा जब तक मैं आपको मैसूर राज्य के शिमोगा जिले के पूर्व में स्थित चितलद्रूग नामक कस्बे के पास, एक ऐसे जंगल में घटी एक घटना के बारे में न बताऊं जो कभी बाघों के लिए प्रसिद्ध था। चितलद्रूग से कुछ मील दूर स्थित संपिगेहल्ली गांव घने जंगल से घिरा हुआ है। इस गांव से लगभग चार मील दूर, बुढल्ली नामक एक अन्य गांव की ओर जाने वाले रास्ते पर, जंगल के बीचोंबीच, एक खंडहर मंदिर और एक गहरा कुआँ स्थित है। मंदिर और कुएँ के बारे में कहा जाता है कि वहाँ भूत-प्रेत का वास है, इसी कारण दिन के उजाले में शायद ही कोई उनके एक फर्लांग के भीतर भी जाता है, जबकि सूर्यास्त के बाद तो उस क्षेत्र में जाना पूरी तरह से वर्जित है।

अपने एकांतवास के कारण, एक-दो सुस्त भालू अक्सर खंडहरों में या उसके आस-पास ही रहते थे, जबकि एक तेंदुआ अक्सर भालुओं के पास स्थित पुराने मंदिर में शरण लेता था, लेकिन उनसे उसका कोई वास्ता नहीं होता था। कभी-कभी कोई बाघ कुछ हफ्तों के लिए वहाँ रहने का फैसला करता था, और जब ऐसा होता था तो भालू और तेंदुआ अस्थायी रूप से सुरक्षित स्थानों पर चले जाते थे। उनमें से किसी के लिए भी जंगल के राजा के साथ एक ही घर में रहने का साहस करना एक महंगा प्रयोग साबित हो सकता था। लेकिन अंततः बाघ आगे बढ़ जाता था, और फिर भालू और तेंदुआ वापस आ जाते थे और सब कुछ सामान्य हो जाता था।

कुछ समय पहले संपिगेहल्ली गांव से एक ग्रामीण लापता हो गया, और एक महीने बाद बुधल्ली गांव से एक और ग्रामीण लापता हो गया। किसी को नहीं पता था कि उनके साथ क्या हुआ, न ही उनके अवशेषों का कोई सुराग मिला। चूंकि भारत में ग्रामीण लोग शायद ही कभी स्वेच्छा से अपना जन्मस्थान छोड़ते हैं, इसलिए इन दोनों पुरुषों के एक के बाद एक लापता होने से संदेह पैदा हो गया। इससे संकेत मिलता है कि कोई त्रासदी घटी थी।

इसी समय एक असाधारण रूप से बड़ा बाघ, जिसके बारे में ग्रामीणों का कहना था कि वह बेहद खूंखार था क्योंकि वह निडरता से उनके मवेशियों पर हमला करता था और हर बार शिकार करने में सफल होता था, उस इलाके में, या शायद पुराने मंदिर में ही, रहने लगा। इसकी पुष्टि उसके पदचिह्नों से हुई, जो सुबह-सुबह मंदिर लौटते समय दिखाई देते थे। ये पदचिह्न पिछली शाम को मंदिर से बाहर जाते समय धूल में छोड़े गए पदचिह्नों के ऊपर बने हुए थे। ग्रामीणों को लगा कि इस बाघ ने उनके दो साथियों को एक-एक करके खा लिया है, इसलिए उन्होंने अधिकारियों से उस आदमखोर बाघ के खिलाफ मदद की गुहार लगाई, जिसके बारे में उन्हें पूरा यकीन था कि वह पुराने मंदिर के खंडहरों में रहता है।

संपिगेहल्ली कभी मेरी पसंदीदा जगह हुआ करती थी और मेरे कई गाँव के दोस्तों ने मुझे पत्र लिखकर मदद मांगी। दो हफ्ते बाद जब मैं गाँव पहुँचा तो मैंने लापता हुए दोनों पुरुषों की आखिरी गतिविधियों के बारे में गहन पूछताछ की, लेकिन सब कुछ रहस्य में डूबा हुआ था। एक गाँव की लड़की इस मामले में शामिल थी और कहा जाता था कि दोनों पुरुष उसके प्रेमी थे। लड़की गरीब थी, जबकि दोनों पुरुष तुलनात्मक रूप से संपन्न थे और अपने-अपने गाँवों में जमीन के मालिक थे। वे विवाहित थे और उनके परिवार थे, लेकिन दोनों परिवारों के किसी भी सदस्य को इस बात की जरा भी जानकारी नहीं थी कि लापता होने से ठीक पहले उनमें से प्रत्येक के पास इतनी बड़ी रकम थी, और न ही उन्हें यह पता था कि उनका रिश्तेदार अपने साथ इतनी रकम क्यों ले जा रहा था। यह सब बाद में ही सामने आया। क्योंकि भारत आज दुनिया के उन कुछ स्थानों में से एक है जहाँ पत्नियाँ अपने पतियों की गतिविधियों या अधिकार पर सवाल उठाने की हिम्मत नहीं करतीं।

पुरुष का वचन ही कानून है और महिलाएं रसोई तक ही सीमित रहकर संतुष्ट रहती हैं।

इस बीच, बाघ को उन दोनों आदमियों के लापता होने से जोड़ने वाला कोई सबूत नहीं था। पूछताछ के दौरान, मैंने लापता आदमियों के बारे में उस लड़की से बात की और मुझे लगा कि वह इस मामले में जितना बता रही है उससे कहीं ज़्यादा जानती है। मेरी नज़र में, वह किसी आदमखोर बाघ से कहीं ज़्यादा खतरनाक और चतुर थी; लेकिन पुलिसवाला न होने के कारण, मैंने मुखबिर या जासूस बनने का कोई दायित्व नहीं समझा। मुझे लड़की के इरादों, गतिविधियों और उसके प्रेमियों के साथ क्या हुआ, उससे कहीं ज़्यादा बाघ में दिलचस्पी थी।

इसलिए मैंने उस दिन दोपहर के भोजन के तुरंत बाद पुराने मंदिर जाने का फैसला किया, एक उपयुक्त छिपने की जगह चुनकर वहाँ पूरी रात इस उम्मीद में रहने का सोचा कि शायद मुझे वह आदमखोर दिख जाए। मैंने अभी तक यह तय नहीं किया था कि अगर वह दिख भी जाए तो उसे गोली मारूँ या नहीं, क्योंकि मुझे अंदर से लग रहा था कि वह अपराधी नहीं है। वैसे भी, गर्मी का मौसम था, जिसे भारत में 'गर्म मौसम' के नाम से जाना जाता है, और पूर्णिमा आने में बस एक-दो दिन बाकी थे। चाँदनी और खुली हवा किसी छोटे से मिट्टी के घर में, जहाँ गर्मी असहनीय होती, या यहाँ तक कि वन विभाग के बंगले में रात बिताने से कहीं अधिक सुखद होती।

दोपहर के भोजन के बाद मैंने रात के लिए आवश्यक कुछ सामान इकट्ठा किया: मेरी राइफल, गोला-बारूद, चाय की थर्मस, पानी की बोतल, इलेक्ट्रिक टॉर्च और कुछ बिस्कुट एक कपड़े के थैले में रखे, जो कागज़ के रैपर की तरह चटकने वाला नहीं था, और पुराने मंदिर के लिए निकल पड़ा। एक घंटे से कुछ अधिक समय में मैं अपने गंतव्य पर पहुँच गया। मैं उस जगह को अच्छी तरह जानता था, हालाँकि मैंने वहाँ कभी रात नहीं बिताई थी। यह ग्रेनाइट के ठोस, अनियमित ब्लॉकों से बनी एक छोटी केंद्रीय संरचना थी, जिसके चारों ओर कभी एक काफी ऊँची पत्थर की दीवार हुआ करती थी। कुआँ, जो वास्तव में बहुत गहरा था, अभी भी पानी से भरा हुआ था और मंदिर के सामने वाले आँगन में था।

मुझे नहीं पता कि कुएँ में कितना पानी था, लेकिन सतह ज़मीन से बहुत नीचे चमक रही थी। कुआँ खुद पंद्रह फुट से ज़्यादा व्यास का नहीं था, जिसके ऊपर लगभग एक गज ऊँची पत्थर की एक नीची दीवार बनी हुई थी। मंदिर के मुख्य भाग, आँगन की चारों दीवारों और कुएँ की दीवार को बनाने वाले कई ग्रेनाइट के पत्थर ढीले होकर अपनी जगह से गिर गए थे, जबकि टेढ़े-मेढ़े या बौने पेड़, मुख्य रूप से जंगली अंजीर, उन सभी जगहों पर जड़ पकड़ चुके थे जहाँ लैंटाना झाड़ी ने पहले से ही अपना कब्ज़ा नहीं जमा रखा था। कुल मिलाकर दृश्य उजाड़ और उदास था, और यह स्पष्ट था कि समय के साथ मंदिर और उसके आसपास के बचे-खुचे अवशेष बढ़ते जंगल में समा जाएँगे।

लेकिन उस समय मुझे मंदिर में, चाहे वह ऐतिहासिक हो या कुछ और, कोई दिलचस्पी नहीं थी। मेरी दिलचस्पी बाघ के छिपने की जगह में थी, और उसे ढूंढने में मुझे ज्यादा समय नहीं लगा। एकमात्र संभावित जगह मंदिर की मुख्य इमारत ही थी। ज़मीन अधिकतर सख्त थी, लेकिन कहीं-कहीं रेतीले हिस्से थे और

नरम ज़मीन पर, आते-जाते, एक बड़े बाघ के पदचिह्न स्पष्ट रूप से छपे हुए थे, जो पुराने खंडहरों की ओर जाते और आते थे।

मुझे पता था कि अगर वह जानवर उस समय घर पर होता तो शायद अंदर गहरी नींद में सो रहा होता। मैं खुद कभी इस इमारत के अंदर नहीं गया था, लेकिन मेरा अनुमान था कि यह आम तौर पर ऐसी ही इमारतों की तरह ही बनी होगी, जिसमें मंदिर के इकलौते प्रार्थना कक्ष के आखिरी छोर पर एक छोटा सा अलग कमरा होगा। इस छोटे से कमरे में एक या दो नंदी की मूर्तियाँ, भारत में हिंदुओं द्वारा सार्वभौमिक रूप से पूजे जाने वाले पवित्र बैल की अलग-अलग आकार की पत्थर की मूर्तियाँ, या शायद कई देवी-देवताओं की एक या कई मूर्तियाँ रखी होंगी।

इन परिस्थितियों में, इस अवसर का लाभ उठाना आपदा को न्योता देने जैसा होता। अगर बाघ अपने घर में होता, चाहे वह आदमखोर हो या नहीं, तो वह अपनी निजता के इस खुले उल्लंघन को निश्चित रूप से नापसंद करता और शायद घुसपैठिए से तुरंत छुटकारा पाने का फैसला करता। यह उन अवसरों में से एक था जब शारीरिक बल की बजाय बुद्धि का प्रयोग करना अधिक उचित था, इसलिए मैं स्थिति का जायजा लेने और एक योजना बनाने के लिए वहीं रुका रहा।

और समाधान ठीक मेरे सामने पुराने कुएँ की टूटी हुई मुंडेर में था। मुझे बस इतना करना था कि उसके पीछे आराम से बैठ जाऊँ, मुख्य मंदिर की ओर जाने वाले द्वार की ओर मुँह करके। अगर बाघ अंदर था, जैसा कि मुझे पूरा यकीन था, तो देर-सवेर उसे बाहर आना ही होगा, और वह केवल इसी द्वार का उपयोग करके बाहर आ सकता था। मैं इस द्वार को अपनी राइफल के निशाने पर रखूँगा, ताकि बाघ चाहे जिस कोण से निकले, उसे कोई फर्क न पड़े। यह सब कुछ 'बहुत आसान' लग रहा था।

जब मैं मंदिर के प्रवेश द्वार के ठीक सामने, प्राचीर के पीछे खड़ा हुआ, तो सूरज की तेज़ धूप मुझ पर पड़ रही थी। मुझे एहसास हुआ कि मेरा सिर प्राचीर के ऊपर था, इसलिए मैंने गिरे हुए कुछ पत्थर के टुकड़े उठाए और उन्हें अपने सामने इस तरह व्यवस्थित किया कि लगभग छह इंच का चौकोर छेद बन जाए, जिससे मैं झाँक सकूँ। अगर बाघ दिखाई देता, और अगर मैंने तब तक उसे गोली मारने का फैसला कर लिया होता, तो मैं इस छेद से गोली चला सकता था।

एकमात्र शर्त यह थी कि मुझे बिल्कुल स्थिर बैठना था। सौभाग्य से, मुझे इस तरह की चीजों का अच्छा अभ्यास है, इसलिए न तो गर्मी, न ही कहीं से भी आने वाले उड़ने वाले कीड़े, और न ही कभी-कभार दिखने वाली चमकीली नारंगी और पीली पीठ वाली काली छिपकली ने मुझे विचलित किया, जब मेरे चेहरे से पसीना टपक रहा था और कीड़े मेरे होठों पर बैठ रहे थे और छिपकलियां मेरे शरीर पर रेंग रही थीं।

फिर शाम हो गई। घोंसले में बैठे पक्षियों की आवाज़ों के बाद सुबह-सुबह चमगादड़ों की चहचहाहट और एक मच्छर की भिनभिनाहट सुनाई दी। लगभग अंधेरा हो चुका था जब पूर्णिमा से पहले का चाँद निकलने लगा। जल्द ही उसकी रोशनी ने मंदिर के प्रवेश द्वार की गहरी छाया को रेखांकित कर दिया, जहाँ से बाघ, अगर वह घर पर होता, तो किसी भी क्षण बाहर निकल सकता था। दिन का बचा हुआ उजाला तेज़ी

से गायब हो गया, और उसकी जगह चाँदनी ने ले ली, जिससे समय बीतने का एहसास होने से पहले ही रात हो गई। मुझे थोड़ी सी कंपकंपी हुई, क्योंकि उन कुछ मिनटों में ही काफ़ी ठंड हो गई थी।

तभी मैंने पहली बार वह आवाज़ सुनी। तीन अलग-अलग, तीखी सीटियाँ जो मेरे ठीक सामने वाले कुएँ से आती हुई प्रतीत हुईं। पहली सीटी धीमी थी, दूसरी उससे ऊँची, तीसरी छोटी, तीखी, तेज़ और पिछली दोनों से भी ऊँची थी।

उस पुराने कुएँ में कौन छिपा हो सकता है? सच कहूँ तो, मैं बहुत परेशान था। इतनी देर तक चिलचिलाती धूप में चुपचाप बैठे रहने के बाद, क्या इस अमुक व्यक्ति को इस नाजुक मौके पर सीटी बजानी चाहिए और मंदिर से निकलने वाले बाघ को डराना चाहिए? क्या अब और छिपना बेकार था? बाघ ने मेरी सीटी मुझसे भी ज़्यादा साफ़ सुनी होगी, और वह अपने ठिकाने के ठीक बाहर किसी इंसान को देखकर कभी बाहर नहीं आएगा। या आएगा? अगर वह सचमुच आदमखोर है, तो शायद उसे लगे कि कोई शिकार उसके आस-पास ही है।

लगभग दस से पंद्रह मिनट बीत चुके होंगे जब मुझे फिर से सीटी की आवाज़ सुनाई दी, तेज़ और साफ़, तीन तीखी आवाज़ों में। पहली धीमी और थोड़ी लंबी थी; दूसरी तेज़, छोटी और ऊँची पिच वाली थी; तीसरी सबसे तेज़, छोटी और उससे भी ऊँची पिच वाली थी। फिर एकदम सन्नाटा छा गया।

मैं कुएं में झांकने और घुसपैठिए को कोसने के लिए उठने ही वाला था कि मंदिर के आयताकार काले प्रवेश द्वार में एक हल्की सी हलचल ने मेरा ध्यान खींचा। उस कालेपन में एक धुंधली सी आकृति दिखाई दी। वह गायब हुई, फिर दिखी और फिर गायब हो गई। एक पल बाद, चांदनी में, तिरछी दिशा में, स्पष्ट रूप से दिखाई देता हुआ बाघ खड़ा था!

यह स्पष्ट था कि उसे मेरी उपस्थिति का जरा भी आभास नहीं हुआ, क्योंकि उसने मेरी ओर देखा तक नहीं। जब मैंने उसे पहली बार देखा, तो वह सीधे आगे देख रहा था, लेकिन उसी क्षण रुककर उसने अपनी गर्दन झुकाई और अपने दाहिने अगले पैर को चाटा। मैं उसके सिर की हरकत को स्पष्ट रूप से देख सकता था, और हर बार जब वह खुद को चाटता था, तो उसकी खुरदरी जीभ की उसके शरीर पर रगड़ने की आवाज सुन सकता था। और फिर, तीसरी बार, वे तीन तेज सीटियाँ सुनाई दीं, जिनकी आवाज़ धीरे-धीरे बढ़ती गई।

मैंने सोचा, बस हो गया। बाघ को अब सीटी की आवाज़ ज़रूर सुनाई दे रही होगी। वह दुबक जाएगा, गुर्राएगा, मंदिर की ओट में वापस भाग जाएगा, या फिर अपनी प्रवृत्ति या तंत्रिकाओं की स्थिति के अनुसार भाग जाएगा। लेकिन कुछ नहीं हुआ! बाघ बेफिक्र होकर खुद को चाटता रहा। ज़ाहिर है उसने सीटी की आवाज़ नहीं सुनी थी, और इसके केवल दो ही कारण हो सकते थे। या तो बाघ पूरी तरह बहरा था, या फिर सीटी की आवाज़ उसके कानों तक नहीं पहुँची।

बाघ ने खुद को चाटना बंद कर दिया और आगे बढ़ने लगा। उसी समय मुझे अपने सामने कुएँ की गहराई से पंखों के फड़फड़ाने जैसी आवाज़ सुनाई दी। आवाज़ भारी, धीमी और स्पष्ट थी। मैंने सोचा कि यह

किसी बड़े और भारी पक्षी की या फिर किसी ऐसे चमगादड़ की आवाज़ होगी जो भारतीय उड़ने वाली लोमड़ी या फल खाने वाले चमगादड़ से बहुत छोटा न हो।

फिर उस शाम चौथी बार सीटी बजी, पहले से कहीं ज़्यादा तेज़ और नज़दीक से। बाघ को गोली मारने का मेरा फैसला इस रहस्य में पूरी तरह खो गया। दरअसल, मैंने उसे देखा तक नहीं, बल्कि पुराने कुएँ के ऊपरी हिस्से को घूरता रहा, पता नहीं किस चीज़ के निकलने का इंतज़ार करता रहा।

अब पंखों की भारी, धीमी फड़फड़ाहट लगातार जारी थी। वह बड़ा पक्षी या चमगादड़, या जो भी था, हर पल ऊपर की ओर बढ़ता जा रहा था और एक-दो पल में दिखाई देने वाला था। जैसे ही मैंने उस खुले स्थान को देखा, मुझ पर एक अजीब सा आकर्षण छा गया। एक बार फिर तीन सीटियाँ बजीं, और फिर कुएँ से एक बड़ी, काली, अस्पष्ट आकृति की परछाई निकली।

चांदनी तेज और साफ थी और मैं उस जगह को टकटकी लगाए देख रहा था। मुझे कुछ दिखाई दिया, इसमें कोई शक नहीं था, लेकिन उसका कोई वास्तविक आकार या रूप नहीं था: कुएं से काले धुएं जैसा एक छोटा सा बादल निकला। उसका व्यास लगभग छह फीट और ऊंचाई भी लगभग उतनी ही थी।

मुझ पर एक गहरी उदासी छा गई; एक अजीब सी, निराशाजनक हताशा। क्या कुएँ से जो निकलेगा उससे कोई फर्क पड़ेगा? क्या सारी परेशानियों के साथ जीना सार्थक है? क्यों न कुएँ में कूद जाऊं और सब कुछ भूल जाऊं?

मैंने खुद को झटककर देखा और घूरने लगा। मेरी नज़र कुएँ के मुँह के ऊपर एक पल के लिए ठहरी और अगले ही पल गायब हो गई। चाँदनी उस जगह से साफ़ चमक रही थी, जो कुछ पल पहले उस अस्पष्ट आकृति से ढकी हुई थी। बाघ के प्रकट होते ही मैं उत्साह से पसीना बहाने लगा था, और आज भी जब मैं जंगल में बाघ देखता हूँ तो ऐसा ही होता है। अब मुझे ठंड लग रही थी और मेरा शरीर पसीने से भीग रहा था।

इसी बीच, वह बाघ, जो कम से कम मांस और हड्डियों का बना था, भटक गया। मुझे पता था कि संभवतः वह सुबह तड़के तक नहीं लौटेगा, जब तक कि उसे खाने के लिए कुछ मिल न जाए। इसलिए, अगर मैं उसके लौटने पर उसे गोली मारना चाहता, तो मुझे शायद काफी देर तक इंतजार करना पड़ता। लेकिन किसी तरह मेरा मन उस बाघ को गोली मारने का नहीं कर रहा था; कुएँ से निकली वह अजीब सी सीटी और उससे भी अजीब सी परछाई मुझे कहीं ज्यादा आकर्षित कर रही थी। वैसे भी, चांदनी रात में खुली हवा में वहाँ बैठना, संपिगेहल्ली में चार मील दूर स्थित उस घुटन भरे आश्रय में रहने से कहीं बेहतर था।

मैं सीटी की आवाज़ और परछाई के अलावा सब कुछ भूल गया और यह सोचने लगा कि आखिर मैंने जो देखा था, उसका कारण क्या हो सकता है। सीटी की आवाज़ किसी ऐसे पक्षी की आवाज़ जैसी नहीं थी जिसे मैं जानता था। बल्कि, वह साफ तौर पर किसी इंसान की आवाज़ जैसी थी। पंखों की फड़फड़ाहट जो मैंने सुनी थी, वह किसी बड़े पक्षी या उस भारतीय उड़ने वाली लोमड़ी की हो सकती थी जिसका मैंने पहले

ज़िक्र किया है। लेकिन न तो कोई पक्षी निकला और न ही कोई चमगादड़, और मैंने एक पल के लिए भी अपनी नज़र उसके मुँह से नहीं हटाई। जो निकला वह बिल्कुल अलग और अप्रत्याशित था: एक धुंधली सी आकृति, जिसका स्वरूप समझ से परे था। सीधे शब्दों में कहें तो, एक छोटा सा बादल। और वह बादल मेरी आँखों के सामने गायब हो गया!

मैं समस्या में इतना मग्न था कि मुझे समय का बिल्कुल भी एहसास नहीं हुआ और मैं अपने आसपास की चीजों से बेखबर हो गया। तभी मेरे पीछे से आती एक धीमी सी गुर्राहट ने मुझे झटके से होश में ला दिया। बाघ वहाँ खड़ा था! वह दूसरी दिशा से लौट आया था और मेरी मौजूदगी का पता लगा चुका था। वह आदमखोर बाघ के रूप में जाना जाता था, जिसने पहले ही दो आदमियों को मारकर खा लिया था।

मैं घबराकर पीछे मुड़ा और सहज ही अपनी .405 पिस्तौल कंधे पर रख ली। करीब चालीस गज दूर चांदनी में एक बाघ अपने पिछले पैरों पर बैठा था और मुझे घूर रहा था। फिर उसने अपना सिर थोड़ा झुकाया और हल्की सी गुर्राहट के साथ विरोध जताया। मानो शब्द बोलकर ही कह रहा हो, वह जानवर कह रहा था, 'क्या तुम यहाँ से दफ़ा नहीं हो सकते?' इससे मुझे पूरी तरह तसल्ली हो गई। मैं उसकी दया पर था और मुझे पता चलने से पहले ही मार सकता था। यह बाघ आदमखोर नहीं था!

जब कोई मेरे साथ अच्छा व्यवहार करता है तो मैं हमेशा आभारी रहने की कोशिश करता हूँ, और इस जानवर के प्रति भी मैं निश्चित रूप से आभारी था। इसने मेरी जान बचाई थी और मैं भी इसका एहसान चुकाना चाहता था। मैं खड़ा हुआ, और देखते ही देखते बाघ मेरी नज़रों से ओझल हो गया।

जानवर के अचानक मन बदलने की आशंका से बचने के लिए राइफल को अपनी कोहनी में दबाकर, मैंने टॉर्च की रोशनी कुएँ में डाली, यह उम्मीद करते हुए कि वहाँ कोई रहस्यमयी बाघ छिपा होगा। लेकिन गहराई में केवल पानी ही रोशनी को प्रतिबिंबित कर रहा था। वहाँ कोई भी नहीं छिपा था, क्योंकि मैंने कुएँ के हर कोने की तलाशी ले ली थी। फिर मैं मुड़ा और गुस्से में सोचते हुए वहाँ से जाने लगा। बाघ कहीं नज़र नहीं आ रहा था।

मैंने उस रात का बाकी समय वन विश्राम गृह के बरामदे में बिताने का फैसला किया, इसलिए मैं गाँव से लगभग एक मील दूर बने छोटे बंगले तक गया और अंदर सो रहे चौकीदार को ज़ोर से आवाज़ दी। बार-बार आवाज़ देने पर भी किसी ने जवाब नहीं दिया। ज़ाहिर है, चौकीदार ड्यूटी पर नहीं था, बल्कि गाँव की किसी झोपड़ी में आराम से सो रहा था।

यह कोई आश्चर्य की बात नहीं थी। भारत में रहने वाले लोग जानते हैं कि चौकीदार आमतौर पर पहरा नहीं देते। वे इसके बजाय चैन से सोते हैं; शायद आपसे या मुझसे भी ज़्यादा चैन से, क्योंकि उनके मन में यह बात बिल्कुल स्पष्ट होती है कि रात का समय सोने का होता है।

इसलिए मैं उस पत्थर पर चढ़ गया जो छोटे आयताकार बंगले के तीन तरफ फैले बरामदे तक जाता था। रखवाले ने लापरवाही से एक कुर्सी बरामदे के एक हिस्से में छोड़ दी थी, यह जानते हुए कि इतनी

सुनसान जगह में कोई चोर भी होता तो ऐसी जर्जर चीज को कोई नहीं चुराएगा; इसलिए मैं उस कुर्सी पर लेट गया और कुछ घंटों की नींद लेने की कोशिश की।

मेरा इरादा अगली सुबह संपिगेहल्ली में अपने दोस्तों को यह बताने का था कि मुझे पूरा यकीन है कि बाघ आदमखोर नहीं था, और अगर वे वाकई लापता लोगों का रहस्य सुलझाना चाहते हैं, तो उन्हें पुलिस को उस दुबली-पतली लड़की से पूछताछ करने का सुझाव देना चाहिए जो उन दोनों से बहुत करीब से जुड़ी हुई थी; खासकर यह पता लगाने के लिए कि उनके पैसे का क्या हुआ। फिर मैं स्टुडेबेकर कार में बैठकर घर के लिए निकल जाता।

लेकिन उस रात मुझे नींद नहीं आई। वे रहस्यमयी सीटियाँ, पंखों के फड़फड़ाने की आवाज़, मुझ पर छाई अजीब सी सुस्ती, और सबसे बढ़कर कुएँ से निकली वह अजीब सी धुंधली आकृति, एक तर्कसंगत व्याख्या की माँग कर रही थी। इस समस्या से जूझते हुए, थककर, आखिरकार प्रकृति ने अपना काम किया और भोर होने के बाद मैं सो गया। उस सुबह जब मैं उठा तो काफी देर हो चुकी थी, लेकिन बंगले का रखवाला अभी तक नहीं लौटा था।

मैं गाँव गया, जहाँ मैंने अपने दोस्तों को बताया कि मैंने बाघ को देखा था और बाघ ने भी मुझे देख लिया था। मैंने उन्हें समझाया कि वह आदमखोर नहीं था। मैंने उन्हें सीटी जैसी आवाज़ों के बारे में नहीं बताया जो मैंने सुनी थीं और न ही उस धुंधली आकृति के बारे में जो मैंने देखी थी, क्योंकि अपनी कहानी को बेवजह जटिल बनाने और खुद को हास्यास्पद साबित करने का कोई फायदा नहीं था।

फिर मेरे एक दोस्त ने मुझसे पूछा कि मैं कहाँ छिपा था, और मैंने उसे बताया कि मैं पुराने कुएँ की मुंडेर के पीछे छिपा था। यह सुनकर उसने मुझे अजीब नज़रों से देखा।

उसने पूछा, ‘क्या तुमने बाघ के अलावा कुछ और देखा? क्या तुमने कुछ सुना?’

मैंने कुछ देर तक कोई जवाब नहीं दिया। फिर मैंने पलटकर पूछा, 'आप क्यों पूछ रहे हैं?'

‘क्या आपने कोई विशाल चमगादड़ देखा या सुना? उसके पंखों के फड़फड़ाने की आवाज़?’

पंखों के फड़फड़ाने की आवाज़! मैंने वह आवाज़ ज़रूर सुनी थी: कुएँ की गहराई से आती भारी, फड़फड़ाती पंखों की आवाज़। दरअसल, मैंने वह आवाज़ कई बार सुनी थी, हर बार वह आवाज़ ऊपर आती और कुएँ के मुँह के करीब पहुँचती जा रही थी, और वह आवाज़ तभी बंद हुई जब वह अजीब सी धुएँ जैसी आकृति बाहर निकली। कितनी बड़ी मूर्खता थी मेरी कि मैंने पहली बार आवाज़ सुनते ही अपनी टॉर्च की रोशनी कुएँ में नहीं डाली! शायद मुझे कुछ दिखाई देता। फिर मुझे याद आया कि मैं बाघ का इंतज़ार कर रहा था, इसलिए खुद को दिखाना नहीं चाहता था।

मेरे दोस्त ने मेरे जवाब में देरी को भांप लिया था। उसके चेहरे पर एक समझदारी भरी मुस्कान आ गई। इसलिए मैंने उसे सब कुछ बता दिया।

जब मैंने कुएँ से निकले उस धुंधले रूप का जिक्र किया तो वह भयभीत हो गया। जाहिर है, दूसरों ने सीटी और पंखों के फड़फड़ाने की आवाज सुनी थी, लेकिन किसी ने कुछ देखा नहीं था, क्योंकि किसी ने देखने के लिए इंतजार ही नहीं किया था।

फिर मेरे मित्र ने एक विचित्र कहानी सुनाई। उसके अनुसार, कुछ सौ या उससे भी अधिक वर्ष पहले —उसे ठीक-ठीक समय नहीं पता था—मंदिर फलता-फूलता था और व्यापक श्रद्धा का केंद्र था, जबकि आसपास के क्षेत्र पर एक छोटे से सरदार का शासन था जिसने दूर स्थित राजधानी वाले राजा से स्वयं को स्वतंत्र घोषित कर लिया था। इस छोटे से सरदार के दरबार में एक ऐसा व्यक्ति था जो सलाहकार और मसखरे दोनों की भूमिका निभाता था, और जिसके प्रति सरदार का स्पष्ट रूप से बहुत सम्मान था।

मंदिर का संचालन कई पुजारियों के हाथों में था—सभी ब्राह्मण—जिनका नेतृत्व एक प्रखर चरित्र वाले प्रधान पुजारी द्वारा किया जाता था। जैसा कि अक्सर होता है जब प्रखर बुद्धि वाले लोग एक-दूसरे के संपर्क में आते हैं, प्रधान पुजारी, उसके सलाहकार विदूषक और ब्राह्मण प्रधान पुजारी के बीच हितों का टकराव हुआ।

बेशक, सारी बातें बहुत पहले भुला दी गई थीं, लेकिन ऐसा प्रतीत होता था कि प्रधान पुजारी ने अपने प्रतिद्वंद्वी, विदूषक के विरुद्ध झूठे आरोप लगाकर उसे राजपरिवार के प्रति विश्वासघात का दोषी ठहराया था। नतीजा यह हुआ कि उस दुर्भाग्यशाली सलाहकार पर सार्वजनिक रूप से मुकदमा चलाया गया, राजद्रोह के आरोप में उसे मृत्युदंड दिया गया और तुरंत ही उसे जिंदा ही कुएँ में फेंक दिया गया, लेकिन मरने से पहले उसने प्रधान पुजारी और मंदिर के सभी भिक्षुओं से बदला लेने की धमकी दी थी।

इस कहानी का अगला भाग यह था कि एक सप्ताह के भीतर ही प्रधान पुजारी लापता हो गया, और कुछ दिनों बाद उसका शव कुएँ में तैरता हुआ मिला। विदूषक ने अपना पहला शिकार बना लिया था। इसके बाद, कुछ अंतरालों पर, अन्य पुजारी एक-एक करके गायब हो गए, और उनके शव भी प्रधान पुजारी की तरह कुएँ में औंधे मुँह तैरते हुए पाए जाते थे। अन्य पुजारी मंदिर में आए, लेकिन उन सभी का भी वही हश्र हुआ।

समय-समय पर प्रतिशोधी विदूषक की आत्मा को भगाने के लिए भव्य समारोह आयोजित किए जाते थे, लेकिन कोई लाभ नहीं हुआ, क्योंकि धीरे-धीरे एक के बाद एक पुजारी गायब होते चले गए और बाद में उनका डूबा हुआ शरीर कुएं के पानी की सतह पर तैरता हुआ मिला। विदूषक की प्रतिशोधी आत्मा को अपना कार्य पूरा करने में शायद सौ साल लग गए, लेकिन वह समय आ गया जब कोई भी पुजारी, चाहे वह कितना भी पवित्र क्यों न हो या दिखने में पवित्र क्यों न हो, मंदिर में पूजा-पाठ करने के लिए स्वेच्छा से अपनी जान जोखिम में डालने को तैयार नहीं था। और इसी तरह मंदिर और कुआं वीरान हो गए और अंततः खंडहर में तब्दील हो गए।

कथावाचक ने अपनी विचित्र कहानी का समापन एक अत्यंत महत्वपूर्ण वाक्य से किया: 'महोदय, अपने आप को बहुत भाग्यशाली समझिए कि आप आज सुबह जीवित हैं। वह दुष्ट आत्मा आपको आसानी से कुएँ में फेंक सकती थी, ठीक वैसे ही जैसे उसने अतीत में कम से कम सौ पुजारियों को नष्ट कर दिया है!'

क्योंकि मैं ब्राह्मण पुजारी नहीं हूँ, इसलिए मैंने व्यंग्यपूर्वक जवाब दिया और कहा, 'बिल्कुल बकवास! धिक्कार है!' ये शब्द मेरे मुँह से उग्रता और गुस्से से निकले। सच कहूँ तो, मैं बहुत नाराज़ था! क्या इस मूर्ख को लगता था कि वह मुझे इन पुरानी कहानियों से डरा सकता है? मुझे डर है कि अगले कुछ मिनटों तक मैं अपने उस बेचारे परिचित के प्रति बहुत असभ्य रहा, क्योंकि मैंने उसे साफ-साफ बता दिया कि मुझे उसकी कहानी और उसे सुनाने के उसके तरीके के बारे में क्या लगा।

बेचारे का चेहरा उतर गया और वह शर्मिंदा होकर चला गया। मैं निडर होकर उसके पीछे-पीछे घूरता रहा। फिर मैंने घर लौटने की तैयारी में स्टुडेबेकर कार में सामान पैक करना शुरू किया, जिसमें मुझे ज्यादा समय नहीं लगा। मैंने अपने दोस्तों को आधे मन से और कुछ अचानक ही अलविदा कहा, क्योंकि मैंने देखा कि जिस आदमी ने मुझे मंदिर के बारे में बताया था, वह उनमें नहीं था। भारतीय लोगों के हमेशा की तरह मेहमाननवाज़ी करते हुए, उन्होंने आखिरी क्षण तक भी मुझसे रुकने का आग्रह किया। जवाब में मैंने सेल्फ-स्टार्टर दबाया, कार को गियर में डाला और चला गया।

संपिगेहल्ली से लगभग छह मील का सफर तय करने के बाद मैंने अपनी स्टुडेबेकर कार रोकी, इंजन बंद किया और सोचने लगा। मैंने बेवजह ही बदतमीज़ी की थी। आखिर उस आदमी ने तो मुझे कहानी सिर्फ इसलिए सुनाई थी क्योंकि उसने दूसरों से सुनी थी। सीटी की आवाज़ मैंने सुनी थी, पंखों की फड़फड़ाहट मैंने सुनी थी और वह अजीब सी परछाई मैंने ही देखी थी। अब यह मुझ पर था कि मैं उस कहानी पर विश्वास करूं या अगर मुझे कोई बेहतर स्पष्टीकरण मिल जाए तो उसे नकार दूं। मेरे लिए सबसे समझदारी की बात यह होती कि मैं इस मामले की और जांच-पड़ताल करने के लिए और लोगों से बात करूं। सबसे समझदारी की बात तो यह होती कि मैं कुएं पर एक और रात बिताऊं और देखूं कि क्या वह घटना दोबारा दोहराई जाती है। इन दोनों में से कुछ भी करने के बजाय, मैंने एक बच्चे की तरह व्यवहार किया और गुस्से में वहां से चला गया।

इसलिए मैंने गाड़ी मोड़ी और वापस गाँव की ओर चल दिया, जहाँ पहुँचते ही मैंने सबसे पहले अपने दोस्त से माफी माँगी। उसने मुझे तुरंत माफ कर दिया और कहा कि वह मेरी भावनाओं को समझता है, और फिर से मुस्कुराने लगा। दरअसल, मेरे लौटने पर सभी मुस्कुरा रहे थे, जब तक कि मैंने उन्हें यह नहीं बताया कि इस बार मैं बाघ का शिकार करने नहीं, बल्कि भूत का शिकार करने आया हूँ—पुराने मंदिर के कुएँ में रहने वाली बुरी आत्मा का।

ये शब्द सुनकर सबकी मुस्कान गायब हो गई। फिर मेरे दोस्त ने कहा: ‘सर, मैं असभ्य नहीं होना चाहता, लेकिन कृपया इस मूर्खतापूर्ण काम को करने के बजाय तुरंत बैंगलोर वापस चले जाइए। आप शेर से तो बच सकते हैं, लेकिन शैतान से नहीं।’

उस शाम, बाघ से डरने की कोई बात न होने के कारण, मैं पुराने मंदिर में उतनी जल्दी नहीं गया जितना पिछली दोपहर गया था। लगभग छह बज रहे थे जब मैं कुएँ की मुंडेर के पीछे उस जगह पर बैठ गया जहाँ मैं पहले बैठा था। मैं अपने साथ राइफल लाया था, इस डर से कि कहीं बाघ मुश्किल न हो जाए, लेकिन इस बार चुप रहने की कोई खास ज़रूरत नहीं थी, इसलिए मैंने अपने लिए चाय का एक बड़ा थर्मस, रोटी, मक्खन, डिब्बाबंद मटन और कुछ संतरे भी रख लिए थे, और अपनी पुरानी पाइप तो थी ही।

जैसे ही मैं जल्दी से जल्दी और आराम से अपनी पुरानी जगह पर बैठा, टॉर्च, फ्लास्क, पानी की बोतल और अन्य सामान अपने दाएं-बाएं समेटते हुए, बाघ का कोई निशान नहीं दिखा। शायद वह मेरे आने से पहले मंदिर के पवित्रतम स्थान में अपने छिपने की जगह से बाहर आ गया हो, हालांकि मुझे ऐसा होने की संभावना कम ही लगती थी। मेरा यह अनुमान सही साबित हुआ। समय सात बजकर कुछ मिनट ही हुआ था और बहुत ठंड बढ़ रही थी। नाइटजार पक्षियों ने बोलना शुरू कर दिया था, तभी गर्भगृह के अंधेरे द्वार के अंदर एक पत्थर अपनी जगह से हटकर बाहर किनारे पर लुढ़क गया।

मुझे पता था कि बाघ कुएं के मुहाने पर खड़ा है, यह देखने के लिए कि बाहर निकलना सुरक्षित है या नहीं। हो सकता है कि वह मुझे अभी देख ले, या शायद पहले ही देख चुका हो; शायद उसे पिछली शाम कुएं की मुंडेर पर मेरी मौजूदगी याद आ गई हो। ठीक उसी क्षण मैंने पहली सीटी सुनी, तेज़, धीमी और लंबी, जिसके तुरंत बाद एक और तेज़, ऊँची और छोटी सीटी सुनाई दी। उसके बाद एकदम सन्नाटा छा गया।

मुझे अचानक याद आया कि पिछली शाम को बाघ के प्रकट होने से ठीक पहले सीटी बजनी शुरू हुई थी। वही बात फिर से दोहराई गई। मेरे मन में यह विचार आया: क्या सीटी बजाने वाली कोई चीज़ बाघ को मेरी उपस्थिति के बारे में चेतावनी देने की कोशिश कर रही थी?

यह धारणा कुछ ही क्षण बाद तब दूर हो गई जब बाघ मंदिर के प्रवेश द्वार की अंधेरी रूपरेखा से निकला, पहले एक अस्पष्ट आकृति के रूप में और फिर नव उदय हुए चंद्रमा के पहले प्रकाश में एक विशालकाय जानवर के रूप में।

जैसा कि मैंने पिछली शाम देखा था, किसी अज्ञात कारण से ये तेज़ सीटियाँ बाघ के कानों तक नहीं पहुँचीं, हालाँकि मुझे ये साफ़ सुनाई दे रही थीं। यह बात विचित्र थी और अगले ही पल इसकी पुष्टि हो गई जब लगातार तीन सीटियाँ पहले से कहीं ज़्यादा ज़ोर से और लगातार बजीं। लेकिन बाघ ने उन पर कोई ध्यान नहीं दिया। फिर मुझे पंखों के फड़फड़ाने की आवाज़ फिर से सुनाई देने लगी, हल्की और जैसे दूर से आ रही हो। पहले तो आवाज़ का स्रोत पता लगाना मुश्किल था, लेकिन फिर अचानक मुझे एक अप्रिय झटके के साथ एहसास हुआ कि यह मेरे सामने मौजूद गहरे कुएँ की तलहटी से आ रही थी।

इस बीच बाघ स्थिर खड़ा था, सुबह की चांदनी में साफ दिखाई दे रहा था। वह मेरी ओर टकटकी लगाए देख रहा था। यह स्पष्ट था कि बाघ को याद आ गया था कि उसने मुझे पिछली रात वहां देखा था। मैं कुएं में टॉर्च की रोशनी डालकर फड़फड़ाहट की आवाज का कारण पता लगाना चाहता था, लेकिन इसका मतलब था बाघ से नजर हटाना, जो मैं बिल्कुल नहीं करना चाहता था। यह अफवाह कि यह आदमखोर बाघ

है, एक बार फिर मेरे दिमाग में जोर से गूंज उठी। मान लीजिए कि यह सच है: अगर वह कुएं में देखते समय मुझ पर हमला करने का फैसला करता है, तो मैं उसकी दया पर निर्भर हो जाऊंगा।

तीसरी बार बजने वाली तीन सीटियों और पंखों की फड़फड़ाहट की बढ़ती आवाज़ ने मेरी सतर्कता को तोड़ दिया। एक नज़र में ही पता चला कि बाघ अभी भी मेरी ही तरफ देख रहा था। तभी मैं घुटनों के बल उठा, कुएँ की मुंडेर से अपना सिर और कंधे बाहर निकाले, टॉर्च पकड़े हुए अपना दाहिना हाथ जितना हो सके कुएँ में नीचे तक बढ़ाया और बटन दबा दिया। तेज़ रोशनी गहरे काले कुएँ में घुस गई और फिर कुछ दूरी पर उठते हुए घने काले धुएँ या भाप के बादल में गायब हो गई।

बाघ को भूलकर मैं जिज्ञासा से स्तब्ध होकर कुएँ की ओर टकटकी लगाए देखता रहा, जबकि नीचे से निकलता हुआ प्रतीत होने वाला बादल, जो इतना घना था कि मेरी टॉर्च की रोशनी भी उसे भेद नहीं पा रही थी, मेरी ओर निरंतर बढ़ता जा रहा था। उसे उस सतह तक पहुँचने में ज़्यादा समय नहीं लगेगा जहाँ मैं दुबका हुआ था।

एक तेज़ गुर्राहट ने मुझे बाघ से होने वाले खतरे के प्रति सचेत कर दिया। मैंने झट से टॉर्च उस दिशा में चमकाई जहाँ वह खड़ा था, और दूसरे हाथ से अपनी राइफल ढूँढी। लेकिन बाघ वहाँ नहीं था! शुक्र है कि मुझे एहसास हुआ कि उसने मुझे देख लिया था और भाग गया था, जो गुर्राहट मैंने सुनी थी वह मेरे दखल का विरोध था। अजीब तरह से मुझे बाघ की कमी महसूस हुई, क्योंकि अब मेरे सामने कोई भौतिक शत्रु नहीं था, बल्कि एक ऐसी अमूर्त चीज़ थी जिससे निपटना मुझे नहीं आता था। और मैं आपको बता सकता हूँ कि यह विचार बेहद बेचैन करने वाला था।

फड़फड़ाहट की आवाज़ फिर से आई; तेज़, भारी और नज़दीक से। मैंने कुएँ के अंदर टॉर्च की रोशनी डाली, जिससे पता चला कि धुएँ के बादल के घूमते हुए गुबार अब कुएँ के मुँह से मुश्किल से पाँच फीट दूर थे और टॉर्च की किरणें उन्हें भेद नहीं पा रही थीं। वे तेज़ी से ऊपर उठे और जल्द ही मेरी टॉर्च के सामने पहुँच गए, जिसे मैंने नीचे की ओर करके रखा था। मेरा हाथ बुरी तरह काँपने लगा, जिससे रोशनी बेतरतीब ढंग से नाचने लगी।

इस धुंध में कुछ अवर्णनीय बुराई सी झलक रही थी, और इसने मुझ पर एक ऐसी प्रतिक्रिया उत्पन्न की जिसका अनुभव मैंने पहले कभी नहीं किया था। सामान्य धुएं के विपरीत, यह धुंध घने, रिबन जैसे निशानों में घूम रही थी, मानो किसी अंतहीन लंबाई के विशालकाय सांप के कुंडल हों जो उग्र, बेचैन, निगलने वाली, कभी न खत्म होने वाली गति में अपने चारों ओर, अंदर-बाहर और चारों ओर मुड़ते-घुमड़ते रहते हों।

देखते ही देखते, वह बादल मेरे सिर और कंधों तक पहुँच गया और मुझे पूरी तरह से घेर लिया। मैंने कुएँ में नीचे देखने के लिए गर्दन झुकाई। बादल पिछली रात की तुलना में कहीं अधिक घना था, बिल्कुल मटर के सूप जैसे कोहरे जैसा, जिसे महसूस किया जा सकता था। मैं वैसे तो डरपोक इंसान नहीं हूँ, लेकिन अगले कुछ पलों तक मुझे समझ नहीं आया कि क्या हो रहा है। उस अनुभूति को शब्दों में बयान करना

कठिन है। शायद यह कहना कि मैं अपने आप से अलग हो गया था, सबसे सटीक होगा, हालाँकि मुझे पता है कि ऐसे शब्द शायद ही कोई अर्थ व्यक्त कर पाते हैं।

एक बार फिर मैं असहनीय रूप से थका हुआ, अकेला, उदास और पूरी तरह निराश महसूस कर रहा था। मेरे मन में एक तीव्र इच्छा जाग उठी कि मैं दीवार से कूदकर कुएँ में समा जाऊँ, ताकि हमेशा के लिए अपने सारे दुख-दर्द खत्म कर दूँ। जीवन की यातनाओं, परेशानियों और परीक्षाओं का यह कितना आसान, कितना सुखद अंत होगा! कितना आसान रास्ता! कितना आरामदायक और सुकून देने वाला! कितना सुकून देने वाला! कितना सुकून देने वाला!

और फिर वह गैस, या धुआँ, या जो भी था, ऊपर उठा। बल्कि, वह कुएँ की मुंडेर को पार कर मेरे सिर के ऊपर एक घने, भारी, घूमते हुए बादल की तरह उठ खड़ा हुआ। उसके उठने के साथ ही मेरा मन भी शांत हो गया और मैं एक बार फिर ज़मीन पर लौट आया, कुएँ में कूदने के अपने हाल के निराशाजनक विचारों को आश्चर्य से याद करते हुए। बादल ऊँचा उठता गया और हवा में घुलमिलकर पतला होता गया। मैंने उसे अपनी टॉर्च की रोशनी में पूरे दस मिनट तक देखा, तब तक वह शायद पचास फीट या उससे भी अधिक ऊँचा उठ चुका होगा, फिर वह बिखर गया और मैं उसे देख नहीं पाया।

मैंने टॉर्च बुझा दी और उस विचित्र घटना पर विचार करने के लिए बैठ गया। मेरे मित्र के शब्द और उसने जो कहानी मुझे सुनाई थी, वो सब मुझे ज़ोर से याद आ गई। मैंने बुराई और प्रतिशोध की उस कहानी पर फिर से विचार किया, और मुझे उस अजीब सी उदासीनता और सुस्ती का एहसास याद आया जो मुझ पर हावी हो गई थी जब भाप ने मुझे घेर लिया और मेरे सिर के ऊपर से गुज़र गई: निराशा का एहसास, और कुएँ में कूदकर अपनी सारी परेशानियों को खत्म करने का सुकून देने वाला प्रलोभन। दरअसल, मैं खुद भी उस सदियों पुराने अभिशाप का शिकार होने ही वाला था। यह जानकर मुझे ज़बरदस्त झटका लगा, मैं आपको यकीन दिला सकता हूँ, कि कुछ ही पल पहले मैं निर्दयता से आत्महत्या के बारे में सोच रहा था।

फिर इस घटना के कुछ ऐसे पहलू भी थे जिनकी व्याख्या करना असंभव था। एक के बाद एक तीन अजीब सी सीटियाँ; पंखों के फड़फड़ाने की अनसुनी आवाज़; यह तथ्य कि बाघ इन आवाज़ों को नहीं सुन सका; और सबसे अजीब बात यह थी कि कुएँ से निकली वह विचित्र वस्तु, या जो भी चीज़ थी, एक काले बादल के रूप में प्रकट हुई।

मैं दूसरी बार जंगल में बने बंगले की ओर वापस चला गया, उस जर्जर पुरानी कुर्सी में सुकून पाने के लिए, पहले से कहीं अधिक उलझन में, मन में अधिक व्याकुल और स्वयं से अधिक असंतुष्ट।

इसी मनोस्थिति में मैंने अगली सुबह संपिगेहल्ली से प्रस्थान किया, अपने गाँव के मित्रों को अपने नवीनतम साहसिक अनुभव के बारे में बताने के बाद। उन सभी ने, बिना किसी अपवाद के, सिर हिलाया और अलग-अलग वाक्यों में एक ही शब्द को दोहराया,

“हमने तो पहले ही कहा था।” जिस व्यक्ति ने मुझे कल परेशान किया था, उसने प्रसन्नता से कहा, “कल तुम मुझसे नाराज़ थे। आज तुम सचमुच भाग्यशाली हो कि ज़िंदा हो। भाग्य ने तुम्हें दूसरी बार उस कुएँ

में डूबने वालों में शामिल होने से बचा लिया। ऐसा इसलिए हुआ क्योंकि तुम्हारा समय अभी नहीं आया था। लेकिन वहाँ तीसरी रात मत ठहरो, महोदय। क्योंकि तब तुम्हारा समय आ सकता है और तुम निश्चित रूप से कुएँ में कूद जाओगे।"

मैं उससे बहस कर सकता था और यह बता सकता था कि, यदि वास्तव में तीसरी रात को कुएं में कूदना ही मेरी नियति थी, तो मुझे संपिगेहल्ली में ही रहना पड़ता, चाहे वह, मैं या कोई और मुझे वहां से जाने के लिए कहे या न चाहे।

---

*देखें: नरभक्षी की पुकार।**देखें: बाघ की दहाड़।*देखें: नरभक्षी की पुकार।

6

गेरहेट्टी तेंदुए का विचित्र मामला

गेरहेट्टी एक छोटा सा गांव है जिसमें एक दर्जन से भी कम झोपड़ियां हैं, जो मद्रास राज्य के सलेम जिले में स्थित पेनग्राम के बड़े गांव की ओर एंचेट्टी से लगभग दक्षिण दिशा में जाने वाले वन मार्ग से लगभग एक मील की दूरी पर स्थित है।

यह एंचेटी से केवल सात मील दूर है, लेकिन गेरहेटी पहुँचने के लिए आपकी कार को लगभग असंभव कोण पर घुमावदार रास्ते से नीचे उतरना पड़ता है, जो बेहतरीन ब्रेकिंग सिस्टम पर भी भारी दबाव डालता है, फिर दो बेहद पथरीले नदी-नालों को पार करना पड़ता है जिनमें साल के नौ महीने से ज़्यादा समय तक पानी नहीं रहता, और फिर उतनी ही घुमावदार और असंभव ढलान पर चढ़ना पड़ता है। पुराने ज़माने में, जब मेरे पास मॉडल टी फोर्ड कारें हुआ करती थीं, यानी मेरे बचपन के दिनों में, मुझे अपनी प्यारी 'लिस्सोम लिज़ी' के स्टीयरिंग व्हील पर बैठकर, जिसका नाम उसके पीछे बड़े अक्षरों में लिखा होता था, उसे नियंत्रित करने वाले तीन पैडलों में से बाएँ पैडल को ज़ोर से दबाकर, और लाल-गरम इंजन और उबलते रेडिएटर से निकलते भाप के बादलों के बीच शिखर पर पहुँचने में बचकाना और बेहद आनंद आता था।

एक बार लिज़म लिज़ी उस ढलान पर आधी चढ़ाई चढ़ गई, लेकिन उससे आगे नहीं चढ़ सकी। मैं गेरहेट्टी से बारह मील आगे मुत्तूर के वन लॉज जा रहा था, जहाँ मैंने अपने आदिवासी पुजारी मित्र बायरा से चिन्नार नदी के किनारे स्थित वन विभाग के कुएँ में फँसे एक मगरमच्छ को पकड़ने में मदद करने की व्यवस्था की थी, और मुझे वह मुलाकात पूरी करनी थी। मैं क्या करता? हेनरी फोर्ड और मॉडल टी की अद्भुत अनुकूलन क्षमता की जय हो! मैंने कार को घुमाया, अपने दाहिनी ओर के हैंड-लीवर को न्यूट्रल स्थिति में रखा, तीन पैडलों में से बीच वाले पैडल (जो मॉडल टी में रिवर्स पैडल था) को दबाया और उस भयानक ढलान पर आसानी से पीछे की ओर चढ़ गया! कार और मेरी गर्दन दोनों पर ज़ोर पड़ा, लेकिन हम पहुँच गए।

ढलान के शिखर पर पहुँचने के लगभग एक मील बाद, एक संकरा रास्ता दाईं ओर मुड़ता है, जिसके दोनों ओर घना जंगल है। इस रास्ते पर एक और मील चलने पर दाईं ओर एक पानी का कुंड मिलता है, जो बाईं ओर गेरहेट्टी फ़ॉरेस्ट लॉज की ओर जाने वाले रास्ते के ठीक सामने है। यह एक छोटा सा प्यारा बंगला है, जिसमें उन दिनों बस एक ही कमी थी। यह हमेशा बंद रहता था, क्योंकि देखभाल करने वाला, जो लापरवाह और बेपरवाह था और जिसे किसी बात की परवाह नहीं थी, छुट्टी पर गया रहता था, कभी-कभी एंचेट्टी में, लेकिन ज़्यादातर पेनाग्राम में, जो कि मिट्टी के मामले में गरीब होने के बावजूद लड़कियों से भरपूर था। और यहीं से एक कहानी शुरू होती है।

पुराने ब्रिटिश काल में, इस क्षेत्र के प्रभारी एक ज़िला वन अधिकारी (डी.एफ.ओ.) थे, जो पुराने ज़माने के थे। उनका नाम थोड़ा अटपटा था, वे नियमों के पक्के थे, और मुझे बिल्कुल पसंद नहीं करते थे। उनकी इस नापसंदगी का कारण मैं कभी समझ नहीं पाया। शायद उन्हें यह बात पसंद नहीं थी कि मैं उनके अधिकार क्षेत्र में आने वाले जंगलों में ऐसे घूमता था जैसे वे मेरे अपने हों, और जब कभी दुर्भाग्यवश मुझे उनसे बात करने का मौका मिला, तो उन्होंने अपनी नफ़रत इस तरह दिखाई जैसे मैं कोई ऐसी चीज़ हूँ जिसे बिल्ली ने दरवाज़े पर छोड़ दिया हो। इस सज्जन का यही कहना था कि उनके क्षेत्र में वन विभाग के किसी भी बंगले में रहने से पहले मुझे उनकी अनुमति लेनी होगी और वह लिखित में प्राप्त करनी होगी। वास्तव में, यही नियम था और आज भी है। लेकिन भारत में रहने वाले किसी भी व्यक्ति से पूछिए, वह मुझसे सहमत होगा कि नियम तो तोड़ने के लिए ही बनाए जाते हैं। हर कोई उन्हें तोड़ता है और इस प्रक्रिया का आनंद लेता है। नियम जितना सख्त होता है, उसे तोड़ने की संभावना उतनी ही अधिक होती है। कम से कम, भारत में तो ऐसा ही लगता है। और अगर ऐसा है, तो मैं क्यों नहीं?

हालांकि, इस व्यक्ति से बेवजह उलझने से बचने के लिए, मैंने एक बार उसे पूरे एक महीने पहले सूचना दे दी थी और गेरहेट्टी फॉरेस्ट लॉज में रहने की अनुमति मांगी थी। चूंकि मेरे पास उस क्षेत्र का शिकार लाइसेंस था, इसलिए वह मना नहीं कर सकता था। समय आने पर उसने लिखित अनुमति दे दी, लेकिन साथ ही एक लंबा-चौड़ा पैराग्राफ भी लिखा था जिसमें मुझे चेतावनी दी गई थी कि मैं किसी भी तरह से नियमों और विनियमों का उल्लंघन न करूं, माचिस फेंककर जंगल में आग न लगाऊं, जितने दिन मैं लॉज में रहूं उतने दिनों का किराया अवश्य दूं, इत्यादि।

आखिरकार वो खुशनुमा दिन आ ही गया और मैं अपनी मॉडल टी कार में गेरहेट्टी के लिए निकल पड़ा। सौभाग्य से, मैं घाट की चोटी पर पहुँचते ही था कि मूसलाधार बारिश शुरू हो गई। मॉडल टी कारें कभी खराब मौसम की परवाह नहीं करतीं, और इतनी मजबूत पुरानी गाड़ी को रोकने के लिए बारिश की बूँदें काफी नहीं थीं। इसी तरह, वे यात्रियों से भी यही उम्मीद करती थीं कि उन्हें कोई फर्क न पड़े, क्योंकि उनके पास बैठने के लिए पर्याप्त सुरक्षा नहीं थी।

जब मैं गेरहेट्टी लॉज के मुख्य द्वार पर पहुँचा तो मैं पूरी तरह भीगा हुआ था, और वहाँ मैंने देखा कि दरवाजा एक विशाल ताले से मजबूती से बंद था। और लापरवाह चौकीदार अपनी मौज-मस्ती में मग्न था।

मुझे उस बदतमीज़ रक्षा अधिकारी से उस जगह पर कब्ज़ा करने की लिखित अनुमति मिली हुई थी। मैंने उसे एक महीने पहले सूचना दे दी थी। उसके कार्यालय को चौकीदार को सूचित कर देना चाहिए था कि वह मेरा खुले दिल से स्वागत करे। फिर भी, मुझे बाहर ही रखा गया। यह बूढ़ा बदमाश, जो दूसरों से नियमों का पालन करवाने में इतना सख्त था, खुद ही नाकाम हो गया! ऊपर से, मूसलाधार बारिश हो रही थी, जिससे मैं और मेरा सामान पूरी तरह भीग रहे थे।

तो मैं लड़खड़ाते हुए इमारत के चारों ओर घूमा और पाया कि पीछे वाले बाथरूम का दरवाजा अपने कब्ज़ों से ढीला हो गया था। मैंने अपना कंधा लगाकर उसे कब्ज़ों से उखाड़ दिया। दरवाजा ज़ोर से खुल गया, और इस तरह मैं बंगले में घुस गया।

मैं जितने दिन के लिए आया था, उतने पूरे हफ्ते गेरहेटी में ही रुका रहा, लेकिन इतने समय में केयरटेकर कभी आया ही नहीं। लगता है पेनाग्राम में उसकी मुलाकातें ज़्यादा ज़रूरी थीं। फिर मेरे जाने का समय आ गया। बाथरूम का दरवाज़ा, जो 'गलती से' अपने कब्ज़े से निकल गया था, सिर्फ़ खींचकर ही बंद हो सकता था। और किराया लेने के लिए भी कोई मौजूद नहीं था।

मैंने बैंगलोर से डाक द्वारा डीएफओ को किराया भेजा और उसके लापरवाह केयरटेकर के खिलाफ़ मज़बूत शिकायत दर्ज कराई। मैंने दावा किया कि तूफान के कारण आश्रय ढूंढते समय मैं कीचड़ में फिसलकर गिर गया, और खुद को बचाने की कोशिश में मेरा हाथ बाथरूम के दरवाजे से टकरा गया। दुर्भाग्यवश, इस मामूली दबाव के कारण पुराने कब्ज़े टूट गए और दरवाजा खुल गया। इसका मतलब यह था कि इस सरकारी इमारत की सुरक्षा व्यवस्था उतनी अच्छी नहीं थी जितनी होनी चाहिए थी।

लेकिन लापरवाह चौकीदार मेरी सोच से कहीं ज़्यादा बेपरवाह निकला। उसने और उसके मालिक ने मिलकर एक निर्दोष, ईमानदार, कानून का पालन करने वाले, ईसाई सज्जन के खिलाफ़ एक घिनौनी साज़िश रची! बंगले की सागौन की कुर्सी और बाथरूम का जस्ता का टब गायब थे। वे चोरी हो गए थे! या तो मैंने उन्हें चुराया था, जिस स्थिति में सरकारी इमारत में सेंध लगाने और उसका सामान चुराने के लिए मुझ पर मुकदमा चलाया जा सकता था और मुझे जेल भेजा जा सकता था। या फिर इमारत में सेंध लगाने की मेरी गैर-जिम्मेदाराना हरकत ने उसे असुरक्षित बना दिया था, जिसके परिणामस्वरूप सरकारी संपत्ति की चोरी होना तय था, जिसके लिए मैं पूरी तरह से ज़िम्मेदार था। मुझे सात दिनों के भीतर जवाब देने के लिए कहा गया, जिसके बाद मेरे खिलाफ़ कड़ी कार्रवाई करने का प्रस्ताव रखा गया। चौकीदार की अनुपस्थिति के बारे में एक शब्द भी नहीं कहा गया।

मैंने तुरंत सोचा। अगर रक्षा अधिकारी (डीएफओ) इतना अप्रिय न होता तो मैं गायब हुई चीज़ों के लिए भुगतान करने की पेशकश कर देता। लेकिन हालात ऐसे थे कि ऐसी कोई भी पेशकश अपराध स्वीकार करने के रूप में मानी जाती। इसके अलावा, भारत में कोई भी चोर इतनी सुनसान जगह पर जाकर एक पुरानी कुर्सी और टपकते हुए बाथटब को नहीं चुराएगा, जिनका न तो खुद के इस्तेमाल के लिए कोई मूल्य होगा और न ही किसी ग्रामीण को बेचने के लिए।

ज़ाहिर है, वो सामान लापरवाह लेकिन चालाक चौकीदार ने या फिर खुद रक्षा अधिकारी के आदेश पर मुझे फंसाने के लिए हटा दिया था। मुझे यकीन ही नहीं हो रहा था कि कोई अंग्रेज़ अधिकारी ऐसा काम करेगा, चाहे वो मुझे कितना भी नापसंद करता हो। तो ज़ाहिर है, कसूरवार वही चौकीदार था। उसने ये सब मुझसे बदला लेने के लिए किया था, जब उससे उसकी गैरमौजूदगी के बारे में पूछा गया था, जैसा कि मैंने

बताया था। लेकिन सामान कहाँ गया? उसने उन्हें बेचने की कोशिश तो नहीं की होगी, क्योंकि इससे सबूत मिल जाता। तो उसने उन्हें ज़रूर छिपाया होगा।

स्पष्ट उत्तर यही था कि उसने उन्हें अपनी प्रेमिका के घर में छिपा रखा था। इसलिए मैं पेन्नाग्राम के लिए निकल पड़ा और आधी रात के बाद पहुँचा, जब सब सो रहे थे। मैंने अपने साथी रंगा को जगाया, उसे सारी बात बताई और पूछा कि हमें तलाशी कहाँ से शुरू करनी चाहिए। यह सवाल भी उठा कि चौकीदार बारह मील दूर गेरहेट्टी से पेन्नाग्राम तक उन दो भारी-भरकम चीज़ों को कैसे लाया होगा। रंगा ने बिना झिझक जवाब दिया। कटे हुए बाँसों से भरी बैलगाड़ी में!

गेरहेट्टी के आसपास के जंगल से लगातार बांस पेन्नाग्राम की ओर बहते रहते थे, जहाँ वन विभाग का एक लकड़ी का गोदाम था। इस विभाग में एक अधिकारी होने के नाते, भले ही उसका पद छोटा ही क्यों न हो, इस चौकीदार के लिए एक-दो गाड़ीवालों को मनाना आसान था कि वे बांसों के नीचे छिपाकर रखी गई इन वस्तुओं को गाड़ी में भरकर पेन्नाग्राम तक पहुँचा दें।

सौभाग्य से, रंगा, जो स्वयं कभी गाड़ीवान रह चुका था, अपने साथियों से अच्छी तरह परिचित था। समय काफी ढल चुका था, फिर भी वह शहर में मौजूद लोगों से पूछताछ करने के लिए निकल पड़ा और सुबह 4 बजे लौटकर मुझे खुशखबरी दी कि उसने न केवल दो गाड़ीवानों को ढूंढ निकाला है, जिनमें से प्रत्येक अपने वाहन में एक-एक वस्तु लाया था, बल्कि उसे यह भी पता चल गया है कि वे वस्तुएं कहां छिपाई गई थीं।

किसी पुलिस स्टेशन में आराम से सो रहे अकेले संतरी को जगाने का यह बहुत ही असमय समय था, लेकिन हमने थोड़ी देर बाद ठीक यही किया। कांस्टेबल बहुत नाराज़ था। इतना ही नहीं, अकेले चौकीदार होने का दावा करते हुए उसने कहा कि वह अपनी चौकी नहीं छोड़ सकता। लेकिन कुछ बातचीत के बाद उसका मन शांत हो गया। हमें थाने का ज़िम्मा सौंपकर वह पुलिस चौकी की ओर तेज़ी से गया और थोड़ी देर में अपने एक साथी के साथ लौटा, जिसने मौके के मुताबिक पूरी वर्दी पहन रखी थी। यह पुलिसकर्मी रंगा और मुझे उस छोटे से घर तक ले गया, जिसमें, मैं मानता हूँ, एक बेहद खूबसूरत लड़की रहती थी। मुझे उस लापरवाह लेकिन बेफिक्र चौकीदार की महिलाओं के प्रति पसंद की तारीफ़ करनी पड़ी। लेकिन उस समय ज़्यादा ज़रूरी था उसके छोटे से घर के एक कोने में रखी पुरानी सागौन की कुर्सी और जस्ता का बाथटब।

उस बेचारी लड़की को गिरफ्तार कर लिया गया और दोनों सामान पुलिस स्टेशन ले जाए गए। उसी सुबह सब-इंस्पेक्टर (एसआई) आए और मैंने उन्हें दो लिखित दस्तावेज सौंपे। पहला, चोरी के संबंध में शिकायत पत्र था, जिस पर कुछ दिन पहले की तारीख थी। दूसरा, सब-इंस्पेक्टर की प्रशंसा और बधाई का पत्र था। वे बहुत प्रसन्न हुए। मैंने उनसे एक निवेदन किया कि वे लड़की को रिहा कर दें और चौकीदार को पकड़ लें; लेकिन उन्होंने मुझे तिरस्कार भरी निगाहों से देखते हुए कहा कि वे ऐसा नहीं कर सकते, क्योंकि लड़की भले ही सुंदर हो, लेकिन वह अपराध में सहायक थी।

मेरे वकील ने वन विभाग (डीएफओ) को मानहानि का नोटिस भेजा, जिसमें भारी भरकम हर्जाने की मांग की गई थी, और इसकी एक प्रति मद्रास के मुख्य वन संरक्षक को भी भेजी गई थी। लेकिन बेचारे पर समय मेहरबान था। वैसे भी वह सेवानिवृत्ति के कगार पर थे और रातोंरात छुट्टी पर गायब हो गए, जहां से वे कभी वापस नहीं लौटे। हालांकि, मुझे सबसे ज्यादा संतोष इस बात से मिला कि मैंने आराम से बैठकर ही अपराधी की पहचान कर ली थी।

इस विषयांतर के लिए मुझे क्षमा करें, लेकिन मेरा बहाना यह है कि मैं आपको बताना चाहता हूँ कि जंगलों में भी हमारी अपनी समस्याएँ होती हैं। भारत एक ऐसा देश है जो अपने निवासियों से बुद्धि की तीक्ष्णता की अपेक्षा रखता है। और इसी से मुझे एक और कहानी याद आती है।

भारत में बिना टिकट के ट्रेन यात्रा करना आम बात है। इससे निपटने के लिए अधिकारी कई तरह की जाँच व्यवस्था करते हैं, जिसके चलते छोटी यात्रा में भी आपको कई बार अपना टिकट 'टिकट निरीक्षकों' को दिखाना पड़ सकता है। मेरे एक परिचित, जो भारत से ब्रिटेन चले गए थे, यह देखकर सुखद आश्चर्यचकित हुए कि जिस उपनगरीय लाइन पर वे रोज़ काम पर जाते थे, वहाँ कोई टिकट जाँच नहीं होती थी। इसलिए उन्होंने कुछ महीनों तक बिना टिकट के यात्रा की, जब तक कि एक दिन वे पकड़े नहीं गए।

लेकिन इन सब बातों का उस विचित्र तेंदुए से कोई लेना-देना नहीं है जिसके बारे में मैं आपको बताने वाला था।

गेरहेट्टी स्थित वन लॉज से लगभग दो फर्लांग पीछे इसी नाम की एक छोटी सी बस्ती है, जिसमें आधा दर्जन झोपड़ियाँ हैं। यहाँ के निवासी लकड़हारे हैं, जो वन विभाग के लिए कुली का काम करके, सड़क की मरम्मत करके, चंदन और अन्य लकड़ी चुराकर और गर्मियों के महीनों में हिरणों का शिकार करके अतिरिक्त आय अर्जित करते हैं, जब जंगल में पानी नहीं होता और जानवर देर रात पानी पीने के लिए उस गड्ढे पर आते हैं, जिसके बारे में मैंने आपको पहले ही बताया है कि वह लॉज के ठीक सामने उस बिंदु पर स्थित है जहाँ से मुख्य मार्ग मुड़ता है।

इस छोटे से गाँव में कुछ भेड़ें थीं—ब्रिटिश शासन के दौरान जंगल में बकरियाँ पालना सख्त मना था, क्योंकि ये जानवर पौधों को बहुत नुकसान पहुँचाते थे—और कुछ मुर्गियाँ भी थीं। यहाँ कुछ मवेशी भी थे, लेकिन बाघों और तेंदुओं ने उन्हें मार डाला था।

इस कहानी में वर्णित तेंदुआ, जो कि औसत आकार का जानवर था, ने जंगल के किनारे गिरे हुए पत्तों के बीच भोजन करने के लिए झोपड़ियों से भटकती हुई मुर्गियों को चुराकर अपना शिकार शुरू किया। अगला चरण तब आया जब तेंदुए ने और आगे बढ़ने का फैसला किया और कांटों की दीवार से रेंगते हुए उस झोपड़ी पर हमला कर दिया जिसमें मुर्गियां रखी थीं। उसने जितनी हो सके उतनी मुर्गियों को खा लिया और बाकी पक्षियों को मजे के लिए मार डाला या बुरी तरह घायल कर दिया। अब उसे भेड़ों की ओर रुख करना पड़ा, क्योंकि खाने के लिए और कुछ नहीं बचा था, और उसने मौका मिलते ही उन्हें एक-एक करके

मारना शुरू कर दिया। मुझे इस तेंदुए के बारे में बताया गया था, लेकिन चूंकि इसे काफी हानिरहित जानवर बताया गया था - वास्तव में, लगभग दोस्ताना स्वभाव का - इसलिए मैंने इस पर ज्यादा ध्यान नहीं दिया।

इस जानवर को मैंने पहली बार करीब साढ़े चार बजे देखा था। मैं लॉज के बरामदे में आरामकुर्सी पर बैठा चाय पी रहा था, तभी पानी के गड्ढे के पास कुछ हलचल हुई, जिसका किनारा मेरी जगह से दिखाई दे रहा था। सूरज तेज़ चमक रहा था और दिन काफी गर्म था। आम तौर पर कोई जंगली जानवर ऐसे समय में नहीं दिखता। फिर हलचल हुई और पीले रंग की कोई चीज़ तालाब के किनारे उगी सरकंडों की दीवार से बाहर निकली। मैं समझ नहीं पाया कि वह क्या था।

लगभग एक मिनट बाद, बिना किसी स्पष्ट हलचल के, वह वस्तु सरकंडों के पीछे से पूरी तरह बाहर निकली और एक तेंदुआ में तब्दील हो गई। वह जंगल में बने बंगले की ओर टकटकी लगाए देख रहा था, मानो उसे पूरा यकीन था कि अगर कोई खतरा होगा तो वह इसी दिशा में होगा। मैं अपनी कुर्सी पर बिल्कुल नहीं हिला। लगभग तीन मिनट तक गौर से देखने के बाद, तेंदुए ने फैसला किया कि सब कुछ सुरक्षित है। वह पानी पीने के लिए झुका, लेकिन दो बार रुककर बंगले की ओर ऊपर देखा ताकि यह सुनिश्चित कर सके कि सब ठीक है।

मैंने इस जानवर को दूसरी बार तब देखा जब इसने एक जंगली मुर्गे का पीछा करते हुए उसे पेड़ पर चढ़ा दिया। मैं सुबह-सुबह सैर से लौट रहा था तभी जंगली मुर्गे ने कुछ गज आगे अपनी तीखी चेतावनी भरी आवाज निकाली और जोर-जोर से अपने पंख फड़फड़ाते हुए ऊपर की ओर चला गया।

'चेक! चेक! चेक! चेक!' मुर्गे की चीख सुनाई दी और मैं वहीं रुक गया। मुझे लगा कि उसने मुझे देख या सुन लिया होगा। पर मैं गलत था, क्योंकि एक पल बाद ही झाड़ियों से एक तेंदुआ निकला और पक्षी के पीछे भागा, और जिस पेड़ पर वह बैठा था, उस पर जल्दी से चढ़ गया, लेकिन उसकी कोशिश नाकाम रही। जंगली मुर्गे ने फिर चीख मारी और इस बार दूर उड़ गया, जबकि तेंदुए को आगाह हो गया कि कुछ गड़बड़ है, इसलिए उसने अपना सिर घुमाकर पीछे देखा।

तभी उसने मुझे देखा। अपनी पकड़ छोड़ते हुए, पैंथर हल्के से जमीन पर गिर पड़ा, एक पल के लिए अपनी पीठ को झुकाया और अपनी पूंछ को ऊपर की ओर लपेटा, मानो कोई दोस्ताना बिल्ली हो, फिर मुड़ा और चुपचाप झाड़ियों में गायब हो गया।

तीसरी बार जब मैंने इस जानवर को शांतिपूर्ण परिस्थितियों में देखा, तब मैं अपनी मॉडल टी कार में धीरे-धीरे आगे बढ़ रहा था। मैं गेरहेटी बंगले और पानी के गड्ढे को पार कर चुका था, और उस रास्ते पर आगे बढ़ रहा था जो, जैसा कि आपको याद होगा, मुत्तूर और पेन्नाग्राम जाने वाले मुख्य मार्ग से अलग हो जाता है।

उन दिनों उस रास्ते से गाड़ियाँ नहीं आती थीं और बैलगाड़ियाँ भी बहुत कम थीं। गर्म मौसम में, जब जंगल सूख जाता था, तो मवेशी कभी-कभार नटरापलयम गाँव और कावेरी नदी की ओर जाते हुए दिखाई देते थे, जो सात-आठ मील दूर थी, जहाँ अभी भी कुछ चरागाह उपलब्ध थे। इस क्षेत्र में रहने वाले कुछ लोग

अपना बोझ सिर पर उठाते थे या, जब बोझ बहुत भारी होता था, तो टट्टू या गधे की पीठ पर लादते थे; गधे को इसलिए प्राथमिकता दी जाती थी क्योंकि वे सस्ते थे। संकरे रास्ते के ऊपर पेड़ों की शाखाएँ आपस में मिलती थीं, इसी कारण से मॉडल टी की पहले से ही जर्जर हो चुकी हुड को नीचे करना पड़ता था और विंडशील्ड को भी नीचे करना पड़ता था। फिर भी, स्टीयरिंग व्हील पर टहनी रगड़ने के लिए अक्सर आगे की सीट पर एक तरफ लेटना आवश्यक हो जाता था।

एक तीखे मोड़ पर मुड़ते ही, मैंने देखा कि ठीक आगे एक मोटी शाखा ट्रैक के ऊपर फैली हुई है, और उस शाखा पर एक पैंथर लेटा हुआ था, जिसने जाहिर तौर पर नीचे से गुजरने वाले किसी भी जानवर पर घात लगाने की उम्मीद में यह स्थान ले लिया था। उसने कार की आवाज नहीं सुनी थी क्योंकि मैं ढलान पर तेजी से नीचे जा रहा था, और लिस्सोम लिज़ी के बाएं पैडल को आधा दबाए हुए था, जो गियर-कम-क्लच का काम करता था।

जब मैं लगभग उसके नीचे था, तभी पैंथर शाखा पर से उठा, फिर घबराकर बेढंगे तरीके से उछला, पिछली सीट को पार करते हुए कार के पिछले हिस्से पर जा गिरा, जहाँ से वह फिर से झाड़ियों में भाग गया, लेकिन इससे पहले कि वह भाग पाता, उसके पिछले पैरों के पंजों ने दूसरी छलांग लगाने के लिए सहारा ढूंढते हुए पहले से ही फटे हुए गद्दे में एक बड़ा छेद कर दिया।

इस रास्ते पर जंगलपालयम नाम का एक गाँव है। यह गेरहेट्टी और नटरापालयम के लगभग बीच में स्थित है, दोनों से ढाई मील की दूरी पर। मैं इसे 'खुशहाल गाँव' के नाम से जानता था, क्योंकि इस छोटे से गाँव में रहने वाले लोग, भले ही सभ्यता, चिकित्सा सहायता, स्कूल, मनोरंजन स्थलों और तथाकथित सहकारी केंद्रों से दूर हों, जो कभी किसी काम में सहयोग करते हुए नहीं दिखते, फिर भी हमेशा संतुष्ट और हंसमुख रहते थे। इस छोटे से गाँव का दौरा करना और यहाँ के निवासियों से बातचीत करना बहुत अच्छा लगा। वे भारत में व्याप्त राजनीतिक चेतना से पूरी तरह मुक्त प्रतीत होते थे।

हर महीने, पूर्णिमा के दिन, और उससे दो दिन पहले और दो दिन बाद, गाँव वाले चाँदनी रात में खेल खेलते थे। यह खेल शाम के भोजन के लगभग एक घंटे बाद शुरू होता था, जो लगभग आठ बजे होता था, और आधी रात तक चलता रहता था। शालीनता के कारण पुरुष और महिलाएं एक साथ नहीं खेल सकते थे, इसलिए महिलाएं गाँव के केंद्र में एक घेरा बनाकर बैठ जाती थीं, जबकि पुरुष गाँव के खलिहान में चले जाते थे, जो गाँव के एक तरफ लगभग पचास गज की दूरी पर स्थित एक साफ जगह होती थी। महिलाएं ज्यादातर गाती और नाचती थीं, जबकि पुरुष कई तरह के खेल खेलते थे, जिनमें सबसे लोकप्रिय बलचिक या कबड्डी था, हालांकि इस विशेष गाँव में इसे गोड्डूगोड्डू के नाम से जाना जाता था, जो पूरे भारत में व्यापक रूप से खेले जाने वाले लोकप्रिय खेल साल्ट्स का एक रूप था।

इस खेल के नियम सरल हैं। ज़मीन पर कोयले से एक सीधी रेखा खींची जाती है, और पाँच से सात सदस्यों की दो टीमें दोनों ओर इकट्ठा होती हैं। खेल तब शुरू होता है जब, मान लीजिए, टीम A का एक सदस्य (हालाँकि गाँव वाले टीमों को 'मेंढक', 'टिड्डा' या इससे भी कम अपमानजनक नामों से पुकारते हैं)

आधार रेखा के पास आता है, बार-बार और तेज़ी से 'कब्बाड्डी' (या 'गॉड्डूगॉड्डू) शब्द बुदबुदाता है, बुदबुदाते हुए ही रेखा पार करता है, और अपनी उंगलियों से टीम B के एक सदस्य (जिसे शायद 'नपुंसक' या 'हिजड़ा' या कोई और अभद्र नाम दिया गया हो) को हल्के से छूता है, फिर टीम B के किसी भी सदस्य द्वारा पकड़े जाने से पहले ही कोयले की आधार रेखा पर वापस उछल पड़ता है।

नियम यह है कि टीम ए के खिलाड़ी को लगातार और बिना रुके जोर-जोर से 'कब्बाड्डी' (या 'गॉड्डूगॉड्डू') बुदबुदाते रहना होगा। यदि टीम बी का एक या अधिक सदस्य उसे पकड़कर नीचे गिराने में सफल हो जाता है, जिससे वह कोयले की आधार रेखा तक वापस न जा सके, तो उसकी टीम का भी एक अंक कट जाएगा।

टीम ए के खिलाड़ी के सफल या असफल होने के बाद, लाइन के पास आने की बारी टीम बी के खिलाड़ी की आती है, और इसी तरह यह सिलसिला चलता रहता है। जीतने वाली टीम वह होती है जो पहले से तय अंकों की संख्या, आमतौर पर इक्कीस, प्राप्त कर लेती है। कभी-कभी परिणाम पर एक छोटी सी शर्त भी लगी होती है, जिसमें प्रत्येक टीम का सदस्य शाम के दौरान आधा रुपया जीतता या हारता है, जो एक शिलिंग से लगभग कम होता है।

कई चांदनी रातों में मैंने जंगलपालयम गांव के लोगों के साथ गोड्डूगोड्डू का खेल खेला है। उन दिनों मैं एक नौजवान था और बहुत ही मजबूत इरादों वाला। फिर भी, लगातार जोर-जोर से गोड्डूगोड्डू बुदबुदाते हुए, फुर्तीले और पकड़ने वाले गांव के युवकों से बचते हुए, मेरे फेफड़े फटने की कगार पर पहुंच जाते थे। औरतें अपना गाना-नाचना छोड़कर मेरे चारों ओर इकट्ठा हो जातीं और दोराई (एक तरह का खेल) की बेइज्जती देखतीं, जो हमेशा होती थी, हालांकि जिस टीम की तरफ से मैं खेलता था, वे मुझे सहज महसूस कराने के लिए कहतीं कि मैं उनके लिए कोई बोझ नहीं हूं। मैं सुबह तड़के पश्चिम में जंगल से ढकी पहाड़ियों के पीछे चांद डूबते समय पैदल या गाड़ी से गेरहेट्टी लौटता था, और अक्सर खुद को अनजाने में 'गोड्डूगोड्डू-गोड्डूगोड्डू' बुदबुदाते हुए देखकर डर जाता था।

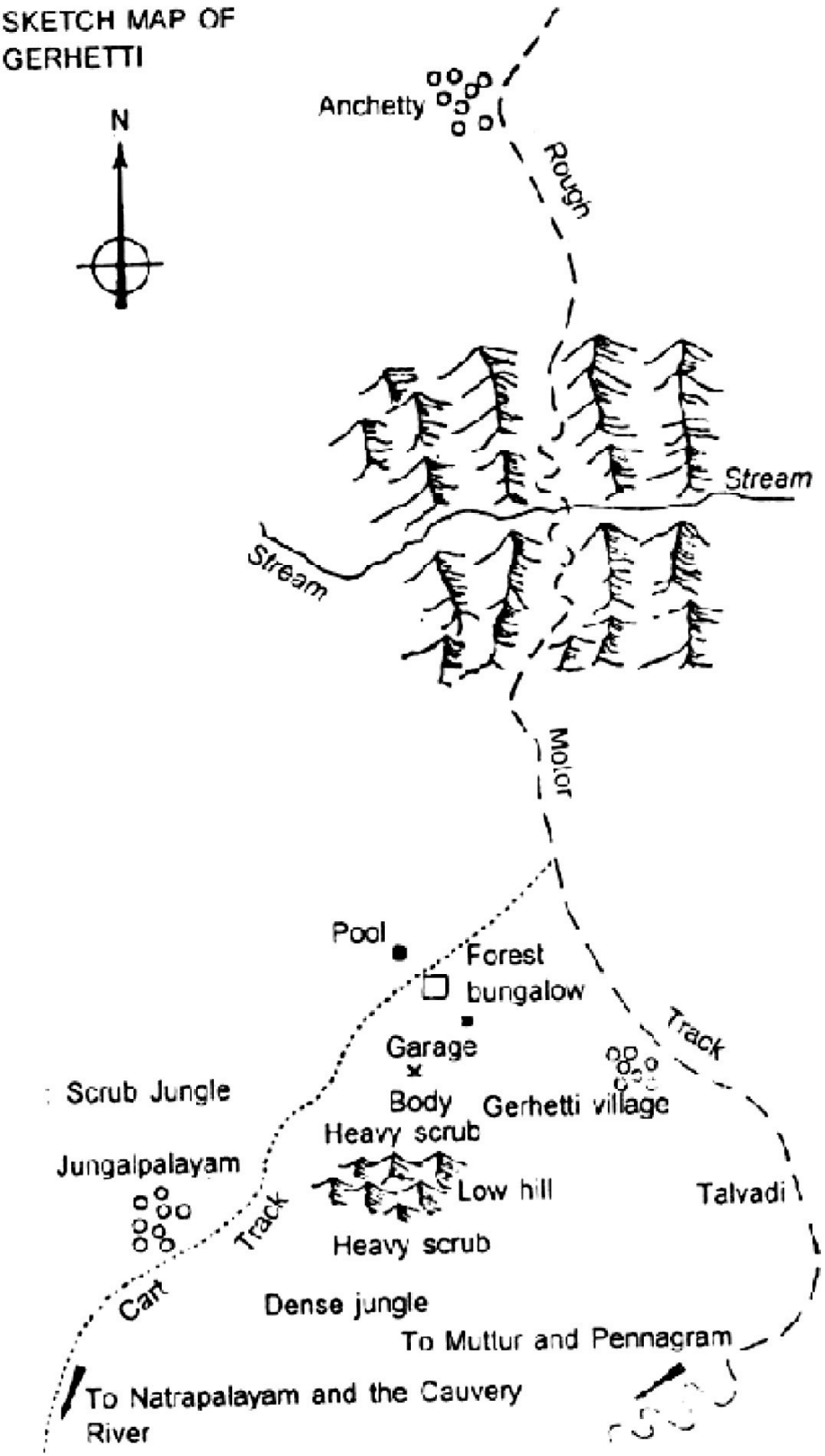
SKETCH MAP OF
GERHETTI
N
Anchetty
Rough
Stream
Stream
Motor
Pool
Forest
bungalow
Garage
Body
Gerhetti village
Track
Scrub Jungle
Heavy scrub
Jungalpalayam
Low hill
Talvadi
Track
Heavy scrub
Cart
Dense jungle
To Muttur and Pennagram
To Natrapalayam and the Cauvery
River

तभी तेंदुए ने हमला कर दिया! जाहिर है, गेरहेट्टी से जंगलपालयम जाने वाले रास्ते पर लटकी हुई वह शाखा, जिस पर मैंने उसे अचानक देखा था, इस जानवर का पसंदीदा घात स्थल था, क्योंकि एक दिन उसने इसी शाखा से छलांग लगाकर एक गधे पर हमला कर दिया, जो इमली के फलों से लदे दो बोरों में लदा हुआ था, जिन्हें गधे का मालिक पेन्नाग्राम के बाजार ले जा रहा था। आदमी एक जंगली बेल तोड़कर खाने के लिए रुका था और गधा पचास गज आगे रास्ते के मोड़ पर मुड़ा ही था कि तभी एक शरीर के गिरने की धड़ाम की आवाज और एक कर्कश गड़गड़ाहट सुनाई दी।

उस आवाज को अपने गधे पर मंडरा रहे किसी खतरे से जोड़कर न देखते हुए, उस आदमी को डर था कि कहीं आगे कोई हाथी न हो। इसी कारण वह चारों ओर पैनी नजर रखते हुए धीरे-धीरे मोड़ की ओर बढ़ा। लेकिन जब उसने देखा कि उसका बेचारा गधा मरा पड़ा है और रास्ते के एक किनारे घसीटा जा रहा है, तो वह भयभीत हो गया। एक तेंदुआ उसके पेट से सटा हुआ था, उसके दांत अभी भी गधे के गले में गड़े हुए थे और वह कटी हुई नस से रिसते गर्म खून का आनंद ले रहा था।

फिर वह आदमी, जो आम तौर पर भाग जाता और वास्तव में उस हाथी को देखकर भागने के लिए तैयार भी था, अपना आपा खो बैठा और हाथ में पकड़ी लाठी घुमाते हुए तेंदुए पर झपटा। तेंदुए ने अभी-अभी जो शिकार किया था, उससे वह बहुत उत्साहित था, उसके शरीर की गर्माहट और उसके जबड़ों से रिसते गर्म खून से वह अपना भोजन छोड़ने के मूड में नहीं था। वास्तव में, मुझे लगता है कि गुस्से में आए उस आदमी के उस पर टूट पड़ने से पहले उसे ऐसा करने का मौका ही नहीं मिला।

लाठी पैंथर की पीठ पर ज़ोर से पड़ी और पैंथर उस आदमी पर झपटा, उसका गला पकड़ने की कोशिश कर रहा था, लेकिन उस ग्रामीण की लंबी काली दाढ़ी देखकर उसका ध्यान भटक गया और उसने आदमी की छाती पर काट लिया। आदमी का संतुलन बिगड़ गया, वह पीछे की ओर गिर पड़ा और चीखने लगा।

मैं उस समय संयोगवश गेरहेट्टी आया हुआ था, लेकिन उस समय काफी दूर, गाँव के पीछे एक पहाड़ी की ढलान पर, अपने चचेरे भाई के लिए एक खास तरह का भृंग खोज रहा था, जो भृंगों का शौकीन संग्राहक है। मुझे चीखने की हल्की-हल्की आवाज सुनाई दी, और यह सोचकर कि किसी आदमी को हाथी मार रहा है, मैं उनकी दिशा में दौड़ पड़ा। अफसोस की बात है कि मैं अपनी राइफल जंगल के लॉज में ही छोड़ आया था। भृंग पकड़ने वाले लोग आमतौर पर हथियार नहीं रखते, और उस समय उस इलाके में आदमखोर हाथी या हिंसक हाथी का कोई खतरा नहीं था।

जो चीखें मैंने बहुत धीमी आवाज़ में सुनी थीं, वे अब बंद हो चुकी थीं, इसलिए मैं उनके स्रोत का अंदाज़ा ही लगा पा रहा था; लेकिन इस विश्वास के साथ कि एक हाथी ने एक आदमी पर हमला किया था, मैंने अनुमान लगाया कि जो भी हुआ होगा, वह जंगलपालयम जाने वाले रास्ते पर कहीं हुआ होगा। इसलिए मैं उसी दिशा में दौड़ पड़ा, झाड़ियों और पेड़ों के बीच से लड़खड़ाते हुए आखिरकार रास्ते पर पहुँच गया।

आस-पास कुछ भी दिखाई नहीं दे रहा था। क्या मैं दाएँ मुड़ूँ या बाएँ? आवाज़ इतनी दूर से आ रही थी कि मैंने जंगलपालयम की ओर मुड़ने का फैसला किया और बाएँ मुड़ गया, जितना हो सके चुपचाप आगे बढ़ता रहा और किसी भी क्षण किसी क्रोधित हाथी के सामने आने की आशंका करता रहा।

मैंने जोर से आवाज लगाई लेकिन कोई जवाब नहीं मिला। लगभग एक फर्लांग चलने के बाद मैं उस पीड़ित के पास पहुँचा जो अपने मरे हुए गधे के बगल में पड़ा था। तेंदुआ उसे छोड़कर चला गया था; शायद उसकी चीखों ने जानवर को डराकर भगा दिया था, या हो सकता है कि मनुष्य से पहली बार सामना होने के कारण तेंदुए के मन में अभी भी मनुष्य का कुछ डर बाकी था। जब मैंने उसे पुकारा तो उसकी आँखें झपकीं और उसने मुझे अपना नाम सुब्रमण्यम बताया, कि वह इमली लेने पेन्नाग्राम से आया था, और कैसे तेंदुआ उस पर हमला करने आया था। फिर वह बेहोश हो गया। मैंने उसे अपने कंधे पर उठाया और उसे वन लॉज तक ले जाने का इरादा किया, जहाँ से मैं उसे अपनी कार में बिठाकर बैंगलोर के अस्पताल ले जा सकता था।

अफसोस, मैं जैसे ही बंगले पर पहुँचा और उसे बरामदे के फर्श पर लिटाया, तभी उसमें मृत्यु के लक्षण दिखने लगे। उसके मुँह और सीने के भयानक घावों से खून बहने लगा। यह स्पष्ट था कि उसके फेफड़े फट गए थे, और जैसे ही मैंने उसे उठाकर अपनी कार में बिठाया, उसकी मृत्यु हो गई। अधिकारियों को पूरी घटना बताने में मुझे जो परेशानी हुई, उसका मैं विस्तार से वर्णन नहीं करूँगा, लेकिन कार्यवाही जारी रहने के दौरान ही मैं गेरहेट्टी, जंगलपालयम और नटरापालयम के लोगों को चेतावनी देने के लिए वापस लौट आया कि तेंदुआ खतरनाक हो सकता है।

आश्चर्य की बात यह है कि कुछ महीनों तक कुछ नहीं हुआ। फिर पेन्नाग्राम में हैजा की भयानक महामारी फैल गई और वहाँ से यह दूर-दूर तक, यहाँ तक कि नटरापलयम तक पहुँच गई। इस दूरस्थ गाँव में दो-तीन लोगों की मृत्यु हो गई, और क्योंकि उनकी मृत्यु एक संक्रामक बीमारी से हुई थी, इसलिए ग्रामीणों ने शवों को सामान्य तरीके से दफनाने या जलाने के बजाय जंगल में सड़ने के लिए फेंक दिया।

शायद पैंथर ने इस मांस का कुछ हिस्सा खाया होगा, हालांकि कोई निश्चित रूप से नहीं कह सकता, क्योंकि कोई भी इतने बड़े शव के पास जाने की हिम्मत नहीं करेगा। अन्यथा, आदमखोर जानवर का उदय और उसके ऐसा बनने का कारण रहस्य में डूबा हुआ है।

मुसीबत तब शुरू हुई जब गेरहेट्टी में पानी के कुंड पर घड़ा लेकर गया एक लड़का वापस नहीं लौटा। उसकी अनुपस्थिति का कारण केवल आलस्य ही बताया गया, इसलिए उसके पिता शाम को उसे ढूंढने निकले और अपने साथ एक मोटी छड़ी ले गए ताकि सोते हुए लड़के की पीठ पर रख सकें। पिता को अपने बेटे का टूटा हुआ घड़ा मिला, जो पानी से भरा होने पर गिर गया था और इस तरह वापसी यात्रा के दौरान टूट गया था। उन्होंने घास पर लड़के का खून देखा और एक पैंथर के पंजों के निशान भी देखे, जो मुख्य रास्ते पर चल रहा था और फिर लड़के को देखकर उस पर झपटा था। घसीटने के निशान से पता चला कि शव को किस दिशा में ले जाया गया था।

बाघों की तुलना में पैंथर बहुत छोटे, कम ऊंचे और कमजोर होते हैं, इसलिए वे अपने शिकार को उठाकर जमीन से दूर नहीं ले जा सकते। उन्हें अपने शिकार को घसीटना पड़ता है, यही कारण है कि वे खाने से पहले ज्यादा दूर नहीं जाते। बाघ न केवल ऊंचे होते हैं बल्कि कहीं अधिक शक्तिशाली भी होते हैं, वे भैंस के बराबर भारी शिकार को भी जमीन से उठा सकते हैं। इसके अलावा, जब कोई बाघ खाने से पहले अपने शिकार को किसी दूर स्थान पर ले जाना चाहता है, तो वह अपने शिकार की गर्दन पकड़ता है और तेजी से अपना सिर घुमाकर मृत शरीर को अपनी पीठ पर लाद लेता है, जिससे वजन चारों पैरों पर समान रूप से आ जाता है। इस तरह, बाघ अपने शिकार को लंबी दूरी तक ले जाने के लिए जाने जाते हैं, इसलिए आदमखोर बाघ के मामले में, उनके मानव शिकार अक्सर नहीं मिलते।

अब कहानी पर लौटते हैं: पिता जल्दी से गेरहेट्टी गाँव की ओर भागे, वहाँ के कुछ निवासियों से मदद मांगी और लाठी-पत्थरों से लैस होकर, छोटा सा दल घसीटने के निशान का पीछा करने लगा। उन्हें ज़्यादा दूर नहीं जाना था। लड़के का बचा हुआ हिस्सा पानी के गड्ढे के ठीक दूसरी ओर एक झाड़ी के नीचे पड़ा था।

उस दिन से जंगल में कोई भी अकेला नहीं निकलता था। कम से कम चार लोग मिलकर एक दल बनाते थे और अपने साथ लकड़ी काटने के औजार, कुल्हाड़ी या मजबूत लाठी रखते थे। यह खबर जंगलपालयम, नटरापालयम, पेन्नाग्राम और एंचेटी तक फैल गई। हर कोई तेंदुआ की तलाश में था।

अजीब बात यह थी कि तेंदुए द्वारा कभी-कभार मुर्गी या भेड़ चुराने की घटनाएँ अभी भी जारी थीं। इलाके के अधिकांश लोगों ने कभी न कभी उस हानिरहित तेंदुआ को देखा था, जिससे मेरा सामना तीन बार हुआ था, इसलिए किसी ने भी उसे उस जानवर से नहीं जोड़ा जिसने इमली व्यापारी पर हमला किया था और बाद में लड़के को खा गया था। आदमखोर को कोई राहगीर जानवर या कोई तेंदुआ समझा जाता था जो बीमारी या घावों के कारण अत्यधिक भूख से मरणासन्न हो गया था। कुछ लोगों का तो यह भी मानना था कि तेंदुआ पागल हो गया था, क्योंकि उसने हैजा से मरे जानवरों के शव खा लिए थे। क्योंकि इस क्षेत्र में आदमखोर जानवर लगभग अज्ञात थे; अतीत में कुछ आदमखोर बाघ थे, लेकिन वे बहुत दूर, केम्पेकराई क्षेत्र में सक्रिय थे। जहाँ तक आदमखोर तेंदुआ की बात है, किसी को भी इसके बारे में सुनने की याद नहीं थी।

उस लड़के के पीछे एक तीसरी शिकार हुई, इस बार एक महिला जो अपने दो साल के बच्चे को नहलाकर कुएँ से लौट रही थी। इस कुएँ का पानी बहुत खारा था और पीने या खाना पकाने के लिए इस्तेमाल नहीं किया जा सकता था; इसका इस्तेमाल केवल धोने के लिए किया जा सकता था। हैरानी की बात यह थी कि तेंदुए ने बच्चे को छुआ तक नहीं, बल्कि उसने माँ को मार डाला और उसके शव को कुएँ से कुछ गज दूर एक नाले में घसीट कर फेंक दिया। बच्चे के रोने की आवाज़ सुनकर गाँव वाले जाँच करने के लिए वहाँ पहुँचे।

इस त्रासदी के बाद, चारों ओर गंभीर भय फैल गया। जंगल में लकड़ी काटना और सभी प्रकार की आवाजाही पूरी तरह से ठप हो गई, और रात में जंगल के कुछ गिने-चुने पानी के स्रोतों पर मंडराने वाले शिकारी बेहतर समय आने तक अपनी बंदूकें और पुराने पिस्तौलें पन्ने रख कर रख दिए।

एंचेटी में मेरा किरायेदार, नारायण नाम का एक युवक, जो मेरी ज़मीन के छोटे से टुकड़े पर खेती करता था लेकिन कभी किराया नहीं देता था, मुझे यह खबर लाया। साथ ही उसने एंचेटी के पटेल (जो नाममात्र के लिए गेरहेटी बस्ती के मुखिया भी थे) का अनुरोध भी दिया कि मैं आकर उस तेंदुआ को मार डालूँ। उस समय मैं बैंगलोर में ज़रूरी काम में व्यस्त था, इसलिए मैंने नारायण से कहा कि मैं एक हफ्ते में आऊँगा। मैंने उसे पटेल को यह संदेश देकर वापस भेज दिया और गेरहेटी के लोगों को यह चेतावनी भी दी कि वे समूह में ही चलें, कभी अकेले न चलें। आदमखोर तेंदुआ स्वभाव से कायर होते हैं और वे केवल अंधेरे में ही हमला करते हैं, जबकि आदमखोर बाघ अधिक बहादुर और निडर होता है और किसी भी समय हमला कर सकता है। इस मामले में गेरहेटी का तेंदुआ अलग था; उसने अपने तीनों शिकार दिन दहाड़े किए थे।

मेरे गेरहेटी पहुँचने से एक दिन पहले, पैंथर ने चौथी बार हमला किया, और शिकार बंगले की रखवाली करने वाले का बेटा निकला, वही लापरवाह शख्स जिसने मुझे कुर्सी और बाथटब के बहाने फंसाने की कोशिश की थी। पैंथर ने सुबह तड़के अपने शिकार को अपना शिकार बनाया।

बाथटब और कुर्सी वाले कांड के बाद, पिता ने वन विभाग में अपनी नौकरी खो दी थी और एक छोटे-मोटे वन ठेकेदार बन गए थे। वे सार्वजनिक नीलामी में फल, विभिन्न औषधीय बीज और पत्ते, मेहंदी, शहद, हिरण के सींग और अन्य छोटी-मोटी वस्तुएँ इकट्ठा करने का अधिकार खरीदते थे। इस व्यवसाय में पुत्र सक्रिय रूप से शामिल था, और अपनी मृत्यु के समय वह गेरहेट्टी आया था ताकि वहाँ रहने वाले कुछ पुजारियों को गेरहेट्टी से लगभग चार मील दूर पेरियामलाई नामक एक छोटे पहाड़ की ऊँची चट्टानों पर लटके जंगली चट्टानी मधुमक्खियों के छत्तों पर छापा मारने में मदद करने के लिए मना सके।

नटराज नाम के उस लड़के ने अपना मिशन सफलतापूर्वक पूरा कर लिया था और वह जंगली शहद से भरे लगभग चार-पाँच केरोसिन के डिब्बे इकट्ठा करने में कामयाब रहा था। औसतन, प्रत्येक डिब्बे में चौबीस बोतलों के बराबर शहद था, जिनमें से प्रत्येक को बेचने पर तीन रुपये मिलते थे। इस तरह इस यात्रा से उसे लगभग तीन सौ रुपये की कमाई हुई।

पूरी तरह संतुष्ट होकर वह डिब्बों के साथ गेरहेट्टी लौट आया, जहाँ उसने रात बिताने का फैसला किया, क्योंकि गाँव में यह अफवाह फैल गई थी कि जंगली हाथियों का एक झुंड हाल ही में कावेरी नदी से निकलकर तलवाड़ी की घाटियों में घूम रहा है, जहाँ से पेन्नाग्राम के बाजार जाने वाली सड़क गुजरती है। नटराज अपने कीमती शहद को जंगली हाथियों के सामने जोखिम में नहीं डालना चाहता था।

वन में बना लॉज (जिसमें से उसके पिता फर्नीचर ले गए थे) बंद था, लेकिन गैराज खुला था: दरअसल, उसमें दरवाजे ही नहीं थे! इसलिए नटराज ने शहद के डिब्बों के साथ रात गैराज में बिताने का फैसला किया।

सुबह तड़के, गेरहेट्टी गांव के लोगों ने बताया कि उन्होंने नटराज की मदद के लिए चीखें सुनीं, लेकिन संख्या में कम होने और निहत्थे होने के कारण उन्होंने अपनी झोपड़ियों के दरवाज़े और मज़बूती से बंद कर लिए और भोर का इंतज़ार किया। दिन निकलने पर, उनमें से कुछ लोग यह देखने के लिए गैरेज में आए कि क्या हुआ था। नटराज कहीं नज़र नहीं आया। संघर्ष के निशान स्पष्ट थे। मिट्टी के फर्श पर खून फैला हुआ था और शहद का एक डिब्बा उलट गया था, जिससे हज़ारों चींटियाँ आकर्षित हो गई थीं। ऐसा भी लग रहा था कि किसी भारी चीज़ को ज़मीन पर घसीटकर खुले दरवाज़े से जंगल की ओर ले जाया गया हो, जो दस गज पीछे से शुरू होता था।

पैंथर ने उसे ज्यादा दूर तक ले जाने की जहमत नहीं उठाई। उसका सिर, हाथ और पैर, वो हिस्से जिन्हें पैंथर और यहाँ तक कि आदमखोर बाघ भी बड़ी सावधानी से खाते हैं और बाद के भोजन के लिए छोड़ देते हैं, पैंथर की भूख का मूक गवाह बनकर इधर-उधर बिखरे पड़े थे। पिल्लों के अनुसार वह शिकारी काफी छोटा था, लेकिन उसने बहुत सारा मांस खा लिया था।

मैं उस सुबह दस बजे गेरहेटी पहुँचा और पुलिस के एंचेटी से आने और उबाऊ व निरर्थक पूछताछ शुरू करने से पहले ही अवशेष देख लिए। उन्होंने पूछा, मैं क्यों आया था? क्या मेरे पास हथियार लाइसेंस था? बंदूक लाइसेंस? कार लाइसेंस? ड्राइविंग लाइसेंस? कोई भी सवाल, सिवाय पैंथर से जुड़े सवालों के।

मैंने उनसे कहा कि वे अवशेषों को वहीं छोड़ दें और जितनी जल्दी हो सके चले जाएं, क्योंकि इससे मुझे नटराज के अवशेषों के पास बैठकर शायद उस आदमखोर को गोली मारने का मौका मिल जाएगा। दोपहर में उसके लौटने की संभावना थी, और अंधेरा होने के बाद लौटने की भी संभावना थी।

सब-इंस्पेक्टर की अनुपस्थिति में दल का प्रतिनिधित्व कर रहे दफेदार (प्रमुख कांस्टेबल या सार्जेंट) ने साफ इनकार कर दिया। उन्होंने कहा कि शव वहीं रहना चाहिए जब तक कि उनके बॉस स्वयं उसे देख न लें। और चूंकि उन्हें एंचेटी लौटना था, इसलिए वे अपने साथ आए दो कांस्टेबलों को शव की निगरानी के लिए वहीं छोड़ देंगे, जब तक कि सब-इंस्पेक्टर नहीं आ जाते, जो शायद शाम को या अगली सुबह आने की संभावना अधिक है।

दफ्फेदार की बातें सुनकर उसके सभी अधीनस्थों ने उसकी योजना का सर्वसम्मति से विरोध किया। उनमें से एक ने गुस्से में कहा कि उसने उस सुबह नाश्ता नहीं किया था और अगले दिन तक तो बिल्कुल भी इंतजार नहीं कर सकता था। दूसरे ने बहाना बनाया कि उसे ज़ुकाम है। इस पर दफ्फेदार ने कहा कि उसने उस दिन उसे एक बार भी खांसते हुए नहीं सुना। इस पर कांस्टेबल ने देर तक खांसा!

आदेश तो आदेश होते हैं, दफ्फेदार ने सख्ती से कहा और अपनी साइकिल पर सवार होकर एंचेटी की ओर चल पड़ा। दोनों पुलिसवाले एक-दूसरे को और मुझे घूरते रहे, जब तक कि मैंने उन्हें बिना बोले,

लेकिन लगभग सभी को समझ आने वाली भाषा में एक इशारा नहीं किया, जिससे उन्हें सामान्य संकेत मिल गया; 'हिम्मत रखो, लड़कों; हर मुश्किल में कोई न कोई उम्मीद की किरण होती है।' कम से कम इस मामले में तो उनके लिए उम्मीद की किरण थी, और वह भी सचमुच, क्योंकि दफ्फेदार के जाते ही दोनों पुलिसवाले भी वहाँ से जाने के लिए बेताब हो गए, भले ही उन्हें पास के छोटे से गाँव तक ही जाना पड़े। किसी भी कीमत पर इस भयानक जगह से निकलना था, उस निर्जीव, आरोप लगाने वाले चेहरे पर उन खाली, घूरती आँखों से दूर जाना था। मैं अपने हाल पर छोड़ दिया गया और मेरे सामने अब छिपने की जगह ढूंढने और हत्यारे के संभावित लौटने का इंतजार करने की तात्कालिक समस्या थी।

जैसा कि अक्सर होता है, छिपने के लिए कोई जगह नहीं थी। यह स्वाभाविक है क्योंकि आदमखोर जानवर—चाहे बाघ हों या तेंदुआ—अपने शिकार को घसीटकर या उठाकर घनी झाड़ियों में ले जाते हैं ताकि वे बिना किसी बाधा के आराम से अपना भोजन कर सकें। वे अपने शिकार को किसी ऐसे पेड़ के नीचे नहीं छोड़ते जहाँ से उन्हें गोली मारी जा सके! वहाँ लैंटाना की घनी झाड़ियाँ थीं और तेंदुआ अपने शिकार के शरीर को इन्हीं दो झाड़ियों के बीच घसीटकर ले गया था, जहाँ उसने उसका अधिकांश भाग खा लिया था। आस-पास छिपने की कोई भी कोशिश आसानी से नज़र आ जाती और तेंदुआ कभी दिखाई नहीं देता। कुल मिलाकर, मेरा सोचा हुआ घात लगाना असंभव लग रहा था।

मैंने बहुत सोचा-समझा और अंत में एक विचार आया। इसे शब्दों में बयान करना थोड़ा मुश्किल है, इसलिए मैंने एक रेखाचित्र बनाया है जिससे मुझे उम्मीद है कि मेरी योजना का कुछ अंदाजा लग जाएगा।

नटराज के अवशेष जिस स्थान पर थे, उसके उत्तर में वन लॉज और गैराज था। पूर्व में, कुछ ही दूरी पर, एक छोटा सा गाँव और लगभग खुला मैदान था। पश्चिम में हल्की झाड़ियाँ थीं, जिनसे होकर गेरहेट्टी से जंगलपालयम जाने वाला रास्ता जाता था। दक्षिण में घनी झाड़ियाँ थीं, जिनके किनारे एक छोटी पहाड़ी थी। मैं पहले ही पश्चिमी दिशा वाले रास्ते पर चल चुका था। रेतीली सतह पर पैंथर के आने-जाने के कोई निशान नहीं थे। इसलिए आदमखोर दक्षिण की पहाड़ी से आया था और उसी रास्ते से वापस चला गया था।

मेरी योजना थी कि मैं गैराज में तब तक छिपा रहूँ जब तक मुझे उसके खाने की आवाज़ सुनाई न दे —कम से कम मुझे उम्मीद तो यही थी कि मुझे सुनाई देगी। फिर मैं दबे पांव गैराज से निकलकर बंगले के सामने वाले हिस्से तक जाऊँगा, जंगलपालयम की ओर जाने वाले रास्ते पर चलूँगा, और वहाँ से मुड़कर पैंथर और पहाड़ी के बीच में आ जाऊँगा, क्योंकि मुझे पूरा यकीन था कि बिल्ली उसी दिशा में भागेगी।

अंत में, जब मैं एक उपयुक्त स्थिति में होता, तो मैं कुछ पत्थर (जो मैंने पहले से ही अपनी जेब में इकट्ठा करके रखे थे) गैरेज की ओर पूरी ताकत से फेंकता, इस उम्मीद में कि पत्थर दावत उड़ा रही बिल्ली के ऊपर से निकलकर उसके पार गिर जाए। इससे वह डर जाएगी और अंधाधुंध भागती हुई अपने एकमात्र सुरक्षित ठिकाने, दक्षिण की ओर पहाड़ी की तरफ दौड़ेगी, जहाँ मैं छुपकर उसका इंतज़ार कर रहा होता। पैंथर्स में सूंघने की शक्ति नहीं होती, इसलिए जब मैं दबे पांव रास्ते पर चल रहा होता, तो वह मुझे सूंघ नहीं

पाती। लेकिन उनकी सुनने की शक्ति बहुत तेज़ होती है और अगर मैंने ज़रा सी भी आवाज़ की, तो वह मुझे सुन सकती थी। यह एक ऐसा जोखिम था जो मुझे उठाना ही था।

बाद में मुझे एक विचार आया और मैंने तय किया कि मैं अपनी खाकी कमीज को फाड़कर उसके टुकड़े रास्ते के किनारे उगी झाड़ियों पर टांग दूँ, ताकि अगर तेंदुआ गलती से उस दिशा (पश्चिम की ओर) आ भी जाए, तो हवा में लहराते इन टुकड़ों को देखकर वह वापस दक्षिण की ओर, पहाड़ी की तरफ—और मेरी तरफ—मुझकी तरफ मुड़ जाए! वह न तो पूरब की ओर भागेगा क्योंकि वहाँ गाँव है, और न ही उत्तर की ओर, क्योंकि वहाँ बंगला बना हुआ है।

मैं आमतौर पर अपनी कमीज़ें नहीं फाड़ता, खासकर तब जब मैंने अंदर कुछ नहीं पहना होता, लेकिन कोई चारा नहीं था, क्योंकि मेरे पास किसी भी तरह के कपड़े नहीं थे और कार में रखी हुई कमीज़ मेरी कमीज़ से थोड़ी बेहतर थी। इसलिए मैंने अपनी कमीज़ उतारकर उसे लंबी-लंबी पतली पट्टियों में फाड़ दिया। इस तरह मैंने लगभग आठ-दस पट्टियाँ बनाईं और उन्हें रास्ते के किनारे उगी लैंटाना और दूसरी झाड़ियों से बाँध दिया। ये पट्टियाँ उस जगह से छिपी हुई थीं जहाँ पैंथर चर रहा होता, लेकिन अगर वह पश्चिम की ओर रास्ते की तरफ मुड़ता, तो वह उन्हें तुरंत देख लेता, जब मैं उस दिशा से पत्थर फेंकना शुरू करता। खाकी रंग की बजाय सफेद या रंगीन कपड़े की पट्टियाँ होती तो बेहतर होता, लेकिन शिकार करते समय कोई सफेद कमीज़ तो नहीं पहनता।

अंत में, मैं बंगले के पूर्व में स्थित छोटे से गाँव में गया और वहाँ के निवासियों, जिनमें दो कांस्टेबल भी शामिल थे, को चेतावनी दी कि वे दिन भर घर से बाहर न निकलें। मैं यह नहीं कह सकता कि मेरी सलाह अनावश्यक थी। नटराज की हत्या और उसके मांस को उनकी झोपड़ियों से कुछ ही गज की दूरी पर खाए जाने के बाद, गाँव के निवासी पहले ही यथासंभव सुरक्षित रूप से अपने आप को अंदर बंद कर चुके थे।

ताकि पैंथर की नज़र से बच सके, मैंने अपनी मॉडल टी कार को, जिसमें मैं आया था, जंगल के लॉज के सामने खड़ा कर दिया। वहाँ से कार गैरेज और पीछे से आने वाले किसी भी पैंथर की नज़र से ओझल हो गई। मैंने कार में मौजूद सारा सामान, जैसे बिस्तर, खाना, पानी और अतिरिक्त हथियार के तौर पर लाई हुई शॉटगन, सब गैरेज में रख दिया। मैं अगली सुबह सूरज निकलने तक यहीं रुका रहा, इस उम्मीद में कि तेंदुआ अपने बचे हुए भोजन के लिए वापस आएगा।

इन सबमें दोपहर होने में आधा घंटा लग गया था, और सूरज निर्दयता से उस सूखे जंगल पर चमक रहा था जो झींगुरों की आवाज़, छोटे चित्तीदार कबूतरों की गुटरगू और काले शरीर और नारंगी पंखों वाले कौवे-तीतर की पुकार से गूंज रहा था, जो जंगल के किनारे से कुछ ही कदम दूर पक्षियों के अंडे, छिपकलियों और इल्लियों की लगन से तलाश कर रहा था।

घंटे धीरे-धीरे बीतते गए और गर्मी बढ़ती गई, जमीन से झिलमिलाती लहरों की तरह उठती हुई। यहाँ तक कि कौवे-तीतर ने भी इसे महसूस किया और अपनी खोज छोड़ दी, हालाँकि अथक टिड्डे अपनी नीरस धुन में भिनभिनाते रहे।

घंटे बीतते गए और मैं हत्यारे की वापसी की सूचना देने वाली हड्डियों के चटकने की आवाज़ सुनने के लिए कान गड़ाए बैठा रहा। आसमान में ऊँचे उड़ते एक राजा गिद्ध की चीख के अलावा मुझे कोई आवाज़ नहीं सुनाई दी। उसने अवशेष बहुत पहले ही देख लिए होंगे, लेकिन चूंकि वे किसी इंसान के थे, इसलिए 'राजा' ने धरती पर उतरने में देरी कर दी, वरना मीलों दूर तक फैले अन्य गिद्धों को दावत के लिए इकट्ठा होने का न्योता मिल जाता।

पांच बज गए, वातावरण में उल्लेखनीय ठंडक आ गई और गिद्ध की भूख और तेज़ हो गई। उसने ज़रा भी देर नहीं की, बल्कि अपने फैले हुए पंखों के सख्त परों से गुज़रती हवा के तेज़ झोंके के साथ ज़मीन पर झपटा और शिकार के पास हल्की सी आवाज़ के साथ उतरा। जल्द ही दूसरे गिद्ध भी उसके पीछे आ गए और पैंथर के शिकार का कुछ भी नहीं बचा, बस साफ-सुथरी हड्डियाँ ही बचीं। अगर तेंदुआ उस रात आता भी, तो उसे खाने को कुछ नहीं मिलता और वह भटक जाता!

चार-पाँच गिद्ध कुछ-कुछ अंतरालों पर राजा के पास आते रहे, हालाँकि विशालकाय पक्षी अभी भी अपना भोजन शुरू करने में हिचकिचा रहे थे। नटराज का सिर, अपनी टकटकी लगाए आँखों के साथ, अक्षुण्ण बना हुआ था, जिसने उन्हें दूर रखा।

समय धीरे-धीरे बीतता गया, और शाम होते ही बसेरों में बैठे पक्षियों का मधुर गायन शुरू हो गया, जो जंगल प्रेमियों के कानों को सुहाने दिन को विदाई दे रहा था। पहाड़ी की तलहटी से जंगली मुर्गे 'कुक-क्या-क्या-खुकम!' की आवाज लगा रहे थे; ऊपर एक तीतर 'की-कोक! की-कोक! की-कोक!' की आवाज लगाकर चुनौती दे रहा था, और पहाड़ी की चोटी से उसके प्रतिद्वंद्वी ने 'की-कोक-कोक! की-कोक-कोक! की-कोक-कोक!' की आवाज लगाकर जवाब दिया। चिड़ियों ने एक-दूसरे पर गुर्राते हुए 'वैक! वैक! कुकर-रॉवाक!' की आवाज लगाई, जबकि दूर कहीं एक मोर ने भी इस गायन में शामिल होते हुए 'ज़ैंक! मिया! मिया! मिया-ऊ-ओ!' की आवाज लगाई।

पंखों की भारी फड़फड़ाहट के साथ ही 'राजा' और उसके उतने ही डरपोक साथी धीरे-धीरे जमीन से उठे और पास के किसी पेड़ पर बैठ गए। वे सुबह तक इंतजार करेंगे और उनकी भूख निश्चित रूप से बढ़ जाएगी।

अंधेरा छाने लगा; चारों ओर गहरी खामोशी छा गई, जिसे महसूस किया जा सकता था। तभी 'चक! चक! चक! चक-ऊऊऊऊ!' की आवाज़ नाइटजार पक्षी की निकली और 'हूऊऊ! हूऊऊ! हूऊऊ!' की आवाज़ एक सींग वाले उल्लू की आई। मैंने अपनी टॉर्च को राइफल के बैरल पर कसकर बांधने वाले दोनों क्लैंप को लगाया और रोशनी को एक बिंदु के रूप में समायोजित किया। इसके तुरंत बाद रात हो गई। तेंदुआ दिखाई नहीं दिया और मेरी सोची-समझी योजना विफल होती दिख रही थी।

मैं आपको अगले छह घंटों का वर्णन करके बोर नहीं करूंगा। दरअसल, बताने के लिए कुछ है ही नहीं, क्योंकि कुछ हुआ ही नहीं। चांद, जो अब घट रहा था, देर से निकला था, और अगर पैंथर अपने शिकार के पास आता तो मैं अपनी योजना पर अमल नहीं कर पाता, क्योंकि रात इतनी उजाली नहीं होती कि मैं उसे

देख पाता जब वह मेरे फेंके पत्थरों से डरकर पहाड़ी पर दौड़ता हुआ आता। मुझे या तो उसे खाने देना पड़ता, या फिर चुपके से उस पर हमला करने की कोशिश करनी पड़ती, जो कि बहुत मुश्किल होता और मुझे बिलकुल भी पसंद नहीं था।

इन्हीं विचारों में खोकर मुझे शायद नींद आ गई। फिर अचानक किसी चीज़ ने मुझे चौंका दिया। मैं बता नहीं सकता कि वह क्या था। वह कोई ऐसी आवाज़ नहीं थी जिसे मैं सुन सकूँ, बल्कि ऐसा लगा जैसे किसी जानलेवा खतरे ने मुझे घेर लिया हो। वह बहुत भारी और घुटन भरा था; ऐसा महसूस किया जा सकता था।

एक पल के लिए मुझे लगा कि यह सब मेरी कल्पना है, लेकिन खतरे का अहसास बना रहा और बहुत वास्तविक हो गया। ऐसा लगा जैसे सब कुछ मेरे चारों ओर सिमट रहा हो। निस्संदेह, कहीं न कहीं से कोई चीज़ मुझे धमका रही थी।

तब मुझे एहसास हुआ कि यह क्या था। आदमखोर तेंदुआ पास ही था! वह अजीब छठी इंद्री, जिसे मैंने घोर खतरे के समय महसूस किया है और जिसने बाद में कई बार मेरी जान बचाई है, मुझे मानो शब्दों में बता रही थी कि तेंदुआ हमला करने ही वाला है।

मैंने अपनी .405 पिस्तौल पर हाथ रखे और बिना हिले-डुले चारों ओर देखने की कोशिश की। चांदनी से गैराज का आयताकार दरवाज़ा जगमगा रहा था, और दृश्य के केंद्र में जंगल में बने बंगले का पिछला हिस्सा दिखाई दे रहा था। तभी चांदनी से जगमगाते इस पर्दे के निचले बाएँ कोने में कुछ हल्का सा हिला। कुछ काला और थोड़ा सा लहराता हुआ सा। मैं ठीक से देख नहीं पा रहा था कि वह क्या था, क्योंकि वह गैराज के अंधेरे में छिपा हुआ था और धुंधली चांदनी की पृष्ठभूमि ने ही मेरा ध्यान पास की उस हल्की हलचल की ओर खींचा था।

परछाई बहुत धीरे से हिली और मेरे कान तक फुफकारने की हल्की सी आवाज पहुंची। क्या यह कोबरा था? या फिर यह आदमखोर सांप हो सकता है?

सौभाग्य से मैंने ज़रा भी हरकत नहीं की थी। अगर मैंने ऐसा किया होता, तो वह प्राणी शायद मुझ पर हमला कर देता जब उसे पता चलता कि मुझे चौंकाने की उसकी कोशिश पकड़ी गई है। लेकिन अब हरकत करना—और वह भी बहुत तेज़ी से—ज़रूरी था।

मैं झट से खड़ा हुआ और पीछे की ओर कूदा, लेकिन पीछे की दीवार से टकराकर अचानक रुक गया। उसी समय मैंने अपनी राइफल का मुंह आगे की ओर किया और टॉर्च का बटन दबा दिया। हालांकि टॉर्च की रोशनी से उसकी आंखें चौंधिया गईं, फिर भी आदमखोर ने हमला कर दिया।

इसके बाद के कुछ क्षणों का वर्णन करते हुए मुझे विनम्रता और कृतज्ञता का भाव व्यक्त करना चाहिए। क्योंकि यह दावा करना उचित नहीं है कि 'मैंने एक ही गोली से उसे मार डाला', क्योंकि जंगली जानवरों का थोड़ा-बहुत अनुभव रखने वाला कोई भी व्यक्ति आपको बता सकता है कि एक सांभर अपने शरीर में नौ गोलियां झेलकर मीलों तक चल सकता है, एक बाइसन पंद्रह, एक जंगली हाथी कभी-कभी

पच्चीस, और एक बाघ या तेंदुआ मरने से पहले बहुत सी गोलियां झेल सकता है। और मरने से पहले वह आपको टुकड़े-टुकड़े कर सकता है।

फिर भी, कारतूस खराब हो सकता है, कैप में गड़बड़ी हो सकती है, या गोली चलाते ही जानवर मुड़ सकता है। कुछ भी हो सकता है। इतना कहना ही काफी है कि मेरी गोली महज़ किस्मत से निशाने पर लगी और तेंदुए को हवा में ही मार गिराया, हालांकि पूरी तरह से आश्वस्त होने के लिए मैंने अपने पैरों के पास तड़पते हुए उसके शरीर पर दो और गोलियां चलाईं।

सब-इंस्पेक्टर अगली सुबह समय से काफी पहले पहुँच गया। उसे यह देखकर निराशा हुई कि नटराज की अधिकांश हड्डियाँ, जिनमें उसका सिर भी शामिल था, रात के दौरान लकड़बग्घे और सियार ले गए थे।

7

लक्कावल्ली नरभक्षी

यदि आप मैसूर राज्य के पश्चिमी भाग में स्थित तारिकेरे कस्बे का दौरा करें, तो आपको वहां दो मोटर योग्य सड़कें मिलेंगी। इन सड़कों पर, कस्बे से चार-पांच मील की दूरी पर, यदि आपके पास रुककर सुनने का समय हो, तो आप ग्रामीणों से बाघों के अत्याचारों के बारे में कई कहानियां सुनेंगे।

इन सड़कों में से पहली सड़क तारिकेरे से लगभग दक्षिण-पश्चिम दिशा में जाती है, जो बाबा बुडांस के नाम से जानी जाने वाली ऊँची घोड़े की नाल के आकार की पर्वत श्रृंखला के दक्षिण में स्थित लिंगधल्ली गाँव से होकर एक घुमावदार रास्ते से गुजरती है, संतावेरी गाँव में इसकी निचली ढलानों को पार करती है, और लगभग बीस मील दूर चिकमगलूर शहर तक जाती है।

दूसरी सड़क उत्तर-पश्चिम की ओर जाती है, जो उन्हीं पहाड़ों की पूर्वी और उत्तर-पूर्वी ढलानों से गुजरती है, फिर लक्कावल्ली और उम्बलेबायल नामक दो छोटे गांवों से होते हुए भद्रावती शहर तक जाती है, जो खुद तारिकेरे से मुश्किल से दस मील दूर है, और वहां तक एक तीसरी और अधिक सीधी सड़क जाती है।

इस प्रकार पहली और दूसरी सड़कें बाबा बुदन पर्वतमाला की दक्षिणी और पूर्वी ढलानों को घेरती हैं, और पश्चिम और उत्तर की ओर स्थित गहरी घाटी से पहाड़ों की चोटी को पार करने वाले बाघ, जो इन पहाड़ों से घिरे हुए हैं, खुद को या तो दक्षिणी सड़क पर स्थित संतावेरी गांव के आसपास पाते हैं, या पूर्वी सड़क के पश्चिम में लाउबाग के नाम से जाने जाने वाले क्षेत्र में पाते हैं।

इन बातों को ध्यान में रखना महत्वपूर्ण है: संतावेरी गांव और लाउबाग क्षेत्र। क्योंकि इन्हीं स्थानों और इनके बीच के क्षेत्र में बाघ के साथ वह रोमांचक घटना घटी थी, जिसके बारे में आप अब सुनने वाले हैं। समुद्र तल से 4,500 फीट की ऊंचाई पर स्थित संतावेरी एक पथरीला, जंगली और घने जंगलों वाला क्षेत्र है, जबकि लाउबाग, जो लगभग तीस से पैंतीस मील की दूरी पर है, हालांकि एक हजार फीट से अधिक नीचे है और कम पथरीला है, फिर भी अधिक घने जंगलों से घिरा हुआ है।

मैं संयोगवश अपने पुराने मित्र डिक बर्ड से मिलने गया था, जो सैंटावेरी में पोस्टमास्टर थे और निजी जीवन में जिले के सबसे प्रसिद्ध बाघ शिकारियों में से एक थे, जिन्होंने राइफल का उपयोग करने से इनकार करते हुए अपने सभी बाघों को .12 बोर की शॉटगन से मारा था।

‘जॉक,’ उसने मुझसे पूछा, ‘क्या तुमने केमंगुंडी के आसपास दिखाई देने वाले बाघ के बारे में सुना है?’

मुझे यह स्पष्ट कर देना चाहिए कि केमंगुंडी, संतावेरी और लाउलबाग क्षेत्र के लगभग मध्य में स्थित है, और डिक हमेशा मुझे 'जॉक' कहकर बुलाता है। क्योंकि मैं इतने स्थानों पर रह चुका हूँ, इतने जंगलों में,

इतने अलग-अलग मौसमों में, विभिन्न जीव-जंतुओं और वनस्पतियों के बीच शिकार कर चुका हूँ, और इतने अलग-अलग काम कर चुका हूँ कि मैं एक तरह से जेकिल और हाइड बन गया हूँ, जिसके कई नाम और उपनाम हैं। बहुत पुराने दोस्त मुझे 'जॉक', 'स्कॉची' या 'स्कॉच' कहकर बुलाते हैं, जबकि हाल ही में मिले लोग मुझे 'एंडी', 'केनेथ', 'केन' और 'केडीएस' कहकर पुकारते हैं।

स्कूल में मुझे 'साँप पकड़ने वाला' कहकर चिढ़ाया जाता था, क्योंकि मुझे अपनी कमीज़ के अंदर से सांप निकालकर संडे स्कूल, स्कूल के चैपल, क्लासरूम, डाइनिंग और स्टडी हॉल, सिनेमाघरों और अन्य भीड़भाड़ वाली जगहों पर छोड़ने का शौक था। यह बहुत पहले की बात है, और अब कुछ सालों से मुझे 'साँप पकड़ने वाला' कहकर नहीं चिढ़ाया जाता, क्योंकि मैंने सार्वजनिक जगहों पर सांप छोड़ने की आदत छोड़ दी है।

सबसे शर्मनाक बात तो यह है कि मेरे बेटे का दोस्त, छोटा दुधवाला, मुझे 'डॉट' कहकर बुलाने पर अड़ा रहता है। व्यक्तिगत रूप से, मुझे अपने और 'कलम या नुकीली चीज़ से बने किसी छोटे निशान' के बीच कोई समानता या संबंध नहीं दिखता, जिसे शब्दकोश में 'डॉट' का अर्थ दिया गया है। इसलिए, मुझे अलग-अलग नामों से पुकारा जाता है और मैं थोड़ा भुलक्कड़ भी हूँ, तो कभी-कभी मैं भ्रमित हो जाता हूँ और यह देखने के लिए इधर-उधर देखता हूँ कि मुझे किसने पुकारा है।

लेकिन डिक के सवाल पर वापस आते हैं।

‘नहीं,’ मैंने उत्तर दिया, ‘मैं काफी समय से उस क्षेत्र में नहीं गया हूँ। जैसा कि आप जानते हैं, मैं पहले सलेम जिले में काफी काम करता था, लेकिन अब मुझे नीलगिरी और आंध्र प्रदेश तक अपना कार्यक्षेत्र बढ़ाना पड़ा है। वहाँ अभी भी बाघों की अच्छी खासी संख्या है।’

‘खैर, अभी भी काफी सारे हैं,’ डिक ने आगे कहा। ‘लेकिन आम वाले। मतलब, मवेशी चुराने वाले। झपटमार जानवर जो मवेशियों के झुंड को परेशान करते हैं। हालांकि, जिस जानवर का मैंने जिक्र किया है, वह थोड़ा अलग लगता है।’

फिर उन्होंने आगे बताया कि चरवाहों की रिपोर्टों के अनुसार, एक बहुत बड़े बाघ ने हाल ही में उनके झुंडों पर हमला करने की आदत बना ली है, यहाँ तक कि तब भी जब वे सड़कों पर होते हैं और चरागाहों की ओर ले जाए जा रहे होते हैं। उनकी आँखों के सामने ही वह सबसे मोटी और उत्तम गाय को पकड़कर मार डालता और उसे अपने कंधों पर लादकर ले जाता। ऐसा कई बार हो चुका था और यह घटना संतावेरी से कुछ ही मील दूर, उसी सड़क पर हुई थी जिसके बारे में मैंने आपको बताया था, जो तारिकेरे से चिकमगलूर जाती है। इसी तरह की घटना एक और छोटी सड़क पर भी होने की सूचना मिली थी, जो केमंगुंडी नामक एक पहाड़ी की ओर जाती है, जो लिंगधल्ली गाँव से गुजरने के कुछ ही समय बाद मुख्य तारिकेरे-चिकमगलूर सड़क से अलग हो जाती है।

डिक ने आगे बताया कि दो या तीन चरवाहों ने चिल्लाकर और पत्थर फेंककर बाघ को डराने की कोशिश की ताकि वह शिकार के शव को छोड़ दे, क्योंकि बाघ उसे ले जा रहा था।

हालांकि, वे जल्द ही रुक गए, क्योंकि बाघ ने शव को छोड़कर भागने के बजाय गाय को नीचे गिरा दिया और उनकी ओर दौड़ पड़ा—जिसके बाद वे भाग गए। बाद में हुई जांच से पता चला कि बाघ चरवाहों को भगाकर वापस आया, गाय को उठाया और उसे लेकर भाग गया। ऐसा लगता है कि यह बाघ अपने शिकार को गर्दन या गले से पकड़कर जमीन पर घसीटने के बजाय अपने कंधों पर लादकर ले जाना पसंद करता था।

हमने इस बिंदु पर चर्चा की और इस बात पर सहमति जताई कि संकेतों से यह पता चलता है कि या तो बाघ असाधारण रूप से साहसी जानवर था—शायद एक बूढ़ा नर—या फिर वह शिकार को खाने से पहले उसे काफी दूर तक ले जाने का इरादा रखता था, शायद किसी दूर की गुफा या मांद में, यदि वह शावकों वाली बाघिन होती। जानवर इतना समझदार था कि उसे यह एहसास था कि शिकार को लंबी दूरी तक घसीटने से वह झाड़ियों और कांटों में फंस सकता है; इसलिए उसने शव को उठाकर ले जाना बेहतर समझा।

'काश इस घटिया विभाग में मुझे कुछ छुट्टी मिल जाती,' डिक ने शिकायत करते हुए कहा, 'मैं किसी भी तरह से छुट्टी ले लेता। लेकिन दो-तीन दिन की आकस्मिक छुट्टी भी बड़ी झंझट में पड़ जाती है। मेरी जगह किसी और को तारिकेरे या चिकमगलूर से बुलाना पड़ता है, और अधीक्षक पागलों जैसा व्यवहार करता है। डाकमालिक होने का यही नतीजा होता है।'

मेरी यात्रा समाप्त हो गई, मैं बैंगलोर लौट आया और बाघ के बारे में सब कुछ भूल गया। वैसे भी, मुझे मवेशी चोरों में कोई दिलचस्पी नहीं थी।

कुछ महीने बीत गए, फिर एक सुबह मैं बैंगलोर में जिला मजिस्ट्रेट की अदालत में सरकारी डाक टिकट खरीदने गया, जिसकी मुझे जरूरत थी। तभी मेरी मुलाकात डाक टिकट विक्रेता के स्टॉल पर एक भारतीय सज्जन से हुई। वे शिकायत कर रहे थे क्योंकि उन्हें जिस मूल्यवर्ग के डाक टिकट चाहिए थे, वे उपलब्ध नहीं थे, और न ही उनसे छोटे मूल्यवर्ग के डाक टिकट थे, जिनकी कुल राशि आवश्यक राशि के बराबर हो।

मैंने अपनी जरूरत का कागज खरीदा, जो काफी अधिक मूल्य का था और उपलब्ध था।

'क्या नाम?' विक्रेता ने मुझसे पूछा, नियमों के अनुसार स्टांप पेपर के पीछे यह नाम लिखने की तैयारी करते हुए।

मैंने धीरे से उत्तर दिया, 'के.डी.एस. एंडरसन,' और एंडरसन नाम की स्पेलिंग बताई ताकि वह इसे सही ढंग से लिख सके।

हमारे साथ मौजूद भारतीय सज्जन मुझे घूर रहे थे। मेरा नाम दर्ज करने और भुगतान प्राप्त करने के बाद, विक्रेता ने मुझे स्टांप पेपर दिया और फिर उस सज्जन ने कुछ कहा।

'माफ़ कीजिए महोदय,' उसने पूछा, 'लेकिन क्या आप वही मिस्टर एंडरसन हैं जो बाघों का शिकार करते हैं?'

‘हाँ, मुझे लगता है ऐसा ही है,’ मैंने मुस्कुराते हुए जवाब दिया। ‘कम से कम मुझे किसी और एंडरसन के बारे में नहीं पता जिसे यह बुरी आदत हो।’ फिर, बाद में सोचते हुए मैंने जोड़ा, ‘शायद आपका मतलब मेरे बेटे से है?’

‘मेरा नाम वेंकटसुब्बाराओ है,’ उस व्यक्ति ने कहा। ‘मैं तारिकेरे के पास लक्कावल्ली बांध परियोजना में सहायक मुख्य अभियंता हूँ। देखिए, जब विक्रेता ने आपका नाम पूछा और आपने एंडरसन बताया, तो मुझे आपकी ओर ध्यान गया। मैंने आपके बारे में हर जगह बाघों के शिकार के लिए सुना है। आपको लक्कावल्ली अवश्य आना चाहिए, महोदय। मेरे मेहमान बनकर आइए। मेरे पास बड़ा कमरा है और मैं आपके लिए आरामदायक व्यवस्था कर सकता हूँ। आप यहाँ आराम से रहेंगे और आदमखोर बाघ का शिकार करने के लिए मैं आपके लिए सभी आवश्यक बंदोबस्त कर दूंगा।’

मैंने आश्चर्य से पूछा, 'कौन सा आदमखोर?'

‘क्या तुमने नहीं सुना?’ उसने हैरानी से जवाब दिया। ‘अरे, यह तो तीन दिन पहले अखबार में छपा था। लेकिन चलो मेरे साथ कॉफी पीते हैं, मैं तुम्हें इसके बारे में सब कुछ बताता हूँ।’

मजिस्ट्रेट कोर्ट से कुछ ही दूरी पर 'टिफिन रूम' नाम का एक रेस्टोरेंट है, और मैं और वेंकटसुब्बाराओ वहीं गए। एक नहीं, बल्कि कई कप कॉफी पीते हुए उन्होंने मुझे यह कहानी सुनाई।

तारिकेरे से बाबा बुदन पर्वत श्रृंखला की पूर्वी ढलानों से होते हुए लक्कावल्ली से गुजरते हुए भद्रावती की ओर जाने वाली सड़क पर एक विशाल बाघ प्रकट हुआ था। उसने सबसे पहले सड़क के किनारे के जंगल में चरने के लिए लाए गए कई पशुओं के झुंडों के मवेशियों को मारना शुरू किया। बाघ अपने शिकार को अपनी पीठ पर उठाकर ले जाता था, और यदि कोई चरवाहा हस्तक्षेप करने की हिम्मत करता, तो वह जानवर जोर से गुर्राकर उन्हें भगा देता था। वह हमेशा पश्चिम दिशा में, लाउलबाग के जंगलों में गायब हो जाता था।

समय बीतता गया। किसी भी चरवाहे को कोई नुकसान नहीं हुआ, लेकिन बाघ अपना कहर बरपाता रहा। स्वाभाविक रूप से, चरवाहे बाघ से और अधिक क्रोधित हो गए और उसी अनुपात में अधिक साहसी बन गए। ठीक उसी तरह, बाघ भी उनसे और अधिक क्रोधित हो गया और स्वयं भी अधिक साहसी बन गया।

वह दिन आ गया जब दोनों पक्षों का गुस्सा चरम पर पहुँच गया। बाघ अपने कंधों पर एक मोटी गाय को लेकर जा रहा था, तभी एक चरवाहा, जो अपने साथियों से कहीं अधिक साहसी था, उसके पीछे दौड़ा और अपनी लाठी फेंक दी। अपनी आदत के अनुसार, बाघ ने शिकार के शरीर को नीचे गिरा दिया और भयानक दहाड़ते हुए उस आदमी पर हमला कर दिया, निस्संदेह यह उम्मीद करते हुए कि वह भी कई अन्य लोगों की तरह भाग जाएगा।

लेकिन यह आदमी भागा नहीं। शायद वह दूसरों से ज़्यादा बहादुर था। शायद वह डर से कांप गया था। शायद अपनी लाठी फेंक देने के बाद उसने सोचा कि भागना बेकार है। ज़ाहिर है, खुद वहाँ मौजूद न

होने के कारण वेंकटसुब्बाराओ को नहीं पता था कि असल में क्या हुआ था। उसे इतना पता था कि बाघ ने चरवाहे को मारकर खा लिया और फिर अपनी मोटी शिकार, गाय को लेकर चला गया।

खबर फैल गई और लक्कावल्ली इलाके के चरवाहों ने बाघ से उलझना बंद कर दिया। जब बाघ ने किसी झुंड पर हमला किया, तो झुंड के मुखिया तुरंत भाग गए, और बाघ ने भी विनम्रता से उनका पीछा नहीं किया। लेकिन दूर-दराज के अन्य चरवाहों को लक्कावल्ली के पास हुई घटना की जानकारी नहीं थी। उन्होंने अपने पुराने तरीके जारी रखे और बाघ द्वारा अपने जानवरों पर हमला करने पर उसे भगाने की कोशिश की। लक्कावल्ली में अपने शिकार हुए इंसान की बेबसी का एहसास होने पर, बाघ का हौसला बढ़ गया और उसने केमंगुंडी में एक के बाद एक दो चरवाहों को मार डाला, और एक अन्य को संतावेरी से कुछ ही दूरी पर मार डाला। बताया जाता है कि बाघ ने इन तीनों को पूरी तरह से खा लिया और सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि उन्हें खाने के बाद उसने मारे गए मवेशियों के शवों को त्याग दिया।

इसके बाद बाघ लक्कावल्ली लौट आया। एक बार फिर त्रासदी का दृश्य सामने आया। दो आदमी, एक अधेड़ उम्र का आदमी और उसका पंद्रह साल का बेटा, अपने मवेशियों को चराने के लिए ले जा रहे थे। वे साथ खड़े होकर अपने मवेशियों की रखवाली कर रहे थे, तभी लड़के ने जमीन के एक ऊंचे टीले के पीछे से एक विशाल बाघ का सिर उन्हें घूरते हुए देखा। उसने अपने पिता का ध्यान उस ओर दिलाया। दोनों अपने मवेशियों को बाघ के भरोसे छोड़कर भागने के लिए मुड़े, लेकिन बाघ ने मवेशियों पर हमला करने के बजाय उनका पीछा किया।

लड़का जवान और फुर्तीला होने के कारण आगे दौड़ रहा था, तभी पिता ने देखा कि बाघ उसके पास से उछलकर निकला, लड़के को पकड़ लिया और उस पर झपटा। घबराहट में, बूढ़े ने गाड़ी को दाईं ओर मोड़ दिया और तेज़ी से भागने लगा। गाँव पहुँचते ही वह बेहोश होकर गिर पड़ा, और काफी देर बाद उसे समझ आया कि क्या हुआ था।

ग्रामीण वेंकटसुब्बाराव के घर उनसे मदद मांगने गए। हालांकि, मेरे नए दोस्त के पास बंदूक नहीं थी, इसलिए वह उस समय उनकी मदद नहीं कर सका। उसने पिता से गहन पूछताछ की और उनसे सारी जानकारी हासिल कर ली, ठीक वैसे ही जैसे उसने मुझे बताई।

मदद के लिए करीब ग्यारह मील दूर तारिकेरे में एक संदेशवाहक भेजा गया। इसी बीच मवेशियों का झुंड दौड़ता हुआ गांव लौट आया। वह पूरी तरह सुरक्षित था। किसी भी मवेशी को कोई नुकसान नहीं पहुंचा था।

अगली सुबह पुलिसकर्मियों और वन रक्षकों का एक संयुक्त दल, जिसमें नौ लोग लाठियों से लैस थे, राइफलों से लैस दो कांस्टेबलों और रिवॉल्वर लिए एक पुलिस सब-इंस्पेक्टर के साथ वहाँ पहुँचा। इस प्रकार, पिता के नेतृत्व में बारह लोग उस स्थान पर गए जहाँ बाघ ने हमला किया था। लड़के का शव वहाँ नहीं मिला और सभी वापस लौट आए।

इसके बाद बांध पर काम करने के लिए मज़दूरों की उपलब्धता एक असहनीय समस्या बन गई। गाँव की झोपड़ियों में रहने वाले लोगों ने बाहर जाने से इनकार कर दिया, जबकि कई लोग तारिकेरे लौट गए। अन्य लोग—और उनकी संख्या काफी अधिक थी—हर सुबह तारिकेरे से बांध पर काम करने के लिए ग्यारह मील की दूरी साइकिल से तय करते थे और शाम को उतनी ही दूरी वापस लौटते थे। उन्होंने भी अब यह यात्रा करने से इनकार कर दिया। और जो लोग तारिकेरे से बांध पर काम कर रहे तकनीकी कर्मचारियों के लिए चावल, अनाज, रोटी और सब्जियां लाते थे, उन्होंने भी उस भयानक सड़क पर यात्रा करने से मना कर दिया। इस प्रकार न केवल बांध पर काम लगभग ठप हो गया, बल्कि लक्कावल्ली में तैनात वरिष्ठ कर्मचारी भी भूख से बेहाल हो रहे थे।

मेरे नए परिचित ने निष्क्रियता का फायदा उठाते हुए छोटी छुट्टी पर बैंगलोर का दौरा किया था, जहाँ हमारी मुलाकात स्टाम्प विक्रेता की दुकान पर हुई थी। उन्होंने मुझसे विनती की कि मैं उनके साथ लक्कावल्ली वापस चलूँ ताकि गाँव को उस बुराई से मुक्त कराया जा सके जिसने उसे जकड़ रखा था।

मुझे काम था, लेकिन मैंने अपने साथी के बार-बार अनुरोध पर सहमति जताते हुए कहा कि मैं केवल पाँच या छह दिनों के लिए ही आऊँगा। मैं इससे अधिक समय तक नहीं रुक सकता था।

वेंकट, जिसे मैं आगे इसी नाम से पुकारूँगा, बहुत प्रसन्न हुआ। मुझे नहीं लगता कि उसे इस बात का एहसास था कि पाँच दिनों में आदमखोर को ढूँढ़ना लगभग नामुमकिन है। तय हुआ कि वह अपने होटल लौटकर बिस्तर और कुछ अन्य सामान जो वह अपने साथ लाया था, इकट्ठा करके उसी दिन दोपहर 3 बजे तक मेरे घर पहुँच जाएगा। फिर हम मेरी कार से लक्कावल्ली के लिए रवाना होंगे।

मैं जल्दी से घर पहुंचा ताकि अपना सामान इकट्ठा कर सकूं, जो हमेशा कुछ डिब्बाबंद खाने-पीने की चीजों के साथ तैयार रखा रहता है, तभी मुझे एक और आश्चर्य हुआ। डाकिया डिक बर्ड का एक छोटा सा पत्र लेकर आया था।

> प्रिय जॉक,
>
> जल्दी आओ। कल तक यहाँ पहुँच जाना। जिस बाघ के बारे में मैंने तुम्हें बताया था, वह आदमखोर बन गया है और कई पशुपालकों को निगल चुका है।
>
> कल, मेरे डाकिया को उस समय उठा ले गया जब वह यहाँ से तीन मील दूर होसुर गाँव तक डाक का थैला ले जा रहा था। मेरे पास छुट्टी लेने का समय नहीं था, इसलिए मैंने बीमार होने का बहाना बनाया और डाकिया के शव की तलाश में बैठ गया। हमने दिन भर खोजा, लेकिन बेचारे की सिर्फ टोपी और चप्पलें ही मिलीं।
>
> और हां, वो चिट्ठियों का थैला भी। (कहीं उस खूंखार बाघ ने उसे खा न लिया होता!)
>
> समय समाप्त हो गया है और मुझे कल ड्यूटी पर वापस जाना है। अब कोई बहाना नहीं चलेगा; मैं तुम्हारे लिए परसों (यानी, जिस दिन तुम्हें यह पत्र मिलेगा उसके अगले दिन) दोपहर का खाना रखूँगा, बशर्ते कि बाघ उस आरक्षित डाकिया को न खा जाए जो आज यह पत्र लेकर डाक पहुँचा रहा है। बेचारा, वह बहुत उदास है और मैं उसे दोष नहीं दे सकता।
>
> तुम्हारा दोस्त, डिक

डिक उस रात दो मेहमानों को डिनर पर देखकर हैरान रह गया। वेंकट और मैंने रिकॉर्ड समय में यात्रा पूरी कर ली थी।

हम देर रात तक बातें करते रहे, लेकिन इससे कोई फायदा नहीं हुआ। मुझे याद आया कि अगली सुबह से मेरे पास आदमखोर को ढूंढकर उसे मारने के लिए ठीक पाँच दिन थे। डिक बर्ड अपनी ड्यूटी नहीं छोड़ सकता था। वेंकट ने चाहे जितनी भी तत्परता दिखाई, उसे शूटिंग के बारे में कुछ भी नहीं पता था और वैसे भी उसके पास कोई हथियार नहीं था। डाकिया के शरीर का कोई सुराग नहीं मिला और उसे ढूंढने का कोई फायदा नहीं था, क्योंकि सिर्फ हड्डियाँ ही बची होतीं।

वेंकट ने कहा कि उसे अगले दिन दोपहर तक बांध पर वापस आना है, इसलिए हमने उसी रात गाड़ी से उसके घर जाने का फैसला किया। सड़क मार्ग से वह लगभग पचास मील दूर था, हालांकि सीधी दूरी के हिसाब से काफी पास था। हमने रम का एक आखिरी गिलास पिया और आधी रात के काफी बाद डिक को अलविदा कहा। मैंने वेंकट को स्पॉटलाइट चलाने का तरीका बताया, जिसकी मदद से हम गाड़ी की हेडलाइट्स के साथ जंगल में खोज करते हुए आगे बढ़े।

तारिकेरे से हम अभी भी लगभग पंद्रह मील दूर थे, बागावडकट्टे नामक स्थान पर, जहाँ एक छोटी सी पुलिया वाली सड़क के नीचे से एक धारा बहती थी। सड़क के दोनों ओर, दाएं और बाएं, घने ताड़ के पेड़ थे, जिनके नीचे घनी झाड़ियाँ और बाघ घास उग रही थी। वहीं हमें एक अद्‌भुत दृश्य दिखाई दिया। पुलिया के ठीक पीछे, एक तरफ खड़ा, और स्पष्ट रूप से सड़क पार करने ही वाला था, एक शानदार बाघ!

हेडलाइट्स और स्पॉटलाइट की रोशनी पड़ते ही उसने अपना सिर कार की ओर घुमाया, और उसकी बड़ी-बड़ी आँखों का प्रतिबिंब चमकीला सफेद-लाल था, मानो सड़क के किनारे दो बड़े तारे चमक रहे हों। 'सफेद-लाल' से मेरा मतलब है कि सफेद रंग में लाल रंग की हल्की सी झलक। इसी तरह मैं रात में बाघ की आँखों को पैंथर की आँखों से अलग पहचानता हूँ, जिनकी आँखें छोटी, पास-पास और लाल-सफेद रंग की होती हैं—यानी उनमें लाल रंग ज़्यादा और सफेद रंग कम होता है।

हमारी तेज रोशनी में हम बाघ के धारीदार शरीर को, बल्कि उसके पूरे शरीर को स्पष्ट रूप से देख सकते थे।

मैंने गाड़ी रोक दी। बाघ और तेंदुआ, जब उन पर तेज़ रोशनी पड़ती है, तो अक्सर ज़मीन पर लेटकर छिपने की कोशिश करते हैं, हालांकि वे रोशनी की तरफ देखते रहते हैं, जिससे उनकी मौजूदगी का पता चल जाता है। हमारे बाघ ने भी यही किया। वह नीचे लेट गया और फिर पेट के बल रेंगते हुए पुल की रेलिंग के पीछे छिपने लगा।

वेंकट उत्साह से बेहाल था। वह बुरी तरह कांप रहा था और स्पॉटलाइट हिल रही थी। 'शूट करो! शूट करो! शूट करो!' वह ज़ोर-ज़ोर से चिल्ला रहा था।

बाघ ने उसकी आवाज़ सुन ली। वह कुछ ही कदम आगे बढ़ा और पुल की दीवार के नीचे छिप गया। फिर वह नदी में कूद गया, पुल के नीचे से गुजरा, और खजूर के पेड़ों की कतार के नीचे लंबी घास और झाड़ियों में हमारे बाईं ओर गायब होते हुए हमने उसकी गुर्राहट सुनी। वेंकट ने मुझे तिरस्कार भरी निगाहों

से देखा और उसकी आँखों में लगभग आँसू आ गए। उसके होंठ काँप रहे थे। एक पल के लिए मुझे लगा कि वह रोने ही वाला है।

मैंने उन्हें विस्तार से समझाया कि सभी बाघ आदमखोर नहीं होते, कि हम इस समय आदमखोर बाघों के 'क्षेत्र' से बाहर थे, और बागवडकट्टे एक प्रसिद्ध स्थान रहा है जहाँ बाघ सड़क पार करते हैं या पुल के नीचे से गुजरते हैं, एक तरफ की निचली पहाड़ियों से दूसरी तरफ की निचली पहाड़ियों की ओर, और हमने जो जानवर देखा था वह निस्संदेह मनुष्यों के लिए पूरी तरह से हानिरहित, निर्दोष जानवर था। इसके अलावा, स्पॉटलाइट की सहायता से सड़क किनारे बाघों का शिकार करना नियमों के विरुद्ध था और साथ ही अनुचित भी।

मुझे आज तक यह बिल्कुल भी यकीन नहीं है कि वेंकट मेरी बातों से सहमत हुए या मुझे मूर्ख समझा। जब तक हम रात के लगभग 2 बजे उनके बंगले पर नहीं पहुँच गए, तब तक वे शर्मनाक चुप्पी साधे रहे। वहाँ पहुँचकर उनका चेहरा थोड़ा खिल उठा।

यह घटना तब घटी जब चौकीदार ने उसे बताया कि आदमखोर बाघ बांध पर काम कर रहे बचे हुए कुछ कुलियों में से एक को उठा ले गया था, जब वह पिछली शाम 5 बजे के कुछ देर बाद काम से गांव लौट रहा था। इसके परिणामस्वरूप, कुलियों ने चौकीदार से कहा था कि जब उसका मालिक वापस लौटे तो उसे बता दे कि वे अगले दिन काम पर नहीं आएंगे। भले ही बागवडकट्टे पुल पर मेरी दलीलों ने वेंकट की नज़र में मुझे वहां देखे गए बाघ को न मारने के लिए माफ़ नहीं किया था, लेकिन अब उसे यह विश्वास दिलाना ज़रूरी था कि वहां सड़क पार करने वाला जानवर आदमखोर बाघ नहीं हो सकता था।

वेंकट ने मुझे खाना दिया, लेकिन मैंने मना कर दिया और कहा कि हमें सुबह 6 बजे अपना काम शुरू करने के लिए तैयार रहने के लिए शाम पांच बजे तक थोड़ी नींद ले लेनी चाहिए। इसके बाद वह मुझे एक छोटे से कमरे में ले गया जहाँ एक आरामदायक बिस्तर था, और पाँच मिनट में ही मैं सो गया।

भोर हो चुकी थी जब हम चौकीदार और तीन कुलियों के साथ उस जगह के लिए निकले जहाँ बाघ ने अपना नवीनतम शिकार किया था। ऐसा प्रतीत हुआ कि ये तीनों कुली उस शिकार के साथ थे जब बाघ ने उसे पकड़ा था। चारों आदमी निर्माणाधीन बांध की ऊँची दीवार पर चल रहे थे। वे बांध के अंत तक पहुँच गए थे और उस खड़ी ढलान से नीचे उतर रहे थे जहाँ जलद्वार बनाया जाना था, ताकि दूसरी तरफ चढ़ सकें, तभी आदमखोर बाघ ने हमला कर दिया। एक तीखी चीख सुनाई दी, और जब चारों ओर देखा तो चौथा आदमी अपने साथियों को दिखाई नहीं दिया।

कुछ ही देर बाद उनकी नज़र उस पर पड़ी, जिसे एक बाघ ने गले से जकड़ रखा था। बाघ उसी ढलान पर चढ़ गया जहाँ से वे अभी-अभी नीचे आए थे। वह जानवर बांध के ऊपर से गुज़रा और नज़रों से ओझल हो गया। उन्होंने एक पल भी देर नहीं की और गाँव में खबर देने के लिए तुरंत भागे। फिर वे इंजीनियर के बंगले पर गए। किसी ने भी उसे बचाने की कोशिश नहीं की थी।

हमने उस खाई की तलाशी ली जहाँ से जलद्वार बनाया जाना था, और वहाँ पिछली शाम की त्रासदी, अपने सभी भयावह विवरणों के साथ, हमारे सामने स्पष्ट हो गई। आदमखोर बाघ खाई में घात लगाकर नहीं बैठा था, जैसा कि हमने अनुमान लगाया था। वास्तव में, वह कुछ दूरी पर था जब उसने आदमियों को देखा और जानबूझकर उनका पीछा किया। नरम मिट्टी पर बाघ के पैरों के निशान थे जहाँ वह बांध पर चढ़ा, ऊपर से उछला-कूदा और फिर खाई की ढलान से नीचे उतर रहे आखिरी आदमी पर झपटा।

बेचारे की चीखने के तुरंत बाद ही उसकी मौत हो गई होगी। हमले वाली जगह पर खून के कोई निशान नहीं थे, जिससे पता चलता है कि बाघ ने अपने शिकार को उठाकर भागने में जरा भी देर नहीं की।

बांध के ऊपर से भागते समय हत्यारे के पदचिह्न हमें मिले। ढलान के आधे रास्ते में उसका पैर फिसल गया था, और इकट्ठी हुई मिट्टी से उसके चारों पैरों के गहरे निशान दिख रहे थे, जो उसने फिसलने से रोकने के लिए ज़मीन में गाड़े थे। इसी समय उसने मरे हुए आदमी के गले पर अपनी पकड़ छोड़ी होगी, क्योंकि जब बाघ ने उसे दोबारा उठाया, तो उसने ढलान के बाकी हिस्से से लेकर जंगल तक खून के निशान छोड़े।

खून के निशान के बिना हमारे लिए पदचिह्नों का पीछा करना असंभव होता, क्योंकि हाल ही में हुई बारिश के कारण झाड़ियाँ घनी थीं। लेकिन खरपतवारों की हरी-भरी चादर खून की लाल बूंदों के साथ तीखा विरोधाभास पैदा कर रही थी, जो कुछ दूरी तक हमारे सामने स्पष्ट रूप से दिखाई दे रही थीं।

बाघ अपने शिकार को पश्चिम दिशा में, काफी दूर तक ले गया था। लक्कावल्ली गाँव से लगभग आधा मील आगे, मुख्य सड़क के एक तीखे मोड़ पर उसने सड़क पार की थी, जहाँ से सड़क उम्बलेबायल और भद्रावती की ओर मुड़ने लगी थी। जानवर स्पष्ट रूप से लौलबाग वन क्षेत्र की ओर जा रहा था, और मुझे संदेह होने लगा कि वह इस क्षेत्र की किसी गुफा में रह रहा होगा।

कुछ मिनट बाद हमने वन विभाग की 'अग्नि-रेखा' पार कर ली और अब हम आधिकारिक तौर पर लौलबाग वन ब्लॉक के अंदर थे। हमारा शिकार एक पल के लिए भी नहीं रुका था, और उसके निशान का पीछा करना मुश्किल होता जा रहा था। उसके शरीर में खून जम चुका था और बहना बंद हो गया था, इसलिए जो बूँदें गिर रही थीं वे बहुत कम और छोटी थीं। नतीजतन, हमें लंबे अंतराल पर उसकी तलाश करनी पड़ रही थी, जिससे हमारी प्रगति धीमी हो रही थी, और मुझे डर था कि बहुत जल्द निशान मिट जाएंगे।

ठीक दस-पंद्रह मिनट बाद यही हुआ। हमें खून की कोई बूंद नहीं मिली, न ही आदमखोर बाघ के पदचिह्न दिखाई दिए। उसके उस रास्ते से गुज़रे बारह घंटे बीत चुके थे, और रात की ठंडी हवाओं और ओस की बूंदों के कारण, बाघ और उसके शिकार के शरीर के गुज़रते समय कुचले गए या हटाए गए खरपतवार, घास और झाड़ियों के झुके हुए तने फिर से सीधे हो गए थे। तनों और पत्तियों के सीधे खड़े होने से, खरपतवार और झाड़ियाँ हमें बाघ और उसके शिकार के जाने की दिशा का कोई भी संकेत नहीं दे पा रही थीं। निशान मिट चुके थे।

वेंकट और मेरे बाकी साथी बेहद निराश थे। मैं भी निराश था। हालांकि, उस सुबह की हमारी खोज से एक महत्वपूर्ण जानकारी मिली थी। यह स्पष्ट था कि बाघ लाउबाग क्षेत्र में किसी गुफा या गुप्त ठिकाने में रहता था, जैसा कि मुझे शुरू से ही संदेह था, और जिस दूरी तक वह अपने शिकार को ले गया था, उसे देखते हुए, उसका छिपने का स्थान उस जगह से बहुत दूर नहीं हो सकता था जहां उसके निशान खत्म हो गए थे। मैंने गुफा के बारे में पूछताछ की, लेकिन ऐसा प्रतीत हुआ कि किसी भी ग्रामीण को इसके बारे में जानकारी नहीं थी।

गांव लौटते ही मैंने स्थानीय वन रक्षक के बारे में पूछा। उसे अपने अधिकार क्षेत्र में आने वाले जंगल की भौगोलिक स्थिति की जानकारी होगी। मुझे यह जानकर बहुत निराशा हुई कि रक्षक तारिकेरे स्थित विभागीय मुख्यालय गया हुआ है और सुबह ही लौटेगा।

समय बर्बाद करने का कोई सवाल ही नहीं था, इसलिए मैंने वेंकट को अपने बगल वाली कार में बिठाया और बिना देर किए तारिकेरे के लिए निकल पड़ा। गुफा या किसी अन्य छिपने की जगह के बारे में मेरे मन में जो शंका थी, उसे दूर करना ही मेरे लिए सबसे ज़रूरी था, तभी मैं संतुष्ट हो पाऊंगा।

आधे घंटे में हम ज़िला वन कार्यालय पहुँच गए, जहाँ हमें न केवल वह गार्ड मिला जिसकी हमें तलाश थी, बल्कि उसका वरिष्ठ अधिकारी, वन रेंजर और संभागीय प्रमुख, ज़िला अधिकारी भी मिले। इन लोगों के बीच हमने उन्हें बताया कि कैसे हमने लौलबाग़ के जंगल में आदमखोर बाघ का पीछा किया और फिर उसका सुराग खो दिया। क्या वे हमें बता सकते हैं कि इस ब्लॉक में कोई गुफा या कोई अन्य छिपने की जगह है जहाँ बाघ ने अपना घर बनाया हो सकता है?

रक्षा अधिकारी ने रेंजर की ओर देखा, और रेंजर ने अपने गार्ड की ओर। फिर गार्ड ने रेंजर की ओर देखा, और यह सिलसिला चलता रहा।

'मिस्टर एंडरसन, इस इलाके में कोई गुफा होने की संभावना नहीं दिखती,' डी.एफ.ओ. ने विस्तार से घोषणा की।

मेरे दिमाग में जो भ्रम बैठा था, वह बुरी तरह से मर रहा था। मेरा सिद्धांत चकनाचूर हो गया! एक नंगे पैर पर खड़ा गार्ड दूसरे पैर के अंगूठे से अपनी पिंडली खुजला रहा था।

'मुझे नहीं लगता कि शैतान पुराने मुन्नेस्वरा मंदिर में शरण ले सकता है, क्या ऐसा हो सकता है, स्वामी?' उसने शर्मिंदा होकर अपने तत्काल वरिष्ठ अधिकारी, रेंजर से पूछा।

‘मुन्नेश्वर मंदिर!’ रेंजर ने सोच-विचार करते हुए कहा; ‘मुन्नेश्वर मंदिर!’

‘मुन्नेश्वर मंदिर!’ रक्षा अधिकारी ने उत्साह से चिल्लाते हुए कहा। फिर, शर्म से सिर झुकाए गार्ड से बोला, ‘अरे मूर्ख! तुमने पहले क्यों नहीं बताया? बस यही है! वह यहीं है! पुराना मुन्नेस्वरा मंदिर!’ रक्षा अधिकारी उत्साह में उछल-कूद करने लगा।

जब भावनाएं शांत हुईं तो मुझे बताया गया कि लाउबाग ब्लॉक की सीमा के भीतर थोड़ी ही दूरी पर एक प्राचीन मंदिर है, जो लगभग खंडहर हो चुका है। गार्ड द्वारा दिए गए निर्देशों के अनुसार, उस सुबह जब

हम रास्ता भटक गए थे, तब हम मंदिर के बहुत करीब रहे होंगे। कहा जाता है कि मंदिर का भीतरी कक्ष, या गर्भगृह, आंशिक रूप से ढह गया था, लेकिन गार्ड के अनुसार बाघ के रहने के लिए पर्याप्त जगह बची थी।

हम वापस लक्कावल्ली गए, जहाँ रक्षा अधिकारी, रेंजर और गार्ड सरकारी जीप में हमारे पीछे-पीछे आ रहे थे। उन्होंने कहा कि वे 'शिकार' के समय मौजूद रहना चाहते हैं, हालाँकि उन्होंने मुझसे वादा किया कि वे गाँव में ही रहेंगे और हत्या के दौरान मुझे परेशान नहीं करेंगे।

दोपहर के भोजन का समय बीत चुका था, लेकिन बुखार की गर्मी में उत्सुकता के चलते मैंने भोजन छोड़ दिया और वन रक्षक के साथ पुराने मंदिर के खंडहरों की ओर पैदल चल पड़ा। हम उस जगह से आगे निकल गए जहाँ खून के निशान खो गए थे और एक मील से अधिक आगे जाने के बाद अचानक ज़मीन में एक गड्ढा दिखाई दिया। इस छोटे से गड्ढे के बीचोंबीच घनी झाड़ियों का एक द्वीप था, और विभिन्न प्रकार के पत्तों के बीच से झाँकते हुए मुझे एक छोटे मंदिर के धूसर खंडहर दिखाई दिए।

मैंने अपने साथी को एक ऊंचे पेड़ पर चढ़कर ऊपर ही रहने का निर्देश दिया, जिसे उसने तुरंत मान लिया। इसके बाद मैं दबे पांव खंडहरों की ओर बढ़ा, हर झाड़ी का सहारा लेते हुए। तेज धूप पड़ रही थी और मुझे कोई जल्दी नहीं थी।

उत्साह में आकर मुझे याद आया कि मैं पहरेदार से मंदिर की दिशा पूछना भूल गया था। यह बहुत ज़रूरी था, अगर मैं आदमखोर बाघ को अचानक पकड़ना चाहता था। यह ठीक नहीं होता कि मैं मंदिर के पीछे पहरा दे रहा होता और बाघ सामने से निकलकर झाड़ियों की आड़ में घूमकर मुझ पर पीछे से हमला कर देता।

अंततः, पास पहुँचने पर, मुझे मंदिर-पवित्रस्थल की ओर जाने वाला द्वार दिखाई दिया। यह थोड़ा मेरे दाहिनी ओर था और मलबे से आंशिक रूप से अवरुद्ध था। मैं भाग्यशाली था। अब मुझे बस इस द्वार के पास चुपके से जाना था, छुपना था, आदमखोर को बाहर निकालना था और उसे गोली मार देनी थी।

मैंने यही किया। धीरे-धीरे आगे बढ़ते हुए मैं मंदिर के बाहरी हिस्से में बने चौकोर कोने तक पहुँच गया। मुझे यह जगह अपने शिकार पर घात लगाने और छिपने के लिए बहुत उपयुक्त लगी। बाघ के बाहर आने पर मैं हमले से सुरक्षित रहूँगा। स्वाभाविक रूप से, वह सीधे मुझ पर हमला करेगा और मुझे अपने दाएं या बाएं देखने की ज़हमत नहीं उठाएगा।

लेकिन एक अड़चन थी। अगर मैं इमारत के एक कोने के पीछे छिप जाता, तो कौन मुझे रोक पाता कि बाघ मेरे पीछे दूसरे कोने में छिपकर मुझ पर पीछे से हमला न कर दे? शायद उस समय वह मंदिर में न हो, मुझे क्या पता। हो सकता है वह किसी झाड़ी की आड़ से मुझे देख रहा हो और साथ ही साथ मेरी तलाश भी कर रहा हो।

मैंने मंदिर के प्रवेश द्वार से कुछ ही फीट की दूरी तक दबे पांव जाने और दीवार से सटकर लेट जाने का फैसला किया। कम से कम इससे मुझे सामने कोने से झांकते समय पीछे से होने वाले हमले से बचाव मिल जाता। मैंने ऐसा ही किया और आखिरकार सही जगह पर पहुंच गया। अब बात बाघ को बाहर

निकालने की थी। मुझे उसे डराना नहीं था और न ही उसे गुस्सा दिलाना था। उसे जिज्ञासावश खुद ही बाहर आना था।

तो मैंने दूर से आती हुई बाघ की आवाज की नकल करते हुए धीरे से कराहने की कोशिश की। कुछ नहीं हुआ! शायद बाघ ने मुझे सुना ही नहीं, हालांकि मुझे इस बात पर यकीन करना मुश्किल था। मैंने फिर से कराहने की कोशिश की, और फिर भी कुछ नहीं हुआ। मैंने तीसरी बार कराहने की कोशिश की, और इस बार बहुत जोर से। वह दूर का बाघ बहुत तेजी से पास आ गया था! फिर भी कुछ नहीं हुआ और मैंने यह निष्कर्ष निकाला कि बाघ मंदिर में नहीं था। मैंने कोने से बहुत सावधानी से झाँका; फिर हिम्मत जुटाकर मैं टूटे हुए द्वार से अंदर घुस गया, कमर झुकाकर। अंदर आते ही मुझे एक सीलन भरी, सड़ी हुई गंध आई। प्रवेश द्वार पर जमी धूल में बाघ के पैरों के निशान नहीं थे। न ही वहाँ किसी इंसान के अवशेष मिले। न सिर्फ यहाँ कोई बाघ नहीं था, बल्कि महीनों से कोई बाघ यहाँ आया ही नहीं था। साफ था कि मुन्नेस्वरा मंदिर आदमखोर बाघ का छिपने का स्थान नहीं था।

हमें बहुत निराशा हुई कि मेरे दोस्त वेंकट ने अपने और मेरे लिए जो विशाल दोपहर का भोजन तैयार किया था, वह वन अधिकारी और रेंजर के लिए भी पर्याप्त था। इतना ही नहीं, थोड़ा सा भोजन बच भी गया, जो वन रक्षक के लिए नाश्ता करने के लिए काफी था।

कुछ देर बाद, वेंकट के बंगले के बरामदे के चबूतरे पर बैठकर सिगरेट पीते हुए, मुझे इस देरी पर गुस्सा आ रहा था जबकि मेरे दोस्त घटनाओं पर बातें करते रहे। मेरे लिए समय का बहुत महत्व था, लेकिन उनके लिए कुछ भी नहीं। भारत में यही एक चीज है जिस पर कभी कोई पाबंदी नहीं लगी; और न कभी लगेगी।

दोपहर की धूप में, एक लंबड़ी चरवाहा अपनी भैंसों को बाहर चरा रहा था। आदमखोर जानवर के खतरे को देखते हुए, उनके लिए भैंसों को जंगल में ले जाना बेहद जोखिम भरा था, जबकि इंजीनियर के क्वार्टर के परिसर में उगी थोड़ी-बहुत घास ही उसके लिए एक मामूली विकल्प थी। मेरी पाइप, वेंकट के सिगार और वन विभाग के हमारे दो मित्रों द्वारा पी जा रही सिगरेटों के धुएं और गंध से आकर्षित होकर, वह व्यक्ति इतना साहसी हो गया कि हमारे पास आकर सिगरेट मांगने लगा। वन विभाग के अधिकारी ने उसे एक सिगरेट फेंक दी और हम उसे भूल गए, क्योंकि हमने उसे बंगले के पीछे जाते हुए देखा, जहाँ हमने उसे और वन रक्षक को आपस में बात करते हुए सुना।

कुछ मिनट बाद पहरेदार पास आया। वह उत्साहित था, लेकिन अपने उच्च अधिकारियों की बातचीत में दखल देने से हिचकिचा रहा था।

'तो?' गार्ड ने बड़ी झिझक के साथ बुदबुदाया। 'महोदय, कृपया क्रोधित न हों, लेकिन उस बहिष्कृत लंबड़ी ने मुझे बताया है कि मुन्नेस्वरा मंदिर से एक मील आगे एक चट्टान की लटकती हुई चोटी है जिसके नीचे बाघ के छिपने के लिए पर्याप्त जगह है। वास्तव में, वह कहता है कि उसने एक शाम अपनी भैंसों के साथ लौटते समय उस चट्टान की चोटी पर एक बाघ को धूप सेंकते हुए देखा था, और यह सब उस

आदमखोर के हमारे बीच आने से पहले हुआ था। बेशक, वह भाग गया और उसके जानवर भी उसके पीछे चले गए। वह कहता है कि वह फिर कभी वहाँ नहीं गया।'

हमने बिना देरी किए लंबड़ी को बुलाया और उससे गहन पूछताछ की। उसका जवाब बिल्कुल वही था जो वन रक्षक ने हमें बताया था। उसने जो एकमात्र नई जानकारी दी, वह यह थी कि उसे पूरा यकीन था कि उसने जो बाघ देखा था और आदमखोर बाघ एक ही जानवर थे, क्योंकि उस समय बाघ ने आदमखोरी का रूप नहीं धारण किया था। कुछ ही मिनटों में मैं फिर से अपने रास्ते पर चल पड़ा, इस बार वन रक्षक कुछ अनिच्छा से मेरे साथ आया। लेकिन लंबड़ी का मूड बेहतर था।

जब हम मंदिर के पास से गुज़रे तब साढ़े चार बज रहे थे, और लगभग पाँच बजने ही वाले थे कि लंबडी ने मुझे लगभग दो सौ गज आगे ज़मीन में एक हल्की सी ऊँचाई दिखाई, जिसके ऊपर एक ढलान वाली चट्टान झाँक रही थी। उसने मुझे बताया कि हालाँकि हम जहाँ खड़े थे वहाँ से जंगल के कारण वह दिखाई नहीं दे रही थी, लेकिन जब मैं उसके पास पहुँचूँगा तो देखूँगा कि चट्टान से एक नीची लटकती हुई गुफा बनी हुई है, जिसका प्रवेश द्वार दो फुट से ज़्यादा ऊँचा नहीं है। उसके अनुसार, मानसून के दौरान बारिश के पानी के तेज़ बहाव के कारण ऐसा हुआ होगा, क्योंकि गुफा ज़्यादा गहरी नहीं थी। पिछली बार जब वह आया था तो लगभग उसी जगह पर था जहाँ हम अब खड़े थे और उसने चट्टान के ऊपर बाघ को पूरी लंबाई में लेटकर धूप सेंकते हुए देखा था। वह जितनी तेज़ी से भाग सकता था भाग गया था।

मैंने एक बार फिर अपने साथियों से पेड़ों पर चढ़ने और मेरे लौटने तक वहीं रहने को कहा, और उस दिन दूसरी बार मैं यथासंभव सावधानी से दबे पांव आगे बढ़ा।

इस बार मेरा आगे बढ़ना घने जंगल से होकर गुज़र रहा था, न कि खुले मैदान से, जैसा कि उस घाटी में था जहाँ पुराना मुन्नेस्वरा मंदिर खंडहर हो चुका था। मैं दाएं-बाएं और पीछे देखता रहा, ताकि पार्श्व और पीछे से होने वाले हमलों से खुद को बचा सकूं। चारों ओर सन्नाटा छाया हुआ था और मैं हर कदम पर एक पल के लिए नीचे देखता था। किसी भी हालत में मुझे किसी ऐसे पत्ते पर पैर नहीं रखना था जो सरसरा सकता हो या किसी ऐसी टहनी पर जो चटक सकती हो। तमाम सावधानियों के बावजूद, कभी-कभी मेरे शरीर का कोई हिस्सा किसी झाड़ी से टकरा जाता और हल्की सी रगड़ की आवाज़ आती।

मैंने मन ही मन कहा: 'मुझे दोबारा ऐसा नहीं करना चाहिए: बाघ मुझे सुन लेगा।'

मैं अब चट्टान के बहुत करीब था, लेकिन सामने की घनी झाड़ियों ने अभी भी उस खुले स्थान को छिपा रखा था जिसका ज़िक्र लंबड़ी ने किया था। मैं कुछ मिनटों के लिए रुक गया। शायद अगर मैं ध्यान से सुनूँ तो मुझे बाघ की आवाज़ सुनाई दे। मैंने ऐसा किया, लेकिन मुझे कुछ भी सुनाई नहीं दिया।

मैंने मन ही मन कहा, 'कुछ और कदम, और मैं देख पाऊंगा।'

मैंने नीचे देखा। सामने न कोई पत्ता था, न कोई टहनी, न कोई ढीला पत्थर। मेरे लिए एक और कदम आगे बढ़ाना सुरक्षित था।

मैंने वह कदम बढ़ाया, लेकिन दाहिनी ओर मौजूद एक छोटी सी झाड़ी को नज़रअंदाज़ कर दिया। उस झाड़ी में कांटे थे, और उन्हीं कांटों ने अपना काम कर दिया। वे मेरी पतलून से ज़ोर से रगड़े, एक पल के लिए चुभे, और फिर एक और रगड़ के साथ छूट गए।

इससे पहले कि मैं समझ पाता कि आदमखोर बाघ ने मेरी बात सुनी है या नहीं, उसने सुन ली थी। उसकी सहज प्रवृत्ति ने उसे आगाह कर दिया था कि जो प्राणी उसकी नज़रों से ओझल होकर पास आ रहा है, वह कोई पक्षी, खरगोश या कोई छोटा जीव नहीं है। वह भली-भांति जानता था कि उड़ने, चलने या रेंगने वाला कोई भी प्राणी उसकी भयानक उपस्थिति के इतने करीब आने की हिम्मत नहीं करेगा। इसलिए यह अवश्य ही कोई शत्रु है, और उससे भी बढ़कर, कोई ऐसा शत्रु जो उसका पीछा कर रहा है, यानी बाघ, जो निस्संदेह उसे मारने के लिए ही आया है।

उसकी सहज प्रतिक्रिया ने उसे यह संदेश दिया और उसने जरा भी देर नहीं की। बाघ ने आक्रमण किया, उसकी 'व्रूफ़! व्रूफ़! व्रूफ़!' की दहाड़ ने सन्नाटा तोड़ दिया।

मेरे सामने झाड़ियाँ हट गईं और उसका सिर और शरीर उनमें से तेज़ी से निकल गया, इससे पहले कि वह मुझे देख पाता। अंतिम छलांग लगाने से पहले वह एक पल के लिए रुका। शायद उसने कभी उम्मीद नहीं की थी कि भागने के बजाय उसे एक बेचारा इंसान मिलेगा। सिर और पंजे ज़मीन पर, पिछला हिस्सा और पूंछ ऊपर उठी हुई, बाघ थोड़ा हास्यास्पद लग रहा था।

मैंने उसके सिर पर दो बार गोली मारी। फिर मैं झट से एक तरफ कूद गया, क्योंकि किसी बाघ पर नज़दीक से गोली चलाने के बाद तुरंत एक तरफ कूदना कभी नहीं भूलना चाहिए, क्योंकि संभावना 99 में से 1 है कि वह सीधे दौड़ेगा, भले ही उसे अगले ही पल मरना पड़े। मरता हुआ बाघ वास्तव में आपको बहुत नुकसान पहुंचा सकता है।

आदमखोर ने वही किया जो मुझे उम्मीद थी, और मैंने उसके कंधे के पीछे दो बार और गोली मारी। जैसे ही वह तड़पा और फिर अकड़ने लगा, मैंने देखा कि वह काफी बूढ़ा जानवर था, शिकार करने की उम्र पार कर चुका था।

जिस कुली के शव की हम तलाश कर रहे थे, उसकी हड्डियाँ उथली गुफा के प्रवेश द्वार पर बिखरी पड़ी थीं। उन्हें कुतर-कुतर कर साफ कर दिया गया था। लाल चींटियाँ उन पर चिपके मांस के छोटे-छोटे टुकड़ों को चट कर रही थीं।

हम तीनों अंधेरे में वापस लौटे, इस बार निडर थे। बंगले में एक और दावत थी, जिससे मुझे बदहजमी हो गई। मंदिरों से बाघों के निकलने के सपने मुझे सुबह तक परेशान करते रहे। फिर वेंकट और वन विभाग के मेरे दोस्तों को विदाई दी।

मैं सुबह नौ बजे तक सैंटावेरी पहुँच गया था। डिक ने मुझे दोपहर का भोजन दिया, लेकिन मैंने मना कर दिया। पेट में अभी भी गुड़गुड़ाहट हो रही थी, मैंने जल्दी से रम का एक घूंट पिया। चार बजे तक मैं घर पहुँच गया, और अपना मिशन समय से पहले पूरा कर लिया था।

8

आंधी-तूफान अपने साथ क्या लेकर आया

मेरा बेटा डोनाल्ड खुद से बेहद खुश था। उसने अभी-अभी मैसूर राज्य राइफल एसोसिएशन द्वारा आयोजित क्ले-पिजन शूटिंग प्रतियोगिता में प्रथम स्थान के लिए संयुक्त रूप से बराबरी की थी।

भारत में हम लोग आमतौर पर क्ले-पिजन शूटिंग नहीं करते, कम से कम जहाँ तक मुझे पता है। शायद इसलिए कि यहाँ जंगली कबूतर इतने ज़्यादा हैं कि हमें क्ले-पिजन या उन्हें बनाने में इस्तेमाल होने वाले किसी भी पदार्थ से खेलने की ज़रूरत महसूस नहीं होती। ज़्यादा संभावना यही है कि अब तक किसी के पास इन छोटे-छोटे क्ले-पिजन को हवा में उछालने का उपकरण नहीं था। मैंने तो इन्हें पहले कभी नहीं देखा था। मुझे यकीन है कि मैं खुद भी इन्हें नहीं मार सकता। मैं तो राइफल से निशाना लगाने में माहिर हूँ, लेकिन बंदूक चलाने में लगभग बेकार। सालों पहले स्नाइप और बत्तख पर किए गए मेरे प्रयासों ने मुझे इस बात का पक्का सबूत दे दिया था।

वैसे तो डोनाल्ड बंदूक और राइफल दोनों से ही अच्छा निशाना लगाता है। मेरी तरह उसने भी कभी क्ले-पिजन शूटिंग का उपकरण नहीं देखा था, इसलिए उसे अभ्यास करने का मौका भी नहीं मिला था। लेकिन उसने प्रतियोगिता में भाग लिया और प्रथम पुरस्कार जीता। अब उसने सुझाव दिया कि इस अवसर को मनाने के लिए हमें जंगल की सैर पर जाना चाहिए।

जंगलों में? जश्न मनाने के लिए यह कितनी अजीब जगह है! लेकिन सच तो यह है कि हम दोनों को जंगल बहुत पसंद हैं। उनमें हमें घर जैसा लगता है; वहाँ हमें शांति मिलती है। इसलिए मुझे जाने के लिए ज्यादा मनाना नहीं पड़ा।

इस बार हमने बाघों को गोली मारने के बजाय रात में उनकी तस्वीरें खींचने का फैसला किया। डोनाल्ड ने अपने स्कूली दिनों के पुराने दोस्त, युवा दुधवाला से एक शानदार कैमरा और टॉर्च उधार ली थी, जो अब युवा नहीं था और जिसके बारे में मैंने अपनी पिछली किताब में एक कहानी सुनाई है।* डॉन लंबे समय से रात में फोटोग्राफी के सबसे कठिन और साथ ही साथ सबसे कुशल खेल में हाथ आजमाना चाहता था और यह उसका मौका था।

मैं आपको यह नहीं बताऊंगा कि हम किस जंगल में गए थे, क्योंकि यह दक्षिण भारत के उन गिने-चुने स्थानों में से एक है जहाँ अभी तक बाघ नहीं पाए जाते। कुछ उत्साही लोगों ने मेरी किताबें पढ़ी हैं और उन स्थानों पर गए हैं जिनका मैंने उल्लेख किया है, अपनी किस्मत आजमाने के इरादे से। भारतीय संरक्षण के दृष्टिकोण से, अब इन स्थानों का नाम न लेना आवश्यक हो गया है। क्योंकि दक्षिण भारत में बाघ, तेंदुआ और भालू बहुत कम होते जा रहे हैं। द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान भारत में विदेशियों के आगमन के कारण हुए भारी शिकार ने इनकी संख्या में भारी कमी ला दी। विशेष रूप से भारतीय शिकारी, जो स्पॉटलाइट

वाली जीपों का इस्तेमाल करते हैं, ने इस प्रक्रिया को और तेज कर दिया। फिर आया वह घातक कीटनाशक जिसके बारे में मैं पहले ही बात कर चुका हूँ, जिसे सरकार अभी भी ग्रामीणों की फसलों को विभिन्न कीटों से बचाने के लिए लगभग मुफ्त में उपलब्ध कराती है, लेकिन जिन किसानों के मवेशी या बकरियाँ बाघों और तेंदुओं द्वारा मारे जाते हैं, वे अपने मारे गए जानवरों के मांस पर इसे लगाने में जरा भी संकोच नहीं करते। लगभग हमेशा, इस घिनौने कृत्य में सफलता तब मिलती है जब शिकारी दूसरी बार भोजन के लिए लौटता है और उसे जहर दे दिया जाता है।

इसके परिणाम इतने भयावह रहे हैं कि, विशेष रूप से मैसूर राज्य में, बाघ, तेंदुआ, लकड़बग्घा, यहाँ तक कि सियार और कुछ हद तक गिद्ध भी इस रसायन के दुरुपयोग से लगभग विलुप्त हो गए हैं—देश भर में आत्महत्या, हत्या और आकस्मिक विष के कारण मनुष्यों की उच्च मृत्यु दर को तो हमने गिना ही नहीं है। आर्सेनिक, स्ट्राइकिन और जस्ता लवण जैसे पुराने और कहीं अधिक धीमी गति से असर करने वाले, कम घातक विष, जो केवल बहुत कम मात्रा में ही खरीदे जा सकते हैं, आसानी से मिल जाते हैं, लेकिन सरकार लगभग माँगने पर ही किसी को भी भारी मात्रा में घातक कीटनाशक दे देती है। यह खेदजनक है कि अधिकारी इस मामले की सच्चाई को देख नहीं पा रहे हैं, देख नहीं रहे हैं या देखना नहीं चाहते हैं।

तो हम 'बाघों की भूमि' की ओर चल पड़े, एक सुंदर सी झोपड़ी में जो हमने बांस और घास से बनाई थी। यह झोपड़ी उस छोटे से भूखंड पर बनी थी जिसे मैंने कई साल पहले 120 रुपये (लगभग सात पाउंड स्टर्लिंग) में खरीदा था। हमारी झोपड़ी के ठीक सामने 200 गज की दूरी पर एक नदी बह रही थी, जिसकी मौजूदगी दोनों किनारों पर उगे विशाल मुठी, इमली, जुमलम और जंगली आम के पेड़ों की घनी वृद्धि से स्पष्ट थी। जगह-जगह ऐसे क्षेत्र थे जहाँ बांस के घने झुंडों ने अन्य सभी प्रकार की वनस्पतियों को हटा दिया था, और उनके ऊंचे, पंखुड़ीदार पत्ते नदी के झरनों और तालाबों पर लटक रहे थे, जबकि सड़ते पत्तों की चादर से ढके अंधेरे और शांत मैदान पानी के किनारे तक फैले हुए थे।

मगरमच्छ को ऐसी जगहें बहुत पसंद होती हैं, क्योंकि हिरणों को भी ये जगहें अच्छी लगती हैं। बांसों का घना आवरण, उनकी छाया और सड़ते पत्तों की बिछी ज़मीन सांभर, नीलगाय और चित्तीदार हिरणों को दिन की तेज़ गर्मी में और रात में भी चुपचाप, सुरक्षित और अपेक्षाकृत सुगम रास्ता प्रदान करती है, ताकि वे ऊपर पहाड़ों की ठंड से बहकर आए ठंडे पानी से अपनी प्यास बुझा सकें।

किसी भी पेड़, बांस के झुंड या झाड़ी के पीछे छिपे विशाल मांसाहारी जानवरों से बचने की चिंता में, हिरण बिना समय गंवाए जितनी जल्दी हो सके पानी पीते हैं। उनकी नाक और कान बाघ की गंध या आवाज के लिए सतर्क रहते हैं, और उनकी आंखें पैंथर या क्रूर जंगली कुत्तों पर नजर रखती हैं। अक्सर, परिदृश्य का जायजा लेने की चिंता में, वे बदसूरत मगरमच्छ को नजरअंदाज कर देते हैं, जो वैसे भी अदृश्य होता है, जिसका सिर और शरीर नदी की सतह के नीचे और किनारे के बहुत करीब होता है।

और इस तरह एक सांभर पानी पीने के लिए अपना सिर नीचे करता है, और जैसे ही वह ऐसा करता है, मगरमच्छ पानी से बाहर आ जाता है। लंबे, आरी जैसे दांतों वाले क्रूर जबड़े सांभर के थूथन पर कस जाते

हैं, और लगभग उसी क्षण सरीसृप की चपटी, खुरदरी पूंछ पानी से बाहर निकलती है और अदम्य बल के साथ वार करती है, सांभर के पैरों या बगल पर प्रहार करती है और उसे असंतुलित करके तालाब में गिरा देती है।

सांभर के चेहरे पर अपनी पकड़ ढीली किए बिना, मगरमच्छ पीछे की ओर गहरे पानी में तैरता है, और अपने छटपटाते शिकार को अपने साथ घसीटता है। एक बार जब मगरमच्छ अपने शिकार को पकड़ लेता है, तो वह अविश्वसनीय गति से चक्कर लगाता है ताकि उसकी गर्दन तोड़ दे या उसे बेहोश कर दे, और अगले ही पल मगरमच्छ और सांभर दोनों तालाब की गहरी सतह के नीचे गायब हो जाते हैं और त्रासदी के दृश्य पर शांत बहते पानी में केवल बड़े-बड़े बुलबुले ही हलचल मचाते हैं।

लेकिन जंगल की नदी की तलहटी में कीचड़ और दलदल में चल रहे भयावह नाटक के बारे में हमें कुछ भी पता नहीं है। अपनी झोपड़ी के बरामदे में आरामदेह बेंत की कुर्सियों पर बैठे हम विशाल बांसों के तनों के टूटने की तेज़ आवाज़ सुनते हैं, जिन्हें नदी के दूसरी ओर चर रहे हाथियों का झुंड तोड़ रहा है। बीच-बीच में हाथी के बच्चे की हल्की सी चीख सुनाई देती है और किसी वयस्क हाथी के पाचन अंगों से गड़गड़ाहट जैसी धीमी आवाज़ आती है, या फिर किसी मादा हाथी की संतुष्ट गाय जैसी रंभाहट सुनाई देती है। सब कुछ शांत है और दूर से आती मोर की आवाज़ ऊपर से आती तीखी, बिल्ली जैसी म्याऊं की आवाज़ों के साथ बदलती रहती है, जो भूरे गिद्धों का जोड़ा जंगल की बड़ी बिल्लियों द्वारा छोड़े गए भोजन के टुकड़ों की निरंतर खोज में निकाल रहा है।

जंगल में ऊपरी तौर पर शांति थी, लेकिन हमारी झोपड़ी में कुछ कलह चल रही थी। हमारे अनुपस्थित रहने पर झोपड़ी की देखभाल के लिए नियुक्त किए गए चौकीदार और उसकी पत्नी के बीच अनबन हो गई। उसकी पत्नी नदी से एक पुराने मिट्टी के तेल के डिब्बे में दिन में दो बार पानी लाती थी। वहाँ बड़बड़ाहट और शिकायत की आवाजें गूंज रही थीं, और कभी-कभी एक कर्कश महिला की चीख सुनाई देती थी जो गिद्धों को भी शर्मिंदा कर देती थी।

डोनाल्ड ने संक्षिप्त लहजे में कहा, 'बूरा और उसकी पत्नी के बीच कुछ अनबन है। पता लगाना बेहतर होगा कि मामला क्या है। मैंने उसे दो बार कहा है, लेकिन वह अभी तक मेरे नहाने के लिए पानी नहीं लाई है।'

तो मैं उठा और रसोई में गया, जो हमारे घर के पीछे स्थित एक छोटी सी घास-फूस की झोपड़ी थी, लगभग बारह फुट चौकोर। वहाँ बूरा ज़मीन पर बैठा था, आलस में एक डंडी से आग को कुरेद रहा था, जबकि उसकी पत्नी उसके सामने बैठी सुपारी चबा रही थी और चारों ओर लाल थूक रही थी। वहाँ मेरा शिकारी थंगावेलु भी उत्सुकता से देख रहा था, जो मूल रूप से दूर क्लोज़पेट से आया था और डॉन की सेवा में शिविर-रसोइया, टेबल-बॉय, ड्रेसिंग-बॉय और लगभग हर तरह का काम करता था, सिवाय उस काम के जो ईमानदारी से कोई काम करता हो।

मैंने गुस्से से बूरा और उसकी पत्नी को बारी-बारी से घूरते हुए पूछा, 'तुम दोनों को क्या हो गया है?' फिर मैंने उस महिला से कहा, 'तुम्हारी गंदी भाषा बेहद घिनौनी है।'

कुछ देर तक सन्नाटा छाया रहा, फिर बूरा ने स्थानीय बोली में समझाया: "महोदय, मैंने तीन साल पहले इस बदचलन औरत से शादी की थी। उससे मेरे तीन बच्चे हैं, लेकिन वह उनकी देखभाल नहीं करती। न ही वह मुझे ठीक से खाना खिलाती है। वह आलसी होने के कारण काम नहीं करती, सारा दिन पान चबाती रहती है और और खरीदने के लिए पैसे मांगती है। कुल मिलाकर, वह बहुत खर्चीली है।"

जब मैंने उससे शादी की थी, तब मैंने उसके पिता को उसके लिए दस रुपये दिए थे। अब, बूढ़े जवाना ने मुझे अपनी सबसे छोटी बेटी पंद्रह रुपये में देने की पेशकश की है। वह सुंदर है और मेरा अच्छे से ख्याल रखेगी। इतना ही नहीं, जवाना मुझसे इस दुबली-पतली औरत को पाँच रुपये में लेने को तैयार है, जो मैंने उसके लिए दिए गए दाम का आधा है, इसलिए सौदा मुझे केवल दस रुपये में ही करना पड़ेगा। वह अपने तीन बच्चों को अपने पास रख सकती है - मुझे तो उन्हें बिल्कुल नहीं चाहिए!

बूरा की आगे की योजनाओं में उसकी पत्नी देवी की चीखती हुई आवाज ने बाधा डाल दी।

'अरे बूढ़े लंपट!' वो चिल्लाई। 'लक्ष्मी जैसी जवान लड़की से तुम्हें क्या चाहिए? वो तो सिर्फ पंद्रह साल की है, और वो भी बदतमीज़! तुम तो पहले से ही अधमरे हो, और उसके साथ एक हफ़्ते बिताने के बाद मुझे तुम्हारी थकी हुई हड्डियों को दफ़नाने की मशक्कत करनी पड़ेगी! और उस बूढ़े कमीने की बात ही क्या! वो इतना बूढ़ा है कि उसके दांत ही नहीं हैं! और उसे जवान लड़के पसंद हैं! मुझे कौन संतुष्ट करेगा? मैं तो अभी भी जवान और तंदुरुस्त हूँ!'

वाकई, यह एक पेचीदा मामला था! लेकिन एक राहत की बात भी थी। एक रुपये के मुकाबले एक शिलिंग और चार पेंस की विनिमय दर को देखते हुए, इस आपसी लेन-देन में शामिल लागत, चाहे आप इसे किसी भी तरह से देखें, बहुत अधिक नहीं थी। थंगावेलु ने चौड़ी मुस्कान के साथ संक्षेप में स्थिति का वर्णन किया, और अपनी सीखी हुई बटलर-शैली की अंग्रेज़ी में कहा:

"सर, मुझे ये जगह बहुत पसंद है। बहुत ही बढ़िया जगह है। यहाँ बहुत सारे शिकार, बाघ, हिरण हैं। औरतें भी बहुत हैं, और वो भी बहुत सस्ते दामों पर। यहाँ पाँच रुपये या दस रुपये में पत्नी मिल जाती है। फिर अगले महीने भी दे सकते हैं। जब ज़रूरत न हो, तो बदल सकते हैं। दूसरी पत्नी मिल जाती है। सिर्फ़ दस रुपये में! फिर तो वो औरत जाती ही नहीं। ज़्यादा पैसे चाहिए। सौ रुपये से कम में दूसरी पत्नी नहीं मिल सकती। सर, ये जगह बहुत ही बढ़िया है।"

थंगावेलु ने अर्थपूर्ण मुस्कान के साथ अपनी बात समाप्त की।

'थांगावेलु, उस कमीनी औरत से कहो कि मेरे नहाने का पानी लाए,' डोनाल्ड बरामदे से दहाड़ा। तभी कुनमारी, जो स्थानीय शिकारी था, वहाँ आ पहुँचा और हमारे द्वारा माँगी गई जानकारी लेकर आया। वह सुबह से ही जंगल में खोजबीन कर रहा था और उसने बताया कि लगभग आधा मील दूर एक सूखे नाले के किनारे एक बाघ और एक तेंदुआ आए थे। तेंदुआ वहाँ का पुराना निवासी लग रहा था क्योंकि कुनमारी ने

बताया कि उसके पुराने और नए, दोनों तरह के पदचिह्न कई बार दिखाई दिए थे। बाघ जाहिर तौर पर टहल रहा था और कुछ समय तक उसके उस रास्ते से लौटने की उम्मीद नहीं की जा सकती थी।

इसलिए संभावना यही थी कि अगर हम किसी वस्तु को चारा बनाकर बाद में उसकी तस्वीर खींचने की कोशिश करते, तो शायद उसे बाघ नहीं बल्कि पैंथर मार डालता। हम तो सिर्फ बाघ ही पकड़ना चाहते थे; हमने कुनमारी को यह बात फिर से बताई और उनसे कहा कि वे दोबारा जाकर ऐसी जगह ढूंढें जहां पैंथर की बजाय बाघ अक्सर आता हो।

उस दोपहर वह सफलता की खबर लेकर लौटा। उसने बताया कि नदी के उस पार एक नियमित पगडंडी थी, जिस पर बाघ के बच्चे, बूढ़े और नए, दोनों ही तरह के, अक्सर आते-जाते थे। इसके अलावा, वहाँ एक सुविधाजनक पेड़ था, जो हाथियों के दखल से सुरक्षित था, जहाँ से हम समय आने पर आसानी से तस्वीरें ले सकते थे। बाघ उस रात या अगली रात उसी रास्ते से ज़रूर गुज़रेगा।

हमने चार भैंसें चारा के तौर पर मंगवाई थीं और उनमें से दो को बांधने का फैसला किया—बड़ी भैंस को नदी के उस पार बाघों के आने-जाने वाले रास्ते पर और छोटी भैंस को उससे चार फर्लांग दूर नाले में, जहाँ पैंथर के आने की पूरी संभावना थी। थंगावेलु कुनमारी के साथ दोनों जानवरों को बांधने में मदद करने गया, जबकि डॉन और मैं नदी किनारे शाम की सैर पर निकल गए।

यह जंगल अब भी वन्यजीवों के लिए स्वर्ग समान था और हमने चित्तीदार हिरणों के बड़े-बड़े झुंड देखे, साथ ही काफी संख्या में सांभर और नीलगाय भी नदी किनारे चर रहे थे। नदी के मोड़ पर हमें एक नर हाथी शाम को पानी पीते हुए दिखाई दिया। चूंकि हम शिकार पर नहीं थे, इसलिए हमारे पास कोई हथियार नहीं थे। एक-दो पल के लिए नर हाथी गुस्से में दिखा; निस्संदेह उसे हमारी दखलअंदाजी पसंद नहीं आई। फिर उसने अपना इरादा बदल लिया, मुड़ा और धीरे-धीरे घने पेड़ों की ओर चला गया। यह देखकर आश्चर्य हुआ कि इतना बड़ा जानवर इतनी खामोशी से कैसे चल सकता है।

अगली सुबह कुनमारी शिकारगाह की ओर गई और थंगावेलु नाले की ओर, यह देखने के लिए कि रात में हमारे चारे का क्या हुआ था। जंगल में अक्सर अप्रत्याशित घटनाएँ घटित होती हैं, और वे जो रिपोर्ट लाए, वे फोटोग्राफी की दृष्टि से आश्चर्यजनक होने के साथ-साथ उत्साहवर्धक भी थीं। एक बाघ, कोई तेंदुआ नहीं, उस नाले के किनारे आया था जहाँ हमने छोटा चारा बाँधा था, यह सोचकर कि तेंदुआ उसे मार डालेगा। उसने आसानी से रस्सी तोड़ दी और भैंस के बच्चे को थोड़ी दूर एक खाई में ले गया। वहाँ उसने सिर और चारों खुरों को छोड़कर बाकी सब खा लिया। झाड़ियों में छिपे होने के कारण गिद्धों को अवशेष नहीं मिले।

आश्चर्य की बात यह थी कि बाघ की अपेक्षा नहीं, बल्कि एक पैंथर नदी पार करते हुए शिकार के रास्ते पर आ गया था। उसने उस बड़े भैंस के बच्चे को मार डाला जिसे हमने बाघ के लिए बांधा था। जाहिर है, उसने बड़ी मुश्किल से उसे मारा होगा, क्योंकि कुनमारी ने संघर्ष के निशान देखे थे। लेकिन पैंथर रस्सी को तोड़ने में सक्षम नहीं था। इसलिए उसने भैंस के बच्चे का एक छोटा सा हिस्सा खा लिया और बाकी को रास्ते

के किनारे छोड़ दिया, जहाँ हम चाहें तो रात को लौटते समय रास्ते के किनारे लगे बड़े पेड़ से उसकी आसानी से तस्वीर ले सकते हैं।

डॉन बहुत खुश था। आखिरकार उसे अपने बाघ की तस्वीर मिल ही जाएगी। स्वाभाविक रूप से उसने नाले में बांधे गए छोटे बछड़े के बचे-खुचे अवशेषों, जिनमें सिर और पैर ही बचे थे, के पास बैठने का फैसला किया। यह सुनिश्चित करने के लिए कि बाघ दिखाई दे, उसने पास ही में अपना तीसरा चारा बांधने का प्रस्ताव रखा, कहीं ऐसा न हो कि बाघ पहले वाले के अवशेषों को इतना तुच्छ समझे कि दोबारा आने की जरूरत ही न समझे।

वैसे, मैं यह बताना चाहूंगा कि यह तरीका मुझे बाघ और तेंदुआ दोनों के शिकार में सबसे कारगर लगा है। आखिर, वे भी हमारी ही तरह जीव हैं; उनमें भी हमारी ही तरह अंतर होते हैं और उनमें भी हमारी कुछ कमियां तो होती ही हैं। इनमें सबसे आम है लालच। कुछ तेंदुआ और बाघ अपने शिकार के पास दोबारा शायद ही कभी लौटते हैं। कुछ तभी लौटते हैं जब वे इलाके का अच्छी तरह जायज़ा ले लेते हैं और खुद को सुरक्षित महसूस करते हैं। इसी जायज़ा लेने के दौरान वे अक्सर शिकारी को देख लेते हैं, जो पेड़ पर या कहीं और छिपा होता है। इस लालच का फायदा उठाने के लिए, मैंने पाया है कि दूसरे जीवित शिकार को अधखाए हुए शिकार के पास बांध देना अच्छा रहता है, और अगर मुमकिन हो तो दोनों के बीच में बैठना चाहिए; या अगर यह मुमकिन न हो, तो पुराने अधखाए हुए शिकार की बजाय नए शिकार के ऊपर बैठना चाहिए।

होता ये है कि बाघ या तेंदुआ अपने पहले शिकार के स्थान पर लौटता है, लेकिन शव के पास तुरंत नहीं जाता। उसे संदेह होता है और वह उस जगह के चारों ओर कई चक्कर लगाता है ताकि उस व्यक्ति की मौजूदगी का पता लगा सके जिसके बारे में उसकी अंतरात्मा चेतावनी देती है कि वह कहीं छिपा हुआ है। इसी चक्कर के दौरान उसे नया जीवित शिकार दिखाई देता है। कोई अनुमान लगा सकता है कि इससे बाघ और भी अधिक सतर्क हो जाएगा। आखिर एक जीवित जानवर उस जगह के इतने करीब कैसे आ गया जहाँ उसने एक मृत और लगभग पूरी तरह से खाया हुआ शिकार छोड़ा था? लेकिन आपको याद रखना होगा कि बाघ और तेंदुआ मनुष्यों की तरह तर्क नहीं कर सकते। वे सहज प्रवृत्ति के प्राणी हैं, भले ही उनकी यह सहज प्रवृत्ति अक्सर अचूक रूप से कारगर हो।

इसका तात्कालिक परिणाम यह होता है कि शिकार की तलाश में निकला बाघ या तेंदुआ जीवित जानवर को मार डालता है। इसमें कोई संदेह नहीं कि ताजा मांस की संभावना दिनभर धूप और गिद्धों के संपर्क में रहने वाले सड़ते हुए मांस की तुलना में कहीं अधिक आकर्षक होती है, और इस प्रकार बाघ या तेंदुआ स्वयं ही अपनी मृत्यु का कारण बनता है।

मेरे पास रात में फोटोग्राफी के लिए उपयुक्त कैमरा नहीं था, और चूंकि हम शिकार पर नहीं जा रहे थे और हमारे पास कोई हथियार भी नहीं थे, इसलिए नदी के उस पार बड़े पेड़ पर बैठकर किसी पैंथर को भोजन करते हुए सुनने का कोई फायदा नहीं था। इसलिए मैंने रात का पहला हिस्सा अपनी बांस की झोपड़ी

के बरामदे में बेंत की कुर्सी पर आराम से बैठकर जंगल की आवाज़ें सुनने में बिताने का फैसला किया; और बाकी का हिस्सा बिस्तर पर बिताया।

इलाके में रुक-रुक कर बारिश हो रही थी, इसलिए हममें से हर कोई अपने साथ एक तिरपाल की चादर लाया था ताकि ज़रूरत पड़ने पर मचान पर छत के तौर पर इस्तेमाल कर सकें। मैं इस तरीके की बिल्कुल भी सलाह नहीं देता। पहली बात तो यह है कि इससे मचान बहुत आसानी से नज़र आ जाता है और उसे अतिरिक्त छलावरण की ज़रूरत पड़ती है। दूसरी बात, बारिश शुरू होने पर छत पर पानी की आवाज़ इतनी तेज़ होती है कि कुछ सुनाई नहीं देता। इससे भी बुरा यह है कि पचास गज नीचे ज़मीन पर मौजूद कोई भी जीव ऊपर हो रहे शोर को सुने बिना नहीं रह सकता। वह ऊपर देखता है, मचान को देख लेता है और जान जाता है कि आप वहाँ हैं। लेकिन मूसलाधार बारिश में पूरी रात पेड़ पर बैठे रहना कोई मज़ाक नहीं है, चाहे आपने ओवरकोट या वाटरप्रूफ केप ही क्यों न पहना हो। बारिश में किसी भी चीज़ के अंदर घुसने की अजीब आदत होती है।

डॉन ने तिरपाल का उपयोग करने का फैसला किया और मैं कुनमारी और थंगावेलु के साथ-साथ बुंडा नामक एक अन्य व्यक्ति के साथ उसकी मचान में मदद करने के लिए चला गया।

नाले के एक किनारे पर एक रीठा का पेड़ था और डॉन ने उस पर बैठने का फैसला किया। यह उस खाई से लगभग तीस गज की दूरी पर था जिसमें हमारे पहले शिकार का सिर और पैर पड़े थे और यहाँ से नाले के दोनों ओर का नजारा दिखाई देता था। इस पेड़ का एक तीसरा फायदा भी था। बाघ, पिछली रात हमारे शिकार का पीछा करते हुए, एक तीसरे नाले से होकर आया था, जो कि एक उथली खाई जैसी थी, और रीठा का पेड़ ठीक उस जगह के सामने था जहाँ यह खाई मुख्य नाले से मिलती थी। इसलिए यह रणनीतिक रूप से एक बेहतरीन जगह पर था और खेल के सभी नियमों के अनुसार, अगर किस्मत अच्छी रही तो बाघ कहीं न कहीं दिखाई देगा और डॉन को एक अच्छी तस्वीर लेने का मौका मिल जाएगा।

हमारे तीनों साथियों ने मचान को बड़ी कुशलता से तैयार कर दिया। आसमान में बादल छाने लगे थे, इसलिए डॉन ने मचान के चबूतरे के ऊपर तिरपाल बिछाने का फैसला किया। तिरपाल को एक लकड़ी के टुकड़े पर इस तरह बिछाया गया था कि दोनों तरफ ढलान बन जाए और पानी आसानी से बह जाए। तिरपाल को पत्तियों और शाखाओं से इस तरह छिपा दिया गया था कि वह बिल्कुल भी दिखाई न दे। हम चारों शाम करीब 5 बजे वहां से चले गए और डॉन को कैमरा देकर एक रोमांचक रात की तैयारी में जुट गए।

मैं पहले आपको वह बात बताऊंगा जो मैंने हमारी बांस की झोपड़ी से सुनी, और फिर डॉन को कहानी का अपना हिस्सा बताने दूंगा।

थंगावेलु ने जल्दी ही खाना परोस दिया, और फिर मैं बरामदे में बेंत की कुर्सी पर बैठकर पाइप पीते हुए रम और नींबू का रस पी रहा था। अंधेरा अभी-अभी हुआ था और जंगल उस पल शांत था। नदी के उस पार से चित्तीदार हिरणों की 'ऐओ! ऐओ! ऐओ!' की आवाज़ आई, वहीं पास के किनारे पर बैठा एक नर

सांभर कर्कश आवाज़ में 'धंक! धंक! ऊ-ओंक!' कहकर चेतावनी दे रहा था, और थोड़ी दूर पर बैठी एक मादा सांभर ने खतरे का संकेत सुना और थोड़ी ऊँची, लेकिन उतनी कर्कश नहीं, आवाज़ में जवाब दिया 'वाँक! वाँक! वाँक!'

मेरे दाहिनी ओर अंधेरे में दिखाई दे रहे बरगद के पेड़ की चोटी पर बैठे लंगूर बंदरों का झुंड बहुत पहले ही सो चुका था। सिवाय पहरेदार के, जो अपनी ज़िम्मेदारी की भावना से पूरी तरह जागा हुआ था। बाद में, जब उसे नींद आने लगी, तो उसने अपने सहायक को जगाया, जो अगले नर लंगूर के जागने का समय आने तक पहरा देता रहा, और इसी तरह रात भर और दिन भर चलता रहा, क्योंकि नर लंगूरों में अनुशासन और ज़िम्मेदारी की अद्‌भुत भावना होती है। वे बारी-बारी से सबसे ऊंचे पेड़ की चोटी पर बैठकर पहरेदार का काम करते हैं, संभावित खतरे पर नज़र रखते हैं और मादाओं और बच्चों को अचानक हमले से बचाते हैं।

लंगूर चौकीदार ने सांभर और चित्तीदार हिरण की आवाज सुनी और अपने कबीले के सदस्यों को जगाने के लिए जोर से चिल्लाया: 'हर्र! हा-हर्र! हर्र! हा-हर्री!' मैं कल्पना कर सकता था कि मादा लंगूरें अपने बच्चों को अपनी छाती से लगाए हुए बरगद के पेड़ पर बैठी रात के अंधेरे में नीचे झाँक रही थीं, ताकि हत्यारे का पता लगा सकें और यह अनुमान लगा सकें कि वह कहाँ से उन पर हमला कर रहा होगा।

चित्तीदार हिरण और सांभर की आवाज़ों से मैं बाघ के आने की दिशा का पता लगा सकता था। वह नदी पार करके पानी पी रहे एक हिरण को डराकर भाग गया। 'ख़्र! ख़्र!' वह छोटा जानवर चिल्लाया। उसकी आवाज़ हिरण प्रजाति की किसी भी अन्य आवाज़ से बिल्कुल अलग है। यह कुत्ते के कर्कश भौंकने जैसी लगती है और इसी कारण इस छोटे से जीव को, जिसे मुंटजैक भी कहा जाता है, बोलचाल की भाषा में इसी नाम से जाना जाता है।

अब बाघ का चेहरा तिरस्कारपूर्ण था। वह जानता था कि उसका भेद खुल गया है और अब अपनी हरकतों को छुपाने की कोशिश करना उसके लिए अपमानजनक होगा। 'ऊ-ऊंग!' की दहाड़ उसने लगाई, और फिर अपनी आवाज़ को थोड़ा नरम लेकिन गहरी 'आउंग! उघ; उघ-आ!' में बदल दिया। उसकी आवाज़ में न तो गुस्सा था और न ही वह भूखा था।

जैसे जादू से, उसकी दहाड़ की आवाज़ सुनते ही जंगल में गहरी शांति छा गई। हिरण और बंदर थम गए। नदी किनारे बैठे मेंढक भी टर्राना बंद कर दिए। सभी जीव-जंतु, बड़े और छोटे, जान गए कि जंगल का राजा शिकार की तलाश में निकला है और वे डर से कांप रहे थे। केवल एक अकेला लकड़ी का शेर, जो हमारे बांस के केबिन के शौचालय में पानी के बर्तन के पीछे आराम से बैठा था, उस धारीदार आतंक की चुनौती को नज़रअंदाज़ कर रहा था। शायद उसने सुना ही न हो। शायद उसे बाघ जैसे बड़े और भद्दे जीवों से कोई मतलब न हो। शायद उसकी समस्या कुछ और ही थी।

फिर नदी के किनारे सन्नाटा टूट पड़ा: ‘हा-आह! हा-आह! हा-आह!’

पैंथर बहुत पहले लौट आया था और निस्संदेह हमारे बड़े शिकार को खाकर अपना पेट भर चुका था। इस सारी हलचल ने उसे परेशान कर दिया था, जबकि उसके बड़े, गुस्सैल और दबंग चचेरे भाई, बाघ की दहाड़ों ने उसे बेचैन और चिड़चिड़ा बना दिया था। वह उस विशाल आतंक की निकटता से नाराज़ था, लेकिन उसे समझ नहीं आ रहा था कि क्या करे। गुस्से में वह बार-बार 'हा-हा! हा-आह! हा-आह!' दोहरा रहा था, यह तय करते हुए कि वहीं रुके या चुपके से निकल जाए।

मुझे पता था कि डॉन ने भी ये सारी आवाजें सुनी होंगी, और वह बाघ की तस्वीर लेने की तैयारी कर रहा होगा, जो इस समय तक उस भैंस के बच्चे के अवशेषों के पास होना चाहिए जिसे उसने पिछली रात मारा था, और उस जीवित चारे के पास जिसे हमने पास में ही बांध रखा था।

जंगल में फिर से सन्नाटा छा गया। नदी किनारे मेंढक फिर से टर्राने लगे और रात और भी गहरी होती चली गई। मैंने आसमान की ओर देखा और सोचा कि मुझे तारे क्यों नहीं दिख रहे। कुछ ही पल बाद मुझे इसका जवाब मिल गया जब हमारी झोपड़ी के पीछे पहाड़ियों की श्रृंखला में गरज सुनाई दी। बार-बार बिजली चमकी और आसमान से बिजली हम पर बरसने लगी, हर गरज से पहले चमकीली बिजली की लकीरें आसमान में ऐसे फैल रही थीं मानो किसी विशाल नक्शे पर नदियाँ बनी हों।

फिर हवा चलने लगी। दूर से उसकी गरज सुनाई दे रही थी, जैसे वो पहाड़ी से नीचे आ रही हो, मानो किसी भयानक चीख की तरह, उसकी आवाज़ लगातार तेज़ होती जा रही हो, जब तक कि वो हमारे जंगल तक नहीं पहुँच गई। मुझे पेड़ों के ज़ोर से हिलने की आवाज़ सुनाई दे रही थी, उनकी डालियाँ दर्द से टकरा रही थीं, हालाँकि अँधेरा होने के कारण कुछ भी दिखाई नहीं दे रहा था, और हमारी झोपड़ी के बाँस के खंभे हिल रहे थे, तनाव में थे, चरमरा रहे थे और कराह रहे थे। मुझे लगा कि छप्पर की छत उड़ जाएगी।

फिर अचानक, जितनी तेज़ी से हवा आई थी, उतनी ही तेज़ी से चली गई। मैं उसे दूर जंगल की चोटियों के पार क्षितिज तक जाते हुए सुन सकता था। लेकिन बिजली की तीव्रता बढ़ती गई, और गरज की आवाज़ें और भी नज़दीक और तेज़ होती गईं। अचानक एक विशाल पेड़ पर बिजली गिरी। वह चीर गया और एक तेज़ रोशनी से पूरा जंगल दिन के उजाले की तरह जगमगा उठा, हमारी झोपड़ी के इतने करीब कि बिजली की गड़गड़ाहट पल भर में सुनाई दी। मुझे अपने सोप-नट के पेड़ पर बैठे डॉन की याद आई और मैं चिंतित हो गया। हालाँकि, वह पेड़ न तो बहुत बड़ा था और न ही बहुत ऊँचा, और उस पर बिजली गिरने की संभावना भी कम ही थी, क्योंकि वहाँ चुनने के लिए कई ऊँचे पेड़ मौजूद थे।

बारिश झोपड़ी तक पहुँच गई और एक पल के लिए तो ऐसा लगा जैसे पहाड़ी से नीचे की ओर आ रही हो, झोपड़ी तक पहुँचने से बहुत पहले ही। मैंने सोचा, डोनाल्ड को बहुत खुशी हुई होगी कि उसने अपनी मचान के ऊपर तिरपाल की छत लगाने का फैसला किया।

बारिश झोपड़ी तक पहुँच गई और एक पल के लिए गिरते पानी के शोर में गरज भी दब गई। मेरे ऊपर घास की छत से सरसराहट की आवाज़ आ रही थी, और सौ जगहों से पानी टपक रहा था, टपक रहा था और हमारे सामान पर हर दिशा में बह रहा था। जो कुछ ही पल पहले एक आरामदायक झोपड़ी थी, वह

अब पानी से लथपथ एक गड्ढा बन गई थी, फर्श पर पानी के गड्ढे थे और दूर-दूर तक कोई सूखी जगह नज़र नहीं आ रही थी। मैं बैठा रहा, मन ही मन उन मज़दूरों को कोस रहा था जिन्होंने छत का इतना घटिया काम किया था।

कोलाहल से जागकर, थंगावेलु (शायद वह सपने में देख रहा था कि दर्जन भर पत्नियां पांच रुपये प्रति पत्नी के हिसाब से बिक रही हैं), अंदर भागा आया, अपने चारों ओर भीगी हुई चीजों को देखकर अचंभित हुआ, और फिर उनके लिए आश्रय खोजने की व्यर्थ कोशिश में इधर-उधर भटकने लगा।

एक घंटे तक भारी बारिश जारी रही और फिर हल्की बूंदा-बांदी में बदल गई।

'क्रैक-कर! क्रैक-कर! क्रैक-कर! क्रैक-कर!' मेंढकों की आवाज़ अब बदल गई थी। नदी और आसपास के छोटे-छोटे तालाबों से निकल रही हज़ारों मेंढकों की यह मिलन की पुकार थी, जो मानसून के आगमन का स्वागत कर रही थीं। मैं उठा और सोने की तैयारी करने लगा। मुझे लगा कि बांस के पलंग के ऊपर की बजाय उसके नीचे ही सूखी जगह है।

उसी क्षण मुझे एक क्रोधित हाथी की चीख सुनाई दी। यह नाले और डॉन के मचान की दिशा से आ रही थी। थंगावेलु, जो अभी भी इधर-उधर भटक रहा था, उसने भी यह आवाज़ सुनी। वह रुक गया और हम दोनों ने चिंता से एक-दूसरे को देखा। फिर हम दोनों बेहतर ढंग से सुनने के लिए भीगे हुए बरामदे में चले गए।

हाथी फिर से चीखा। यह बात बिल्कुल स्पष्ट थी कि चीख नाले से आ रही थी। तभी मुझे दूर से कुछ चिल्लाने की आवाज़ सुनाई दी, जो लगातार बारिश की वजह से धीमी थी, लेकिन इसमें कोई शक नहीं था कि यह किसी इंसान की आवाज़ थी, जिसके शब्द मैं समझ नहीं पा रहा था। आवाज़ उसी दिशा से आ रही थी जहाँ से हाथी की चीख आई थी। नाले में डोनाल्ड के अलावा और कौन हो सकता था?

फिर अचानक मुझे सच्चाई का एहसास हुआ। मेरा बेटा खतरे में था: हाथी उसे मचान से बाहर खींचने की कोशिश कर रहा था, और वह उसे भगाने की कोशिश कर रहा था। और वह निहत्था था।

मुझे इस स्थिति की विडंबना समझ में आई और मैंने अपने अति आत्मविश्वास और लापरवाही के लिए खुद को कोसा। मुझे बेहतर पता होना चाहिए था; उस लड़के की कोई गलती नहीं थी। हम निहत्थे थे। क्योंकि हम अपने साथ कोई हथियार नहीं लाए थे, उन्हें पीछे छोड़ आए थे क्योंकि हम फोटोग्राफी के लिए आए थे और गोली चलाने के लालच में नहीं पड़ना चाहते थे!

एक हाथ में दो लालटेन में से बड़ी वाली और दूसरे हाथ में चंदन की लकड़ी की छड़ी लेकर मैं दौड़ पड़ा और भीगे हुए जंगल में लड़खड़ाते हुए जितनी तेज़ी से हो सके नाले तक आधा मील का रास्ता तय करने लगा। मुझे ठंड का ज़रा भी एहसास नहीं था और न ही इस बात का कि मैंने सिर ढका हुआ था और मेरे पास कोट नहीं था, क्योंकि बारिश ने मुझे पूरी तरह भिगो दिया था।

मैं काफी दूर तक पूरी ताकत से भागा, तभी मुझे अपने पीछे एक और लालटेन हिलती हुई दिखाई दी। वह थंगावेलु था, जो दूसरी लालटेन लिए खड़ा था। वह डोनाल्ड से बहुत प्यार करता था, और मैं उसकी

मौजूदगी के लिए आभारी था। उस भयानक रात में, घोर अंधेरे में और निहत्थे, कोई और नौकर उस जगह जाने की हिम्मत नहीं करता, जहाँ एक जंगली हाथी गुस्से में उत्पात मचा रहा था।

फिर हमें चीरने-फाड़ने जैसी आवाज़ सुनाई दी, और एक ज़ोरदार धमाका हुआ। मैं समझ गया कि हाथी ने उस पेड़ को गिरा दिया है जिस पर डॉन की मचान थी। मैंने तेज़ी से दौड़ने की कोशिश की और थंगावेलु मेरे साथ-साथ दौड़ने लगा। लेकिन मैं उसकी बराबरी नहीं कर पाया, इसलिए हम दौड़ते हुए ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाने लगे, ताकि हाथी का ध्यान हमारी ओर आकर्षित हो और वह डोनाल्ड से दूर चला जाए।

डोनाल्ड खुद इस कहानी का अपना हिस्सा इस तरह बताते हैं: 'मुझे नहीं पता कि मेरे पिता अपनी किताबें लिखते समय मुझे उनमें क्यों शामिल करते हैं। एक तो मुझे अपने बारे में लिखना और बात करना बिल्कुल पसंद नहीं है। असल में, अब मुझे यह पूरी घटना "छोटी सी बात का बतंगड़" लगती है।'

पिताजी ने बताया था कि यह सब कैसे शुरू हुआ और मैं दुधवाला की टॉर्च और कैमरे के साथ रीठा के पेड़ पर कैसे बैठा था, ताकि उस बाघ की तस्वीर ले सकूँ जिसने पिछली रात हमारे चारे को मारकर खा लिया था। इतना कम बचा था कि मैंने पास में ही एक ज़िंदा रीठा बाँधने का फैसला किया ताकि जब बाघ आस-पास घूमे, जैसा कि बाघ आमतौर पर अपने शिकार के पास जाने से पहले करते हैं, तो उसे लुभा सकूँ।

मचान आरामदायक था; पहले बछड़े का सिर और पैर मेरे बाईं ओर लगभग तीस गज की दूरी पर एक खाई में पड़े थे, जबकि मेरे नीचे वह नाला था जिसके बारे में हमारे शिकारी कुनमारी ने बताया था कि यह बाघों और तेंदुओं का नदी की ओर जाने का नियमित मार्ग है। इसमें एक छोटी जलधारा प्रवेश करती थी जिसका उपयोग बाघ ने पिछली रात किया था। मेरे दाईं ओर छाया में, और स्पष्ट रूप से दिखाई दे रहा था, हमारा तीसरा चारा—एक जीवित—एक और भैंस का बछड़ा था। दूसरे चारे को पिछली रात नदी के उस पार एक तेंदुआ ने मार डाला था।

अंधेरा छाते ही हिरण और लंगूर बंदरों ने खतरे की चेतावनी भरी आवाजें निकालीं और मुझे पता चल गया कि कोई बाघ या तेंदुआ आसपास है—जानवरों की आवाज सुनकर तो यही लग रहा था कि शायद बाघ ही होगा। तभी बाघ ने काफी पास दहाड़ मारी, और थोड़ी देर बाद ही मुझे दूर से एक तेंदुआ की दहाड़ सुनाई दी। संभवतः वही तेंदुआ था जिसने हमारे दूसरे शिकार को मारा था।

‘मैं अपनी तस्वीर लेने के लिए तैयार हो गया। फिर भी, मेरी इच्छा थी कि कैमरे की जगह मेरे हाथों में राइफल होती। बूढ़ा आदमी हमेशा गोली चलाने के बजाय तस्वीरें खींचने की बात करता है, और मुझे लगता है कि वह सही है, लेकिन फिर भी मन में यह इच्छा थी। मुझे अब बहुत तीव्र इच्छा हो रही थी कि काश मेरे पास मेरी .423 राइफल होती।’

अगली आवाज़ जो मैंने सुनी, वह एक ज़ोरदार धमाका और ज़िंदा शिकार की चीख थी। मैं जानता था कि यह एक बाघ था, पैंथर नहीं, जो बछड़े को मार रहा था, क्योंकि पैंथर अपने शिकार का गला घोंट देता है, जो स्वाभाविक रूप से संघर्ष करता है। संघर्ष की कोई आवाज़ नहीं थी, क्योंकि बछड़ा पहले ही गर्दन टूटने से मर चुका था।

मैंने कैमरा नीचे और दाईं ओर, जीवित शिकार की दिशा में घुमाया और स्विच बटन दबा दिया। एक तेज़ रोशनी चमकी और बाघ ने चौंककर "ग्र-आ-आहम!" की आवाज़ निकाली। इसके बाद झाड़ियों के सरसराने की हल्की सी आवाज़ आई। मैं समझ गया कि वह चला गया है।

'मेरे पास करने के लिए और कुछ नहीं बचा था, इसलिए मैं एक अच्छी तस्वीर की उम्मीद में संतुष्ट होकर सोने के लिए लेट गया। मचान थोड़ा सख्त था और मेरी इच्छा थी कि मैं वापस अपनी बांस की झोपड़ी में होता।'

उसके बाद मुझे नींद आ गई होगी, क्योंकि मैं अचानक चौंककर उठा तो देखा कि तेज़ हवा में पेड़ के झुकने और ज़ोर से हिलने से मेरी मचान बुरी तरह झूल रही थी। रात बेहद अंधेरी थी, तभी बिजली चमकी और उसके तुरंत बाद गरज की तेज़ आवाज़ आई, जिससे मुझे पता चला कि हम एक भयंकर तूफान में फंसने वाले हैं। पेड़ से डालियाँ और पत्तियाँ टूटकर मेरे चेहरे के पास से गुज़र रही थीं, जबकि मेरी तिरपाल की छत आधी उड़ गई थी। तिरपाल का एक सिरा टिका रहा, वह कोना जिसे हमने पेड़ के तने से बाँधा था, जबकि दूसरा सिरा हवा में ज़ोर से हिल रहा था, डालियों से टकराकर ज़ोरदार आवाज़ कर रहा था।

फिर अचानक हवा थम गई और बारिश शुरू हो गई। यह बारिश से ज़्यादा झरने जैसी थी। मैंने दुधवाला का कैमरा और टॉर्च बंद करके उनके डिब्बे में रख दिए और उम्मीद की कि पानी अंदर न जाए। मैं खुद एक स्पंज की तरह था; इतना पानी से भरा हुआ कि ऐसा लग रहा था जैसे पानी मेरे अंदर से बह रहा हो। और बारिश लगातार होती रही।

अब कुछ असामान्य घटना घटी। बाघ वापस आ गया। शायद बिजली गिरने से उसे लगा कि भाग जाना उसकी मूर्खता थी। उसने जो देखा होगा वह केवल बिजली की एक चमक रही होगी, इससे अधिक कुछ नहीं। इसलिए वह वापस आया और उस बछड़े को नोंचने लगा जिसे उसने कुछ समय पहले ही मारा था।

मैंने दूसरी तस्वीर लेने की हिम्मत ही नहीं की। मैंने सोचा, अगर मैंने मूसलाधार बारिश में दुधवाला का कैमरा खोला तो पता नहीं उसका क्या होगा। कुछ भी करने की कोशिश करने का कोई फायदा नहीं था; गिरती बारिश में मेरी टॉर्च की रोशनी भी बाघ तक नहीं पहुंच पा रही थी।

आखिरकार बारिश थोड़ी कम हुई और मुझे बाघ के कुतरने की आवाज़ ज़्यादा साफ़ सुनाई देने लगी। तभी मुझे एक नई आवाज़ सुनाई दी: नाले के किनारे से आते हुए विशाल कदमों की आहट, नीचे बहते तेज़ पानी में से गुज़रते हुए, जिसकी कलकल की आवाज़ मुझे सुनाई दे रही थी। एक हाथी!

'शायद वहां बहुत ज्यादा गीलापन था इसलिए वह कुछ खा नहीं पा रहा था और बस आश्रय लेना चाहता था, क्योंकि वह कोई शाखा नहीं तोड़ रहा था। वह धीरे-धीरे पास आता गया।'

‘बाघ ने भी यह आवाज सुनी और उसे पसंद नहीं आई। उसने एक भयानक “व्र-आह!” की आवाज निकाली। आम तौर पर वह चुपचाप खिसक जाता, क्योंकि बाघ और हाथी एक-दूसरे से यथासंभव बचते हैं। लेकिन यह बाघ अपवाद था। वह खाना खा रहा था।’

इसके अलावा, वह क्रोधित था। इसलिए वह बार-बार गुर्राया: “व्र-आह! व्र-आह! व्र-आह!”

कीचड़ की आवाज़ अचानक बंद हो गई। हाथी ने खतरे और चेतावनी के संकेत के रूप में अपनी सूंड ज़मीन पर पटकने की कोशिश की। लेकिन उसकी सूंड ठोस ज़मीन के बजाय कीचड़ और पानी से टकराई, और उससे निकलने वाली आवाज़ किसी ऐसे व्यक्ति की तरह थी जिसे ज़ुकाम हो और वह अपनी नाक साफ कर रहा हो।

'इससे बाघ और भी ज्यादा चिढ़ गया और वह पहले से भी ज्यादा जोर से गुर्राया, और हाथी शायद तब वहां से चला जाता और बाघ को उसकी दावत के लिए छोड़ देता, और मुझे शांति से रहने देता, लेकिन दुर्भाग्यपूर्ण घटनाक्रम के कारण ऐसा नहीं हुआ।'

अचानक हवा का एक झोंका आया और तिरपाल का किनारा झंडे की तरह लहराते हुए हाथी के सिर के ठीक ऊपर पेड़ की शाखाओं से टकराने लगा। यह नई आवाज़ सुनकर बाघ उछल पड़ा और हाथी के बगल में झाड़ियों में जा गिरा। इससे विशालकाय जानवर चौंक गया और क्रोधित हो गया; भ्रमित और भयभीत होकर, उसे समझ नहीं आ रहा था कि बाघ उस पर हमला करना चाहता है या उसके सिर के ऊपर लहराती वह अजीब वस्तु खतरे का संकेत दे रही है। उसने ऊपर देखा और सब कुछ देखा: तिरपाल, मचान और मैं!

जंबो ने एक भयानक चीख मारी और सीधे साबुन के पेड़ की ओर दौड़ा, उसका माथा धड़ाम से पेड़ के तने से टकराया। भारी बारिश ने मिट्टी को गीला और ढीला कर दिया था, पेड़ का तना सीधा खड़ा रहने के बजाय तिरछा हो गया, और मैं अच्छी तरह जानता था कि एक-दो धक्के और लगते ही वह ज़मीन पर गिर जाएगा।

जंबो फिर से चीखा, थोड़ा पीछे हटा और स्पष्ट रूप से आगे हमले के लिए तैयार हो रहा था। हालांकि बहुत अंधेरा था, मैं उसकी आकृति को धुंधला सा देख पा रहा था, वह इतना करीब था कि लगभग हाथ की पहुँच में, ठीक मेरे बाईं ओर। उस गहरे काले रंग की पृष्ठभूमि पर सफेदी की एक हल्की सी लकीर उसके दांतों को दर्शा रही थी और पुष्टि कर रही थी कि वह एक बैल था। इसके अलावा, अब मैं उसकी गंध भी महसूस कर सकता था। बारिश ने उसे अच्छी तरह से धो दिया होगा, फिर भी उसके शरीर से एक जंगली हाथी की तीखी, अचूक गंध आ रही थी, जो विशेष रूप से तब तेज होती है जब जानवर गुस्से में होता है।

अगले झटके में साबुन का पेड़ गिर जाएगा और मुझे भी अपने साथ ले जाएगा। इसलिए मैं पागलों की तरह, अपनी पूरी ताकत से, जो भी शब्द मेरे दिमाग में आए, चिल्लाने लगा। मेरी आवाज़ का असर हुआ—कम से कम उस पल के लिए। हाथी ने अपना हमला रोक दिया और फिर से दहाड़ा। अगला पल ही मेरा भाग्य तय करेगा।

‘मेरी इलेक्ट्रिक टॉर्च! मैंने इसके बारे में पहले क्यों नहीं सोचा? इसकी रोशनी से वह ज़रूर डरकर भाग जाएगा। मैंने जल्दी से उसे उठाया और सीधे हाथी के चेहरे पर चमकाया।’

खेल के सारे नियमों के हिसाब से तो उसे तुरंत पीछे हट जाना चाहिए था। लेकिन इसके बजाय, वह पहले से भी ज़्यादा ज़ोर से चिल्लाया, और एक पल बाद मुझे ऐसा लगा जैसे किसी स्टीमरोलर ने मुझे टक्कर मार दी हो, जब उसने अपना माथा दूसरी बार रीठा के पेड़ के तने से टकराया। धीमी गति से, मानो जानबूझकर ऐसा किया गया हो, पेड़ जड़ों के टूटने की तेज़ आवाज़ के साथ झुक गया। फिर, गति पकड़ते हुए, वह ज़मीन पर गिर पड़ा, मुझे, मचान और सब कुछ अपने साथ ले गया।

जब मुझे लगा कि मैं गिर रहा हूँ, तो मैंने अपने सिर के ऊपर की शाखा को पकड़ लिया ताकि झटके के अलावा मुझे कोई शारीरिक चोट न लगे। मैंने तुरंत सोचा। मेरे दिमाग में सबसे पहला विचार भाग निकलने का आया; लेकिन मैं सूखे पेड़ की शाखाओं में उलझ गया था और मुझे अपनी टॉर्च नहीं मिल रही थी। गिरते समय मैंने शाखा को पकड़ने के लिए टॉर्च छोड़ दी थी। पता नहीं वह कहाँ चली गई। चारों तरफ घना अंधेरा था और मचान बनाने वाले बाँसों के जाल से, जो अब मेरे चारों ओर बिखरे हुए थे, और पेड़ की शाखाओं से बाहर निकलना काफी मुश्किल होता, और इससे हाथी मेरे पास आ जाता।

हाथी ने हवा में लहरा रहे तिरपाल के एक सिरे को ढूंढकर और अपनी सूंड से उसे पकड़कर समस्या का समाधान कर दिया। एक सिरा अभी भी एक शाखा से बंधा हुआ था, इसलिए उसने उसे दो टुकड़ों में फाड़ दिया और मैं कुछ कदम दूर दूसरे टुकड़े पर उसके पैर पटकने और रौंदने की आवाज सुन सकता था।

मैं शाखाओं के बीच दुबक गया, लेकिन यह देखने के लिए झाँका कि वह कितना करीब है। चारों ओर घना अंधेरा था, लेकिन उसकी हरकतों से पता चल रहा था कि वह पंद्रह फीट के भीतर ही है। मैं उसकी तेज़ गंध महसूस कर सकता था और उसकी साँसें सुन सकता था, क्योंकि वह अपनी सूंड से तिरपाल के किनारे को ज़मीन पर पटक रहा था, उस पर पैर रख रहा था और उसे टुकड़े-टुकड़े कर रहा था। यह शोर एक-दो मिनट तक जारी रहा, तभी एक और आवाज़ मुझ तक पहुँची। मुझे आदमियों के चिल्लाने की आवाज़ सुनाई दी।

वे पास आते हुए दिखाई दिए, और जल्द ही मुझे पिताजी की आवाज़ और एक और आवाज़ सुनाई दी, जिसे मैंने थंगावेलु की आवाज़ के रूप में पहचान लिया। दूर से आती टिमटिमाती रोशनी से पता चला कि वे लालटेन या मशालें लिए हुए थे। अचानक बैल ने तिरपाल पीटना बंद कर दिया। वह एक पल के लिए चुप रहा और फिर घबराहट और गुस्से में अपनी सूंड का सिरा ज़मीन पर पटका। मैंने उसे पास आते हुए आदमियों की ओर मुड़ते हुए सुना।

पिताजी और थंगावेलु दौड़ते हुए आ रहे थे और चिल्ला रहे थे। मुझे पता था कि मेरे पिताजी निहत्थे हैं और यह देखना बहुत नाजुक स्थिति होगी कि क्रोधित बैल उन पर हमला करेगा या खुद पीछे हट जाएगा। शायद अगर मैं चिल्लाना शुरू कर दूं तो उस दुष्ट जानवर को भ्रमित करने में मदद मिलेगी।

तभी, पानी से भरे नाले में लड़खड़ाते और कीचड़ उछालते हुए दो आदमी आए, अपने हाथों में लालटेन लिए हुए और चुड़ैलों की तरह चीखते हुए। बूढ़ा आदमी चिल्ला रहा था, "डॉन, क्या तुम ठीक हो?"

लेकिन मेरी हिम्मत नहीं हुई जवाब देने की। हाथी बहुत करीब था और मेरी आवाज़ उसे मुझ पर झपटने के लिए उकसा देती।

टिमटिमाती रोशनी में मुझे उस विशालकाय जीव का रूप दिखाई दिया, जो उनकी ओर मुँह करके खड़ा था, उसकी सूंड अंदर की ओर मुड़ी हुई थी, जो किसी हाथी के हमले की तैयारी का स्पष्ट संकेत था। मुझे उसका ध्यान भटकाने के लिए कुछ करना होगा, इसलिए मैंने जोर से चिल्लाया और चिल्लाता रहा।

हाथी ने तीखी चिंघाड़ भरी। पिताजी और थंगावेलु, जिन्होंने उसे देख लिया था, दौड़ना बंद कर दिया और अपनी लालटेनें ऊपर उठाकर उस शोर-शराबे में शामिल हो गए, चिल्लाते हुए। पिताजी कुछ ऐसा हास्यास्पद कर रहे थे कि उस समय हम सब जिस खतरे में थे, उसके बावजूद मुझे लगभग हंसी आ गई। वह एक छड़ी लहरा रहे थे।

हम सब जो चीख-पुकार मचा रहे थे, वो बहुत भयानक लग रही होगी। लेकिन, भगवान का शुक्र है, बैल ने भी ऐसा ही सोचा और घबरा गया। वह अचानक मुड़ा और तेज़ी से किनारे पर चढ़ गया। मैंने पेड़ से उतरकर पिताजी और थंगावेलु के पास पहुँचने में ज़रा भी देर नहीं की।

“क्या आप ठीक हैं?” बूढ़े आदमी ने पूछा।

मुझे मुस्कुराने से खुद को रोकना मुश्किल हो रहा था। वह मुझसे भी बदतर हालत में दिख रहा था और चीखने-चिल्लाने से उसकी आवाज बैठ गई थी।

“धन्यवाद। मैं ठीक हूँ।” मैंने उसे आश्वस्त किया।

“भगवान का शुक्र है,” उसने कहा, और फिर, “चलो यहाँ से चलते हैं।”

“मैं इस भावना से पूरी तरह सहमत हूं। और जल्दी से,” मैंने अनावश्यक रूप से कहा।

हम साबुन के पेड़ से जितनी जल्दी हो सके दूर भाग गए। आखिर हाथी भी अलग-अलग स्वभाव के होते हैं, और यह अपना मन बदल सकता है और वापस लौट सकता है।

अगली सुबह हम दुधवाला का कैमरा और डॉन की टॉर्च वापस लेने गए। वहाँ हमें एक चौंकाने वाला दृश्य देखने को मिला।

शायद कैमरा गिरते हुए पेड़ से दूर जा गिरा था, या शायद तिरपाल में फंस गया था। खैर, जानबूझकर या अनजाने में, हाथी ने उसे कुचल दिया था। दुधवाला का कैमरा और डोनाल्ड की बाघ के शिकार खाते हुए टॉर्च से ली गई अनमोल तस्वीर गायब हो गई! लेकिन हमें टॉर्च सही सलामत मिल गई।

बाद में उसी दिन हम नदी के उफनते किनारों पर बैठे, और नदी के दूसरी ओर चित्तीदार हिरणों और लंगूर बंदरों को चरते-खेलते देख रहे थे। पिछली रात की तेज़ हवा ने नदी के उस पार स्थित विशाल पेड़ से हज़ारों जंगली अंजीर गिरा दिए थे। लगभग तीस चित्तीदार हिरणों का एक झुंड उन अंजीरों को खा रहा था, जबकि लंगूर बंदरों का वह परिवार, जिसने पहले ही अंजीर ढूंढ लिए थे और उन्हें खा रहा था, अब इतना भर चुका था कि और कुछ नहीं खा सकता था। वे आपस में और चित्तीदार हिरण के बच्चों के साथ बच्चों की तरह खेल रहे थे। कभी-कभी एक अधेड़ लंगूर पेड़ की डाल से उछलकर चौंकी हुई चित्तीदार हिरणी की

पीठ पर चढ़ जाता, उसके कान नोचता या उसकी छोटी पूंछ खींचता और फिर वापस कूद जाता। चित्तीदार नर हिरण और बड़े लंगूर दोनों ही ऐसी हरकतों से नाराज़ थे, लेकिन हिरण के बच्चे उछल-कूद कर छोटे बंदरों के साथ पकड़ने-पकड़े खेलने की कोशिश कर रहे थे। यह एक अनोखा और सुंदर दृश्य था।

लेकिन जब हम देख ही रहे थे, तभी अचानक उस जगह मौत का साया मंडरा उठा जहाँ सब कुछ इतना शांत था। हिरणों का झुंड तो चला गया था, लेकिन बंदर अभी भी उछल-कूद कर रहे थे, तभी जंगल से एक जंग लगे भूरे रंग की लकीर निकली और उसने झुंड से थोड़ी दूर भटक गए एक अधेड़ लंगूर पर झपट्टा मारा।

एक बार तो लंगूरों का रखवाला अपने कर्तव्य में विफल हो गया था। शायद वह हमें देखने में इतना मशगूल था कि उसने उस अकेले, चुपके से रेंगते जंगली कुत्ते को नहीं देखा, जिसने सफलतापूर्वक खुश बंदरों का पीछा किया था और अब नदी के दूसरे किनारे पर खड़ा था, जिसमें से एक बंदर उसके जबड़े से लटका हुआ था।

अधिकांश बंदर गालियां बकते हुए पेड़ की चोटी पर चढ़ गए, लेकिन लंगूर रक्षक और बड़े नर लंगूर एक साथ नीचे कूद पड़े और लंगूरों की कर्कश युद्ध-पुकार लगाई: 'होक! होक! होक! होक!' लेकिन तब तक बहुत देर हो चुकी थी। युवा लंगूर पहले ही मर चुका था।

डॉन और मैं खड़े हो गए और एक साथ चिल्लाए। पिछली रात की भागदौड़ से मेरी आवाज़ पहले से ही थकी हुई थी, और वह भयानक लग रही होगी, क्योंकि जंगली कुत्ता डर के मारे मरे हुए बंदर को गिराकर कुछ गज दूर भाग गया। वहाँ रुककर वह हमें पत्थर की तरह घूरने लगा। ये जीव असाधारण रूप से साहसी होते हैं, जंगल की बड़ी बिल्लियों से भी कहीं ज़्यादा। वे मनुष्य से शायद ही डरते हैं, हालाँकि वे आम तौर पर उस पर हमला नहीं करते।

नदी उफान पर थी और इतनी गहरी थी कि उसे पार करना असंभव था, लेकिन जंगली कुत्ते को दूर भगाने के लिए चिल्लाते हुए, हम एक पुराने पेड़ के तने और शाखाओं पर चढ़कर नदी पार करने में कामयाब हो गए। यह पेड़ वर्षों पहले गिर गया था और अभी भी नदी के ऊपर फैला हुआ था। जब हमने काले चेहरे वाले छोटे लंगूर को उठाया तो उसका चांदी जैसा भूरा शरीर गर्म था, और लगभग एक गज लंबी उसकी विशाल पूंछ शव से लटक रही थी।

बंदरों का झुंड अभी भी पेड़ की चोटी पर था, देखने वाले हत्यारे पर गालियां बरसा रहा था, जबकि चौकीदार और अन्य नर बंदर बारी-बारी से जंगली कुत्ते और हम पर अपने दांत दिखा रहे थे। फिर उन्हें समझ आ गया कि उस नन्हे जीव की मौत के लिए हम ज़िम्मेदार नहीं थे और वे चुप हो गए जब हमने उसके बेजान शरीर को उठाया और उसे पेड़ की उस शाखा पर जितनी ऊंचाई तक डॉन पहुंच सकता था, रख दिया जहां बंदरों का समूह था। उसके बाद हम नदी के अपने किनारे लौट आए।

अब लंगूर नीचे आए और अपने साथी के शव को घेर लिया। कुछ ने उसे सूंघा, कुछ ने उसे छुआ। एक बूढ़ी मादा, जो शायद उसकी माँ थी, ने उसे उठाया और चूमा। उन काले चेहरों में बड़ी-बड़ी काली आँखें अजीब तरह से चमकदार और नम लग रही थीं। क्या लंगूर रोते हैं?

उस दोपहर हम 'बाघों की भूमि' से निराश होकर निकले, लेकिन हाथी के साथ अपने छोटे से रोमांच से हमें काफी अनुभव मिला। इस साल हिमालय से हंस सामान्य से अधिक संख्या में आए थे, और डॉन ने कुछ दोस्तों के साथ हंस और बत्तख के शिकार का अभियान बनाया था। इसलिए हमें उनसे मिलने के लिए समय पर लौटना पड़ा। मैं उस दल में शामिल नहीं हुआ।

---

*देखें: आदमखोर और जंगल के हत्यारे।

आदमखोर और जंगल के हत्यारे

1

केम्पेकराई का लुटेरा

अगर आप दो समानांतर पर्वत श्रृंखलाओं की कल्पना करें, जिनकी औसत ऊँचाई समुद्र तल से चार हजार फीट या उससे अधिक है, और उनके बीच लगभग पाँच मील चौड़ी घाटी है, जो ऊबड़-खाबड़ चोटियों को छोड़कर घने जंगलों से ढकी है, तो आपके मन में मेरी कहानी की पृष्ठभूमि उभर आएगी। यह कहानी दक्षिण भारत में मद्रास प्रेसीडेंसी के उत्तरी सलेम जिले में घटित होती है।

पहाड़ उत्तर से दक्षिण की ओर फैले हुए हैं, और पूर्वी पर्वत श्रृंखला दोनों में अधिक ऊँची है, जिसका दक्षिणी छोर 4,500 फीट से अधिक ऊँची गुथेरायन चोटी पर जाकर समाप्त होता है। इसकी ढलानों पर एक सुंदर छोटा वन लॉज है, जिसे कोडेकराई बंगलो के नाम से जाना जाता है, जो दुनिया के कुछ सबसे खूबसूरत दृश्यों के बीच स्थित है। चारों ओर लहरदार पहाड़ियाँ और उभरी हुई चट्टानें दिखाई देती हैं। सुबह की धुंध के उमड़ते बादलों के ऊपर से सूरज गुलाबी रंग की छटा बिखेरता हुआ उगता है, और अंततः पश्चिमी पर्वत श्रृंखला के पीछे नारंगी-कांस्य रंग की परछाइयों में अस्त हो जाता है। फिर चंद्रमा अपनी फीकी चमक के साथ उदय होता है, पहाड़ियों की चोटियों और बाद में गहरी घाटियों को अपनी प्रकाशमयी छड़ी से रोशन करता है। रात भर वह आकाश में विराजमान रहती है, नीचे के घने जंगलों में होने वाली कई त्रासदियों की मूक साक्षी बनी रहती है। मरते हुए सांभर की चीख या चित्तीदार हिरण की तीखी चीख अक्सर उसी पूर्णिमा की रात व्यर्थ ही गूंजती है, जब वे भूखे बाघ के पंजों के नीचे जंगल की ज़मीन पर अपना खून बहा देते हैं।

बीस वर्ष से भी अधिक समय पहले मुझे अफ़गानिस्तान के राजा अमानुल्लाह के भाई से मिलने का सौभाग्य प्राप्त हुआ, जिन्हें उनके वतन से निर्वासित कर दिया गया था और वे कोडेकराई बंगले में रहते थे, जो उनका पसंदीदा निवास स्थान था। उन्होंने मुझे बताया कि उन्हें वह स्थान बहुत प्रिय था, वहाँ का नज़ारा उन्हें उनके प्रिय अफ़गानिस्तान की याद दिलाता था, बस फर्क इतना था कि कोडेकराई की पहाड़ियाँ जंगलों से ढकी थीं, जबकि उनके देश की पहाड़ियाँ बंजर थीं। लेकिन दोनों ही स्थान विशालता और स्वतंत्रता का प्रतीक थे।

केम्पेकराई पश्चिमी पर्वत श्रृंखला की निचली ढलानों पर बसा एक छोटा सा गाँव है। इसके चारों ओर कुछ खेत हैं और खेतों के पार घने बांस का जंगल है, जिसे एक पथरीली धारा काटती हुई घाटी के मध्य से बहती है।

इस घाटी को, जिसे मैंने 'मकड़ी घाटी' नाम दिया है क्योंकि यहाँ की संकरी पगडंडी पर विशाल मकड़ियाँ अपने जाले बुनती हैं, जो धारा के किनारे से होकर गुजरती है, दक्षिण की ओर फैलकर एक बड़े

भूभाग में बदल जाती है जिसे मोरप्पुर घाटी के नाम से जाना जाता है, जहाँ पथरीली धारा अंततः कावेरी नदी से लगभग दस मील दूर सोपथी नामक स्थान पर चिन्नार नदी में मिल जाती है।

मैंने इस क्षेत्र का विस्तृत वर्णन इसलिए किया है ताकि पाठक थोड़ी कल्पनाशीलता से इसकी मनमोहक सुंदरता को महसूस कर सकें: सड़ती हुई वनस्पति की दुर्गंध, घने जंगल का धुंधलका, अपने शिकार की तलाश में भटकते आदमखोर बाघ की दूर से आती आधी दहाड़, आधी कराह, उन रोमांचकारी आवाजों के बाद छा जाने वाली भयानक और भयावह खामोशी, और अंत में झाड़ियों में होने वाली हल्की सरसराहट, वह अनिश्चित सी रेंगती हुई चीज जो आदमखोर बाघ की है, जो आपकी उपस्थिति से अवगत होते ही आपको देखता है और अपनी प्रजाति के सदियों पुराने शिकार कौशल को मनुष्य की सभ्य बुद्धि के विरुद्ध आजमाता है।

लेकिन चलिए मैं अपनी कहानी शुरू करता हूँ।

केम्पेकराई में भारी भय का माहौल था, क्योंकि एक आदमखोर बाघ प्रकट हुआ था, और उसके कुछ ही निवासियों में से तीन पहले ही उसका शिकार करने के लिए जा चुके थे।

पहला शिकार, एक बूढ़ा पुजारी, एक महीने पहले मुत्तूर (जो यहाँ से ग्यारह मील दूर है) से केम्पेकराई आया था। उसका फिर कभी पता नहीं चला। इन इलाकों में हाथी बहुतायत में पाए जाते हैं और कभी-कभार ही इंसानों को मार डालते हैं, इसलिए जब पुजारी केम्पेकराई नहीं पहुँचा, तो एक खोज दल मुत्तूर की ओर रवाना हुआ। शायद दल के सदस्यों को उम्मीद थी कि उन्हें किसी हाथी के थाली जैसे पदचिह्न मिलेंगे और कुचले हुए अवशेष मिलेंगे। लेकिन उन्हें न तो कुछ मिला और न ही कुछ। केम्पेकराई से लगभग पाँच मील दूर उन्हें एक नर बाघ के पदचिह्न, रास्ते के किनारे थोड़ा सा खून, बूढ़े आदमी की लाठी और उसकी धोती मिली—बस इतना ही।

लगभग दस दिन बाद, सूर्यास्त के समय, एक महिला रात के लिए अपना घड़ा भरने के लिए सामुदायिक कुएँ पर गई। वह कभी वापस नहीं लौटी। रात आठ बजे उसके पति और उसके कुछ दोस्त लालटेन और लाठियाँ लेकर उसे ढूँढ़ने कुएँ पर गए। पीतल का घड़ा, आधा भरा हुआ, कुएँ से लगभग बीस फीट दूर एक तरफ पड़ा था, जहाँ महिला ने गाँव लौटते समय उसे गिरा दिया था। उसका कोई पता नहीं चला।

अगली सुबह, एक तलाशी दल गठित किया गया, जिसने महिला की साड़ी, बाद में एक चांदी की पायल और अंत में उसके अवशेष बरामद किए। उसका सिर एक झाड़ी के नीचे पड़ा था; उसके हाथ और पैर इधर-उधर बिखरे हुए थे; उसके शरीर के शेष भाग में कुतरी हुई हड्डियों की अच्छी-खासी संख्या से पता चलता है कि बाघ वास्तव में भूखा था और उसने भरपूर भोजन किया था।

एक महीना घिसटता चला गया। केम्पेकराई एक घिरे हुए किले की तरह लग रहा था। न कोई अंदर आ सकता था, न कोई बाहर जा सकता था। कुछ झोपड़ियों के आस-पास का इलाका, और कुछ मामलों में तो उनके अंदरूनी हिस्से भी, इंसानी गंदगी से बदबूदार थे। क्या कोई हत्यारा आस-पास ही नहीं छिपा था,

जो पहले शिकार का इंतज़ार कर रहा हो जो शौच के लिए भी बाहर निकलने की हिम्मत करे? रात के समय स्थिति और भी खतरनाक हो जाती थी; लोग, अपने मवेशियों और कभी-कभी अपने कुत्तों के साथ, तंग झोपड़ियों में बंद रहते थे, जिनके दरवाज़े लकड़ी के लट्ठों या नदी से लाए गए गोल पत्थरों से बंद किए जाते थे। लोगों की दयनीय परिस्थितियों के कारण झोपड़ियाँ हर दिन और भी गंदी होती जा रही थीं।

लेकिन बेहतरीन सावधानियां भी कभी-कभी मनचाहा परिणाम देने में नाकाम रहती हैं। मेरे पुराने दोस्त बायरा, जो पुजारी थे, के दामादों में से एक, मारा, ऐसी अस्वच्छ परिस्थितियों में रहने से कतराता था। उसने अपनी पत्नी से कहा था कि चाहे आदमखोर बाघ हो या न हो, वह अपने घर के अंदर गंदगी नहीं फैलाएगा। वह हर रात शौच के लिए बाहर जाता और लौट आता था। फिर एक रात वह हमेशा की तरह उसी उद्देश्य से बाहर गया, लेकिन इस बार वह वापस नहीं लौटा। उसकी पत्नी, जो अंदर बेसब्री से इंतजार कर रही थी, मानती है कि उसने एक धीमी सी आवाज और एक कर्कश गड़गड़ाहट सुनी, लेकिन इससे ज्यादा कुछ नहीं।

पंद्रह मिनट बाद उसने शोर मचाया। कोई उसकी मदद के लिए नहीं आया, क्योंकि किसी की हिम्मत नहीं थी। दीवारों से घिरी झोपड़ियों में रहने वालों ने उसकी चीखें सुनीं। वे जानते थे कि अब मारा को बचाना नामुमकिन था। वह मर चुका था, लेकिन वे ज़िंदा थे! बाहर जाकर उसके साथ मृतकों में शामिल होने का क्या फायदा! इसलिए वे अंदर ही रहे और उस लंबी रात के बाकी समय तक उसकी चीखें सुनते रहे।

अगली सुबह, मारा के अवशेषों को खोजने का एक अधूरा प्रयास किया गया, और यह प्रयास असफल ही रहता अगर बाघ गाँव से दो सौ गज की दूरी पर झाड़ियों में जाकर बेधड़क अपना पेट न भर लेता। कुएँ पर गई महिला की तुलना में मारा का थोड़ा अधिक अवशेष बचा था। शायद उसका मांस अधिक सख्त था, या शायद बाघ को भूख कम लगी थी। कौन जाने? कम से कम उसका सिर और धड़ तो साबुत थे।

अपने दामाद की दुखद घटना से दुखी होकर, मेरे पुराने मित्र बायरा, जो उस समय केम्पेकराई में थे, अगले दिन पेन्नाग्राम गाँव तक अठारह मील की जोखिम भरी यात्रा पर निकल पड़े। कोई भी उनके साथ नहीं गया, इसलिए वे अकेले ही गए और आदमखोर को देखे या उसकी आवाज़ सुने बिना ही यात्रा पूरी की। पेन्नाग्राम पहुँचकर उन्होंने अपने पुराने परिचित रंगा से मुलाकात की और दोनों बस से बैंगलोर आ गए। उसी रात 9 बजे मुझे दरवाजे पर कुछ आवाज़ें सुनाई दीं और बाहर जाकर मैं अपने पुराने जंगल के साथियों को फिर से देखकर आश्चर्यचकित और प्रसन्न हुआ।

इस बीच, सलेम जिले ने शारीरिक, नैतिक और निस्संदेह आध्यात्मिक उत्थान के लिए 'शराबबंदी' को मार्गदर्शक नीति के रूप में अपना लिया था। लेकिन मेरे दोनों आगंतुक, जो सीधे-सादे, ईमानदार वनवासी थे और शारीरिक, नैतिक या आध्यात्मिक रूप से इतने ऊंचे दावे नहीं करते थे, उन्होंने आधा गिलास शुद्ध ब्रांडी पीकर आनंद लिया। इस प्रकार तरोताज़ा होकर, उन्होंने शुरुआत से बात शुरू की, या यूँ कहें कि बायरा ने शुरू की, और आदमखोर के आने और उसके कारनामों का संक्षिप्त इतिहास सुनाया, जैसा कि

मैंने आपको बताया है, और अंत में यह स्पष्ट रूप से कहा कि उसके दामाद, मारा का बदला लिया जाना चाहिए और यह काम मुझे करना है।

उस तर्क और मुझ पर उसके बचकाने भरोसे के सामने, मुझे कोई ठोस जवाब नहीं सूझा। तीन दिन बाद मैं पेन्नाग्राम के रास्ते पर था, जहाँ मैंने स्टुडेबेकर कार छोड़ दी। हमने स्थानीय बाज़ार से कुछ सामान खरीदा और कुछ ही घंटों में हम तीनों अठारह मील पैदल चलकर केम्पेकराई नामक छोटे से गाँव की ओर चल पड़े, जहाँ कार नहीं जा सकती थी।

अपनी मंज़िल से कुछ मील पहले हमें पगडंडी पर बाघ के ताज़े पदचिह्न मिले। कई दिनों से इस रास्ते से कोई भी यात्री नहीं गुज़रा था, और पदचिह्न साफ़ थे। मैंने ध्यान से नाप लिया और पाया कि ये पदचिह्न औसत आकार के नर बाघ के थे। इससे यह पता नहीं चला कि पदचिह्न बनाने वाला जानवर बूढ़ा था या सामान्य वयस्क था, और न ही उस समय हममें से कोई यह कह सकता था कि वह आदमखोर बाघ था या बस कोई और बाघ जो वहाँ से गुज़र रहा था।

केम्पेकराई के कुछ निवासी बायरा द्वारा मुझे दी गई जानकारी में कोई अतिरिक्त जानकारी नहीं दे सके। उनका मानना था कि आदमखोर एक विशालकाय जानवर था, लेकिन ज़ाहिर है, जब आम लोग घोर आतंक की स्थिति में होते हैं, जैसा कि पिछले कुछ हफ्तों से इन बेचारे लोगों के साथ हो रहा था, तो वे अपने उत्पीड़क को अमानवीय चालाकी और अकल्पनीय शारीरिक शक्ति और आकार का मानने लगते हैं।

अब समस्या यह थी: आगे कैसे बढ़ा जाए और क्या किया जाए? जवाब था: शिकार का इंतज़ार करना, या किसी जीवित जानवर को चारा बनाना। इस बाघ ने ग्रामीणों की एक भी गाय या अन्य पालतू जानवर को नहीं मारा था। कम से कम अभी तक तो इसने केवल मनुष्यों को ही मारा था। सवाल यह था: क्या यह किसी जानवर को चारा बनाएगा, या फिर चारा मनुष्य होना चाहिए? जिसका एकमात्र जवाब यही था कि अगर चारा मनुष्य हो, तो वह मेरे अलावा कोई और नहीं हो सकता, एक ऐसा जवाब जिसके बारे में सोचना भी मुझे बेहद नापसंद था।

बायरा, रंगा और मैंने लगातार चाय पीते हुए गहन विचार-विमर्श किया और अंततः एक समाधान निकलने लगा। मैंने सोचा कि हमें जानवरों को चारा बनाकर देखना चाहिए, लेकिन उनका मानना था कि इंसान को चारा बनाकर—यानी मुझे—तुरंत परिणाम प्राप्त किए जा सकते हैं। मेरी दिली इच्छा थी कि वे किसी और निष्कर्ष पर पहुँचे होते।

तीन सदस्यीय समिति में, उनमें से कोई भी दो सदस्य भारी बहुमत बना लेते हैं। तीसरे सदस्य को झुकना ही पड़ता है, लेकिन मैं अपनी बात मनवाने में कामयाब रहा और इस बात पर सहमत हो गया कि मानव चारा के साथ-साथ, कुछ चुनिंदा स्थानों पर कुछ युवा बैलों को अतिरिक्त आकर्षण के रूप में आज़माने में कोई बुराई नहीं है।

केम्पेकराई में भैंसें नहीं मिलीं, इसलिए मैंने दो बैल खरीदे। एक को हमने उस जगह बांध दिया जहाँ हमें जानवरों के पैरों के निशान मिले थे, और दूसरे को घाटी के तल में बहने वाली धारा के किनारे बांध

दिया। मैं कुएँ की पत्थर की मुंडेर पर बैठ गया, मेरी पीठ उस लकड़ी के खंभे से टिकी थी जिस पर पानी निकालने के लिए रस्सी लगी थी। मैंने रस्सी के एक सिरे पर एक धातु का घड़ा बांध दिया, जिसे मैंने अपने पास मुंडेर पर रखा। ताज़ा पानी हमेशा बोतल के पानी से बेहतर होता है।

कुएँ से लगभग पचास गज की दूरी पर जंगल चारों ओर फैला हुआ था, सिवाय एक दिशा के। यहाँ किसी ने एक दर्जन या उससे अधिक पपीते के पेड़ लगाए थे। कुएँ से कभी-कभार पानी मिलने से इन पेड़ों के चारों ओर घास की झाड़ियाँ उग आई थीं, जिनमें कहीं-कहीं कुछ छोटी झाड़ियाँ भी थीं। दिन के उजाले में ये झाड़ियाँ नगण्य प्रतीत होती थीं, लेकिन जैसे-जैसे शाम ढलती और अंधेरा होने लगता, मुझे लगने लगा कि ये आदमखोर सांप के लिए आने का एक आसान रास्ता बन गई हैं, जो आसानी से पेट के बल रेंगते हुए मेरे पास आ सकता है, और मुझे उसकी मौजूदगी का पता भी नहीं चलेगा।

जब यह विचार मेरे मन में आया, तो मैंने कुएं के दूसरी तरफ अपनी स्थिति बदल ली, और सामने वाले लकड़ी के सीधे खंभे को पीठ के सहारे के रूप में इस्तेमाल किया, ताकि अब मेरा मुख पपीतों की ओर हो।

मैंने खुद को सबके सामने लाने का फैसला इसलिए किया क्योंकि हम सौभाग्य से पूर्णिमा से ठीक पहले वहाँ पहुँचे थे। चाँद का उदय लगभग सूर्यास्त के समय ही हुआ, लेकिन मैं भूल गया था कि उस अंधेरे कुएँ पर अपनी रोशनी बिखेरने से पहले चाँद को पूरब की पहाड़ियों की चोटी तक पहुँचना था। ऐसा रात 8 बजे के बाद ही हो पाता और मैंने अपने जीवन के सबसे बुरे नब्बे मिनट उस बहुप्रतीक्षित चाँद की पहली किरणों का इंतज़ार करते हुए बिताए—मैं शब्दों में बयान नहीं कर सकता कि मैं कितना बेसब्र और बेचैन था।

इस अनुभव ने मुझे गुम्मलपुर की झोपड़ियों के सामने उस भयानक पैंथर की प्रतीक्षा में बिताए उन खौफनाक पलों की याद दिला दी, और उस दिन की भी याद दिला दी जब मैं सुदूर चमाला वन क्षेत्र में सागौन के पेड़ की ओर पीठ करके बैठा था, उसी तरह के आदमखोर की एक झलक पाने की उम्मीद में;* और मैं सोचने लगा कि आखिर किस मूर्खता ने मुझे फिर से ऐसी मुश्किल स्थिति में डाल दिया था। फिर मेरी समझ ने मुझे बताया कि शायद यही एकमात्र रास्ता था।

अंधेरा सन्नाटा पसरा हुआ था, और जानी-पहचानी चिड़िया भी मेरे पास नहीं आई। कुछ चमगादड़ कुएँ में उतरकर, दिनभर की गर्मी के बाद अपनी प्यास बुझाने के लिए, साफ पानी को हल्के-हल्के चुम्बनों की तरह पी रहे थे। मैंने अपनी आँखें गड़ाकर न केवल पपीते के पेड़ों की ओर, बल्कि चारों ओर देखा। कल्पना ने आदमखोर सांप की आकृति गढ़ दी, जो धीरे-धीरे रेंगता हुआ, चुपके से मेरी ओर आ रहा था, मेरी दृष्टि सीमा से ठीक बाहर। मैं दीवार की मुंडेर पर चिपका बैठा रहा, मेरी .405 पिस्तौल तैयार थी, और अंगूठा टॉर्च के स्विच पर था।

ऐसे समय में मनुष्य के मन में उठने वाले विचार अक्सर विचित्र और समझ से परे होते हैं, लेकिन मैं आपको उनसे क्यों परेशान करूं? बाघ ने पहले तो संभावित प्रतिशोधी भाग्य की भूमिका निभाई। अन्य समयों में वह लगभग चेतना से ओझल हो गया।

आठ बजने के कुछ ही देर बाद पूर्वी पर्वत श्रृंखला के ऊपर का क्षितिज अधिक स्पष्ट होने लगा; आकाश में एक हल्की सी चमक फैल गई, जिससे तारे धुंधले पड़ गए, और फिर चंद्रमा प्रकट हुआ, जिससे आसपास का वातावरण और मेरी घबराहट दोनों ही शांत हो गईं। जैसे-जैसे चंद्रमा आकाश में ऊपर चढ़ता गया, दृश्य और भी उज्ज्वल होता गया, यहाँ तक कि मैं पपीते के पेड़ों के तनों के बीच से लगभग सब कुछ स्पष्ट रूप से देख पा रहा था। रात के लगभग आधे हिस्से तक मेरी निगरानी की शांति में किसी भी आवाज ने खलल नहीं डाला।

रात 11 बजे के कुछ ही देर बाद, एक सांभर हिरण ने नदी के किनारे से, जहाँ मैंने अपने एक बैल को बाँधा था, अपनी तीखी आवाज निकाली। मैंने उसकी आवाज में घबराहट और डर का भाव पहचान लिया, क्योंकि वह बार-बार पुकार रहा था, और अंत में दूर जाकर उसकी आवाज धीमी हो गई, जब हिरण सामने की पहाड़ियों की प्राचीर पर चढ़कर सुरक्षित स्थान पर पहुँच गया।

फिर सन्नाटा छा गया, और रात अपने आखिरी पलों को लंबा खींचती चली गई। तभी मुझे ख्याल आया कि अगर बाघ एक मील के दायरे में कहीं भी हो, तो शायद मैं कुएं के ऊपर लगे पुली-पहिया को चलाकर उसकी तेज़ सुनने की शक्ति का फायदा उठा सकूँ। मैंने दोपहर में पहले ही देखा था कि वह अपनी धुरी पर घूमते हुए ज़ोर से चरमराहट और चीखने की आवाज़ कर रहा था। शायद वह आवाज़ सुनकर आकर्षित हो जाए, यह सोचकर कि कोई दूसरा संभावित शिकार कुएं से पानी निकाल रहा है।

तो मैं कुएँ के चारों ओर घूमकर उस जगह पहुँचा जहाँ पानी का घड़ा ज़मीन पर रखा था। सबसे पहले मैंने बंदूक को दीवार के सहारे खड़ा किया, फिर घड़े को पानी में डुबोया, और धीरे-धीरे उसे ऊपर-नीचे करता रहा। रात के सन्नाटे में पुली ज़ोर से चरमरा उठी, और मैं लगभग एक घंटे तक यही करता रहा, बीच-बीच में रुककर अपने आस-पास के वातावरण का ध्यान से जायज़ा लेता रहा, खासकर हर झाड़ी की गहरी छायाओं का। पर कुछ भी नहीं हिला, और उस सन्नाटे में एक पत्ता भी नहीं हिला, यहाँ तक कि कोई चूहा भी पास के पपीतों के नीचे ज़मीन पर बिछी सूखी पत्तियों को नहीं हिला पाया। देखा जाए तो, झोपड़ियों में बंद दरवाजों के पीछे सुरक्षित बैठे लोगों के अलावा, उस इलाके में मैं ही अकेला जीवित प्राणी था।

सुबह 3 बजे के बाद चंद्रमा पश्चिमी पहाड़ी श्रृंखला के पीछे डूबने लगा, और मौसम पिछली शाम जैसा ही हो गया। अंधेरा बढ़ता ही गया, और जल्द ही मैं अपने आसपास कुछ ही गज की दूरी देख पा रहा था, और वह भी तारों की हल्की रोशनी में, जो डूबते चंद्रमा के गायब होने के साथ ही चमकने लगे थे।

अब सिर्फ नब्बे मिनट का अंधेरा बचा था और मुझे बहुत नींद आ रही थी। फिर भी मुझे अब और भी सतर्क रहना था। क्या मैं पिछले एक घंटे से बाघ को अपनी ओर आकर्षित करने की कोशिश नहीं कर रहा था? चूंकि वह पूरी रात उस रास्ते से नहीं गुजरा था, इसलिए हो सकता है कि वह अब गुजर जाए। इसके

अलावा, अचानक हमले के लिए सारी परिस्थितियां उसके पक्ष में थीं, क्योंकि पपीते के पेड़ अब धुंधले से दिखाई देने लगे थे, बस मेरी दृष्टि में मौजूद अन्य छायाओं के बीच एक गहरे धब्बे की तरह दिख रहे थे।

मुझे एहसास हुआ कि अगर वह आदमखोर हमला करने का फैसला करता, तो मैं पूरी तरह से उसके रहमो-करम पर होता। अगर वह दहाड़ते हुए आगे बढ़ता, तो कम से कम मैं उस पर एकदम करीब से अपनी राइफल से गोली चला सकता था। दूसरी ओर, अगर वह चुपके से मेरे पास आता, तो मुझे उसके आने का तब तक पता नहीं चलता जब तक कि वह मुझ पर हमला न कर देता।

उसी समय, सारे चूहे, खरगोश और अन्य छोटे जानवर, जो पूरी रात गायब रहे थे, मानो कुएँ के पास इकट्ठा होने के लिए यही क्षण चुन रहे हों। वे इधर-उधर भागने लगे और सूखी पत्तियों को सरसराने लगे, कभी शोर मचाते हुए, कभी धीमी आवाज़ में, जबकि मेरी उत्तेजित कल्पना ने मुझे यह संदेश दिया कि 'आदमखोर आ रहा है'।

कुल मिलाकर मेरा समय बहुत ही भयानक बीता। झूठी सुबह आई और चली गई, और फिर सुबह 5:45 बजे पूर्वी पर्वतमाला के ऊपर क्षितिज पर एक बार फिर से उजाला होने से मुझे पता चला कि आखिरकार दिन का उजाला हो गया है और उबाऊ प्रतीक्षा लगभग समाप्त हो गई है। सूरज के पूर्वी पहाड़ियों से झाँकने में सात बज चुके थे, और मैं उठा और अपने सतर्क, नींद से भरे कदमों को घसीटते हुए गाँव के दक्षिणी छोर पर लगाए गए तंबू तक पहुँचा।

गरम चाय पी और साढ़े दस बजे तक झपकी ली। फिर, रंगा और बायरा के साथ, मैं सबसे पहले नदी के तल में बंधे चारे को देखने गया। वह जीवित और स्वस्थ था। करीब से देखने पर पता चला कि एक बाघ उसके 15 फीट करीब तक आया था और सरसरी तौर पर निरीक्षण करने के बाद मर गया था।

रात में मैंने जिस सांभर हिरण की आवाज़ सुनी थी, उसने निस्संदेह इस बाघ को देखा या उसकी गंध पहचान ली थी और ज़ोर से चेतावनी दी थी। बाघ के पदचिह्न स्पष्ट रूप से उसी जानवर के थे, जिनके पदचिह्न मैंने पश्चिमी पर्वतमाला के रास्ते पर आते समय देखे थे, जहाँ ज़मीन अधिक ठोस थी और आकार बहुत बड़ा नहीं था। फिर भी, मुझे इस बात में कोई संदेह नहीं था कि यह असली आदमखोर बाघ ही था, क्योंकि एक सामान्य बाघ आसानी से किसी आकर्षक, असुरक्षित शिकार को ज़िंदा नहीं छोड़ता।

फिर हम दूसरे बैल को देखने गए, जहाँ हमें एक चौंकाने वाली बात पता चली। उसे एक बाघ ने मार डाला था, जिसके पदचिह्न ठीक वैसे ही थे जैसे मैंने पिछले दिन रास्ते के ठीक उसी स्थान के पास सावधानीपूर्वक नापे थे।

अब सवाल यह था: क्या आस-पास दो बाघ थे, या दूसरे बैल को आदमखोर बाघ ने मार डाला था? यदि बाद वाला मामला था और केवल एक ही बाघ था—और वह आदमखोर बाघ—तो उसने नदी के किनारे बंधे हुए बैल को क्यों नहीं मारा, बल्कि उसे देखकर दूसरे को मारने का फैसला क्यों किया?

मुझे पक्का यकीन हो गया था कि आस-पास दो बाघ थे, और आदमखोर बाघ ने ही नदी किनारे बैल को अनदेखा किया था। रंगा मुझसे सहमत था, लेकिन बायरा किसी भी राय पर पक्का यकीन नहीं कर पा

रहा था। उसने सुझाव दिया कि आदमखोर बाघ शायद उस इलाके का इकलौता बाघ हो, और उसने पहले बैल को शायद इसलिए नहीं मारा क्योंकि वह सफेद था। दूसरा बैल गहरे भूरे रंग का था, इसलिए उस पर शक नहीं किया जा सकता था।

जीवित चारे के रंग के बारे में मेरा दृष्टिकोण बहुत खुला है। मेरे अपने अनुभव के अनुसार, बाघ के लिए रंग से कोई खास फर्क नहीं पड़ता, और कुछ अन्य शर्तें पूरी होने पर वह आपके चारे को खा लेगा। उसे भूखा होना चाहिए, क्योंकि बाघ शायद ही कभी बेवजह शिकार करता है। इसके अलावा, उसे किसी भी तरह के जाल का संदेह नहीं होना चाहिए। आजकल जब बाघों का शिकार बढ़ रहा है, बाघ जल्दी ही सबक सीख रहे हैं। प्रकृति उस प्रजाति को बचाने का प्रयास कर रही है जो तेजी से विलुप्त हो रही है।

इस प्रकार, रस्सी से गर्दन में बांधे गए चारे के बाघ द्वारा छुए जाने की संभावना बहुत कम होती है। बाघ तर्क नहीं कर सकता, लेकिन उसकी सहज प्रवृत्ति या आत्मरक्षा की भावना उसे बताती है कि ग्रामीणों द्वारा अपने मवेशियों को रात के लिए जंगल में बांधना अस्वाभाविक है। सींगों में बंधी रस्सी से बंधे चारे के मारे जाने की संभावना अधिक होती है, क्योंकि जानवर अपने सींगों से झाड़ियों में उलझ सकता है। पिछले पैर में बंधा चारा भी आसानी से ले लिया जाता है। याद रखने वाली मुख्य बात यह है कि बाघ और तेंदुआ दोनों ही अपने शिकार के गले पर हमला करते हैं, इसलिए हमले की इस विधि को रोकने के लिए कोई स्पष्ट बाधा नहीं होनी चाहिए, अन्यथा हमलावर को संदेह हो जाता है।

इस मामले में पैंथर आमतौर पर बाघों की तुलना में कम सावधान होते हैं और अधिक जोखिम उठाते हैं। व्यक्तिगत रूप से, मुझे पैंथर के लिए कुत्तों को चारा बनाकर बांधना पसंद नहीं है; मुझे लगता है कि यह प्रथा अत्यंत क्रूर है, क्योंकि कुत्ता एक बहुत ही समझदार जानवर है और वह अच्छी तरह जानता है कि उसे किस उद्देश्य से बांधा जा रहा है। ऐसे में, उसे अपने हमलावर के आने तक भयानक मानसिक पीड़ा सहनी पड़ती है। जब मैं छोटा था, और, मैं स्वीकार करता हूँ, मुझमें नैतिकता की कमी थी, तो मैंने कुत्ते की जान बचाकर अपने अंतरात्मा को शांत करने की कोशिश की। इसके लिए मैंने चमड़े के दो टुकड़ों का उपयोग करके लगभग चार इंच चौड़ा एक पट्टा बनाया, जिसमें कई दो इंच लंबे, नुकीले नाखून एक पंक्ति में बाहर की ओर निकले हुए थे, जिनके सिरे चमड़े की दोनों पट्टियों के बीच में आते थे। उन बीते दिनों में, मुझे यह देखकर मज़ा आता था कि पैंथर कुत्ते का गला पकड़ने की कोशिश करता था, और फिर नुकीले नाखूनों के उसके मुंह में चुभते ही वह स्पष्ट रूप से घबराकर पीछे हट जाता था। इससे पहले कि वह इस पहेली को सुलझा पाता, उसे गोली मार दी जाती थी। लेकिन बाघ पर इस तरह की साधारण चालें नहीं चली जा सकतीं।

बीमार जानवर को ज़िंदा चारा बनाकर बांधना भी सफलता के लिए घातक होता है। नीलगिरी पर्वतमाला में रहने वाली बडागा जनजाति स्वस्थ जानवरों को चारा के लिए बेचने से सख्त परहेज़ करती है, चाहे उनकी कितनी भी कीमत क्यों न मिले। वे एक अच्छे बैल की जान कुर्बान करना पाप समझते हैं। वे हमेशा इस काम के लिए केवल बीमार जानवर को ही पेश करते हैं, जिसके दिन वैसे भी गिने-चुने होते हैं। मुझे अच्छी तरह याद है कि मैंने एक बैल को पैर-मुंह रोग की आखिरी अवस्था में बांधा था। रेत पर बने पैरों

के निशानों से पता चला कि लगातार तीन रातों तक बाघ उस जगह पर आया, चारे के चारों ओर घूमा, यहाँ तक कि उसके सामने बैठ भी गया, और फिर उसने तय किया कि वह इतना बीमार है कि उसे मारा नहीं जा सकता। चौथी रात, मेरा बेटा बीमार जानवर के पास बैठा रहा, लेकिन आठ बजे तक उसकी जीवन अवधि समाप्त हो रही थी। वह गिर पड़ा और पूरी रात उसे मरने में लग गई। उस रात बाघ दिखाई भी नहीं दिया।

अनुभवी शिकारी जीवित चारे के रंग के बारे में अलग-अलग राय रखते हैं, और मैंने कुछ ऐसे लोगों से मुलाकात की है जो सफेद जानवरों, चाहे गाय हो या बकरी, का इस्तेमाल करने से बचते हैं, क्योंकि उनका दावा है कि इनके शिकार होने की संभावना सबसे कम होती है। पुराने समय के एक प्रसिद्ध पैंथर शिकारी, जिन्होंने सौ से अधिक पैंथर मारे थे, काले रंग की बकरी को बांधने के सख्त खिलाफ थे, क्योंकि उनका दावा था कि इससे पैंथर सतर्क हो जाता है।

मैंने इन बिंदुओं पर कुछ विस्तार से चर्चा की है, क्योंकि मुझे लगता है कि आपमें से कई लोग जो ये कहानियां पढ़ते हैं, बाघ और तेंदुआ के शिकार की तकनीक के कुछ पहलुओं के बारे में जानने में रुचि रखेंगे। बैठक-गृह में अक्सर हम किसी शिकारी या बड़े जानवरों के शिकारी की असाधारण 'अच्छी किस्मत' के बारे में सुनते हैं। वास्तव में, इस 'अच्छी किस्मत' का बहुत बड़ा हिस्सा उनके पिछले अनुभव के कारण होता है, जिसमें उन असंख्य कारकों का ज्ञान होता है जो किसी सफल शिकार को संभव या असफल बना सकते हैं।

अब वापस अपनी कहानी पर आते हैं। ज़ाहिर है, करने के लिए एक ही काम था, और वो था अधखाए भूरे बैल के ऊपर मचान लगाना। अनुभव से पता चला था कि हमारे दोनों चारे उपयुक्त पेड़ों के पास बंधे थे; इसलिए जब मैं थोड़ी देर और झपकी लेने के लिए तंबू में वापस गया, तो रंगा और बायरा, जो दोनों ही इस काम में माहिर थे, ने मेरे साथ लाई हुई कैनवास की कुर्सी को करीने से मोड़कर टांगने का बढ़िया काम किया। चारपाई या भारतीय रस्सी के पलंग के बाद, एक तह करने वाली कुर्सी एक अच्छा मचान बन जाती है। यह चारपाई जितनी आरामदायक या विशाल तो नहीं होती, लेकिन इसका फ़ायदा यह है कि इसे आसानी से अलग-अलग हिस्सों में बाँटा जा सकता है।

शाम 5 बजे वापस आकर, मैंने अपनी जगह ले ली और पूरी रात की निगरानी के लिए तैयार हो गया।

केम्पेकराई गाँव के ऊपर पश्चिमी पर्वत श्रृंखला पर स्थित इस रास्ते पर उगते चाँद की किरणें गाँव और उस कुएँ की तुलना में बहुत पहले पहुँच जाती थीं, जहाँ मैंने पिछली रात बिताई थी। इसलिए, सूरज के पश्चिमी पहाड़ियों के पीछे डूबने के तुरंत बाद, चाँद पूर्वी पर्वत श्रृंखला के ऊपर से झाँकने लगा और चारों ओर दृश्यता साफ़ हो गई।

आठ बजने के कुछ देर बाद तक कुछ नहीं हुआ, फिर अचानक मुझे एहसास हुआ कि बाघ मेरे ठीक नीचे खड़ा है। वह कैसे और कहाँ से आया, यह मैं कभी नहीं जान पाया। निश्चित रूप से उस रास्ते से तो नहीं आया होगा जो जंगल में दूर तक फैला हुआ दोनों दिशाओं में साफ दिखाई दे रहा था। मुझे पता चला कि

बाघ मेरे नीचे है, क्योंकि उसने अपने शरीर को उस पेड़ के तने से रगड़ा जिससे हल्की सी आवाज़ निकली, जिस पर मैं बैठा था, और ऐसा करते हुए उसने ऊपर देखा और मेरी मौजूदगी का एहसास हुआ!

फिर घटनाएँ तेज़ी से घटने लगीं। एक ज़ोरदार दहाड़ के साथ, बाघ तुरंत पेड़ के तने पर चढ़ने लगा। सौभाग्य से, हमने एक ऐसा पेड़ चुना था जिसका तना ज़मीन से लगभग पंद्रह फीट ऊपर, जहाँ मैं कैंप की कुर्सी पर बैठा था, पहले जोड़ तक काफ़ी सीधा था। मैं जानता था कि यह आदमखोर बाघ है, क्योंकि आम तौर पर एक बाघ किसी इंसान को अपने ऊपर बैठे हुए देखकर तुरंत भाग जाता है।

सहज ही मैंने दोनों पैरों को जितना हो सके ऊपर उठा लिया और कुर्सी पर एक तरफ झुककर बाईं ओर निशाना साधने की कोशिश की। दुर्भाग्यवश, मैं गलत दिशा में झुक गया था, क्योंकि बाघ मेरे दाहिनी ओर पेड़ पर चढ़ने की कोशिश कर रहा था। मैंने तुरंत खुद को संभाला, लेकिन अब मुझे राइफल को अपने बाएं कंधे पर पकड़ना पड़ा।

पिछले दो पैराग्राफ पढ़ने में आपको जितना समय लगा, उस रात की घटनाओं में लगे वास्तविक समय से कहीं अधिक समय लगा। जैसा कि मैंने कहा, मैं ज़मीन से लगभग पंद्रह फीट ऊपर बैठा था। एक सामान्य बाघ नाक से पूंछ तक लगभग नौ फीट लंबा होता है। उसकी पूंछ की लंबाई घटाकर और उसके आगे के पंजे की लंबाई जोड़कर, हम लगभग आठ फीट की अनुमानित लंबाई तक पहुँच सकते हैं, जो किसी भी बाघ या आदमखोर बाघ की 'फैलने की सीमा' को दर्शाती है। पंद्रह फीट की मूल ऊंचाई में से इन आठ फीट को घटाने पर लगभग सात फीट का अंतर आता है, जो लगभग उतनी ही दूरी थी जितनी बाघ उस रात पेड़ के तने पर चढ़ने में सफल हुआ था। मुझे पकड़ने की हड़बड़ी में उसने अपना एक पंजा बढ़ाया, और जैसे ही उसके नुकीले पंजे कैंप-चेयर की सीट के कैनवास और संयोगवश मेरी पैंट को चीरते हुए अंदर घुसे, बाघ अपना संतुलन खो बैठा और पीछे की ओर ज़मीन पर गिर पड़ा। वहीं, अपनी पीठ बचाने की चिंता में, मैंने सहज रूप से खुद को कुर्सी से आधा ऊपर उठा लिया। मैं भाग्यशाली था कि मैंने अपनी राइफल नहीं गिराई और बाघ के पीछे नहीं भागा।

आदमखोर जानवरों, चाहे बाघ हों या तेंदुआ, के बारे में एक अनोखी बात यह है कि वे देखने में कायर लगते हैं, हालांकि वे इंसानों पर हमला करके उन्हें खा जाते हैं। लगभग हमेशा ही, ऐसे हमले पीछे से किए जाते हैं, और तब होते हैं जब शिकार अपने हमलावर की मौजूदगी से अनजान होता है। दरअसल, बहुत कम ही ऐसा हुआ है कि किसी आदमखोर जानवर ने सामने से हमला किया हो या किसी ऐसे व्यक्ति पर झपट्टा मारा हो जो उसकी मौजूदगी से वाकिफ हो और उसका सामना कर रहा हो।

उस रात ऐसा ही हुआ, जैसे ही वह पीछे की ओर धरती पर गिरा, नरभक्षी को एहसास हुआ कि उसकी उपस्थिति का पता चल गया है, और जमीन पर उतरते ही, एक छलांग और गुर्राहट के साथ, वह आसपास की लैंटाना झाड़ियों में गायब हो गया।

मैं यह नहीं कह सकता कि यह हमारे सौभाग्य का ही परिणाम था कि उसने ऐसा किया, क्योंकि यद्यपि मुझे उसकी उपस्थिति का आभास हो चुका था और मैं उसके लिए तैयार था, फिर भी उस बेहद

कठिन कोण से, ठीक मेरे नीचे, निशाना लगाने की कोशिश में मेरा संतुलन बिगड़ सकता था या राइफल गिर सकती थी। खैर, वह पलक झपकते ही चला गया, उतनी ही अचानक और अप्रत्याशित रूप से जितना वह आया था।

मेरी मौजूदगी का पता चल जाने के बाद, अब चुपचाप या बिना हिले-डुले रहने का कोई फायदा नहीं था। नुकसान का जायजा लेते हुए मैंने कुर्सी के कैनवास पर तीन पंजे के निशान देखे, हर एक लगभग पाँच इंच लंबा था, जहाँ बाघ के अगले पंजे ने खरोंचा था। इनमें से दो निशान मेरी पैंट की सीट को भेद गए थे—और कुछ हद तक मेरे शरीर को भी। त्वचा में तेज़ दर्द हो रहा था, जो मुझे इस बात का एहसास दिला रहा था।

आम तौर पर, ऐसी घटना हंसमुख लोगों के मन में हंसी पैदा कर देती, लेकिन मैं उन्हें याद दिलाता कि सभी मांसाहारी जानवरों के पंजे सड़े हुए मांस से निकले जहरीले बैक्टीरिया से भरे होते हैं, और नरभक्षी भी इस नियम का अपवाद नहीं है, क्योंकि यह मांस इंसान का होता है। कुर्सी का कैनवास और मेरी पैंट का कपड़ा इतना मोटा नहीं था कि इस सारे जहरीले पदार्थ को सोख सके, इसलिए मेरे घाव में संक्रमण होने की कुछ संभावना थी।

मैं अपने साथ प्राथमिक उपचार की कई सामग्रियाँ लाया था, जिनमें प्रोकेन पेनिसिलिन का अच्छा स्टॉक और मेरी पाँच सीसी की हाइपोडर्मिक सिरिंज शामिल थीं। लेकिन ये सभी सामग्रियाँ केम्पेकराई स्थित मेरे तंबू में थीं, जो लगभग दो मील दूर था। इसलिए मुझे या तो तुरंत वापस लौटकर चिकित्सा सावधानी बरतने का विकल्प चुनना था, या सुबह तक रुकने का—जो कम से कम दस घंटे दूर थी—क्योंकि तब तक ज़हर घावों में फैल चुका होता। एक स्थिति में मुझे आदमखोर सांप के हमले का सामना करना पड़ता, जो केम्पेकराई तक फैले दो मील के रास्ते में कहीं भी हमला कर सकता था। दूसरी ओर, मुझे सेप्सिस के अधिक निश्चित खतरे का सामना करना पड़ता, और आदमखोर सांप का पीछा करने में असमर्थ होने के कारण लंबे समय तक अक्षम रहना पड़ता।

इसलिए मैंने बाघ से खतरा मोल लेना बेहतर समझा, क्योंकि यह दो खतरों में से कम खतरनाक था। मैंने जल्दी से अपनी राइफल को उस रस्सी पर लटका दिया जो इसी उद्देश्य से लाई गई थी, और मैं भी तेजी से नीचे उतर गया, मन ही मन प्रार्थना कर रहा था कि आदमखोर बाघ दोबारा हमला करने के लिए ठीक उसी क्षण को न चुने। जमीन पर पहुँचकर मैं पेड़ के तने की ओर पीठ करके खड़ा हो गया, और राइफल को उस रस्सी से छुड़ाया जिससे मैंने उसे नीचे उतारा था। चारों ओर सन्नाटा पसरा हुआ था, जंगल के किसी भी हिस्से से कोई आवाज नहीं आ रही थी जिससे मुझे अपने हालिया हमलावर के ठिकाने का कोई संकेत मिल सके। संभवत: वह दस मील दूर हो सकता था, या पास की किसी झाड़ी के पीछे! चमकीली चाँदनी ने जंगल को अपनी अलौकिक चमक से नहला दिया था, जिससे हर पत्ता और घास का तिनका दिखाई दे रहा था, जो रात की हल्की हवाओं के साथ धीरे-धीरे हिल रहे थे। ये हवाएँ जंगल के मैदानों में रात के फूलों की सुगंध बिखेर रही थीं, या अनगिनत पेड़ों के बीच से तेज झोंकों के साथ बह रही थीं।

कुछ क्षण बाद, मैं केम्पेकराई तक दो मील की पैदल यात्रा के लिए रास्ते पर चल पड़ा। यह रास्ता मिट्टी की प्रकृति और वनस्पति के प्रकार के अनुसार चौड़ाई में भिन्न होता है, अधिकतम पंद्रह फुट से लेकर मुश्किल से एक गज तक। कुछ स्थानों पर यह लंबी घास से घिरा है और अन्य स्थानों पर लैंटाना की झाड़ियों से। कई छोटी-छोटी धाराओं को पार करना पड़ता है, जहाँ बांस बहुतायत में उगते हैं, उनके लंबे लहराते तने हल्की हवा में चरमराते हैं, जबकि पत्तियां चांदनी को ढकते हुए सामने जमीन पर भूतिया, चौकोर पैटर्न बनाती हैं।

ऐसे हालात में आपका दिल ज़ोर-ज़ोर से धड़कता है, मानो पिंजरे से बाहर निकल आएगा; आपकी नसें बुरी तरह तनावग्रस्त हो जाती हैं और हर हल्की सी सरसराहट भी आदमखोर बाघ के हमले का संकेत देती है। भागने की इच्छा होती है, या यूं कहें कि दौड़ पड़ें। आपकी नसें आपको इधर-उधर देखने का इशारा करती हैं, क्योंकि बाघ पीछे से या दोनों तरफ से हमला कर सकता है!

इन सभी भावनाओं को कड़े नियंत्रण में रखना चाहिए, क्योंकि इनके प्रति जरा सा भी झुकाव घबराहट का कारण बनेगा, और घबराहट से आप अपना होश खो देंगे, जिसके परिणामस्वरूप अंततः निश्चित रूप से विनाश होगा।

इस बात का विशेष ध्यान रखें कि बाघ आपके सामने घात लगाकर न बैठा हो और आपके बिल्कुल करीब न आ जाए। पीछे से हमला करने के लिए उसे झाड़ियों में कम से कम कुछ शोर मचाना होगा ताकि चलते समय वह आपकी सामान्य चाल का अनुसरण कर सके।

इसलिए, सिर को इधर-उधर घुमाने के बजाय, सामने देखना ही सबसे समझदारी भरा कदम है, भले ही आपकी आंखें हर परछाई को ध्यान से देखें। अपनी राइफल को तैयार रखें और उसे अपनी कोहनी में दबाकर रखें, क्योंकि आपको कमर से ही गोली चलानी होगी और अपने निशाने पर पूरी तरह से सटीक निशाना लगाना होगा। राइफल को कंधे पर उठाकर निशाना लगाने का समय नहीं मिलेगा, क्योंकि बाघ एक शिकारी है, और चाहे जानवर हो या इंसान, शिकारियों की यह आदत नहीं होती कि वे अपनी मौजूदगी का ऐलान करें। अगर वे ऐसा करेंगे, तो वे जल्द ही शिकारी नहीं रहेंगे, बल्कि खुद 'मारे' जाएंगे।

यदि आपका शिकार घायल है, तो शायद आपको गुर्राहट या घुरघुराहट सुनाई दे, लेकिन संभवतः आपको उसकी आक्रमणकारी शक्ति के दौरान धरती को हिला देने वाली भयानक 'भौंकने' की आवाज़ सुनाई देगी। यदि वह घायल नहीं है और आदमखोर है, तो आप कुछ भी सुनने की उम्मीद न करें, क्योंकि वह पलक झपकते ही आप पर हमला कर देगा।

केम्पेकराई से मुश्किल से एक चौथाई मील पहले रास्ते के दोनों ओर पत्थरों का एक छोटा सा टीला है। घर वापसी के रास्ते में यह सबसे खतरनाक जगह है, क्योंकि बाघ इनमें से किसी भी पत्थर के पीछे छिपा हो सकता है। हालांकि, जब वह भागा तो उसे दूसरी तरफ जाते देखकर मुझे लगा कि उसे वापस लौटने का पर्याप्त समय नहीं मिला। इसी भरोसे के साथ मैंने पत्थरों को पार किया और जल्द ही केम्पेकराई और अपने तंबू तक पहुँच गया।

रंगा और बायरा जाग रहे थे, जैसा कि वे हमेशा तब जागते थे जब मैं अकेले बाहर जाता था, ताकि ज़रूरत पड़ने पर वे मेरी मदद कर सकें। मैंने उन्हें आग जलाने और पानी गर्म करने के लिए कहा और पहले से तैयार रखी हुई कॉफ़ी पी ली, फिर अपनी इंजेक्शन वाली सुई निकाली और उसे गर्म पानी में भिगोकर स्टेरलाइज़ किया। इसके बाद, मैंने प्रोकेन पेनिसिलिन की आठ लाख यूनिट की दो शीशियों को मिलाकर सिरिंज से इंजेक्शन लगाया।

मैंने रंगा और बायरा से बचे हुए गर्म पानी में पोटेशियम परमैंगनेट घोलकर घावों को अच्छी तरह साफ करवाया, फिर सल्फोनोमाइड मरहम से पट्टी बांधी। घाव पर पट्टी या प्लास्टर नहीं लगाया जा सकता था, इसलिए मैं यह उम्मीद करते हुए सो गया कि घावों पर कोई बुरा असर नहीं पड़ेगा।

कई रातों तक नींद न आने के कारण मैं थका हुआ था, और अगली सुबह लगभग नौ बजे तक मेरी नींद खुली। जंगल में इतनी देर से उठना बहुत अजीब बात है, क्योंकि आमतौर पर लोग सूर्योदय से पहले ही उठकर निकल जाते हैं। मुझे यह देखकर खुशी हुई कि घावों में ज्यादा दर्द नहीं था।

पेनिसिलिन की चार लाख की एक और खुराक लेने और घावों पर पट्टी बांधने के बाद, मैंने दलिया, बेकन और अंडे का शानदार नाश्ता किया, और कुएं के किनारे वाले बगीचे से एक बहुत बड़ा, पका हुआ पपीता खाया, जहां मैंने पहली रात बिताई थी।

फिर मैं नदी के किनारे रखे अपने शिकार को देखने के लिए चल पड़ा, जो मुझे पिछली सुबह की तरह ही ज़िंदा और तंदुरुस्त मिला। पिछली रात जहाँ मैं बैठा था, वहाँ वापस दो मील चलने पर मैंने पाया कि बाघ न तो लौटा था और न ही उसने उस बैल को छुआ था जिसे उसने दो रात पहले मारा था। पेड़ के पास आते समय उसके पदचिह्नों से उसकी पहचान उसी बाघ के रूप में हुई जिसके पदचिह्न मैंने सबसे पहले देखे थे।

नीलगिरी, कोयंबटूर और चित्तूर जिलों के जंगलों के विपरीत, सलेम के जंगल अधिकतर कांटेदार होते हैं, जिनमें लैंटाना और 'वेट-ए-बिट' कांटे प्रमुख हैं। घाटियों और नदी-नालों के किनारे ये कांटेदार झाड़ियाँ घनी कतारों में फैली हुई हैं। दोनों ही स्थितियों में, प्रभाव एक ही होता है, यानी घूमना-फिरना या शिकार करना लगभग असंभव हो जाता है।

एक मांसाहारी जानवर चुपचाप चलता है, और एक सफल शिकारी के रूप में उसकी सफलता का रहस्य इस बात में निहित है कि वह सहज रूप से देखता है कि वह अपना अगला पंजा कहाँ रख रहा है ताकि कोई आवाज़ न हो। फिर वह अपना पिछला पंजा ठीक उसी जगह पर रखता है, और अगला पंजा आगे बढ़कर अगला कदम बढ़ाता है। मानव शिकारी को भी चुपचाप चलना चाहिए। उसे ध्यान से देखना चाहिए कि वह अपना हर कदम कहाँ रख रहा है, क्योंकि सबसे छोटा सूखा पत्ता भी कुचलने पर चरमराहट पैदा कर देगा; सबसे छोटी टहनी भी टूट जाएगी। उन चुभने वाले कांटों से भी बचना चाहिए जो आपको रोक सकते हैं, क्योंकि एक कांटा भी इतना मजबूत होता है कि अगर वह आपके कपड़ों में कहीं भी फंस जाए तो

आपकी प्रगति रोक सकता है, और अगर आप शॉर्ट्स पहनने की मूर्खता करते हैं तो वह निश्चित रूप से आपका मांस फाड़ देगा।

इन सब बातों से आपका ध्यान बाघ की तलाश करने से हट जाएगा, और अगर वह बाघ आदमखोर है, जो कांटों से नहीं डरता, तो आप स्पष्ट रूप से नुकसान में होंगे।

उस स्थान का जंगल अत्यंत कंटीला था, इसलिए हम गाँव के वरिष्ठ नागरिकों के साथ युद्ध परिषद आयोजित करने के लिए केम्पेकराई लौट आए। तथ्यों के आधार पर, जहाँ तक हमें अब तक जानकारी थी, यह पता चला कि:

आदमखोर एक औसत कद का नर था।

वह विशेष रूप से पश्चिमी पर्वत श्रृंखला के रास्ते पर जाया करता था। उसे बैल का मांस विशेष पसंद नहीं था।

हमें अभी भी यह निश्चित नहीं था कि आसपास कोई दूसरा बाघ मौजूद है या नहीं।

इस चर्चा के बाद जो स्पष्ट निष्कर्ष निकला, वह लगभग वही था जो रंगा, बायरा और मैंने केम्पेकराई आने के पहले दिन निकाला था: या तो अगले मानव शिकार का इंतज़ार किया जाए, या किसी जीवित मानव को चारा बनाया जाए, अधिमानतः केम्पेकराई जाने वाले पश्चिमी पहाड़ी मार्ग पर कहीं। आदमखोर बाघ को लुभाने के लिए जंगल में कहीं और कुछ बैल भी बांधे जा सकते थे, लेकिन मुख्य रूप से यह पता लगाने के लिए कि क्या उसी क्षेत्र में कोई दूसरा बाघ भी सक्रिय है।

बाघ के घावों की वजह से, जहाँ वे थे, वहाँ मेरे लिए पंद्रह मिनट से ज़्यादा देर तक एक जगह बैठना नामुमकिन था। इस वजह से, सचमुच में, 'सीधे बैठने' की कोई गुंजाइश नहीं थी। सच है, अगर मुझे चारा बनना होता तो मुझे एक जगह बैठने की ज़रूरत ही नहीं होती। दरअसल, बाघ को आकर्षित करने के लिए हिलना-डुलना ज़रूरी होता। दूसरी तरफ, बैठना न सिर्फ़ असहनीय होता, बल्कि घावों के भरने में भी देरी करता, जिन्हें मैं स्वाभाविक रूप से जल्दी ठीक करना चाहता था।

हमारे पास खड़े रहने या लेट जाने के दो ही विकल्प बचे थे। रात भर जागकर निगरानी करने के लिए खड़े रहना स्वाभाविक रूप से उचित नहीं था, इसलिए इन परिस्थितियों में लेट जाना ही एकमात्र व्यावहारिक उपाय था।

हमने उस दिन बहुत सोच-विचार किया और अंततः एक ऐसी योजना पर पहुँचे जिसे हम सभी ने बहुत ही चतुराईपूर्ण समझा। यह योजना वास्तव में कितनी चतुराईपूर्ण साबित हुई—या यूँ कहें कि कितनी नहीं—यह आपको बहुत जल्द पता चल जाएगा।

मैंने पहले ही बताया है कि पश्चिमी पर्वतमाला से केम्पेकराई तक जाने वाला पैदल मार्ग कई स्थानों पर छोटी-छोटी धाराओं से घिरा हुआ था, जिनके किनारे घनी झाड़ियाँ और बांस के झुंड थे। इन छोटी धाराओं के तल पथरीले थे और मेरे उद्देश्य के लिए बिल्कुल उपयुक्त थे।

संयोगवश, केम्पेकराई जाने के रास्ते में, जिस पेड़ पर मैं पिछली रात बैठा था, वहाँ से पार करने वाली छोटी धाराओं में से पहली धारा सबसे चौड़ी थी, और साथ ही वह हर आकार के गोल पत्थरों से घनी तरह ढकी हुई थी। मेरी योजना थी कि केम्पेकराई गाँव में मौजूद केवल दो बैलगाड़ियों में से एक से एक बैलगाड़ी का पहिया निकाल लूँ, धारा के तल में एक गड्ढा खोदूँ, उसमें घुस जाऊँ, पहिया ऊपर रखूँ और उसे चारों ओर बड़े पत्थरों से मज़बूती से गाड़ दूँ। छोटे पत्थर और सूखे पत्तों की आड़ में पहिया छिपा रहेगा। मैं एक मानव पुतला भी बनाऊँगा और उसे पगडंडी पर कहीं रख दूँगा जहाँ वह धारा को पार करती है। बैलगाड़ी के पहिये को एक सिरे से ज़मीन से ऊपर उठा दूँगा, ताकि मुझे उस दिशा में निशाना लगाने की सुविधा मिल सके।

यह मेरी सामान्य योजना थी। जो लोग भारत नहीं गए हैं, उनकी सुविधा के लिए मैं समझाना चाहूँगा कि भारतीय बैलगाड़ी का पहिया—मैं बड़ी बैलगाड़ी की बात कर रहा हूँ—औसतन पाँच फुट व्यास का होता है। इसकी परिधि लकड़ी की होती है, लगभग छह इंच चौड़ी और तीन इंच मोटी, जिस पर लोहे का एक घेरा टायर का काम करता है। इसमें बारह मजबूत लकड़ी की तीलियाँ होती हैं, जो सभी एक विशाल केंद्रीय लकड़ी के हब पर आकर मिलती हैं। लकड़ी के हब में बना केंद्रीय छेद लगभग डेढ़ इंच मोटे लोहे के धुरी पर घूमता है। पहिए को गिरने से रोकने के लिए धुरी के बाहरी सिरे से होकर गुजरने वाली चपटी लोहे की कील लगी होती है। इसी प्रकार, पहिए को गाड़ी के फ्रेम की ओर खिसकने से रोकने के लिए धुरी स्वयं होती है, जो हब पर धुरी की भार वहन सतह के ठीक बाद अचानक मोटी हो जाती है, जिसकी चौड़ाई शायद एक फुट से थोड़ी अधिक होती है। कुछ मॉडलों को विलासितापूर्ण कहा जा सकता है, जिनमें लकड़ी के हब के छेद को लोहे या गैल्वनाइज्ड पाइप से ढककर बेहतर भार वहन सतह प्रदान की जाती है। गाँव के नज़रिए से, 'उच्च-स्तरीय स्नेहन' के लिए, कॉटर-पिन और पहिया हटाकर धुरी के सिरों पर लगभग हर पखवाड़े में एक बार पुराना मोटर तेल लगाया जाता है। तेल को गाड़ी के नीचे कहीं लटकाए गए एक पुराने बैल के सींग के खोल में स्थायी रूप से रखा जाता है, और 'मरम्मत का समय' आने पर, आस-पास पड़ी किसी भी लकड़ी के टुकड़े के सिरे से धुरी पर लगाया जाता है।

उस दिन करतब दिखाने का समय नहीं था, इसलिए हम गाँव वालों से पुराने कपड़े इकट्ठा करने में जुट गए। ऐसे इलाकों में पैंट का चलन नहीं है, इसलिए मैंने अपनी एक पैंट दे दी, जिसमें हमने बाँस की दो टांगें ठूँस दीं और उन्हें भूसे से लपेट दिया। कहीं बाघ को पैंट अपरिचित न लगे, इसलिए हमने पैंट के ऊपर एक धोती (जो सारोंग और लंगोटी का मिश्रण होती है) डाल दी। पुतले का शरीर एक पुराने बोरे में भूसा ठूँसकर बनाया गया था, जिसके ऊपर हमने दो फटी हुई कमीज़ें और एक बहुत ही पुराना कोट डाल दिया। पुतले का सिर कला का एक नमूना था; इसे एक बड़े आकार के नारियल से बनाया गया था, जिसमें उसके रेशे भी लगे हुए थे।

खास मौकों पर भारतीय महिलाएं अपने प्राकृतिक बालों को कृत्रिम बालों से सजाती हैं, जिन्हें वे सिर के पीछे जूड़े या कूंडे में बांधती हैं और उनमें फूल, खासकर चमेली के फूल लगाती हैं। सौभाग्य से

केम्पेकराई में एक सुंदरी थी जो ऐसे ही बालों की लटों की मालकिन थी। हमने उससे ये लटें उधार लीं, कंघी की और नारियल के चारों ओर इस तरह बांध दीं जैसे किसी ग्रामीण के लंबे बाल हों। फिर नारियल के चारों ओर देहाती शैली की एक बेतरतीब पगड़ी लपेटी गई और नकली नारियल के पैरों में चप्पलें पहना दी गईं।

जैसा कि मैंने कहा है, बाघों में सूंघने की क्षमता नहीं होती है, इसलिए वह पुतला इतना यथार्थवादी लग रहा था कि किसी आदमखोर को आकर्षित कर सके, बशर्ते वह उसे इतनी देर तक न देखता रहे कि उसकी विचित्र स्थिरता पर आश्चर्य करने लगे।

उस रात मैंने अपने घावों पर नई पट्टी बांधी और अगली सुबह पेनिसिलिन का एक और इंजेक्शन लगवाया। मुझे यह देखकर खुशी हुई कि अभी तक कोई असामान्य सूजन नहीं हुई थी।

सुबह 8 बजे तक, लगभग आधा दर्जन इच्छुक सहायकों और मैंने गाड़ी को उस जगह तक घसीट लिया जहाँ से मैंने पुलिया बनाने का सोचा था। वहाँ पहुँचकर हम लगभग चार फुट चौड़ा और चार फुट गहरा गड्ढा खोदने में जुट गए। यह काम आसानी से हो गया, क्योंकि हम नदी के तल की नरम रेत में खुदाई कर रहे थे। फिर कुछ घास काटकर गड्ढे में डाल दी गई ताकि खुदाई के साथ-साथ बढ़ती हुई रेत की नमी को कुछ हद तक सोख सके।

अंदर बैठकर मैंने पाया कि मैं केवल अर्धझुकी हुई स्थिति ही अपना सकता था, जो वास्तव में बहुत असुविधाजनक होने वाली थी। इसका एकमात्र फायदा यह था कि इसने मुझे बैठने की स्थिति से बचा लिया, जो कि, जैसा कि मैंने पहले ही कहा है, मेरे हाल के घावों को देखते हुए बहुत असुविधाजनक होती।

हमने एक नकली पुतला लगभग पंद्रह फीट दूर एक इमली के पेड़ की ओर पीठ करके रखा, जो उस नाले के पश्चिमी किनारे पर खड़ा था जहाँ से केम्पेकराई जाने वाला रास्ता गुजरता था; इसे इस तरह रखा गया था कि इसके पैर रास्ते पर पैंतालीस डिग्री के कोण पर निकले हुए थे। इस प्रकार, यदि बाघ किसी भी दिशा से गुजरता, तो नाले के किसी भी बिंदु से या रास्ते के किसी भी हिस्से से यह पुतला उसे तुरंत दिखाई देता। अंत में, हमने कुछ बड़े-बड़े पत्थर इकट्ठा किए, और जब मैं अपनी राइफल लेकर पहरा दे रहा था, तब रंगा और बायरा ने पहिये को छिपाने के लिए झाड़ियाँ और मलबा इकट्ठा किया।

जब मैं आखिरकार गड्ढे में घुसा, तो पहिया मेरे सिर से बस कुछ इंच ऊपर था। ज़मीन और पहिये के बीच छह इंच की जगह थी, जहाँ से मैं डमी की दिशा में निशाना लगा सकता था; यह जगह दो पत्थरों को लगभग तीन फुट की दूरी पर परिधि के नीचे रखकर बनाई गई थी, जिससे हवा आने-जाने के लिए बीच का हिस्सा खुला रहता था। पत्थरों के बीच झाड़ियाँ और मलबा बिखरा हुआ था; इससे मुझे चेतावनी भी मिल जाती अगर वह पीछे से आता, क्योंकि जब वह मलबे से टकराता या उस पर पैर रखता तो वह चटकने की आवाज़ करता।

सुरक्षा के लिहाज़ से, मैंने यह व्यवस्था की थी कि सभी लोग एक साथ केम्पेकराई लौटें और अगली सुबह फिर से एक साथ ही लौटें। मुझे पूरी रात उस गड्ढे में कैद रहना पड़ेगा, क्योंकि पहियों और उनके ऊपर रखे पत्थरों का वज़न इतना ज़्यादा था कि मैं उन्हें अकेले अंदर से उठा नहीं सकता था।

शाम के 4:30 बज रहे थे जब मैं अपनी बनाई हुई जेल में दाखिल हुआ। पहियों पर पत्थरों को रखने और छलावरण करने में लगभग आधा घंटा और लग गया, इसलिए जब मैंने खुद को अकेला पाया तो लगभग पाँच बज चुके थे। ऊपर खुला होने के बावजूद, गड्ढे के अंदर गर्मी दम घोंटने वाली थी। मैंने अपना कोट और कमीज़ उतार दी, और बाकी के कपड़े भी उतार देता, लेकिन मैं नहीं चाहता था कि रेत मेरे घावों में जाए।

ज़मीन से थोड़ा ऊपर झाँककर देखने पर मुझे पुतला और आसपास का काफ़ी बड़ा इलाका साफ़ दिखाई दे रहा था। पुतले के पीछे ढलान पर बीच में मेहंदी की झाड़ियाँ उगी हुई थीं। उस दिशा में हल्की सी हलचल ने मेरा ध्यान खींचा, जो एक सुंदर चित्तीदार हिरण के कान के फड़कने और फैलने के कारण थी। वह हिरण उत्सुकता से उस स्थिर पुतले को देख रहा था। जंगल में शांत बैठे रहने का महत्व मुझे तब समझ आया, क्योंकि हिरण पूरे दस मिनट तक उस पुतले को देखता रहा। फिर जैसे उसकी दिलचस्पी उस अनोखी चीज़ में कम हो गई, वह खुले रास्ते पर आ गया, जिसे पार करके वह दूसरी तरफ जंगल में गायब हो गया। पुतले और हिरण के बीच की दूरी बीस फीट से ज़्यादा नहीं रही होगी, फिर भी हिरण बिल्कुल भी नहीं डरा। अगर पुतले की जगह कोई इंसान बैठा होता, तो वह ज़रूर हिलता, भले ही पलक ही क्यों न झपकाता, और इससे हिरण डरकर भाग जाता।

तभी मोर का एक जोड़ा पगडंडी पर इतराता हुआ आया। नर मोर रुका, अपनी पूंछ फैलाई और अपनी मादा मोर को लुभाने के लिए अपने पंख फड़फड़ाए। मादा मोरनी की तरह, उसने एक आँख उस पर और दूसरी कहीं और रखी! खैर, उसने नकली मोरनी को देखा, थोड़ी दौड़ लगाई और हवा में उड़ गई। नर मोरनी को अपनी सुंदरता की सराहना न करने पर निराशा हुई, उसने अपनी पूंछ नीचे की और नकली मोरनी को देखा। मादा मोरनी से कहीं अधिक भारी होने के कारण, वह उड़ने की कोशिश में बेतहाशा फड़फड़ाने लगा, शाम की शांत हवा में उसके पंख ज़ोर से फड़फड़ा रहे थे, आखिरकार वह आसपास की झाड़ियों से थोड़ा ऊपर उठने में कामयाब हुआ और अपनी सतर्क मादा मोरनी के पीछे-पीछे सुरक्षित स्थान पर पहुँच गया।

अंधेरा होने से पहले नदी के किनारे कुछ दाने चुगने के लिए निकले भूरे जंगली मुर्गों ने चारों दिशाओं में 'कुक-काया-काया-खुक' की आवाज़ें निकालीं। छोटे-छोटे लड़ाकू पक्षी, कुकुर्रुका-वैक-कुकुर्रुका-वैक, 'कुकुर्रुका-वैक-कुकुर्रुका-वैक' की आवाज़ें निकाल रहे थे, क्योंकि नर मुर्गे जंगल में मादा मुर्गे का दिल जीतने के लिए आपस में लड़ रहे थे। देखने में वह भले ही साधारण और नीरस लगे, लेकिन उस शाम उनके लिए दुनिया में बस एक ही मकसद था, उसका दिल जीतना।

अंधेरा छा गया, और मोर के जोड़े की विदाई की आवाज सुनाई दी, जो रात भर के लिए जंगल के किसी ऊंचे पेड़ पर बसेरा बनाने जा रहे थे, जो शायद एक चौथाई मील दूर था। 'मिया-आ-ऊ-आओ' की आवाजें गूंजीं, जैसे ही सूरज पश्चिमी पर्वत श्रृंखला के पीछे डूब गया।

आपमें से जो लोग भारतीय जंगलों में गए हैं, उन्हें सूर्यास्त के समय होने वाला वह अद्‌भुत परिवर्तन याद होगा, जब दिन के पक्षी चहचहाना बंद कर देते हैं और रात के पक्षी चहचहाना शुरू कर देते हैं। 'चक-चक-चक-चुको' की आवाज़ें निकालते हुए रात्रि पक्षी अपने पंख फैलाकर कीड़ों की तलाश में ऊपर उड़ते हैं या रेत की पृष्ठभूमि में पत्थरों की तरह ज़मीन पर बैठ जाते हैं।

मैं जहाँ बैठा था, वहाँ घोर अँधेरा था और यहाँ तक कि पुतला भी इमली के पेड़ की छाया में छिपा हुआ था, जिसके नीचे उसे रखा गया था। मुझे लगा कि चाँद की रोशनी दस बजे के बाद ही वहाँ पहुँचेगी। नौ बजे मैंने एक सुस्त भालू की तेज़ सूंघने और गहरी गड़गड़ाहट सुनी, जो लड़खड़ाते हुए धारा के किनारे मेरी ओर आ रहा था। वह लगभग उस मलबे पर गिर पड़ा जो हमने बाघ के आने की चेतावनी देने के लिए नदी के तल पर रखा था, और फिर मैंने गाड़ी के पहिये पर रखे नए पत्थरों को देखा! मैं उसके घने काले बालों के नीचे छिपे उस नन्हे से दिमाग में चल रहे विचारों को पढ़ सकता था!

'यहाँ कुछ रसीले मोटे कीड़े, या एक-दो भृंग खोजने का मौका है; शायद दीमकों का घोंसला, या सबसे आशाजनक बात, छोटी पीली मधुमक्खियों द्वारा बनाया गया मधुमक्खी का छत्ता जो मुझ जैसे बड़े भालू को मुश्किल से डंक मार सकती हैं।'

इन्हीं विचारों के साथ, भालू उन पत्थरों को हटाने के काम में जुट गया, जिन्होंने मेरे कार्टव्हील को बड़ी सावधानी से टिका रखा था।

‘भाग जा!’ मैंने दबी आवाज़ में फुसफुसाया। ‘दूर हट जा, तुम दखलंदाज़...!’

भालू ने मेरी आवाज़ सुनी और रुक गया। ‘यह आवाज़ कहाँ से आई?’ वह सोच रहा था। कुछ मिनटों की खामोशी छाई रही, फिर उसने पत्थरों को घूरना शुरू कर दिया। ‘दूर हटो! भागो!’ मैंने फुसफुसाते हुए कहा। भालू रुका, पत्थरों के ऊपर से चढ़ा और पत्थरों के बीच से नीचे मेरी तरफ देखा।

‘आ-र, व्र-र्र!’ वह गुर्राया। ‘निकल जा बेवकूफ!’ मैं गुर्राया। ‘व्र-ऊफ! व्र-ऊफ! व्र-ऊफ!’ उसने जवाब दिया और पत्थरों पर बेतरतीब ढंग से चढ़ता हुआ, मलबे पर ठोकर खाता हुआ, किनारे पर चढ़ता हुआ सूखे बांसों के बीच से गिर पड़ा।

भालू के शोर मचाते हुए चले जाने के मुश्किल से दस मिनट ही बीते थे कि मुझे एक बहुत ही हल्की सी आवाज़ सुनाई दी, किसी भारी जानवर के गद्देदार पैर की धीमी आहट। उस आवाज़ को शब्दों में बयान करना लगभग नामुमकिन है, और कागज़ पर तो और भी मुश्किल। मैं उसका सबसे सटीक वर्णन ऐसे कर सकता हूँ जैसे किसी मुलायम तकिए को सोफे पर फेंके जाने पर आने वाली हल्की सी आवाज़।

बाघ आ चुका था और चुपचाप मेरे पीछे नदी के किनारे बिखरे मलबे के किनारे से रास्ता बनाते हुए आगे बढ़ रहा था। वह बड़ी सावधानी से उस पर से अपना रास्ता बना रहा था।

क्या वह डमी पर हमला करेगा? क्या वह मेरे सामने से गुजरेगा? ये सवाल मेरे दिमाग में घूम रहे थे, जब मैं आगे की स्थिति का इंतजार कर रहा था। मेरी नसें उत्सुकता से तनावग्रस्त थीं।

चाँद निकल चुका था, लेकिन उसकी किरणें इमली के घने पत्तों की छाया तक नहीं पहुँच पा रही थीं। पुतला मुझे दिखाई नहीं दे रहा था, लेकिन मुझे पता था कि बाघ उसे साफ देख सकता था।

कुछ देर तक सन्नाटा छाया रहा—कितनी देर तक, यह मैं नहीं कह सकता। फिर मेरे सिर के ऊपर से एक पत्थर के लुढ़कने की खनक सुनाई दी। किसी ने भी उस दिशा से हमले की उम्मीद नहीं की थी; लेकिन मेरे हाल ही के मेहमान, भालू ने पहले ही दिखा दिया था कि अप्रत्याशित भी हो सकता है। अब मेरे ऊपर बाघ की मौजूदगी से अप्रत्याशित घटना फिर से दोहराई जा रही थी। किस बात ने उसे नकली वस्तु को नज़रअंदाज़ करके सीधे उस जगह पर आने के लिए प्रेरित किया जहाँ मैं लेटा था, यह एक रहस्य था। बहुत संभव है कि बाघ भालू को देख रहा था, उसके अजीब व्यवहार को देखा था, उसकी जल्दबाजी में जाने पर ध्यान दिया था और जाँच करने आया था। इससे भी अधिक संभव है कि भालू के व्यवहार ने बाघ को मानव हस्तक्षेप का संदेह पैदा किया हो, जिसकी पुष्टि करने के लिए वह स्वयं आया हो। या शायद पहिया संयोगवश उस सबसे छोटे रास्ते पर स्थित था जिसका अनुसरण करते हुए बाघ नकली वस्तु तक पहुँच रहा था।

कारण चाहे जो भी हो, बाघ अब मुझसे केवल दो गज की दूरी पर था और मेरे ठीक ऊपर था।

ये सारे विचार मेरे मन में दौड़ रहे थे, तभी मुझे बाघ की साँसों की हल्की सी आवाज़ सुनाई दी। फिर वह बड़ी फुर्ती से पहिए को थामे रखने वाले बड़े-बड़े पत्थरों में से एक के ऊपर से गुजरा और मेरी तरफ नीचे देखने लगा।

इस बीच मैं निष्क्रिय नहीं बैठा था। जितना हो सका, मैंने खुद को समेटते हुए, आधा पीठ के बल लेटकर बाघ को ऊपर की ओर देखा। मैंने राइफल को अंदर और पीछे की ओर तब तक खींचा जब तक कि उसका बट छेद के किनारे से न टकरा गया। मैंने आपको पहले ही बताया है कि यह छेद लगभग चार फीट चौड़ा और लगभग उतना ही गहरा था। इसलिए राइफल को पूरी तरह ऊपर की ओर निशाना लगाना असंभव था। मैं ज़्यादा से ज़्यादा छेद के तल से साठ डिग्री से थोड़ा अधिक का कोण ही बना पाया। दुर्भाग्य से, बाघ उस दिशा में नहीं था जिस दिशा में राइफल का मुंह था, बल्कि वह उसके पीछे और ठीक उस जगह के ऊपर खड़ा था जहाँ राइफल का बट छेद के किनारे से टकरा रहा था।

फिर घटनाएँ तेज़ी से घटीं। बाघ ने भालू की तरह प्रतिक्रिया नहीं दी। मेरे ऊपर धुंधले से दिखाई दे रहे उसके चेहरे पर एक भयानक गुर्राहट छा गई। उसकी गहरी गड़गड़ाहट की आवाज़ें लगातार निकलती रहीं, और गाड़ी के पहिए पर लेटकर उसने अपने अगले पैर के पंजों से मुझे खरोंचने की कोशिश की, जिसे उसने पहिए की तीलियों के बीच फंसा दिया था।

मुझे पता था कि अगर उसके पंजे मेरे चेहरे और सिर को छू भी लेते तो वे उसे चीर-फाड़ कर देते, इसलिए जितना हो सके गड्ढे में नीचे झुककर, मैंने राइफल का मुंह बाघ की ओर मोड़ने के लिए जी-जान से संघर्ष किया।

यह सब कुछ पल भर में हो गया। बाघ गुर्राया और थोड़ा और आगे बढ़कर पहिये के पास आ गया। मेरी राइफल की नली उसके कंधे से टकराई और मैंने ट्रिगर दबा दिया।

उस तंग जगह में धमाका इतना भयानक था कि कान बहरे हो गए। बाघ भयानक दहाड़ते हुए पीछे की ओर उछल पड़ा। अगले तीस सेकंड तक वह पत्थरों, पहिए और यहाँ तक कि रेत को भी दांतों से काटता रहा, दर्द से कराहते हुए लगातार दहाड़ता रहा। फिर मैंने उसे मलबे के बीच गिरते, उठते, फिर गिरते, फिर उठते और अंत में छोटी सी धारा के किनारे उगी झाड़ियों में जा टकराते सुना। वह अभी भी दहाड़ रहा था, और लगभग पंद्रह मिनट तक लड़खड़ाते हुए जंगल की ओर बढ़ता रहा।

अंततः, जंगल में घोर सन्नाटा छा गया। अभी-अभी मचे उस भयानक कोलाहल के बाद, कीड़े-मकोड़ों समेत हर प्राणी ने यही समझदारी समझा कि समय बीतने के साथ-साथ वे अपना भय भूल जाएं, तब तक छिप जाना ही बेहतर होगा।

घंटे बीतते गए। सुबह एक बजे पहाड़ियों पर तेज़ हवा चलने लगी, काले तूफ़ानी बादल आसमान में छा गए, चाँद को पूरी तरह से ढक लिया, और जल्द ही पश्चिमी पर्वतमाला से आती बारिश की दूर की आवाज़ मेरे कानों तक पहुँची। कुछ ही देर बाद, बारिश की बड़ी-बड़ी बूँदें पेड़ों की तीलियों के बीच से निकलकर मुझ पर गिरीं।

फिर मूसलाधार बारिश शुरू हो गई, ऐसी बारिश जो केवल उष्णकटिबंधीय देशों, विशेषकर घने जंगलों में ही हो सकती है। मैं पूरी तरह भीग गया था और पानी गड्ढे के किनारों से रिसने लगा। तभी मुझे अचानक एहसास हुआ कि सूखी पड़ी यह धारा जल्द ही सैकड़ों सहायक नदियों से चारों ओर से बहकर आ रहे बारिश के पानी से भर जाएगी। मैं गड्ढे में चूहे की तरह डूब जाऊंगा।

मैं घबराकर हरकत में आ गया, हाथों और घुटनों के बल बैठ गया, अपनी पीठ पहिये से टिकाई और पूरी ताकत से ऊपर की ओर धकेलने लगा। पहिया रत्ती भर भी नहीं हिला! मेरे सहायकों ने मुझे बाघ से बचाने का अपना काम बखूबी कर दिया था! उन्होंने पहिये के चारों ओर सबसे भारी पत्थर रख दिए थे जो उन्हें मिल सके और मैं उन्हें अकेले हिला नहीं पा रहा था।

अब बस एक ही मौका बचा था, और वो था खुद को उस छह इंच चौड़े छेद से बाहर निकालना जो हमने मेरे लिए गोली चलाने के लिए बनाया था। हताशा में, मैंने दोनों हाथों से मिट्टी को गड्ढे में नीचे की ओर धकेला, जो पहले से ही आधा पानी और रेत से भरा हुआ था; गीले किनारे ढह रहे थे, जिससे यह साफ हो गया था कि अगले कुछ मिनटों में, अगर मैं जल्दी से बाहर नहीं निकला, तो मेरे ऊपर पत्थर और चट्टानें एक साथ गिर जाएँगी।

जब मुझे लगा कि मेरे शरीर के निकलने के लिए पर्याप्त जगह है, तो मैंने राइफल को पहिये के स्पोक्स के बीच धकेल दिया और फिर उसे उन पर टिका दिया। इसके बाद मैंने अपने द्वारा खोदे गए छेद से खुद को निचोड़ना शुरू किया, रेत और पानी में एक फंसी हुई मछली की तरह रेंगता हुआ, जब तक कि मैं आखिरकार संघर्ष करते हुए नदी के तल पर नहीं पहुँच गया।

बारिश लगातार तेज़ होती जा रही थी। मुझे नहीं पता था कि बाघ कितनी दूर चला गया है या किस दिशा में गया है, इसलिए मैंने राइफल उठाई और पहले नकली बाघ को नदी के किनारे से उठाकर पश्चिमी तट पर ऊँचाई पर रख दिया। फिर मैं केम्पेकराई लौटने के लिए नदी पार करने लगा, और ऐसा करते समय मुझे पहाड़ियों की दिशा से नदी में बहते बारिश के पानी की धीमी गर्जना सुनाई दी।

कुछ ही मिनटों में वह आ गई, तीन फुट से भी ऊँची झागदार जलधारा, जो अपने साथ सब कुछ बहा ले गई। लकड़ी के लट्ठे, उखड़े पेड़, सूखे बांस और हर तरह का बहकर आया कचरा, झागदार पानी में मिल गया। वह गाड़ी के पहिये तक पहुँचा और उसे ढक लिया; फिर गाड़ी का पहिया और बड़े-बड़े पत्थर तेज धारा के साथ बहते हुए नीचे की ओर चले गए। पाँच मिनट से भी कम समय में धारा एक उग्र नदी में बदल गई, जिसकी गहराई चार फुट से भी अधिक थी।

मुझे जो राहत मिली थी, उसकी सराहना करते हुए मैंने केम्पेकराई की वापसी यात्रा शुरू की। बारिश की बूंदों की आवाज़ के अलावा और कोई आवाज़ सुनाई नहीं दे रही थी। अंधेरा घना था, मेरी टॉर्च से बस एक गोलाकार रोशनी निकल रही थी। ऊपर से, मेरे पहने हुए मुलायम रबर के जूतों के लिए ज़मीन बेहद फिसलन भरी थी। मुझे तीन और छोटी-छोटी धाराओं को पार करना था, जो उस धारा से थोड़ी छोटी थीं जहाँ मैं बैठा था, लेकिन सभी में पानी उफान पर था।

केम्पेकराई के आधे रास्ते में, मुझे आती हुई एक रोशनी की झलक दिखाई दी। थोड़ी देर बाद, मेरी मुलाकात उसे ले जा रहे लोगों के समूह से हुई—रंगा, बायरा और गाँव के कुछ बहादुर लोग। पानी का स्तर बढ़ने पर उन्होंने मेरी स्थिति का अंदाजा लगा लिया था और आदमखोर सांप से मुठभेड़ का जोखिम उठाकर मेरी मदद के लिए आए थे।

अगली सुबह घने जंगल पर सूरज की तेज़ रोशनी पड़ रही थी। हम पिछली रात के अपने साहसिक कार्य के स्थान पर वापस लौटे। सभी नदियाँ तेज़ी से बह रही थीं, हालाँकि अब उनकी गहराई दो फीट से ज़्यादा नहीं थी। पुल के पास कहीं भी गाड़ी के पहिये का कोई निशान नहीं था। ज़ाहिर है, बाढ़ के पानी के साथ बहकर वह शायद चकनाचूर हो गया था। इसके बाद हमने दोनों किनारों की छानबीन की, लेकिन बाघ का कोई सुराग नहीं मिला। मूसलाधार बारिश ने खून के निशान या पंजों के निशानों को पूरी तरह मिटा दिया था।

दो घंटे बाद, निराश और हताश होकर हम केम्पेकराई लौट आए। वहाँ मैं तीन और दिन रुका रहा, बाघ के बारे में खबर सुनने की उम्मीद में, लेकिन मुझे निराशा ही हाथ लगी। बायरा और रंगा दोनों को लगा कि बाघ अपने घावों के कारण मर गया होगा, लेकिन मुझे इस पर बहुत संदेह था, क्योंकि मैं जानता था कि मेरा निशाना इतना सटीक नहीं था कि मैं एक साधारण तीर से ज़्यादा कुछ मार सकूँ।

इस जानवर का शिकार करने के उद्देश्य से ली गई मेरी छुट्टी की अवधि अब समाप्त हो चुकी थी, इसलिए मैं चौथे दिन सुबह केम्पेकराई से रवाना हो गया और रंगा को निर्देश दिया कि वह बायरा की मदद

के लिए वहीं रुक जाए। फिर उन्हें पेन्नाग्राम आना था और वहाँ से धर्मपुरी जाना था, जहाँ एक टेलीग्राफ कार्यालय था जहाँ से वे मुझे संदेश भेज सकते थे। उन्हें वहाँ मेरे उत्तर की प्रतीक्षा करनी थी।

बैंगलोर लौटने के दस दिन बाद, वह प्रतीक्षित टेलीग्राम आया जिसमें बताया गया था कि कोडेकराई फॉरेस्ट लॉज के एक वन रक्षक के घोड़े की हत्या कर दी गई है। टेलीग्राम से यह अनुमान लगाते हुए कि मेरे वहाँ पहुँचने तक चार दिन बीत चुके होंगे, मैंने जवाब भेजा और अपने साथियों को केम्पेकराई लौटने और वहाँ आगे की घटनाओं का इंतज़ार करने के लिए कहा, जिनकी सूचना टेलीग्राम द्वारा ही दी जानी थी।

छह दिन और बीत गए, जब मुझे दूसरा टेलीग्राम मिला जिसमें बताया गया था कि चिनार नदी पर स्थित मोराप्पुर नामक छोटे से गांव से सोपथी की ओर जा रहे एक काफिले के आखिरी बैलगाड़ी चालक पर एक बाघ ने हमला कर दिया था।

यह निस्संदेह वही आदमखोर सांप था। एक घंटे के भीतर मैं कार से धर्मपुरी के लिए रवाना हो गया, जहाँ मैंने अपने दो साथियों को साथ लिया। हम पेन्नाग्राम तक गए, जहाँ हमने कार छोड़ दी और लगभग बारह मील की पैदल यात्रा करके मोरप्पुर पहुँचे, रास्ते में चिनार नदी और सोपथी से गुज़रे।

इसी बीच मुझे पता चला कि बाघ के हमले का शिकार हुए गाड़ीवाले ने अपनी जान बचाने के लिए गाड़ी से कूदकर जुए पर छलांग लगाई और फिर गाड़ी खींच रहे दो बैलों के बीच आ गया। उसने ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाया और उसकी चीखों में गाड़ी के दूसरे गाड़ीवालों ने भी साथ दिया। इसके बाद बाघ भाग गया।

मैंने मोरप्पुर में एक गाड़ीवाले से बात की। उसने बताया कि बाघ अचानक उसकी गाड़ी के पीछे प्रकट हुआ, जो कतार में सबसे पीछे थी, और पीछे से उस पर कूदने की कोशिश की। तब वह अपने बैलों के बीच छिप गया। जब मैंने उससे पूछा कि बाघ गाड़ी में चढ़ने के अपेक्षाकृत आसान काम में सफल क्यों नहीं हुआ, तो उसने बताया कि वह आधा ही अंदर कूदा था, और उसने आगे देखने का इंतजार नहीं किया।

इसी बीच, सोपथी से हमारा पीछा करते हुए आए यात्रियों के एक समूह ने खबर दी कि उन्हें चिनार नदी की ओर जाने वाले ताजे बाघ के पदचिह्न मिले हैं, जो पिछली रात के हैं।

यह सुनकर हम जल्दी से सोपथी लौट आए, और हमें पदचिह्न ढूंढने में ज्यादा समय नहीं लगा। चिनार नदी में पानी चांदी की धारा की तरह बह रहा था, किनारों से किनारों तक लहराता हुआ, और नरम, गीली रेत में हमने साफ देखा कि जिस बाघ ने ये निशान बनाए थे, वह बुरी तरह लंगड़ा रहा होगा। शरीर का लगभग सारा भार बाएं अगले पैर पर था, दाहिना पैर हर कदम पर रेत पर बहुत हल्का रखा जा रहा था।

मैंने पहले भी कहा है कि 'स्पाइडर वैली' इसी स्थान पर चिनार नदी से मिलती है। आधा मील नीचे की ओर, और जिस दिशा में बाघ गया था, उसी दिशा में नदी के मध्य में एक छोटी, लंबी चट्टान थी। यह नदी के तल से लगभग चार फीट ऊपर उठी हुई थी और लगभग चालीस फीट लंबी और आठ फीट चौड़ी थी। मैंने उस रात उस चट्टान पर बैठने का फैसला किया, इस उम्मीद में कि बाघ चिनार नदी के ऊपर वापस आ सकता है और मुझे मेरी ऊँची जगह पर देख सकता है।

रंगा की पगड़ी, पुराना भूरा कोट और धोती उधार लेकर, मैंने तीनों को पहन लिया, धोती को अपने कपड़ों के ऊपर पहना, और शाम 5:30 बजे तक चट्टान पर बैठ गया। चूंकि रंगा और बायरा अकेले मोरप्पुर लौटने से डर रहे थे, इसलिए उन्होंने इस इलाके में चिनार के किनारे उगने वाले विशाल मुट्ठी वृक्षों की ऊँची डालियों पर आराम से रात बिताने का फैसला किया।

उस समय रातें अंधेरी होती थीं, लेकिन चट्टान पर मेरी स्थिति से, और चूंकि चिनार का जंगल उस स्थान पर लगभग 100 गज चौड़ा था, मैं सफेद रेत पर भरोसा करता था कि वह तारों की रोशनी को प्रतिबिंबित करके बाघ की आकृति को किसी भी दिशा से प्रकट कर देगी। लंगड़ापन के कारण थोड़ी परेशानी के अलावा, मैं जानता था कि बाघ पचास गज की दूरी से अपने शिकार पर हमला नहीं करेगा, बल्कि अंतिम हमला करने से पहले जितना संभव हो सके मेरे करीब आने की कोशिश करेगा।

अपने प्रकाश उपकरणों का परीक्षण करने के बाद, मैंने सावधानीपूर्वक .405 पिस्तौल लोड की और उसे कॉक किया, जिसे मैंने अपने दाहिनी ओर चट्टान पर रख दिया, जहाँ बाघ उसे देख न सके और उसे शक न हो। मैंने एहतियात के तौर पर अपनी .12 बोर की दोहरी बैरल वाली जेफ्रीज़ पिस्तौल भी अतिरिक्त हथियार के रूप में साथ रखी थी। चोक बैरल में एल.जी. स्लग और दाहिनी बैरल में घातक गोली डालकर, मैंने जेफ्रीज़ को अपने बाईं ओर चट्टान पर रख दिया। चाय की मेरी थर्मस, सुबह की भूख मिटाने के लिए कुछ चपातियाँ और मेरा पाइप रात भर के लिए मेरी ज़रूरतों को पूरा कर रहे थे। मैं अपने ओवरकोट पर बैठ गया, क्योंकि वह उस कठोर चट्टान से मुझे आराम दे रहा था; अगर रात ज़्यादा ठंडी हो जाती तो मैं उसे पहन लेता।

जंगल से आने वाली जानवरों और पक्षियों की सामान्य आवाजों ने दिन को विदाई दी, जबकि रात के निवासियों ने अपनी कम मधुर और अधिक भयावह चीखों के साथ अपनी गतिविधि की बारी का स्वागत किया।

साढ़े सात बजे अंधेरा हो चुका था; चिनार के रेगिस्तान की रेत की परावर्तित सफेदी ने मेरी चट्टान को इस तरह घेर रखा था मानो वह एक द्वीप हो।

नौ बजने के ठीक बाद तेज़ शोर और हलचल हुई और एक हाथी नदी के किनारे से नीचे आया, रेत पर चलता हुआ उस चट्टान के पास से गुजरा जहाँ मैं बेसुध बैठा था, और आगे बढ़ गया। वहाँ उसे नदी के किनारे बहती हवा का झोंका मिला और उसने मेरी गंध पहचान ली। अपनी सूंड का सिरा ज़मीन पर पटकते हुए, और एक अजीब सी आवाज़ निकालते हुए, जैसे जस्ता की चादर तेज़ी से बीच से मुड़ रही हो, वह मुड़ा, मेरी गंध को और सूंघा और तेज़ी से नदी के किनारे घनी झाड़ियों की ओट में चला गया। जब हाथी शरारती नहीं होता, तो उसका व्यवहार ऐसा ही होता है।

ग्यारह बज रहे थे और मैं सूर्यास्त से ही चारों दिशाओं पर नज़र रख रहा था। तभी, मेरे ठीक पीछे और बाईं ओर, मुझे कुछ हलचल महसूस हुई, दिखाई नहीं दी। ध्यान से देखने पर भी कुछ नहीं दिखा। अरे

नहीं! क्या वह नदी की हल्की भूरी-सफेद रेत की चादर पर धुंधला सा कुछ तो नहीं था? मैंने नज़र हटाई और फिर उसी जगह पर वापस देखा जहाँ मुझे धुंधलापन दिखा था। वह वहाँ नहीं था!

मैंने सोचा, 'यह तो अजीब बात है। क्या मेरी आंखों को धोखा हो रहा है, या वे बस थक रही हैं?'

ध्यान से देखने पर मुझे वह फिर से दिखाई दिया। लेकिन इस बार वह मेरे बहुत करीब था, पहले की तुलना में। दरअसल, वह दूर वाले किनारे और उस चट्टान के ठीक बीच में था जिस पर मैं बैठा था।

जब तक मैं इस विचित्र वस्तु को परिभाषित करने में सफल नहीं हो जाता, तब तक मैं किसी और दिशा में देखने का जोखिम नहीं उठा सकता था। और जैसे-जैसे मैं उसे देखता गया, वह फैलती हुई, मेरी ओर तैरती हुई प्रतीत हुई, कभी लंबी तो कभी छोटी होती हुई, लेकिन कोई आवाज़ नहीं कर रही थी।

फिर अचानक मुझे समझ आया कि यह क्या है। बाघ चुपचाप, छोटे-छोटे तेज़ कदमों से, पेट के बल रेंगता हुआ मेरी ओर आ रहा था, जब तक कि उसे यह महसूस नहीं हुआ कि वह अपने अंतिम, घातक हमले के लिए पर्याप्त दूरी पर है।

मेरे चेहरे और गर्दन से पसीना बह रहा था; मैं भय और उत्तेजना से कांप रहा था। लेकिन यह काफी नहीं था; इसलिए मैंने गहरी सांस ली और उसे रोककर कांपना बंद किया, अपने ईश्वर से मौन प्रार्थना की और राइफल को अपनी गोद में रखकर कंधे पर उठा लिया।

लगभग बीस गज दूर खड़ा बाघ, मेरी हलचल देखकर समझ गया कि उसकी मौजूदगी का पता चल गया है। एक पतली काली लकीर की तरह, उसकी पूंछ उसके पीछे हिल रही थी। हमला करने के लिए तैयार होते ही उसका धुंधलापन और भी स्पष्ट हो गया। मेरी टॉर्च की रोशनी सीधे उसके गुर्राते, चपटे सिर पर पड़ी। तभी राइफल चली, उसके छलांग लगाने से ठीक एक पल पहले।

मेरी गोली लगते ही वह उछला और आगे की ओर भागा। मेरी जान इसलिए बच गई क्योंकि मशाल बुझी नहीं थी और मैं दूसरी गोली चला सका। तब तक वह चट्टान तक पहुँच चुका था।

उसके पहले के घाव या मेरी हालिया गोलियों की वजह से—उस समय मैं यह नहीं बता सकता था कि कौन सी वजह थी—वह ऊपर नहीं चढ़ पाया। मेरी तीसरी गोली, जो बिल्कुल किनारे से चलाई गई थी, उसकी खोपड़ी के ऊपरी हिस्से में जाकर लगी, और उस हमले को रोक दिया जो लगभग मुझ तक पहुँचने ही वाला था, और वह चिनार की रेत पर लुढ़क गया, उसका अंत हो गया।

सोपथी लौटते समय सीटी बजाते हुए, मैंने रंगा और बायरा को मुट्ठी के पेड़ों से नीचे उतारा, जिन पर वे बैठे थे। मेरी गोलियों की आवाज सुनकर और नदी के किनारे से मुझे आते देख, वे समझ गए कि मैंने बाघ को मार गिराया है।

अगली सुबह हमने उसे औसत कद-काठी का, कुछ दुबला-पतला नर बाघ पाया। सत्रह दिन पहले गाड़ी के पहिए के नीचे से चलाई गई मेरी गोली ने अनुमान से कहीं अधिक नुकसान पहुँचाया था, क्योंकि वह उसके दाहिने कंधे से होकर गुज़री थी, हड्डी को तोड़ते हुए बाहर निकल गई थी। लेकिन घाव अच्छी हालत में था, और मुझे इसमें कोई संदेह नहीं है कि वह अंततः ठीक हो जाता, हालाँकि बाघ अपंग ही रहता।

पिछली रात चलाई गई मेरी पहली गोली उसके खुले मुँह से होकर गर्दन से बाहर निकल गई थी, जिससे एक बड़ा छेद हो गया था। फिर भी, वह लड़ता रहा। दूसरी गोली ऊपर की ओर गई, बाएं कंधे के पीछे से अंदर घुसी, फेफड़ों से नीचे की ओर गुज़री और फिर बाहर निकल गई। फिर भी, वह लड़ता रहा। केवल मेरी आखिरी गोली, जो उसकी खोपड़ी के ऊपरी हिस्से से होकर गुज़री, ने उसके उस मस्तिष्क को चकनाचूर कर दिया था जो उसकी अदम्य भावना को शक्ति प्रदान करता था।

इस बाघ को आदमखोर किसने बनाया? यह वह पहेली है जिसे हर शिकारी किसी आदमखोर जानवर, चाहे वह बाघ हो या तेंदुआ, को मारने के बाद सुलझाने की कोशिश करता है, न केवल अपनी जानकारी के लिए, बल्कि आम जनता को शिक्षित करने के लिए भी। और यह जानवर भी इस अटल नियम का अपवाद नहीं था कि मानव जाति ही बाघ को आदमखोर बनाती है। उसके दाहिने पैर में, उसी जगह पर एक पुराना गोली का घाव था जहाँ मुझे हमारी पहली मुठभेड़ में चोट लगी थी, बस थोड़ा नीचे; कोहनी के जोड़ में एक चपटी सीसे की गोली फंसी हुई थी, जो एक साल या उससे भी पहले किसी बंदूक से चलाई गई थी।

उस सबसे महत्वपूर्ण जोड़ में फंसी इस बाहरी वस्तु ने न केवल बाघ को असहनीय पीड़ा दी, बल्कि जंगली जानवरों और मवेशियों जैसे अपने वैध भोजन को मारने में उसकी गति को भी काफी हद तक बाधित कर दिया। इसने उसके दाहिने पैर के उपयोग को कमजोर कर दिया था, जो उसके सामान्य शिकार को पकड़ने और नीचे खींचने में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। निस्संदेह, यही एकमात्र कारण था जिसने बाघ को भूख से बचने के लिए मनुष्यों को भोजन के रूप में अपनाने के लिए मजबूर किया।

---

*नौ नरभक्षी और एक बदमाश देखें।

2

आलम बक्स और बड़ा काला भालू

अब मैं जो कहानी सुनाने जा रहा हूँ, वह एक सुस्त भालू के बारे में है। एक काफी बड़ा, काला और खूंखार भालू।

जैसा कि मैंने अन्य कहानियों में भी उल्लेख किया है, सभी भालू उत्तेजित, अविश्वसनीय और चिड़चिड़े स्वभाव के जानवर होते हैं। वे बिना किसी स्पष्ट कारण के लोगों पर हमला करने के लिए जाने जाते हैं, बशर्ते कि कोई व्यक्ति उनके बहुत करीब से गुजरे, चाहे भालू सो रहा हो, खाना खा रहा हो या बस टहल रहा हो। इसलिए स्थानीय लोग भालुओं से दूरी बनाए रखते हैं; हाथी के साथ-साथ, वे जंगल में रहने वाले लोगों के बीच सबसे अधिक सम्मान के पात्र होते हैं।

यह विशेष भालू अपने बेवजह और असाधारण रूप से गुस्सैल स्वभाव और आक्रामकता के कारण अपनी प्रजाति में सबसे अलग था। वह लोगों पर हमला करने के लिए हर संभव प्रयास करता था, यहाँ तक कि जब वह उन्हें काफी दूर से देखता था तब भी।

उसके असामान्य व्यवहार का कारण समझाना कठिन था। उसके बारे में कई कहानियां प्रचलित थीं, जो जितनी अलग-अलग थीं उतनी ही असाधारण भी। सबसे सरल कहानी यह थी कि वह पूरी तरह पागल था। अन्य कहानियों में कहा गया कि वह एक मादा भालू थी जिसके बच्चे उससे छीन लिए गए थे और उसने मानव जाति से बदला लेने की कसम खाई थी। मुझे लगता है कि किसी समय किसी इंसान ने उस भालू को घायल कर दिया था। शायद सबसे अविश्वसनीय कहानी यह थी कि लगभग एक साल पहले, इस भालू ने एक भारतीय लड़की को साथी बनाने के लिए अगवा कर लिया था, जब वह उस पहाड़ी पर बकरियों का झुंड चरा रही थी जहां वह रहता था। कहानी आगे कहती है कि पूरा गांव लड़की को बचाने के लिए एकजुट हो गया था, और अंततः वे उसे बचाने में सफल हो गए, जिससे भालू बहुत नाराज हो गया; इसके बाद उसने प्रतिशोध में मनुष्यों पर हमला करना शुरू कर दिया।

कारण चाहे जो भी हो, इस भालू के नाम पीड़ितों की एक लंबी सूची दर्ज थी; मुझे बताया गया कि लगभग बारह लोग मारे गए थे और दो दर्जन अन्य घायल हुए थे।

अन्य भालुओं की तरह, वह भी हमेशा शिकार के चेहरे पर हमला करता था, जिसे वह अपने बेहद लंबे और शक्तिशाली पंजों से नोंच-नोंच कर फाड़ देता था। इसके अलावा, वह जानबूझकर बेरहमी से काटता भी था ताकि अपने काम में सफल हो सके। घायलों में से लगभग आधे लोगों की एक या दोनों आंखें चली गई थीं; कुछ की नाक कट गई थी, जबकि कुछ के गाल बुरी तरह से नोंच दिए गए थे। मारे गए लोगों के चेहरे लगभग धड़ से अलग हो गए थे। स्थानीय अफवाहों के अनुसार, भालू अपने शिकारों को खाने लगा था, जिनमें से आखिरी तीन को उसने आधा खा लिया था।

मुझे इन अफवाहों की सच्चाई की पुष्टि करने का अवसर नहीं मिला, लेकिन मुझे लगा कि ये कुछ हद तक सच हो सकती हैं, क्योंकि भारतीय सुस्त भालू कभी-कभी सड़े-गले मांस को भी खा लेता है, हालांकि आम तौर पर वह पूरी तरह शाकाहारी होता है और केवल जड़ वाली सब्जियां, फल, शहद, दीमक और इसी तरह के स्वादिष्ट खाद्य पदार्थ ही खाता है। इसलिए ताजा मांस, यहां तक कि मानव मांस भी, उसके लिए शायद अवांछित न हो।

यह भालू मूल रूप से नागवारा पहाड़ियों में रहता था, जो बैंगलोर से लगभग 105 मील उत्तर-पश्चिम में स्थित अरसिकेरे नामक बड़े शहर के पूर्व में और मैसूर राज्य में स्थित हैं।

इन्हीं पहाड़ियों पर उसने अपने पहले अपराध किए थे। फिर, जैसे-जैसे उसका मनुष्यों का भय कम होता गया और वह अधिक साहसी होता गया, बिना किसी स्पष्ट कारण के वह मैदानों में उतर आया और भोर और शाम के समय खेतों में लोगों को परेशान करने लगा। वह इधर-उधर बिखरी हुई असंख्य छोटी-छोटी चट्टानों से भरी पहाड़ियों में से किसी एक से भोजन की तलाश में निकलता था।

लगभग एक साल से मैं इस जानवर के बारे में कभी-कभार कहानियां सुनता आ रहा था, लेकिन मैंने उन पर ज्यादा ध्यान नहीं दिया था, क्योंकि मुझे लगता था कि भारत में जंगली जानवरों द्वारा किए गए हमलों और हत्याओं की लगभग सभी कहानियों की तरह, ये कहानियां भी बहुत बढ़ा-चढ़ाकर बताई गई थीं। इसके अलावा, जैसा कि मुझे लगता है कि मैंने कहीं और भी जिक्र किया है, ब्रुइन मेरा काफी पुराना दोस्त है, जिसके प्रति मेरे मन में कोई द्वेष नहीं है। इसलिए मैं उसके पीछे जाने के लिए बिल्कुल भी इच्छुक नहीं था।

लेकिन एक ऐसी घटना घटी जिसने मुझे ऐसा करने के लिए मजबूर कर दिया। मेरा एक पुराना दोस्त है, आलम बक्स नाम का एक बुजुर्ग मुस्लिम, जो अरसिकेरे से होकर शिमोगा जाने वाली मुख्य सड़क पर स्थित एक मुस्लिम दरगाह का रखवाला है। यह दरगाह लगभग पचास साल पहले रहने वाले एक मुस्लिम संत का दफन स्थान है, और भारत भर में फैली सैकड़ों ऐसी ही दरगाहों की तरह, मुस्लिम समुदाय द्वारा इसे संरक्षित और पवित्र माना जाता है। हर दरगाह का अपना रखवाला या देखभाल करने वाला होता है; आमतौर पर कोई बुजुर्ग व्यक्ति होता है जो दरगाह की साफ-सफाई और देखभाल के लिए वहीं रहता है। उसका एक विशेष कर्तव्य दरगाह के ऊपर एक दीपक जलाना है, जो रात भर जलता रहता है, यह दर्शाने के लिए कि संत की स्मृति श्रद्धालुओं के हृदय में सदा प्रज्वलित रहे।

मेरी पहली मुलाकात आलम बक्स से एक अंधेरी रात में हुई थी, जब मैं बाघ के शिकार के लिए बैंगलोर से शिमोगा जा रहा था। मेरी स्टडबेकर कार का पिछला पहिया निकल गया और पीछे का ब्रेक ड्रम ज़ोरदार झटके के साथ सड़क से टकराया। उस समय मैं अकेला था और कार से बाहर निकलकर मैंने उस स्थिति को बड़ी घृणा और झुंझलाहट के साथ देखा।

सौभाग्य से, यह घटना लगभग दरगाह के सामने ही घटी थी, और बूढ़े आलम बक्स, ब्रेक ड्रम के टकराने और सड़क पर घिसटने की आवाज़ सुनकर जाग गए और देखने आए कि आखिर हुआ क्या है। मेरी परेशानी देखकर, बूढ़े ने मेरी मदद करने की पेशकश की, और उन्होंने काफी हद तक मेरी मदद की।

वे अपने घर से लालटेन लाए, गाड़ी का धुरा उठाते समय सहारा देने के लिए पत्थर इकट्ठा किए, और अंत में, मुझे गर्म चाय पिलाई। पहिया ठीक करने के बाद मैंने बूढ़े को धन्यवाद दिया और वादा किया कि जब भी मैं उनकी छोटी सी झोपड़ी के पास से गुजरूंगा, उनसे मिलूंगा। मैंने अपना वादा निभाया, और जब भी मैं उनके पास से गुजरता, उनके लिए कुछ न कुछ सामान जरूर लाता था।

मंदिर से लगभग चार सौ गज आगे पत्थरों का एक छोटा सा टीला था, जिसके बीच लैंटाना की झाड़ी उगी हुई थी। इस टीले के चारों ओर, मंदिर और उससे सटी सड़क तक, खेत थे जिनमें ग्रामीण मानसून की बारिश के बाद मूंगफली उगाते थे। भालुओं को मूंगफली बहुत पसंद होती है और हमारा बड़ा काला भालू भी इसका अपवाद नहीं था। पत्थरों से ढका यह टीला उसके लिए सुविधाजनक ठिकाना था और मूंगफली के खेत उसे बहुत आकर्षित करते थे। इसलिए उसने चट्टानों के बीच अपना डेरा जमा लिया।

उसने एक लटकते हुए बड़े पत्थर के नीचे एक गहरी गुफा में अपना ठिकाना बनाया था। सूर्यास्त तक भूख से बेहाल होकर वह अपनी गुफा से बाहर आता दिखाई देता था, और जैसे-जैसे शाम ढलकर रात होती जाती, वह पहाड़ी से नीचे उतरकर मूंगफली के खेतों में आ जाता। यहाँ वह पूरी रात व्यस्तता से बिताता, खाता-पीता, उखाड़ता और रात भर इधर-उधर घूमता रहता। भोर होते ही वह तृप्त हो जाता, उसका पेट जड़ों, मूंगफली, दीमकों, कीड़ों और अन्य तरह के चारे से भरा होता, जो उसे भोजन की तलाश में मिलता। आलस से वह वापस अपने ठिकाने पर चढ़ जाता, और दिन के गर्म घंटे गहरी और हल्की नींद में बिताता। मैं बताना भूल गया कि पहाड़ी के दूसरी ओर एक छोटा सा तालाब था, जिसे भारतीय भाषा में प्राकृतिक झील कहते हैं, जिससे हमारे इस प्यारे भालू को किसी चीज की कमी नहीं होती थी।

लगभग इसी समय, छोटे से मंदिर के पास से गुजरने वाली मुख्य सड़क के किनारे लगे अंजीर के पेड़ों में फल लगने का मौसम आ जाता था। पके हुए लाल फलों के गुच्छे शाखाओं पर भर जाते थे और नीचे ज़मीन पर गिरकर एक मुलायम, लाल, स्पंजी परत बना देते थे। दिन के समय सैकड़ों तरह के पक्षी अंजीर खाते थे। रात में, बड़ी संख्या में उड़ने वाली लोमड़ियाँ, जो आकार और रूप में प्रसिद्ध 'पिशाच' चमगादड़ जैसी दिखती हैं, अपने चमड़े जैसे पंखों को फड़फड़ाती हुई, चीखती-चिल्लाती, एक-दूसरे को नोचती और आपस में लड़ती हुई पके हुए फलों को चट कर जाती थीं।

दिन-रात आने वाले ये असंख्य आगंतुक, जितने अंजीर खाते थे, उससे दोगुने अंजीर गिरा देते थे, जिससे ज़मीन पर बिखरे हुए फलों की बहुतायत और बढ़ जाती थी। ये फल हवा से उड़कर अक्सर अपने वजन से ही गिर जाते थे। यह सब भालू के लिए और भी आकर्षक था, क्योंकि अब उसे अपने भोजन में एक सुखद बदलाव मिल गया था। यह सब प्रचुर मात्रा में मौजूद था, बस खाए जाने की प्रतीक्षा कर रहा था।

इसलिए वह खेतों से अंजीर के पेड़ों के पास जाया करता था, और इस तरह भोजन की तलाश में वह मंदिर परिसर में पहुँच जाता था। यहीं से मुसीबत शुरू हुई।

आलम बक्स का एक बेटा था, जिसकी उम्र लगभग बाईस वर्ष थी। वह अपने संरक्षक की बूढ़ी पत्नी और छोटी बहन के साथ दरगाह में रहता था। एक रात परिवार ने लगभग नौ बजे भोजन किया और सोने की

तैयारी कर रहे थे, तभी लड़का किसी कारणवश बाहर चला गया। रात काफ़ी अंधेरी थी और भालू भी पास ही अंजीर खा रहा था। अचानक किसी इंसान को देखकर भालू को लगा कि यह बेवजह की घुसपैठ है और उसने तुरंत लड़के पर हमला कर दिया। जानबूझकर नहीं, बल्कि अनजाने में भालू ने लड़के के गले पर काट लिया, न कि उसके चेहरे पर, जो आमतौर पर उसका पहला निशाना होता था। लड़के ने चीखने की कोशिश की, लात मारी और संघर्ष किया। भालू ने उसे फिर से काटा, इस बार नाक और एक आँख पर, और उसके सीने, कंधों और पीठ पर बुरी तरह से खरोंचें मारीं। फिर उसने उसे छोड़ दिया और अँधेरे में भाग गया।

खून से लथपथ लड़का लड़खड़ाते हुए अपने माता-पिता के पास लौटा। उसकी गर्दन की नस फट गई थी, और हालाँकि उन्होंने उपलब्ध कपड़ों से खून रोकने की कोशिश की, लेकिन वे उसकी जान बचाने में असफल रहे। अंधेरे में उसकी जान धीरे-धीरे निकल गई, क्योंकि एक-एक कपड़ा उसके खून से भीगता चला गया।

भोर होते ही युवक की मृत्यु हो गई, जबकि अंजीर और मूंगफली से लबालब भरा बूढ़ा भालू चट्टानों के बीच बनी अपनी गुफा में वापस चढ़ गया।

आलम बक्स एक गरीब आदमी था और उसके पास मुझे टेलीग्राम भेजने के लिए पैसे नहीं थे, यहाँ तक कि ट्रेन या बस से बैंगलोर जाने का किराया भी नहीं था। लेकिन उसने मुझे एक पोस्टकार्ड भेजा जिस पर दुख भरी कहानी लिखी थी; पेंसिल से, कांपती हुई उर्दू लिपि में। वह उसके आँसुओं से भीगा हुआ था। पोस्टकार्ड दो दिन बाद पहुँचा और मैं तीन घंटे के भीतर अरसिकेरे के लिए रवाना हो गया।

मुझे लगा था कि इस भालू का शिकार करना आसान होगा और इसमें ज़्यादा से ज़्यादा एक-दो घंटे लगेंगे। इसलिए, मैंने लंबी यात्रा की तैयारी नहीं की थी। मैं अपने साथ सिर्फ़ एक टॉर्च, .405 विंचेस्टर राइफ़ल और एक जोड़ी कपड़े लेकर गया था। मैं शाम पाँच बजे के कुछ देर बाद आलम बक्स पहुँचा और उसने मुझे अपनी कहानी सुनाने में ज़्यादा समय नहीं लगाया।

उस समय चांदनी नहीं थी। फिर भी, जो योजना अपनानी थी वह सरल प्रतीत होती थी; अर्थात्, पूरी तरह अंधेरा होने तक प्रतीक्षा करना और फिर अपनी टॉर्च की सहायता से भालू की खोज में निकलना।

इस प्रक्रिया को ध्यान में रखते हुए, आलम बक्स ने मुझे सूर्यास्त के समय अपने घर में प्रवेश करने दिया और यह दिखाने के लिए दरवाजा बंद कर दिया कि सब कुछ शांत है। उस छोटे से अंधेरे कमरे में हम एक छोटे से तेल के दीपक की टिमटिमाती रोशनी में बातें कर रहे थे, जबकि वह बार-बार अपने बेटे की मृत्यु पर विलाप कर रहा था। वास्तव में, कुछ ही मिनटों में पूरा परिवार रोने-धोने लगा। मुझे मजबूरी में आठ बजे तक लगातार यह सब सुनना पड़ा, जब मैं इसे और सहन नहीं कर सका और भालू की तलाश में बाहर जाने का फैसला किया।

अपनी राइफल में गोलियां भरकर और टॉर्च को ठीक से काम करते देख, मैं बाहर निकला। आलम बक्स ने मेरे पीछे दरवाजा बंद कर दिया और कुंडी लगा दी। अंधेरा घना था, और जैसे ही मैंने राइफल के

मुंह के पास लगी टॉर्च का बटन दबाया, उसकी तेज रोशनी मेरे बाईं ओर मूंगफली के खेतों और दाईं ओर सड़क के किनारे लगे अंजीर के पेड़ों की घनी कतार पर पड़ी।

भालू कहीं नज़र नहीं आया, इसलिए मैंने अंजीर के पेड़ों से उसकी तलाश शुरू की। ये पेड़ सड़क के दोनों ओर उगे हुए थे, इसलिए मैंने सोचा कि सबसे अच्छा तरीका यही होगा कि मैं सड़क के किनारे-किनारे चलूँ और अपनी राइफल को सड़क के एक तरफ से दूसरी तरफ घुमाता रहूँ। मैं इसी तरह अरसिकेरे से लगभग डेढ़ मील दूर चला, लेकिन भालू का कोई निशान नहीं दिखा। फिर मैं मंदिर वापस आया और विपरीत दिशा में डेढ़ मील और चला, लेकिन फिर भी भालू का कोई निशान नहीं मिला। इसलिए मैं मंदिर वापस आया और मूंगफली के खेतों में तलाश शुरू कर दी।

टॉर्च की रोशनी से परावर्तित होकर कई आँखों की चमकीली झलकें मेरी ओर चमक रही थीं। लेकिन वे खरगोशों और तीन-चार सियार की आँखें निकलीं। मैंने टीले का चक्कर लगाया और तालाब के किनारे-किनारे दूसरी तरफ चलने लगा; जहाँ मुझे जंगली सूअरों का एक छोटा झुंड कीचड़ में लोटता हुआ मिला। लेकिन बूढ़े भालू का अभी भी कोई निशान नहीं था। फिर मैं टीले के पास गया और उसके चारों ओर दो-तीन बार घूमकर अपनी टॉर्च ऊपर और चारों दिशाओं में चमकाई। यह थका देने वाला काम था, और बूढ़ा भालू दिखाई नहीं दिया। तीसरी बार तो मैं लगभग एक बहुत बड़े रसेल वाइपर पर पैर रखने ही वाला था जो मेरे रास्ते में दो चट्टानों के बीच कुंडली मारकर बैठा था। भालू की आँखों की परावर्तित चमक को ढूंढने में व्यस्त होने के कारण मैंने अपने सामने की ज़मीन पर ध्यान नहीं दिया। मेरा पैर वाइपर से कुछ ही इंच दूर था जब उसने हमला करने की तैयारी में ज़ोरदार, कर्कश फुफकार के साथ अपना शरीर फुला लिया। सहज ही मैंने उसकी चेतावनी को माना और पास नहीं आया, और पीछे की ओर छलांग लगाई। साथ ही, मैंने टॉर्च की रोशनी सीधे सांप पर डाली। सांप ने अपने जबड़े फैलाकर उस जगह पर काटने के लिए झपट्टा मारा, जहाँ कुछ ही पल पहले मेरे पैर थे। बाल-बाल बच गया, और उस पल मुझे लगा कि सांप को गोली मार दूं। लेकिन इससे बहुत शोर मच जाता और भालू भी डरकर भाग सकता था, साथ ही एक कीमती कारतूस भी बर्बाद हो जाता। आखिरकार, सांप ने मुझे चेतावनी देकर अच्छा किया था, इसलिए मैंने बदले में उस पर एक छोटा पत्थर फेंका, जिससे वह चट्टानों के नीचे रेंगकर भाग गया।

तब तक यह स्पष्ट हो चुका था कि भालू या तो शाम को पहले ही बाहर निकल गया था और बहुत दूर भटक गया था, या फिर उसे भूख नहीं लगी थी और वह अभी भी अपनी गुफा में ही था। मैं आलम बक्स की झोपड़ी में लौट आया और कुछ घंटों में एक और चक्कर लगाने का फैसला किया।

मैंने ऐसा ही किया, और उसके बाद दो और चक्कर लगाए, कुल मिलाकर चार चक्कर लगाए, लेकिन भालू कहीं दिखाई नहीं दिया, और झूठी सुबह होने पर भी मैं व्यर्थ ही दुश्मन की तलाश में पहाड़ी के चारों ओर चक्कर लगाता रहा।

दिन की रोशनी होते ही मैंने आलम बक्स से कहा कि मैं बैंगलोर लौट जाऊंगा, लेकिन उन्होंने मुझसे आज का दिन रुकने और पहाड़ी पर चढ़कर गुफा में भालू को ढूंढने का आग्रह किया। इस बीच उनकी पत्नी

ने गरमा गरम चपातियां (गेहूं के आटे से बनी गोल चपटियां) और गरमा गरम चाय तैयार कर दी थी, जिन्हें मैंने बड़े चाव से खाया। फिर मैं सो गया। दोपहर करीब आलम बक्स ने मुझे जगाया और बताया कि उनकी पत्नी ने मेरे लिए खास पुलाव बनाया है। इसके लिए उनका धन्यवाद करते हुए मैंने भी उसे खाना शुरू किया और देखते ही देखते सारा खत्म कर दिया। श्रीमती आलम बक्स बहुत प्रसन्न हुईं कि मुझे उनका खाना इतना पसंद आया। सूरज अब अपने चरम पर था और दोपहर की तेज गर्मी में चमकती चट्टानों पर बेरहमी से चमक रहा था। मुझे पता था कि भालू को ढूंढने का यही अच्छा समय होगा, यह मानते हुए कि वह घर पर होगा, क्योंकि वह गहरी नींद में सो रहा होगा।

आलम बक्स मेरे साथ पहाड़ी पर चढ़े और पचास गज की दूरी से उन्होंने मुझे वह ढलान वाली चट्टान दिखाई जिसके नीचे भालू की गुफा थी। मैं अपने जूतों के रबर के तलवों से बिना आवाज़ किए, पंजों के बल ऊपर चढ़ने लगा। लेकिन इस फायदे के बदले मुझे जल्द ही एक बड़ी परेशानी का सामना करना पड़ा, क्योंकि धूप में तपती चट्टान की गर्मी रबर को भेदकर मेरे पैरों के तलवों को जलाने लगी।

गुफा के प्रवेश द्वार पर पहुँचकर, मैं अपने घुटनों के बल बैठ गया और ध्यान से सुनने लगा।

सोते हुए भालू के खर्राटे लेना आम बात है, अक्सर इंसानों के खर्राटों जितने तेज़। अगर भालू गहरी नींद में सो रहा होता, जैसा कि मुझे उम्मीद थी, तो मुझे उसकी वो जानी-पहचानी आवाज़ सुनने की उम्मीद थी। लेकिन मुझे कोई आवाज़ सुनाई नहीं दी, और लगभग दस मिनट तक ऐसे ही बैठे रहने के बाद, सूरज की किरणें मेरी कमीज़ के पीछे से महसूस होने लगीं। कुछ कंकड़ पास ही पड़े थे, और मैंने उनमें से कुछ उठाकर गुफा में फेंकना शुरू कर दिया।

इस तरह की हरकत से तो सो रहा भालू भी बहुत गुस्सा हो जाता है। लेकिन मुझे कुछ सुनाई नहीं दिया। इसलिए मैं गुफा के प्रवेश द्वार के पास गया और पत्थर अंदर की तरफ फेंके। फिर भी कुछ नहीं हुआ। मैंने और पत्थर फेंके, लेकिन फिर भी कोई फायदा नहीं हुआ। भालू अपनी गुफा में नहीं था।

पहाड़ी से नीचे उतरते हुए मैंने आलम बक्स को खबर दी और बैंगलोर लौटने की अपनी मंशा बताई। मैंने उनसे अनुरोध किया कि अगर भालू दोबारा दिखाई दे तो मुझे टेलीग्राम भेज दें। मैंने उन्हें टेलीग्राम के खर्च और तात्कालिक खर्चों के लिए कुछ पैसे दिए। फिर मैं बैंगलोर के लिए रवाना हो गया। एक महीना बीत गया, और मुझे कोई खबर नहीं मिली।

मंदिर स्थल से लगभग बीस मील उत्तर-पश्चिम दिशा में मैसूर के कादुर जिले में स्थित चिकमगलूर का जंगल शुरू होता है। चिकमगलूर और कादुर के लगभग मध्य में जंगल से घिरा हुआ छोटा सा कस्बा सकरेपटना स्थित है।

मुझे अगली खबर यह मिली कि सकरेपटना के पास एक भालू ने दो लकड़हारों पर गंभीर हमला किया था, जिनमें से एक की बाद में मौत हो गई। चिकमगलूर के जिला वन अधिकारी (डीएफओ) ने मुझे पत्र लिखकर पूछा कि क्या मैं आकर उस भालू को मार सकता हूँ।

मैंने यह निष्कर्ष निकाला कि यह वही भालू था जो आलम बक्स के बेटे की मौत का कारण बना था, लेकिन जंगल के विशाल क्षेत्र में किसी एक विशेष भालू को ढूंढना भूसे के ढेर में सुई खोजने जैसा था, इसलिए मैंने पशुपालन कार्यालय को पत्र लिखकर जानवर के ठिकाने के बारे में अधिक सटीक जानकारी प्राप्त करने का प्रयास किया।

दस दिन बाद उसने जवाब दिया कि भालू कस्बे से लगभग तीन मील दूर एक छोटी पहाड़ी पर एक गुफा में रह रहा है, जो 'आयरनकेरे' नामक एक बड़ी झील की ओर जाने वाले पैदल मार्ग के पास है। साथ ही, उसने वन रक्षक पर भी हमला किया था, जो अपनी नियमित गश्त के दौरान इसी रास्ते पर चल रहा था।

इसलिए मैं कार से चिकमगलूर गया, वहां से वन विभाग का अधिकारी (डीएफओ) लिया और सकरेपटना कस्बे की ओर चल पड़ा, जहां मैसूर वन विभाग का एक छोटा सा विश्राम गृह है। मैंने अगले कुछ दिनों के लिए यहीं अपना मुख्यालय बनाया।

संयोगवश—या कहें बदकिस्मती से—अगली ही दोपहर एक आदमी दौड़ता हुआ बंगले पर आया और हमें बताया कि एक पशुपालक—दरअसल उसका भाई—उसी पहाड़ी के पास अपने मवेशियों को चरा रहा था जहाँ भालू के रहने की आशंका थी, तभी उस पर भालू ने हमला कर दिया। उसने मदद के लिए चीख-पुकार मचाई और उसकी चीखें भालू की गुर्राहट में मिल गईं। उसका भाई, जो पहाड़ी से नीचे और पगडंडी के पास था, आवाज़ें सुनकर और इंतज़ार नहीं किया, बल्कि दौड़कर बंगले पर वापस आया और हमें यह खबर दी।

भालू मूलतः रात्रिचर प्राणी होते हैं और दिन के उजाले में कभी बाहर नहीं निकलते। ज़्यादा से ज़्यादा वे शाम या सुबह तड़के ही दिखाई देते हैं, दोपहर में तो बिलकुल नहीं। शायद दुर्भाग्यवश चरवाहा किसी ऐसी जगह के बहुत करीब चला गया था जहाँ भालू सो रहा था, जिसके कारण भालू ने उस असामान्य समय पर उस पर हमला कर दिया। इस अजीब हमले का यही एकमात्र कारण हो सकता है।

शाम के लगभग 4:30 बज रहे थे जब उसने हमें यह खबर दी, और मैं अपनी राइफल, टॉर्च और तीन-चार सहायकों के साथ उस चरवाहे को बचाने के लिए निकल पड़ा जिस पर हमला हुआ था। हमें जल्द ही पता चला कि घटनास्थल की दूरी उस दुर्भाग्यपूर्ण व्यक्ति के भाई द्वारा बताई गई दूरी से कहीं अधिक थी। मैंने अनुमान लगाया कि जंगल में लगभग छह मील चलने के बाद हम एक पहाड़ी की तलहटी पर पहुँचे जो घनी झाड़ियों से ढकी हुई थी, जिसमें बांस के झुंड भी शामिल थे। तब लगभग छह बज चुके थे और सर्दी का मौसम होने के कारण अंधेरा होने लगा था। मेरे साथ आए लोगों ने आगे आने से इनकार कर दिया और कहा कि वे सकरेपटना लौट जाएँगे, मुझे उनके साथ चलने की सलाह दी और सुझाव दिया कि हमें अगली सुबह अपनी खोज जारी रखने के लिए वापस आना चाहिए। लापता व्यक्ति का भाई वहीं रुकने के लिए तैयार हो गया जहाँ हम खड़े थे, लेकिन वह जंगल में आगे आने से बहुत डरा हुआ था। अपने लापता रिश्तेदार को खोजने में मेरी मदद करने के लिए वह बस इतना ही कर सका कि उसने अपने हाथ के इशारे से उस क्षेत्र की ओर संकेत किया जहाँ हमला हुआ था।

मैं उस दिशा में आगे बढ़ा और उस आदमी का नाम ज़ोर-ज़ोर से पुकारने लगा जिस पर हमला हुआ था। मेरी चीखों का कोई जवाब नहीं मिला और मैं झाड़ियों के बीचोंबीच और अंदर चला गया। तब तक लगभग अंधेरा हो चुका था, लेकिन मैं घबराया नहीं, क्योंकि मैं अपनी टॉर्च साथ लाया था और झाड़ियों के बीच से रास्ता ढूंढते हुए उसे चमकाने लगा।

कुछ ही देर में घना जंगल इतना घना हो गया कि मैं आगे नहीं बढ़ सका और वापस लौटने ही वाला था कि तभी मुझे दूर से एक हल्की सी कराह सुनाई दी। उस जगह पर ज़मीन ढलानदार होकर एक घाटी जैसी बन जाती थी जो पहाड़ी की दो चोटियों के बीच स्थित थी, और कराह इस घाटी के भीतरी हिस्से से आती हुई प्रतीत हुई।

लापता व्यक्ति का नाम थिम्मा था, और मैंने अपने दोनों हाथों को मुँह पर रखकर, जोश से उसका नाम पुकारा, और बीच-बीच में जवाब सुनने का इंतज़ार करता रहा। हाँ! निःसंदेह, वही आवाज़ फिर से सुनाई दी! एक धीमी, सिसकती हुई आवाज़, कमज़ोर, लेकिन फिर भी सुनाई देने वाली। यह आवाज़ निश्चित रूप से घाटी से मुझ तक पहुँची।

घनी झाड़ियों से रास्ता बनाते हुए, मैं ढलान पर मुश्किल से नीचे उतरा, चट्टानों और ढीले पत्थरों पर फिसलता रहा, और बार-बार कांटों का सहारा लेता रहा। कुछ सौ गज चलने के बाद, मैंने फिर से आवाज़ लगाई। कुछ देर बाद मुझे अपने दाहिनी ओर कहीं से कराहने की आवाज़ सुनाई दी। मैं इसी तरह उस आवाज़ का पीछा करता रहा, जब तक कि आखिरकार मुझे थिम्मा एक पेड़ के नीचे अपने ही खून के पोखर में पड़ा हुआ नहीं मिला। उसका चेहरा कच्चे मांस और टूटी हड्डियों का ढेर था, और उसके सांस लेने का एकमात्र संकेत जमे हुए खून से निकलती हवा के बुलबुले थे। इसके अलावा, भालू ने अपने पंजों से उसके पेट पर खरोंचें मारी थीं, जिससे बाहरी मांस फट गया था और आंत का एक हिस्सा बाहर निकला हुआ था। जब मैंने उसे पाया तो वह लगभग बेहोश था, और मुझे जल्द ही एहसास हुआ कि जिसे मैंने अपनी आवाज़ का कराहना समझा था, वह तो बस उसकी बेहोशी में बीच-बीच में निकलने वाली कराहें थीं।

हालात बेहद गंभीर थे, और जांच करने पर मैंने पाया कि एक और रात खुले में रहने से सुबह तक उसकी मौत हो जाएगी। इसलिए उसे वापस उसी जगह ले जाने के अलावा कोई चारा नहीं था जहाँ मैंने उसके भाई को छोड़ा था। उसकी दयनीय हालत को देखते हुए उसे कंधे पर उठाना बहुत मुश्किल था। स्थिति और भी खराब इसलिए थी क्योंकि वह भारी-भरकम शरीर वाला आदमी था, वजन में मेरे बराबर। लेकिन मैंने किसी तरह उसे उठा लिया और अपनी राइफल के बट का सहारा लेकर उसी रास्ते से ऊपर की ओर बढ़ने लगा जिससे मैं आया था।

मैं दोबारा कभी ऐसी भयानक यात्रा का अनुभव नहीं करना चाहता। मैं लगभग उस पहाड़ी की चोटी पर पहुँच ही गया था जहाँ से मैं कुछ देर पहले नीचे आया था, तभी यह हादसा हुआ। मेरा बायाँ पैर फिसल गया और दो बड़े पत्थरों के बीच ज़ोर से जा गिरा। जैसे ही मैं थिम्मा के साथ चट्टान पर गिरा, मुझे एक तेज़, चुभने वाला और दर्द भरा झटका लगा, और राइफल ज़मीन पर गिर पड़ी।

मेरे टखने में मोच आ गई थी और मैं खुद चलने में असमर्थ था। जहाँ हम लेटे थे, वहीं से मैंने भाई को आवाज़ देना शुरू किया; लेकिन लगभग एक घंटे बाद मुझे एहसास हुआ कि वह या तो मुझे सुन नहीं पा रहा था या सुनना नहीं चाहता था। मेरे पास मरने वाले आदमी के साथ रात बिताने के अलावा कोई विकल्प नहीं था।

टॉर्च की बैटरी को रात भर चलाने की इच्छा से, मैंने ज़रूरत से ज़्यादा इस्तेमाल नहीं किया। सुबह के शुरुआती घंटे कड़ाके की ठंड से भर गए और थिम्मा की कराहें धीरे-धीरे कमज़ोर होती गईं, यहाँ तक कि अंत में वे घुरघुराहट में बदल गईं। मुझे एहसास हुआ कि वह मर रहा है। सुबह लगभग 5 बजे उसकी मृत्यु हो गई, और मैं उसके पास तब तक बैठा रहा जब तक कि सुबह छह बजे के कुछ देर बाद उजाला नहीं हो गया।

फिर मैंने खुद को पैरों पर खड़ा करने की पूरी कोशिश की, लेकिन पाया कि मेरा पैर मेरा भार नहीं संभाल पा रहा था। मैंने रेंगने की कोशिश की, लेकिन कांटों ने एक अभेद्य बाधा खड़ी कर दी। उन्होंने मेरे हाथों, चेहरे और कपड़ों को बुरी तरह से नोच डाला। जल्द ही मैंने हार मान ली और इस बात को स्वीकार कर लिया कि मुझे तब तक इंतजार करना होगा जब तक कोई बचाव दल हमारी तलाश में नहीं आ जाता।

दोपहर ढलने के काफी बाद तक वन विभाग के लोग, थिम्मा के भाई और लगभग एक दर्जन ग्रामीणों के साथ, घटनास्थल के पास नहीं पहुँच पाए। आखिरकार, मेरी चीखों से मार्गदर्शन पाकर वे हमें ढूंढ पाए, और उसी शाम मैं सक्रपटना वन बंगले में वापस आ गया, चारपाई पर लेटा हुआ था और मेरा टखना बुरी तरह सूजा हुआ था। वन विभाग के अधिकारी लगभग नौ बजे आए और मुझे मेरी कार में चिकमगलूर ले गए, जहाँ मैं इलाज के लिए स्थानीय अस्पताल गया। एक हफ्ते बाद मैं लंगड़ाते हुए चलने में सक्षम हुआ। आप समझ सकते हैं कि इस समय तक मैं देरी के कारण खुद पर बहुत गुस्सा था, और उससे भी ज्यादा उस बड़े, दुष्ट, काले भालू पर जिसने सारी मुसीबत खड़ी की थी। मैंने ठान लिया था कि जैसे ही मैं चलने लायक हो जाऊँगा, उसे हर हाल में पकड़ूंगा।

इस बीच वह निष्क्रिय नहीं बैठा था, बल्कि उसने लोनकेरे झील की ओर जाने वाले रास्ते पर चल रहे दो और लोगों पर हमला कर दिया था।

चार दिन बाद मैं साक्रेपटना वापस आ गया, लगभग चलने लायक हो गया था, हालांकि लंबी दूरी तक नहीं। यहाँ मुझे बताया गया कि भालू गाँव से लगभग एक मील दूर खेतों में आने लगा था, जो बोरम के पेड़ों से घिरे थे, जिनके फल उस समय पकने वाले थे। शाम 5 बजे मैं उन पेड़ों के पास पहुँचा और सबसे बड़े पेड़ को चुना, जिस पर सबसे ज़्यादा फल लगे थे, और भालू के आने की उम्मीद में रात उसके नीचे बिताने का फैसला किया। मैं पेड़ के तने की ओर पीठ करके ज़मीन पर बैठ गया, और राइफल को अपने घुटनों पर रख लिया।

ग्यारह बजने के कुछ ही देर बाद मुझे पास आते हुए भालू की गुर्राहट और गुनगुनाने की आवाज़ सुनाई दी। वह बार-बार रुक रहा था, शायद कुछ खाने की तलाश में, और जैसे-जैसे वह करीब आता गया,

मुझे उसकी जड़ों को खोदने की आवाज़ें सुनाई देने लगीं। उसे बोरम के पेड़ तक पहुँचने में लगभग एक घंटा लग गया, तब तक मैं पूरी तरह तैयार हो चुका था। आखिरकार, वह झाड़ियों से बाहर निकला और खुले में टहलने लगा, तारों की हल्की रोशनी में एक काला धब्बा उसकी परछाई की तरह दिख रहा था।

मैंने टॉर्च का बटन दबाया और रोशनी उस पर पड़ी। वह अपने पिछले पैरों पर खड़ा होकर मुझे हैरानी से देखने लगा, और मैंने टॉर्च की रोशनी में साफ दिख रहे सफेद V-निशान के बीचोंबीच उसकी छाती में गोली मार दी। और इस तरह उस खतरनाक भालू का अंत हो गया।

भालू आम तौर पर उत्तेजित हो जाते हैं लेकिन आमतौर पर हानिरहित प्राणी होते हैं। इस विशेष भालू पर कैन की छाप थी, क्योंकि यह बिना किसी उकसावे के कई लोगों का निर्मम और सुनियोजित तरीके से हत्यारा बन गया था, जिन्हें इसने बेहद भयानक ढंग से मौत के घाट उतार दिया था।

3

मामंदुर नरभक्षी

यह जानवर मादा थी, और वह भी युवा; इसलिए उसके नरभक्षी बनने का कोई स्पष्ट कारण नहीं था। लेकिन उसने चमाला घाटी के आदमखोर बाघ की मृत्यु के कुछ ही समय बाद अपने हिंसक हमले शुरू कर दिए—जिसके जीवन के बारे में मैंने अपनी कहानी में बताया है।

'चमाला घाटी का धारीदार आतंक'*—और उसी इलाके में सक्रिय होने के कारण, शायद स्थानीय अफवाहों में उसे उस खूंखार हत्यारे की साथी बताए जाने का कुछ आधार था। एक और, और उतना ही संभावित स्पष्टीकरण यह था कि वह एक वयस्क शावक थी, जिसने अपने दुष्ट पिता से नरभक्षण और नरभक्षण की बुरी प्रथा सीखी थी।

उसके अतीत चाहे जो भी रहा हो, इस बाघिन ने पहली बार किसी इंसान को मारने की कोशिश तब की जब उसने एक चरवाहे पर हमला किया। चरवाहा अपने मवेशियों के झुंड में से एक दुधारू गाय को बचाने की कोशिश कर रहा था, जिसे बाघिन ने चुनकर हमला किया था और जिसकी गर्दन उसने बड़ी कुशलता से तोड़ दी थी। चरवाहे ने बड़ी बहादुरी से, लेकिन मूर्खता से, बाघिन को गिरी हुई गाय से दूर भगाने की कोशिश की। वह चिल्लाता रहा और हवा में अपना डंडा लहराता रहा। आमतौर पर ऐसी तरकीबें बाघ को डराकर भगा देती हैं, लेकिन इस मामले में इसका उल्टा असर हुआ। भागने के बजाय, बाघिन चरवाहे की ओर दौड़ी और उनके बीच की बीस गज की छोटी सी दूरी को अविश्वसनीय गति से तय कर लिया। चरवाहा दुम दबाकर भागा, लेकिन बाघिन ने अपने अगले पंजे से उस पर ऐसा वार किया जिससे उसके कंधे से लेकर नितंबों तक की त्वचा फट गई। वार के वजन से वह जमीन पर गिर पड़ा; लेकिन मनुष्य पर अपने इस पहले हमले में, बाघिन ने जाहिर तौर पर यह मान लिया कि उसने पर्याप्त नुकसान पहुँचाया है, क्योंकि वह उस गाय की ओर वापस मुड़ गई जिसे उसने अभी-अभी मारा था।

होश में आने पर चरवाहे को मात्र चालीस गज की दूरी पर बाघिन द्वारा गाय को नोचने की हड्डियों के टूटने की आवाज़ सुनाई दी। सौभाग्य से, उसने अपना धैर्य बनाए रखा और उठने की कोशिश नहीं की। संभवतः ऐसा कोई भी हिलना-डुलना दूसरे हमले को उकसा सकता था, जो इस बार घातक साबित हो सकता था।

इसलिए वह जिस तरह गिरा था, उसी तरह मुंह के बल पड़ा रहा, लेकिन चुपके से अपने सिर को बहुत धीरे-धीरे और थोड़ा सा हिलाकर, वह बाघिन को भोजन करते हुए देखने में सक्षम था।

बाद में उसने मुझे बताया कि वह अगले एक घंटे को जीवन भर नहीं भूलेगा। ऐसा लगता है कि बाघिन बीच-बीच में खाना बंद कर देती, अपना सिर उठाती और उसकी तरफ देखती। एक बार तो वह खड़ी भी हो गई और उसकी तरफ कुछ कदम भी बढ़ाए। बेचारा डर के मारे चीखने ही वाला था और

लगभग हिलने की गलती कर बैठा। शायद उसी डर ने उसकी जान बचा ली, क्योंकि वह हिल नहीं पा रहा था। सौभाग्य से, बाघिन ने अपना इरादा बदल दिया और गाय के पास लौट गई।

चरवाहे ने मुझे बताया कि एक घंटे से अधिक समय बीतने के बाद ही बाघिन ने आखिरकार तय किया कि उसका पेट भर गया है। फिर वह आराम से अपने पिछले पैरों पर बैठ गई, अपने अगले पंजों को अच्छी तरह चाटा और अपना चेहरा साफ करने लगी। लेटे हुए चरवाहे पर एक आखिरी नजर डालकर, वह आखिरकार खड़ी हुई, संतुष्टि से अंगड़ाई ली और जंगल की ओर चल पड़ी।

चरवाहा दस मिनट तक वहीं लेटा रहा, ताकि उसे पूरी तरह यकीन हो जाए कि वह सचमुच चली गई है। फिर वह उठा और जितनी तेज़ी से दौड़ सकता था, घर की ओर भागा।

इस कहानी का एक और उतना ही आश्चर्यजनक अंत है: बाघिन द्वारा किए गए गहरे घाव उचित चिकित्सा उपचार के अभाव में भी पूरी तरह से ठीक हो गए, सिवाय कुछ पिसी हुई जड़ी-बूटियों को गोबर में मिलाकर एक स्थानीय चिकित्सक द्वारा घावों पर मलने के। शायद उसके कंधों पर लिपटी शॉल ने पंजों के नीचे मौजूद विषैले पदार्थ को रक्त में प्रवेश करने से रोक दिया था।

यह घटना मामंदुर रेलवे स्टेशन से मुश्किल से चार मील की दूरी पर घटी थी, जहां एक चट्टानी ढलान लगभग तीन सौ फीट नीचे एक वन घाटी में तेजी से गिरती थी, जिसके बीच से एक छोटी सी धारा बहती थी।

अगली घटना भी हमले की ही थी, लेकिन इस बार पीड़ित इतना भाग्यशाली नहीं था। एक बार फिर, एक चरवाहा ही इसका शिकार हुआ, एक बुजुर्ग व्यक्ति जिसकी घावों के कारण मृत्यु हो गई। घटनाक्रम पहले वाले मामले जैसा ही था। बाघिन रेलवे लाइन से एक मील पश्चिम में जंगल से होकर गुजरने वाले मवेशियों के झुंड में घुस गई और एक बार फिर, उसने एक दुधारू गाय को अपना शिकार बना लिया। जैसे ही डरे हुए मवेशी उस बुजुर्ग चरवाहे के पास से भागने लगे, वह उस दिशा में दौड़ा जहाँ से वे आए थे, ताकि उनके डर का कारण पता चल सके।

कुछ ही देर में उसकी नज़र बाघिन पर पड़ी, जो मरी हुई गाय पर सवार थी। इस बार उसने उसे डराने की कोशिश नहीं की; चरवाहा आश्चर्य से वहीं रुक गया। लेकिन जाहिर तौर पर बाघिन को उसका वहाँ आना पसंद नहीं आया, क्योंकि उसने उस पर हमला कर उसे बुरी तरह घायल कर दिया। फिर वह मरी हुई गाय के पास वापस गई और उसे झाड़ियों में घसीटकर ले गई।

तीन घंटे बाद बूढ़े आदमी को मदद मिली। मवेशी भगदड़ मचाते हुए रेल पटरी पार कर गए थे। बूढ़े आदमी का भाई उसे ढूंढते हुए आया तो उसने देखा कि मवेशी तो चले गए हैं, लेकिन उनका मालिक कहीं नज़र नहीं आ रहा। रेल की मेड़ पर खड़े होकर उसने अपने भाई को ज़ोर से पुकारा, पर कोई जवाब नहीं मिला। तब उसे कुछ गड़बड़ का एहसास हुआ और वह मदद के लिए मामंदुर गाँव की ओर भागा।

भागते हुए मवेशियों के पदचिह्नों का पीछा करते हुए खोज दल को वह घायल व्यक्ति मिला। वह बेहोश था और खून की कमी से लगभग मरणासन्न था। वे उसे गाँव ले गए और फिर स्टेशन ले गए, ताकि उसे आधे घंटे में आने वाली मालगाड़ी के गार्ड के डिब्बे में बिठा सकें, जो नौ मील दूर स्थित रेनिगुंटा कस्बे

के लिए जा रही थी, जहाँ एक अस्पताल था। लेकिन मालगाड़ी के मामंदुर पहुँचने से पहले ही उस बूढ़े चरवाहे की मृत्यु हो गई।

अपनी तीसरी हत्या के बाद ही इस बाघिन में आदमखोर बनने की प्रवृत्ति विकसित हुई। उसने फिर से एक चरवाहे पर हमला किया, इस बार सुबह लगभग नौ बजे। घटना का ब्योरा दूसरे चरवाहे ने दिया, जो हमले के समय पहले चरवाहे के बगल में खड़ा था। बाघिन हमेशा की तरह झुंड में घुस गई और एक युवा बैल पर झपटी। किसी तरह, वह बैल को गिराने के अपने पहले प्रयास में असफल रही। दूसरी ओर, बाघिन को अपनी पीठ पर लिए हुए बैल पागलों की तरह उन दोनों चरवाहों की ओर भागा जहाँ वे खड़े थे। उनमें से एक—वह व्यक्ति जो बच गया—भाग निकला। दूसरा चरवाहा कुछ नहीं कर सका, बल्कि आश्चर्य से वहीं जड़वत खड़ा रह गया।

भागते हुए उस आदमी ने सिर्फ एक बार पीछे मुड़कर देखा, और तभी उसने बाघिन को भागते हुए बैल से छलांग लगाकर भयभीत चरवाहे पर हमला करते हुए देखा। इसके बाद उसने कुछ नहीं देखा, क्योंकि वह मुड़कर जितनी तेज़ी से और जितनी दूर हो सकता था, भाग गया।

कुछ घंटों बाद जब बचाव दल लाठियों और बंदूकों से लैस होकर पहुंचा, तो पीड़ित का शव वहां नहीं मिला। इसलिए दल अतिरिक्त सहायता लेने के लिए वापस लौट गया। तीन घंटे और बीतने के बाद बचाव दल, जिसमें अब लगभग सौ लोग शामिल थे, हमले वाली जगह पर पहुंचे। उन्होंने एक स्पष्ट निशान का पीछा किया और एक संकरे नाले की रेतीली तलहटी में औंधे मुंह पड़ा शव पाया। छाती और नितंबों का कुछ हिस्सा खा लिया गया था।

अगले कुछ महीनों में तीन और लोगों की हत्या हुई। इनमें से एक चरवाहा था, एक रेनिगुंटा मार्ग पर यात्रा कर रहा यात्री था, और तीसरा लंबानी जनजाति का व्यक्ति था जो जंगली शहद इकट्ठा करने गया था। इसके बाद, मवेशियों की चराई पूरी तरह बंद हो गई, और जंगली शहद का संग्रहण भी रुक गया। अब कोई भी यात्री पैदल सड़क मार्ग से आने की हिम्मत नहीं करता था। वे इसके बजाय ट्रेन से आने लगे।

उस समय के जिला वन अधिकारी श्री लिटिलवुड ने मुझे पत्र लिखकर सुझाव दिया कि मैं मामंदूर स्थित खूबसूरत वन बंगले में कुछ दिन बिताऊं और इस बाघिन को ढूंढने का प्रयास करूं। मेरे पास पंद्रह दिनों की विशेषाधिकार छुट्टी थी, इसलिए मैंने बैंगलोर से रात की मेल ट्रेन पकड़ी; लेकिन अगले दिन दोपहर 3:30 बजे तक मैं मामंदूर के छोटे से स्टेशन पर धीमी गति से चलने वाली यात्री ट्रेन से उतरा।

वन बंगला एक छोटी पहाड़ी की चोटी पर मात्र सात फर्लांग की दूरी पर स्थित है। बंगले तक जाने का रास्ता मामंदुर नामक छोटे से गाँव से होकर गुजरता है, जहाँ मैं कुछ देर रुका ताकि सबको बता सकूँ कि मैं विशेष रूप से बाघिन का शिकार करने आया हूँ। मेरा उद्देश्य यह खबर हर किसी तक पहुँचाना था, ताकि मैं न केवल उस जानवर के बारे में उपलब्ध सभी जानकारियाँ प्राप्त कर सकूँ, बल्कि विशेष रूप से किसी भी नए शिकार, चाहे वह पशु हो या मानव, की सूचना प्राप्त कर सकूँ। मैंने तीन भैंस की बछियों को भी खरीदा,

जिनका भुगतान मैंने नकद में किया और उन्हें स्थानीय शिकारी, अरोकियास्वामी नामक व्यक्ति की देखरेख में सौंप दिया, जिसे मैंने मामंदुर की पिछली यात्राओं के दौरान भी नियुक्त किया था।

बंगले में एक चौड़ा और सुरक्षित बरामदा था। इसकी पहाड़ी से आग बुझाने वाली रेखाएँ, जिन्हें कभी-कभी 'वन रेखाएँ' भी कहा जाता है, पाँच दिशाओं में फैली हुई थीं। दक्षिण और दक्षिण-पश्चिम की ओर जाने वाली रेखाएँ क्रमशः गाँव और रेलवे तटबंध के पास से गुज़रती थीं। बाकी तीन रेखाएँ जंगल में दूर तक जाती थीं, और नज़र कई मीलों तक उन पर चल सकती थी। उत्तर की ओर जाने वाली आग बुझाने वाली रेखा उस ढलान की ओर फैली हुई थी जहाँ सबसे पहले चरवाहे को बाघिन ने घायल कर दिया था। पूर्व और दक्षिण-पूर्व की ओर जाने वाली रेखाएँ लगभग सीधी रेखाओं में जंगल के भूलभुलैया में जाती थीं, मानो किसी विशाल पहिये के तीलियाँ हों। इन दोनों दिशाओं का इलाका समतल था।

बीते वर्षों में, जब शिकार के लिए जानवर बहुत अधिक थे, मैंने कई सुखद सुबह या देर शाम बंगले के बरामदे या चबूतरे पर शक्तिशाली दूरबीन लेकर उन जंगलों की ओर देखते हुए बिताए थे। सांभर, चित्तीदार हिरण और मोर को एक तरफ से दूसरी तरफ जाते देखना आम बात थी। मैंने तीन बार भालू को सुबह-सुबह देखा था, और एक बाघ को शाम पांच बजे उत्तरी जंगल की सीमा पार करते हुए देखा था। इसके अलावा, हालांकि लगभग दो मील दूर, मैंने ग्यारह जंगली कुत्तों के झुंड को एक बूढ़े भालू को घेरे हुए देखा था। उस समय मैं उनके पीछे भागा था - भालू को उसके क्रूर अंत से बचाने के लिए - ठीक उसी समय पहुँचा जब ग्यारह कुत्ते उस थके-हारे, लेकिन बहादुर बूढ़े जानवर के करीब पहुँच रहे थे। तीन कुत्ते मर चुके थे इससे पहले कि उन्हें एहसास होता कि उन्हें एक नए दुश्मन का सामना करना है। जैसे ही झुंड भागने लगा, मेरी राइफल की आवाज के साथ ही चौथा भी गिर पड़ा, और जब झुंड के बचे हुए सदस्य जंगल में नजरों से ओझल हो गए, तब तक पांचवा भी बाकी चार के साथ मिल गया।

उन दिनों मैं अपनी पुरानी .405 विंचेस्टर राइफल का इस्तेमाल कर रहा था और मेरी मैगज़ीन खाली हो चुकी थी। तभी मुझे एहसास हुआ कि मुझे एक पागल भालू का सामना करना है, जो कुत्तों के हमले और पहले से मिले ज़ख्मों के दर्द से बेहाल हो चुका था।

वह मुझसे लगभग साठ गज दूर था, और चीखते हुए सीधे मेरी ओर दौड़ा, ‘वूफ़! वूफ़!’ मैं जंगल की सीमा रेखा के साथ-साथ जितनी तेज़ी से दौड़ सकता था, दौड़ा, और दौड़ते हुए मैंने .405 राइफल का निचला लीवर खोला, कारतूस को ब्रीच में ठूंसा, और लीवर बंद कर दिया, जिससे राइफल अपने आप कॉक हो गई। तेज़ी से घूमकर मैंने भालू का सामना किया, जो मुश्किल से पंद्रह गज दूर था। भालू के असली अंदाज़ में, पाँच गज की दूरी पर, वह अपने पिछले पैरों पर खड़ा हो गया और आखिरी वार करने के लिए तैयार हो गया, जिसे आम तौर पर सबसे भयानक स्पर्श, ‘भालू का आलिंगन’ माना जाता है, जिसके बारे में हम सबने बहुत सुना है।

दरअसल, दक्षिण भारतीय स्लॉथ बियर अपने दुश्मन को गले नहीं लगाता। वह अपने पिछले पैरों पर खड़ा होकर अपने तीन इंच लंबे, ताकतवर पंजों से शिकार का चेहरा नोंचता है या अपने शक्तिशाली दांतों

से उसके सिर पर काटता है। अपने पिछले पैरों पर खड़े होते ही भालू ने अपने सीने पर मौजूद चौड़ा सफेद V-निशान दिखा दिया, जो सभी स्लॉथ बियर के सीने पर होता है। राइफल में मौजूद एक कारतूस से मैंने उसे V-निशान के निचले हिस्से में गोली मार दी। वह आगे की ओर गिर पड़ा और दो गज की दूरी पर ही पड़ा रहा!

उन जंगली कुत्तों में से तीन नर थे और बाकी दो मादा। वन विभाग ने मुझे प्रत्येक नर के लिए दस रुपये और प्रत्येक मादा के लिए पंद्रह रुपये का इनाम दिया। जंगली कुत्ते हिरणों के लिए बहुत हानिकारक होते हैं, इसलिए उनका शिकार करना प्रोत्साहित किया जाता है। मुझे बूढ़े ब्रुइन को मारना पड़ा, इसका मुझे बहुत दुख हुआ, लेकिन उसने खुद ही यह मुसीबत मोल ली थी।

यह सब बहुत-बहुत पहले हुआ था।

इस बंगले को बेहद आकर्षक बनाने वाला एक और कारण था दोपहर दो बजे के कुछ ही समय बाद पूरब से आने वाली समुद्री हवा। मेरा अनुमान है कि सीधी रेखा में बंगाल की खाड़ी इस छोटे से बंगले से कम से कम पचहत्तर मील दूर है; और मैं इस बात पर बहस करने का विशेषज्ञ नहीं हूँ कि समुद्री हवा किस दूरी पर अपना असर खो देती है। मैं बस इतना जानता हूँ कि लगभग दो बजे यह हवा उस छोटे से बंगले के बरामदे को झपकी लेने के लिए एक सुखद ठंडी जगह में बदल देती है। अगर आपको मेरी बात पर यकीन नहीं है, तो मामंदुर फॉरेस्ट बंगले पर जाकर देखिए।

उस शाम बहुत देर हो चुकी थी, इसलिए तीन भैंसों में से एक को ही बांधना संभव हो पाया, क्योंकि वे शाम 5:30 बजे ही पहुंची थीं। इस भैंस को मैं उत्तरी दिशा में आग बुझाने वाली पट्टी के साथ-साथ दो मील तक ले गया, जहाँ मैंने इसे एक बड़े और घने इमली के पेड़ के नीचे बांध दिया। जब मैं लौटा तो सात बज चुके थे, इसलिए मैंने बाकी दो भैंसों को गैरेज में रखा और अरोकियास्वामी को रसोई में सोने के लिए कहा।

अगली सुबह हम तुरंत हरकत में आ गए। सबसे पहले हमने वह चारा लिया जिसे हमने पिछली रात दो मील दूर बांधा था और जो अभी भी जीवित था, और उसे लेकर उस चट्टान के तल तक गए जहाँ पहला हमला हुआ था। वहाँ हमने उसे घनी हरी घास के एक सुंदर मैदान में एक पेड़ की जड़ों से बांध दिया।

हम बंगले में वापस आए और दूसरी बछिया को पूर्व की ओर फैली आग की रेखा के साथ ले गए, जहाँ मैंने उसे लगभग उसी स्थान पर बांध दिया जहाँ जंगली कुत्तों और भालू के साथ मेरी मुठभेड़ हुई थी।

दूसरी बार बंगले पर लौटकर, हम तीसरी और आखिरी बछिया को पश्चिम की ओर रेलवे लाइन के पार ले गए, और उसे उस स्थान के पास बांध दिया जहां बुजुर्ग चरवाहे की हत्या की गई थी।

जब मैं तीसरी बार बंगले पर लौटा तो दोपहर हो चुकी थी और बहुत गर्मी थी। पसीने से भीगी कमीज़ उतारकर मैंने देर से ठंडा दोपहर का भोजन किया और समुद्री हवा के आने का इंतज़ार करने लगा, जो मुझे पता था कि लगभग दो बजे शुरू हो जाएगी। और मैं निराश नहीं हुआ; क्योंकि जब हवा चली, तो उस झुलसा देने वाली गर्म बरामदे का नज़ारा किसी दूर दक्षिण सागर द्वीप के तट जैसा हो गया, जहाँ हम पढ़ते हैं कि 'समुद्री हवाएँ सदा बहती रहती हैं'।

अगले दो दिन नीरस रहे। मैंने हर दिन तीनों चारागाहों का दौरा किया, लेकिन उनमें से किसी को भी छुआ नहीं गया था। पाँचवें दिन की शाम एक दुखद घटना घटित हुई।

दक्षिण भारत की रेल लाइनों पर लगे सिग्नल रात में केरोसिन के तेल के दीपों से रोशन किए जाते हैं, सिवाय बड़े रेलवे जंक्शनों के शंटिंग यार्डों के। जैसा कि आप जानते ही होंगे, हर सामान्य रेलवे स्टेशन के दोनों ओर दो सिग्नल सेट होते हैं: एक नज़दीकी या 'होम' सिग्नल और दूसरा दूर का या 'आउटर' सिग्नल। सामान्यतः, इन सिग्नलों पर लगे केरोसिन के दीपों को शाम लगभग छह बजे एक पॉइंट्समैन या इस काम के लिए नियुक्त रेलवे कर्मचारी द्वारा साफ, ट्रिम, फिर से भरा और जलाया जाता है। लेकिन मामंदुर में बाघिन की मौजूदगी और इस तथ्य के कारण कि दक्षिण में रेनिगुंटा और उत्तर-पश्चिम में सेट्टीगुंटा की दिशा में स्थित आउटर सिग्नल जंगल से घिरे हुए थे, सूरज निकलने से पहले ही, यानी शाम पांच बजे से काफी पहले, इन दीपों को जलाने का रिवाज बन गया था।

उस शाम दो मार्गदर्शक दोपहर चार बजे इस कार्य के लिए निकले थे, एक रेनिगुंटा की ओर और दूसरा विपरीत दिशा में। दूसरा व्यक्ति कभी वापस नहीं लौटा।

शाम छह बजे से कुछ ही देर पहले, स्टेशन मास्टर द्वारा भेजे गए सात आदमियों का एक दल जंगल वाले बंगले की ओर दौड़ता हुआ आया और मुझे घटना की जानकारी देने लगा। मैंने जल्दी से अपनी राइफल, टॉर्च और रात भर निगरानी के लिए ज़रूरी कुछ अन्य सामान उठाया और उन सातों आदमियों को स्टेशन वापस भेज दिया, साथ ही अरोकियास्वामी को भी, क्योंकि वह उस रात बंगले में अकेले रहने से बिल्कुल इनकार कर रहा था। फिर मैं पश्चिम की ओर जाने वाले जंगल के रास्ते पर तेज़ी से बढ़ा, जो मुझे पता था कि 'भीतरी' और 'बाहरी' सिग्नलों के लगभग बीच में रेलवे ट्रैक से मिलता है।

जब मैं रेलवे लाइन पर पहुंचा, जो यहां दस फीट ऊंचे तटबंध के साथ-साथ चल रही थी, तो मैंने अपनी बाईं ओर देखा और 'आंतरिक' सिग्नल को देखा, जिसकी लाल बत्ती टिमटिमा रही थी।

‘बेवकूफ आदमी’, मैंने सोचा। ‘सुबह-सुबह बाहर की रोशनी पर ध्यान देने और स्टेशन जाते समय अंदर की रोशनी पर वापस आने के बजाय, उसने अंदर की रोशनी पर समय बर्बाद किया, और फिर काफी देर हो जाने पर बाहर की रोशनी पर गया।’

दाईं ओर मुड़कर, मैं तटबंध के किनारे-किनारे 'बाहरी' सिग्नल की ओर चलने लगा, जो एक मोड़ पर दिखाई दिया। चलते-चलते मैंने पटरियों के आसपास उस हमले के निशान खोजने की कोशिश की जो उस समय हुआ होगा जब मार्गदर्शक बाहरी सिग्नल की ओर बढ़ रहा था। मुझे कुछ नहीं मिला। फिर मैं 'बाहरी' सिग्नल के नीचे पहुँचा और ऊपर देखा। बत्ती जल रही थी!

तो उस व्यक्ति पर हमला 'बाहरी' सिग्नल की देखभाल करने के बाद वापस लौटते समय हुआ था, न कि उससे पहले। इसके अलावा, 'भीतरी' सिग्नल की बत्ती भी जल रही थी। शायद उसने पहले उस बत्ती की देखभाल नहीं की थी, जैसा कि मैंने पहले सोचा था। शायद उसने पहले बाहरी सिग्नल जलाया, फिर भीतरी, और भीतरी सिग्नल और स्टेशन यार्ड के बीच कहीं उस पर हमला हुआ हो।

लेकिन क्या यह संभव था, इस तथ्य को देखते हुए कि स्टेशन से लेकर 'आंतरिक' सिग्नल तक का सारा इलाका, और उससे थोड़ा आगे तक का क्षेत्र भी, खुली खेती योग्य भूमि थी? क्या कोई बाघ, चाहे वह आदमखोर ही क्यों न हो, दिन के उजाले में इतनी बेखौफ होकर खुले मैदान में घूम सकता था? यह संभव था, लेकिन इसकी संभावना बहुत कम थी।

मेरी घड़ी में शाम के 6:55 बज रहे थे और जैसे-जैसे अंधेरा बढ़ता जा रहा था, मैं भीतरी संकेत की ओर वापस लौटने लगा, पहले से कहीं अधिक सतर्क होकर। चाँद जल्दी निकल आया था, जो वाकई सौभाग्य की बात थी, वरना इस समय तक काफी अंधेरा हो चुका होता।

लगभग उसी जगह पर जहाँ से मैं जंगल से तटबंध पर आया था, एक छोटी सी पुलिया थी, जो एक संकरे लेकिन गहरे नाले को पार कर रही थी। वहाँ कुछ सफेद रंग का मेरी नज़र में आया, जो रेलवे ट्रैक के स्लीपरों के बीच फड़फड़ा रहा था, क्योंकि ट्रैक नाले के ऊपर से गुजर रहा था। मैं रुका और स्लीपरों के बीच से झाँका।

यह रेलवे कर्मचारी की सफेद धोती थी। तटबंध से बीस फीट दूर, एक बड़े पत्थर के नीचे, एक लंबी, काली आकृति पड़ी थी, जिसे मैं पीड़ित का शव समझ गया था। उस धुंधली रोशनी में भी मैं बता सकता था कि शिकार के बाद बीते थोड़े समय में ही शव का कुछ हिस्सा खा लिया गया था। गर्दन कटी हुई थी और सिर लगभग एक गज दूर पड़ा था। चूंकि बाघिन शायद उस समय आसपास ही हो सकती थी, या झाड़ियों की आड़ से मुझे देख रही हो, इसलिए तटबंध से नीचे उतरकर शव की बारीकी से जांच करना अनावश्यक रूप से खतरनाक होगा।

स्थिति का जल्दी से जायजा लेने के बाद मैंने रेलवे लाइन के ठीक बीचोंबीच, पुलिया के आर-पार समकोण पर लेटने का फैसला किया। इससे मैं आगे या पीछे से हमले से सुरक्षित रहूँगा, क्योंकि ऐसा करने के लिए बाघिन को नाले के तल से सीधे पंद्रह फीट की छलांग लगाकर पटरी पर आना पड़ेगा। इससे उसके पास पटरी के किनारे, मेरे दाईं या बाईं ओर से हमला करने का विकल्प बचेगा। मुझे आपको बताना चाहिए था कि पुलिया की चौड़ाई लगभग बीस फीट थी। ज़्यादा नहीं, लेकिन कम से कम मुझे बाघिन को देखने का समय तो मिल जाएगा।

बेशक, यह संभावना थी कि वह तटबंध पर तिरछे कोण से रेंगती हुई आएगी और मुझ पर परोक्ष रूप से हमला करेगी, या तो सामने से, या इससे भी बदतर, पीछे से; और या तो मेरे बाईं ओर से या दाईं ओर से।

यह एक ऐसा जोखिम था जिसे उठाना ही था।

बंगले से निकलते समय मैंने अपनी टॉर्च राइफल से बांध ली थी। मैंने अपना थैला सीने के नीचे रख लिया ताकि रेल की पटरी से मेरा संपर्क कम हो। यह पटरी चौड़ी थी, यानी पटरियां पांच फीट छह इंच की दूरी पर थीं। पैर फैलाकर मैंने देखा कि मेरे तलवे दूसरी पटरी को छू रहे थे, लेकिन उस पर चढ़े नहीं थे। जिस सागौन की लकड़ी से बने चबूतरे पर मैं लेटा था, वह शायद आठ इंच चौड़ा था: लेटने में बिल्कुल भी आरामदायक नहीं था और बेहद सख्त था!

इस समय तक चाँद खूब चमक रहा था और दृश्य को स्पष्ट रूप से रोशन कर रहा था। चट्टान के हल्के रंग और नाले की बारीक सफेद रेत के बीच शव और उसका कटा हुआ सिर साफ दिखाई दे रहा था। चारों ओर सन्नाटा पसरा हुआ था।

आंतरिक संकेत से निकली लाल बत्ती झिलमिला उठी; ऐसा लगा जैसे वह मुझे याद दिला रही हो कि मदद करीब है—पर फिर भी बहुत दूर है।

घंटे बीतते गए; पश्चिम की ओर जंगल से एक सांभर नर हिरण की आवाज आई। शायद उस आवाज ने बाघिन के आने का संकेत दिया हो! नहीं, क्योंकि उत्तर-पूर्व में थोड़ी दूर पर एक और नर हिरण ने आवाज दी, और फिर पूर्व में एक और नर हिरण ने। बीच-बीच में चित्तीदार हिरण भी अपनी तीखी चेतावनी भरी आवाजें निकालते रहे, 'आओ! आओ! आओ!'

लेकिन ये आवाज़ें किसी एक दिशा से नहीं आ रही थीं; अगर ऐसा होता तो इससे निश्चित रूप से पता चलता कि उस इलाके में कोई मांसाहारी जानवर मौजूद है। ये आवाज़ें चारों ओर से, दूर-दूर से आ रही थीं, जिससे संकेत मिलता है कि कई मांसाहारी जानवर घूम रहे थे। साथ ही, चूंकि रात में चांदनी थी, इसलिए संभव था कि जंगली कुत्तों के झुंड शिकार पर निकले हों। ये जानवर दिन में अपने शिकार का पीछा करते हैं और कभी अंधेरी रात में नहीं, लेकिन चांदनी रात में, कुछ जंगलों में, वे कभी-कभी अपना व्यवहार बदल देते हैं और चांदनी में शिकार करते हैं।

आधी रात को फिर से सन्नाटा छा गया। और फिर मेरे रोंगटे खड़े हो गए, क्योंकि जो मैं देख रहा था वह सचमुच भयानक था। कटा हुआ सिर एक तरफ लुढ़क गया था!

इतने समय से वह आकाश की ओर घूर रहा था; अब उसकी निर्जीव आँखें और चेहरा मेरी ओर मुड़े हुए थे। फिर भी किसी जानवर ने उसे छुआ नहीं था, क्योंकि वह खुले में पड़ा था और तेज चाँदनी में स्पष्ट रूप से दिखाई दे रहा था।

मुझे अपने शरीर में कंपकंपी और ठंडक महसूस होने लगी। मैंने अपने सूखे होंठों को चाटा और उस भयानक सिर को घूर कर देखा।

फिर से वह हिल गया! उसने अपनी पिछली स्थिति में वापस जाने की कोशिश की थी; वह आधा घूम गया था और फिर, मानो पूरी तरह घूमने की ताकत न होने के कारण, वह वापस लुढ़क गया और मेरी ओर घूर रहा था।

अब मैं आपको बता दूं कि मैं बहुत व्यावहारिक व्यक्ति हूं, अंधविश्वासी नहीं, न ही अंधेरे से डरता हूं। मैंने कई रातें ऐसी ही या इससे भी अधिक खतरनाक स्थिति में बिताई हैं; मैं पहले भी अधखाए हुए मानव शरीरों के ऊपर बैठा था, और पहले भी कई बार मुझे लगा था कि मैंने उन्हें हिलते हुए देखा है। लेकिन अपने जीवन में मैंने पहले कभी किसी कटे हुए मानव सिर को अपने आप घूमते हुए, फिर वापस घूमने की कोशिश करते हुए और असफल होते हुए, और अंत में स्पष्ट निराशा में लुढ़कते हुए नहीं देखा था।

मैं लगभग चीख पड़ा और काफी देर तक मेरे मन में उठकर उस टिमटिमाती, दोस्ताना लाल बत्ती की ओर दौड़ने की तीव्र इच्छा हुई, जो 'अंदरूनी' संकेत की ओर इशारा कर रही थी। फिर अचानक मेरी बुद्धि ने अपना असर दिखाया। एक मृत सिर, चाहे वह इंसान का हो या किसी और जीव का, अपने आप हिल नहीं सकता। उसे किसी चीज़ ने ज़रूर हिलाया होगा!

मैंने सिर को ध्यान से देखा, और तेज़ चाँदनी ने मुझे मेरी समस्या का हल दिखा दिया। सफेद रेत में दो काली वस्तुएँ हिलती हुई दिखाई दे रही थीं। वे 'गैंडा भृंग' थे: बड़े कीड़े, डेढ़ इंच से भी ज़्यादा लंबे, जिनकी नाक पर गैंडे के सींग जैसे बड़े-बड़े कांटे होते हैं, इसी समानता के कारण इनका नाम पड़ा है। आम तौर पर ये रात में सक्रिय होते हैं, हालाँकि इन्हें अक्सर जंगल की सड़कों पर, सुबह-सुबह और फिर देर शाम को, अपने आकार से लगभग तीन गुना बड़े गोबर के गोले को किसी अज्ञात जगह की ओर लुढ़काते हुए देखा जा सकता है।

इन दोनों नन्हे जीवों ने अपनी संयुक्त शक्ति से एक बार इस सिर को पलटने में सफलता प्राप्त कर ली थी, लेकिन दूसरी बार वे पूरी तरह सफल नहीं हो पाए। मैं जो देख रहा था उसमें इतना मग्न था कि बाघिन के बारे में पूरी तरह भूल गया था; उस समय वह आसानी से मुझे चौंका सकती थी।

अब 1:40 बज रहे थे और मेरे सीने के नीचे की रेल पटरी कांपने लगी। तभी मुझे दूर से एक गड़गड़ाहट की आवाज़ सुनाई दी जो धीरे-धीरे तेज़ और नज़दीक आती गई। एक तीखी सीटी की आवाज़ गूंजी और देखते ही देखते एक इंजन की तेज़ रोशनी मुझ पर पड़ी। यह मद्रास से बंबई जाने वाली रात्रि रेलगाड़ी थी।

मैं बड़ी मुश्किल से उठा, अपना थैला उठाया, पुलिया के अंत तक गया और फिर तटबंध से कुछ कदम नीचे उतरा। लेकिन मैं ट्रेन चालक की सतर्कता को पूरी तरह से भूल गया था। उसने इंजन की तेज हेडलाइट में मुझे साफ देखा था, हालांकि उसने मेरी राइफल पर ध्यान नहीं दिया था। जैसा कि वह मुझे कुछ ही मिनटों में बताने वाला था, उसने मुझे आत्महत्या करने की कोशिश करने वाला समझा, जो जानबूझकर पटरी पर लेटकर ट्रेन के नीचे कुचल जाना चाहता था, लेकिन आखिरी क्षण में उसका साहस जवाब दे गया। वैसे, मैं यह भी बताना चाहूंगा कि आत्महत्या करने का यह तरीका भारत में काफी प्रचलित है।

खैर, ब्रेक की तेज़ आवाज़ और भाप की ज़ोरदार फुफकार के साथ, ट्रेन मेरे पास से इंजन के गुज़रने के ठीक बाद आकर रुक गई। इसके बाद मैंने जो सुना, वह था कठोर ज़मीन पर बूटों की ज़ोरदार आवाज़, जैसे कोई मेरी ओर दौड़ रहा हो। वे इंजन के ड्राइवर और उसके दो दमकलकर्मी थे।

वे मुझ पर झपटे और मुझे पकड़ लिया। तभी उन्हें एहसास हुआ कि मैं वो नहीं था जो उन्होंने मुझे समझा था। इसी बीच, डिब्बों की खिड़कियों से कई लोगों ने सिर बाहर निकाले और सैकड़ों आवाज़ें सवाल-जवाब और अटकलें लगाने लगीं। पहरेदार अपनी लालटेन लेकर पीछे से आया। इसलिए मेरे पास उन्हें यह बताने के अलावा कोई चारा नहीं था कि मैं क्या कर रहा था।

‘वह आदमी कहाँ है जिसे बाघ ने खा लिया?’ ड्राइवर ने पूछा, जो अधेड़ उम्र का एंग्लो-इंडियन था। मैंने उसे लाश की ओर इशारा किया। ‘और आप शाम से यहाँ खुले में अकेले पड़े हैं?’ उसने अविश्वास से पूछा।

जब मैंने हाँ में जवाब दिया, तो उसने बड़ी सरलता से कहा, 'तुम बिलकुल पागल हो,' और अपने माथे पर इशारा करते हुए कहा। उसके दोनों दमकलकर्मी और ट्रेन के भारतीय गार्ड ने भी सहमति में सिर हिलाया।

कुछ मिनट बाद, मेल ट्रेन बॉम्बे की अपनी लंबी यात्रा पर आगे बढ़ गई, और मैं एक बार फिर अकेला रह गया। लेकिन इतनी हलचल के बाद बाघिन के आने की मुझे बहुत कम उम्मीद थी।

रात के 2:30 बजे रेल की पटरियाँ फिर से गड़गड़ाने लगीं। इस बार मैं इंजन की हेडलाइट से अपनी मौजूदगी का पता चलने से पहले ही, राइफल छिपाकर, तटबंध पर लेट गया। नतीजतन, मालगाड़ी बिना रुके मेरे पास से गुज़र गई। सुबह 4 बजे फिर से रेल की पटरियाँ गड़गड़ाने और काँपने लगीं, और मैं एक बार फिर छिप गया। यह बॉम्बे से मद्रास जाने वाली वापसी मेल ट्रेन थी, जो पूरी गति से गड़गड़ाती हुई गुज़री, क्योंकि मेल ट्रेनें मामंदूर में नहीं रुकतीं।

झूठी सुबह आई और चली गई। जागते हुए मोरों की दूर से आती हुई आवाज हवा में गूंजी, वे जंगल की घाटियों में 'मिया-आ-ऊ-आओ' की आवाज लगा रहे थे, जिसका जवाब उस सबसे प्यारे पक्षी, भूरे जंगली मुर्गे की हंसमुख आवाज 'व्ही-ई-ई-ई-कुच-काया काया-खुक्कम' से मिला।

पूर्वी पहाड़ियों के ऊपर आसमान में हल्का गुलाबी रंग छाया हुआ था, जो अब मखमली काले रंग से स्पष्ट रूप से दिखाई दे रही थीं। इसी बीच, रात भर चमकता रहा और अब अस्त होने वाला चंद्रमा अपनी चमक खोने लगा था।

पूर्व दिशा में, हल्का गुलाबी रंग अद्भुत रूप से बैंगनी रंग में बदल गया, फिर गहरे गुलाबी रंग में, जिसके किनारों पर हल्के हरे और शुद्ध नीले रंग की झलक थी। गुलाबी रंग नारंगी-बैंगनी, फिर केवल नारंगी, फिर गहरा लाल और अंत में ज्वाला जैसा हो गया, जैसे ही सूर्य की चमकती नोक पूर्व की ओर पहाड़ियों की लहरदार रेखाओं के ऊपर से झाँकी।

तेजी से बढ़ते हुए उस गोले से आकाश की ओर आती हुई सूर्य की किरणें, स्पेक्ट्रम के सभी रंगों से जगमगाते हुए आसमान में दौड़ते हुए, रुई जैसे बादलों को छू रही थीं। फिर, अचानक, जैसे कोई तितली अपने कोकून से फूटती है, सूर्य पहाड़ियों के ऊपर आ गया, और अपने आगे नीचे नम जंगल से उठती हुई धुंध की हल्की-हल्की परतों को भंवरों में उड़ा ले गया।

एक और दिन था, और उसके आगमन का स्वागत करते हुए मेरे चारों ओर जंगल के पक्षियों का मधुर गीत गूंज उठा। हर झाड़ी और पेड़ जीवन से ओतप्रोत, जीवंत और नया लग रहा था। भारतीय जंगल में सूर्योदय का यह अद्भुत नजारा देखने वाले इसे कभी नहीं भूलेंगे।

उसका सिर अब भी मेरी ओर देख रहा था, लेकिन अब वह स्थिर था; रात भर लगन से काम करने वाले दोनों गैंडे के भृंग बहुत पहले ही उस असमान कार्य को छोड़कर आराम करने चले गए थे।

मैं निराश और धीरे-धीरे स्टेशन की ओर बढ़ा, स्टेशन मास्टर को यह बताने के लिए कि वे मृतकों के परिजनों को शवों को दाह संस्कार के लिए ले जाने की अनुमति दे सकते हैं, और आठ बजे तक मैं बंगले के बरामदे में सो गया था। दोपहर में समुद्र की ठंडी हवा ने मुझे और गहरी नींद में सुला दिया।

शाम चार बजे मैं तरोताज़ा और चुस्त-दुरुस्त होकर उठा और जल्दी से दोपहर का भोजन और चाय पी। साथ ही मैंने अरोकियास्वामी की रिपोर्ट सुनी कि उन्होंने चार अन्य लोगों के साथ सभी चारे की जाँच की थी और उन्हें जीवित पाया था। ऐसा लग रहा था कि यह बाघिन मेरे द्वारा बाँधी गई किसी भी बछिया को नहीं मारेगी।

फिर सूर्यास्त हुआ और चांदनी रात हो गई। मुझे टहलने का मन हुआ। अगर मैं जंगल की उन पांचों आग की लपटों के बीचोंबीच चलता रहूँ, तो मुझे लगा कि मैं काफी हद तक सुरक्षित रहूँगा, बशर्ते चलते समय मैं सतर्क रहूँ। रात में अगर हमारे रास्ते आपस में टकराते हैं, तो बाघिन का ध्यान आकर्षित होने का भी पूरा खतरा था।

मैंने मौके के हिसाब से कपड़े पहने। मेरे पास अपने किट में सिर्फ खाकी कपड़े और एक काली कमीज थी जो रात में मचान का काम करने के लिए ठीक थी। इसलिए मैं अरोकियास्वामी के साथ उनकी झोपड़ी में गया, जहाँ मैंने एक लंबी सफेद कमीज पहन ली, जिसकी पूंछें मेरी खाकी पैंट के बाहर ढीली-ढाली लहरा रही थीं। अरोकियास्वामी ने मेरे सिर पर सफेद पगड़ी बांधकर मेरे वेश को और भी पूरा किया।

मुझे नहीं पता था कि अगर हमारी मुलाकात होती तो बाघिन मुझे क्या समझती; लेकिन मुझे पता है कि मैं ग्रामीणों के लिए काफी मनोरंजन का स्रोत था, जो मेरी योजना के बारे में सुनकर कुछ हद तक हैरान थे।

मैंने कुछ देर सोचा कि पहले किस फायर-लाइन पर चलूँ और अंत में पूर्व दिशा की ओर जाने वाली लाइन पर चलने का फैसला किया। शाम के 7:30 बज रहे थे जब मैंने चलना शुरू किया। मैं लाइन के बीचोंबीच चलता रहा और चलते-चलते दोनों ओर की झाड़ियों और घनी वनस्पतियों पर नजरें गड़ाए रहा। बीच-बीच में मैं पीछे मुड़कर भी देखता रहा।

चांदनी तेज होने के बावजूद, झाड़ियों की लंबी काली छायाएँ पड़ रही थीं, और काँटों और घास के गुच्छे मेरे चारों ओर भूतिया धूसर रंग के दिख रहे थे। मुझे एहसास हुआ कि इतनी चांदनी के बावजूद, मेरी आँखें उस अवास्तविक चमक में छिपे हुए किसी भी मांसाहारी जानवर को नहीं देख पाएँगी, भले ही वह दिखाई दे, जो कि वह नहीं देगा। मुझे अपनी सुनने की शक्ति पर भरोसा करना होगा—और उस दूसरी, मेरी छठी इंद्री पर!

मैं हर दस मिनट के अंतराल पर किसी न किसी धुन की एक पंक्ति सीटी बजाकर बाघिन को अपनी उपस्थिति का आगाह करता था; लेकिन केवल आधे मिनट के लिए ही, ताकि मेरे अपने कान बाधित न हों, जो हल्की से हल्की आवाज को भी पकड़ने के लिए अभ्यस्त थे।

इस प्रकार, घास की पहाड़ियों से गुजरते समय मुझे कई बार हल्की सरसराहट सुनाई दी। हमेशा की तरह, रात में निकलने वाला बांस का चूहा ही इसका दोषी होता था, क्योंकि मेरे पास आते ही वह छिपने के लिए भाग जाता था। फिर एक अस्पष्ट, लंबी, रेंगने जैसी सरसराहट सुनाई दी: वह एक सांप था, शायद रसेल वाइपर, जो घास में आराम से लिपटा हुआ था, ताकि उसे गर्माहट मिले। आसमान से कोई भारी चीज़ नीचे आई और आग की लकीर पार करते हुए एक खरगोश की पीठ पर आकर गिरी। खरगोश चीख उठा, और उस पर हमला करने वाले बड़े सींग वाले उल्लू ने उसके माथे पर ज़ोर से चोंच मारी। मैं उल्लू के पास गया, जिसने अपने दोनों पंख ज़मीन पर फैला दिए ताकि खरगोश मुझसे छिप जाए, ठीक वैसे ही जैसे मुर्गी अपने चूजों को छिपाती है। मैं और करीब गया तो उल्लू ने मुझे घूरा; मैं और करीब गया तो उल्लू उड़ गया। मैंने बेजान खरगोश को उठाया और उसकी पीठ को तेज़ी से सहलाया। होश में आने पर वह ज़ोर-ज़ोर से लात मारने लगा। मैंने उसे लंबी घास में जाने दिया।

इन जंगलों में न तो बाइसन थे, न हाथी, लेकिन उनकी जगह भालू बहुतायत में थे। कुछ ही देर में मेरी मुलाकात ब्रुइन से हुई, जो अपने पसंदीदा शौक, चींटियों के टीलों से दीमकें चूस रहा था। दूर से आती एक आवाज़, भिनभिनाहट और गुनगुनाहट के बीच की, एक अजीब सी आवाज़ जो किसी के बैगपाइप फुलाने जैसी या गुस्से में मधुमक्खियों के झुंड की आवाज़ जैसी थी, ने मुझे सबसे पहले बताया कि कोई भालू आसपास घूम रहा है। आवाज़ तेज़ होती गई और बीच-बीच में गुर्राहट, खांसी, अधीरता भरी फुसफुसाहट और झुंझलाहट भरी दहाड़ें सुनाई देने लगीं।

वहाँ, कतार के एक तरफ और मेरे दाहिनी ओर दीमकों का एक टीला था। वहाँ उसके सामने, एक छेद में सिर डाले, एक खुरदुरा, काला आकार खड़ा था। वह भालू था, जो फूँक रहा था, चूस रहा था, बड़बड़ा रहा था, गालियाँ दे रहा था और शिकायत कर रहा था, क्योंकि उसे बहुत कम या न के बराबर सफलता मिल रही थी। कभी-कभार ही वह किसी स्वादिष्ट चीज़ को निगलने पर खुशी से खिलखिला उठता था।

जब मैं चुपचाप अपने रास्ते पर आगे बढ़ रहा था, तब वह अपने काम में पूरी तरह मग्न था, और उसकी दावत की आवाज़ें मेरे पीछे धीरे-धीरे कम होती जा रही थीं। मैं दो घंटे तक उसी रास्ते पर चलता रहा, फिर मुड़कर वापस लौट आया। जब मैं चींटियों के टीले पर दोबारा पहुँचा, तब तक ब्रुइन घर जा चुका था, और उसके प्रयासों के कारण वह अपनी मूल ऊँचाई का केवल आधा रह गया था। फ़ॉरेस्ट लॉज पहुँचने तक मुझे और कुछ नहीं दिखाई दिया।

इसके बाद, मैं उत्तरी दिशा की ओर मुड़ा और ढलान की ओर चलने लगा। यह रेखा उस रेखा की तरह सीधी नहीं थी जिसे मैंने अभी-अभी छोड़ा था। बल्कि, ढलान के पास पहुँचते ही यह काफी टेढ़ी-मेढ़ी हो

गई। तीसरे मील पर एक धारा इसे काटती थी, जिसमें बहता साफ, ठंडा पानी चांदनी में चांदी की तरह चमक रहा था।

झुककर मैंने पानी पिया, बाएं हाथ की हथेली से पानी मुंह तक पहुंचाया; मेरे दाहिने हाथ में राइफल थी जिसका बट जमीन पर टिका था, जबकि मेरी आंखें जंगल पर टिकी थीं और कान हल्की सी भी आवाज सुनने के लिए तल्लीन थे। कुछ भी दिखाई नहीं दे रहा था, और एकमात्र आवाज पानी के बहने की थी। मैं आगे बढ़ता रहा।

मैंने जो चारा बांधा था, वह अगले मोड़ पर था। वह जीवित था, और जब मैं उसके पास से गुजरा, तो उसने मुझे उस क्रूर भाग्य के लिए मौन निंदा भरी निगाहों से देखा, जिसके सामने मैंने उसे लाचार कर दिया था। मेरे पास कोई जवाब नहीं था, कोई बहाना नहीं! इसमें कोई शक नहीं था कि मैं दोषी था। मैंने अपनी नज़रें फेर लीं, लेकिन अपराधबोध से मुक्त नहीं हो सका।

अंततः ढलान की तलहटी तक पहुँच गए। यहाँ आग बुझाने वाली रेखा समाप्त हो गई और एक संकरी पगडंडी बन गई जो अचानक हरियाली के भूलभुलैया में समा जाती थी। ऐसी परिस्थितियों में आगे जाना बहुत खतरनाक था, इसलिए मैं वापस लौट आया।

वापसी की यात्रा में मैंने जो कुछ देखा, वह एक विशाल कोबरा था जो एक बांस के चूहे को निगल रहा था। चूहे का तीन-चौथाई हिस्सा कोबरा के गले में उतर चुका था, केवल पिछला भाग और पूंछ बाहर निकली हुई थी, तभी मैं आग की लपटों के बीचोंबीच उस दृश्य के पास पहुँचा। साँप ने मुझे देखा और अपना सिर ज़मीन से दो फीट ऊपर उठा लिया, साथ ही अपनी गर्दन की पतली हड्डियों को सीधा करके भारत में नए आए किसी भी व्यक्ति के लिए सबसे सुंदर और साथ ही सबसे मोहक दृश्य बना लिया; प्रसिद्ध कोबरा का फन। चूहे के पिछले पैर और पूंछ अभी भी उसके मुँह से अजीब तरह से लटक रहे थे। उसकी चमकीली काली आँखें फास्फोरस की रोशनी में दुर्भावना से चमक रही थीं।

मैंने तेज़ी से पैर पटके और ताली बजाई। कोबरा घबरा गया और अंत में दहशत में आ गया। उसने चूहे को उगल दिया, अपने फन को पिचकाते हुए ज़मीन पर लेट गया और आग की लपटों के दूसरी ओर झाड़ियों में रेंगता हुआ चला गया।

मैं एक बार फिर बंगले पर लौट आया था। मैंने बीस मील की दूरी तय कर ली थी और सुबह के 2:45 बज रहे थे।

आग बुझाने के लिए दो रास्ते बचे थे, लेकिन मेरे पास केवल एक ही रास्ता चुनने का समय था: या तो दक्षिण-पूर्व की ओर जाने वाला रास्ता, जिस पर मैं अपने आगमन के बाद से अभी तक नहीं गया था, या दक्षिण-पश्चिम की ओर जाने वाला रास्ता, जो रेलवे तटबंध को पार करता था, जहाँ मैं पिछली रात शव के पास बैठा था। किसी अज्ञात कारण से, मैंने दूसरा रास्ता चुना।

मैं रेलवे ट्रैक पर पहुँचा, उसे पार किया और पश्चिम की ओर एक मील से अधिक आगे बढ़ चुका था कि अचानक एक बाघिन की कराहने की आवाज़ से सन्नाटा टूट गया। ऐसा प्रतीत हुआ कि यह आवाज़

मुझसे कुछ ही फर्लांग आगे से आ रही थी। शायद वह जानवर उसी आग की रेखा के साथ चल रहा था; हो सकता है वह दूर जा रही हो या शायद मेरी ओर आ रही हो।

अगले 50 गज तक आगे बढ़ते हुए, मैं एक बड़े जंगली सेब के पेड़ के तने के पीछे छिप गया, राइफल को लोड किया और निशाना साधा। फिर मैंने नर बाघ की तरह गहरी दहाड़ मारी।

लगभग तुरंत ही जवाब आ गया, मेरी उम्मीद से कहीं ज़्यादा नज़दीक से—शायद सौ गज दूर से। मैंने दोबारा पुकारने की हिम्मत नहीं की, इस डर से कि कहीं मुझे पहचान न लिया जाए कि मैं एक धोखेबाज़ हूँ।

बाघ की आवाज को बहुत करीब से नहीं निकालना चाहिए, क्योंकि असली बाघ आवाज की ध्वनि में अंतर पहचान सकता है। अगर उसे शक हो गया, तो वह शायद भाग जाए। ऐसी नकल करने की कोशिश करने के लिए सबसे कम दूरी लगभग सौ गज है। बेशक, आदमखोरी की प्रवृत्ति और जिज्ञासा, जिससे अधिकांश जानवर कुछ हद तक पीड़ित होते हैं, बाघ को आगे आने के लिए मजबूर कर सकती है, लेकिन हमेशा यह जोखिम रहता है कि शक उसे भगा दे। इसलिए मैं चुप रहा—और स्थिर रहा।

तीस सेकंड बाद, एक बाघिन जंगल की सीमा रेखा से मेरी ओर बढ़ी, उसके शरीर पर बनी काली धारियों पर चांदनी चमक रही थी। वह मेरे बराबर आकर रुकी, फिर आगे बढ़ने लगी।

मैंने उसके कान के पीछे गोली मारी। ज़मीन पर गिरते समय उसकी पूंछ बस थोड़ी सी हिली। उसे पता ही नहीं चला कि क्या हुआ; उसके बचने का कोई मौका ही नहीं था। यह एक अनुचित गोली थी।

खैर, मामंदुर में अब कुछ सालों से किसी इंसान की हत्या नहीं हुई है। बाघिन, जो कि युवा थी, अच्छी हालत में थी और उसके आदमखोर बनने का कोई कारण नहीं था। शायद, आखिरकार, चमाला नामक आदमखोर बाघिन ने ही उसे यह बुरी आदत सिखाई होगी।

---

*लेखक की पिछली पुस्तक, नाइन मैन-ईटर्स एंड वन रोग देखें

4

गेरहेट्टी का क्रॉस्ड-टस्कर

यह एक ऐसे हाथी की कहानी है जिसने 'बदमाश' का नाम कमाया और मद्रास सरकार द्वारा कलेक्टर और सलेम के जिला वन अधिकारी के माध्यम से अधिसूचना जारी करके उसे प्रतिबंधित कर दिया गया।

मैं जिन घटनाओं का वर्णन करने जा रहा हूँ, वे काफी समय पहले घटी थीं। हमेशा की तरह, इस हाथी के मनुष्यों को परेशान करने के पीछे का कारण किसी को नहीं पता था। गेरहेट्टी में तैनात वन रक्षक ने बताया कि लगभग एक महीने पहले, जब इस हाथी ने उत्पात मचाना शुरू किया था, उससे पहले एक रात उसने जंगल में दो नर हाथियों को लड़ते हुए सुना था। उसके अनुसार, यह लड़ाई तीन घंटे से अधिक समय तक रुक-रुक कर चलती रही और वन बंगले से लगभग आधा मील दूर स्थित एक पानी के गड्ढे के पास हुई थी।

अगले दिन उसने देखा कि जंगल रौंदा हुआ था और चारों ओर खून के बड़े-बड़े छींटे पड़े थे, जो दिए गए दंड का प्रमाण थे। उसने जो बताया और वहाँ मचे हंगामे को देखकर लगता है कि यह एक भयंकर संघर्ष रहा होगा। संभवतः वह दुष्ट हाथी, जैसा कि बाद में हमें पता चला, उस लड़ाई में सबसे बुरी तरह घायल हुआ था और उसी क्षण से उसने अपना क्रोध सभी पर निकालना शुरू कर दिया था।

एक और संभावित कारण यह हो सकता है कि वह दुष्ट हाथी, 'मस्त' नामक एक आवधिक बीमारी से ग्रस्त एक साधारण नर हाथी था, जो लगभग तीन महीने तक रहती है और इस दौरान वे असाधारण रूप से खतरनाक हो जाते हैं।

एक तीसरी संभावना यह थी कि इस हाथी को सलेम जिले के जंगलों में पाए जाने वाले कई शिकारियों में से किसी एक ने घायल कर दिया हो। ये शिकारी गर्म और शुष्क गर्मी के महीनों में पानी के स्रोतों और नमक के टीलों पर बैठकर हिरणों का शिकार करते हैं। आम तौर पर, जब कोई शिकारी किसी हानिरहित हिरण से अधिक खतरनाक जानवर को देखता है, तो वह या तो चुप रहता है या अगर उसे लगता है कि शिकार करने का अच्छा मौका है तो चुपके से निकल जाता है। फिर भी, शिकारियों के बीच भी कुछ ऐसे होते हैं जो अंधाधुंध गोली चलाते हैं। वे अपने आस-पास दिखने वाले किसी भी जानवर पर अपनी बंदूकें चला देते हैं, और हो सकता है कि इन्हीं में से किसी एक ने इस हाथी को घायल कर दिया हो और इसी से उसके इस घुमंतू जीवन की शुरुआत हुई हो।

यह भी संभव है कि रात में अपनी फसलों की रखवाली कर रहे किसी साधारण किसान ने अपनी बंदूक से उस पर गोली चला दी हो। हाथी जंगल के पास उगने वाली फसलों को नष्ट करने के शौकीन होते हैं।

जो भी बात उसे शुरू में परेशान कर रही थी, गेरहेट्टी के उस बदमाश ने अपना करियर काफी अचानक शुरू किया, और थोड़े समय के लिए उसने उस घने जंगल में अपना दबदबा कायम रखा जहां वह रहता था, और वह एक आतंक बन गया, जिसने लगभग चार सौ वर्ग मील के क्षेत्र में बैलगाड़ी और पैदल यात्रियों सहित सभी यातायात को ठप कर दिया।

गेरहेट्टी एक छोटे से गाँव का नाम है जिसमें लगभग पाँच-छह झोपड़ियाँ हैं। यह गाँव सलेम नॉर्थ फ़ॉरेस्ट डिवीज़न में एंचेटी से पेन्नाग्राम जाने वाले रास्ते से लगभग दो मील दूर स्थित है। यहाँ का इलाका पहाड़ी है और तलावड़ी नाले नामक एक पथरीली धारा के दोनों किनारों से लगभग तीन मील की दूरी तक घना बाँस का जंगल फैला हुआ है। यह धारा कावेरी नदी में उस स्थान से लगभग पंद्रह मील दक्षिण-पश्चिम में मिलती है जिसके बारे में मैं आपको बता रहा हूँ। इस बाँस के जंगल में लगभग हमेशा हाथियों के झुंड दिखाई देते हैं और अक्सर तीन-चार हाथी अकेले भी घूमते रहते हैं। हालाँकि हाथी हिंसक नहीं होते, फिर भी जंगल के निवासी उनसे बहुत सावधानी से बचते हैं।

गोलमोथी नामक एक अन्य धारा, तलावड़ी नदी के लगभग समानांतर बहती है, जो उससे लगभग बारह मील उत्तर में स्थित है और गुंडालम नदी में मिल जाती है, जो स्वयं कावेरी नदी की एक सहायक नदी है। ये तीनों नदियाँ, चारों ओर से घिरी पहाड़ियाँ और घने बाँस के जंगल, किसी भी हाथी के लिए आदर्श निवास स्थान बनाते हैं, और यहीं से उस दुष्ट हाथी ने एक हत्यारे के रूप में अपना करियर शुरू किया था।

यह सब कुछ इस तरह शुरू हुआ। भीषण गर्मी के कारण, गोलामोथी नदी सूख गई थी, सिवाय एक-दो छिटपुट जलकुंडों के जो नदी तल पर उभरी विशाल चट्टानों के बीच बने थे और भूमिगत जल के रिसाव से पोषित हो रहे थे। इनमें से एक जलकुंड में कुछ बड़ी मछलियाँ पाई जाती थीं, जिनकी लंबाई शायद छह से आठ इंच थी। एक दोपहर, पाँच मील दूर स्थित एंचेटी गाँव के दो लोगों ने फैसला किया कि वे इस जलकुंड में जाकर कुछ मछलियाँ पकड़ेंगे, क्योंकि तेजी से वाष्पीकरण के कारण यह सीमित क्षेत्र बचा था।

वे तालाब के पास पहुँचे और अपने जाल डाले। जल्द ही उन्हें काफी मछलियाँ मिल गईं। फिर उन्होंने मछलियों को अपनी टोकरियों में रखा और तालाब के किनारे एक छायादार पेड़ के नीचे थोड़ी देर आराम करने के लिए लेट गए।

लगभग पाँच बजे उनमें से एक की नींद खुली। सूर्य अभी-अभी तालाब के पश्चिम में स्थित एक पहाड़ी की चोटी के पीछे डूबा था, लेकिन फिर भी काफी उजाला था। जैसे ही वह अपने सोए हुए साथी के बगल में बैठा, किसी चीज़ ने उसे पीछे मुड़कर देखने के लिए प्रेरित किया, जहाँ उसने गोलमोथी नदी के दक्षिणी किनारे से तालाब की ओर जाते हुए एक विशालकाय हाथी को देखा।

उस आदमी ने हाथ बढ़ाकर अपने साथी को ज़ोर से हिलाया और तमिल में फुसफुसाते हुए कहा, 'अनाई वरदबु', जिसका अर्थ है 'हाथी आ रहा है'। फिर वह उठा और उत्तरी किनारे की ओर जंगल में भाग गया। उसका साथी, जो अचानक नींद से जाग गया था, चेतावनी का महत्व पूरी तरह समझ नहीं पाया और

जब वह इधर-उधर देख रहा था और सोच रहा था कि उसके दोस्त को क्या हुआ है, तभी हाथी उस पर आ गिरा।

जो आदमी बच निकला, उसने मुझे बताया कि उसने अपने पीछे छूटे दोस्त की चीखें सुनीं, जो क्रोधित हाथी की तीखी चिंघाड़ के साथ मिल रही थीं। फिर सन्नाटा छा गया। ज़ाहिर है, उसने और कुछ सुनने का इंतज़ार नहीं किया। दो दिन बाद, जब एंचेटी से खोज दल अवशेषों की तलाश में आया, तो उन्हें टूटे हुए मांस और हड्डियों का एक गूदा ढेर मिला जो तेज़ धूप में सड़ रहा था। इस बात के सबूत मिले कि हाथी ने पहले उस आदमी पर अपना पैर रखा और फिर उसे अपनी सूंड से टुकड़े-टुकड़े कर दिया। वह एक पैर को दस गज दूर एक जगह पर ले गया, जहाँ उसने उसे एक झुमले के पेड़ के टेढ़े-मेढ़े तने पर पटका और अंत में उसे चट्टानों के बीच फेंक दिया।

वह उस दुष्ट हाथी का पहला शिकार था। उसका दूसरा प्रयास एक चरवाहे पर था जो सूर्यास्त के समय अपने पशुओं को गुंडालम स्थित मवेशी बाड़े की ओर ले जा रहा था। यह लड़का युवा और फुर्तीला होने के कारण सूखी नदी के किनारे रेत पर भाग निकला, जिसका पीछा वह क्रूर हाथी कर रहा था। जब उसे लगा कि वह पीछे छूट रहा है, तो लड़के ने सूझबूझ से पहाड़ी की खड़ी ढलान पर चढ़ गया, जहाँ चट्टानें बहुत फिसलन भरी थीं और छोटे-छोटे ढीले पत्थर बहुतायत में थे। इससे वह अपनी बढ़त बनाए रखने में सफल रहा।

भागने की अफरा-तफरी में लड़के के नंगे पैर नुकीले पत्थरों पर बुरी तरह छिल गए, जबकि उसके शरीर पर जगह-जगह कांटे और झाड़ियाँ थीं जो उसे रोकने की कोशिश कर रही थीं। लेकिन वह दौड़ता रहा और पहाड़ी पर लगभग दो सौ गज ऊपर निकली एक ऊँची चट्टान पर चढ़कर हाथी से बच निकलने में कामयाब रहा।

बाद में उसने मुझे बताया कि जब हाथी चट्टान के पास पहुँचा, तो वह उसके चारों ओर कई बार घूमा, चिंघाड़ता रहा और अपनी सूंड से अपने शिकार पर वार करने की कोशिश करता रहा। लेकिन लड़के ने अपना धैर्य बनाए रखा और हाथी के साथ-साथ चलता रहा, उस भयानक सूंड की नोक से यथासंभव दूर रहने की कोशिश करता रहा। उसने मुझे बताया कि चट्टान की चोटी का क्षेत्रफल लगभग पच्चीस वर्ग फुट था और शिकारी हाथी की सूंड की साँप जैसी नोक कभी-कभी उसके टखनों से एक फुट की दूरी पर आ जाती थी। फिर भी वह उससे बचने में कामयाब रहा, और एक घंटे तक इस खेल के बाद हाथी ने अचानक अपने शिकार में रुचि खो दी और वहाँ से चला गया। फिर भी लड़का इतना डरा हुआ था कि नीचे नहीं उतर पाया और उसने रात चट्टान की चोटी पर ही बिताई, अगली सुबह सूरज के आसमान में काफी ऊपर चढ़ने के बाद ही वह नीचे उतरा, जब उसे लगा कि हाथी आसपास कहीं नहीं है।

इसके बाद एक महीने तक शांति छाई रही, जब उस इलाके में रहने वाले कुछ लोगों को लगने लगा कि शायद हाथी दूसरे क्षेत्रों में चला गया है, या फिर अगर वह मद में था, तो वह मद का मौसम बीत चुका है और उसकी हालत सामान्य हो गई है।

लेकिन वे बहुत आशावादी थे, क्योंकि चरवाहे का पीछा करने में असफल रहने के ठीक पाँच सप्ताह बाद, इस हाथी ने दो यात्रियों पर हमला कर दिया, जब वे एंचेटी से लगभग आठ मील दक्षिण में स्थित नटरापलयम गाँव की ओर जंगल से होकर जा रहे थे। इन दोनों व्यक्तियों का अचानक उस दुष्ट हाथी ने पीछा करना शुरू कर दिया और वे जंगल के रास्ते पर भागने लगे, जबकि हाथी लगभग सौ गज पीछे उनका पीछा कर रहा था। इनमें से एक व्यक्ति लगभग तीस वर्ष का था और दूसरा उससे लगभग दस वर्ष बड़ा। उम्र का असर जल्द ही बड़े व्यक्ति पर दिखने लगा, जिससे वह पीछे रह गया और उसकी साँसें सिसकते हुए चलने लगीं। वह जानता था कि उसकी मृत्यु निश्चित है, और उसने भागते रहने की पूरी कोशिश की। दुर्भाग्य से, उसने अपना आपा खो दिया था, और उसने हाथी से बचने का कोई प्रयास नहीं किया, जैसा कि वह कर सकता था, जैसे कि पेड़ पर चढ़ना, किसी चट्टान के पीछे छिपना या भागते समय अपने कपड़े का कुछ हिस्सा फेंक देना। यह अंतिम उपाय हमलावर को कुछ मिनटों के लिए रोक सकता था। क्योंकि जब कोई हाथी पीछा कर रहा हो, तो अंतिम उपाय के रूप में अपने कपड़े का कुछ हिस्सा फेंक देना ही उचित होता है; जब हाथी उस तक पहुँचता है और उसे इंसानी गंध आती है, तो वह हमेशा रुककर उसे टुकड़े-टुकड़े कर देता है। इस तरह मिले कीमती पलों में पीड़ित को भागने का मौका मिल जाता है।

लेकिन यह बेचारा आदमी तब तक दौड़ता रहा जब तक वह और दौड़ नहीं सका। जब वह रास्ते पर बेसुध पड़ा था, तो हाथी ने उसे पकड़ लिया, उसका शरीर दर्द से कराहते फेफड़ों से उबड़-खाबड़ हो रहा था। जल्द ही इस धरती पर उनकी सेवा समाप्त हो गई, क्योंकि हाथी ने उसे अपनी सूंड में उठाया और रास्ते के किनारे एक बड़े पत्थर से बार-बार टकराया, उसे बुरी तरह पीटकर अधमरा कर दिया और अंत में जंगल में फेंक दिया।

इन घटनाओं के परिणामस्वरूप, वन अधिकारियों के माध्यम से सलेम जिले के कलेक्टर को याचिकाएँ भेजी गईं, जिसमें इस हाथी को 'अनैतिक' घोषित करने की मांग की गई थी। इसका अर्थ यह था कि जिले में किसी भी शिकार लाइसेंस धारक को हाथी का शिकार करने की अनुमति दे दी गई थी। सामान्यतः, भारत में हाथी को सख्त संरक्षण प्राप्त है। दुनिया के अन्य हिस्सों की तरह ही, भारत में भी लालफीताशाही एक धीमी प्रक्रिया है, और भारत में तो यह स्थिति और भी गंभीर है। इसी कारण आवश्यक आदेश जारी करने में तीन महीने या उससे अधिक का समय लग गया। जिले के सभी शिकार लाइसेंस धारकों को सूचित करने में एक महीने की और देरी हुई।

इस बीच वह बदमाश काफी सक्रिय था। उसने वन विभाग द्वारा काटी गई चंदन की लकड़ियों से लदी एक बैलगाड़ी पर हमला कर दिया। बैलगाड़ी का चालक और चंदन के साथ चल रहा वन रक्षक जंगल में भागकर बच निकले, लेकिन बैलगाड़ी चकनाचूर हो गई और एक बैल को मामूली चोट आई।

कुछ ही समय बाद, उस बदमाश ने एक असामान्य काम किया। चरवाहों द्वारा जंगल में छोड़े गए मवेशी आम तौर पर काफी बड़े क्षेत्र में फैल जाते हैं। जाहिर तौर पर इनमें से एक जानवर उस बदमाश के बहुत करीब भटक गया, जिस पर बदमाश ने हमला किया और उसकी कमर तोड़ दी।

कुछ समय की शांति के बाद यह खबर आई कि उसने इस क्षेत्र की एक जंगली जनजाति के एक पुजारी की हत्या कर दी है, क्योंकि वह उस ठेकेदार के लिए जंगल से शहद लेकर लौट रहा था जिसने वन विभाग से इस विशेष क्षेत्र में सभी जंगली शहद को इकट्ठा करने का अधिकार खरीदा था।

फिर मुझे आधिकारिक सूचना मिली। आम तौर पर मुझे हाथी के शिकार में कोई आनंद नहीं आता, क्योंकि इन विशाल और महान जानवरों के प्रति मेरे मन में बहुत स्नेह है। दूसरी बात, मुझे लगता है कि हाथी अपेक्षाकृत शांत स्वभाव के होते हैं; हाथी चरते समय झाड़ियों में शोर मचाकर अपनी स्थिति का पता दे देते हैं। ऐसे में शिकार के हवा के विपरीत दिशा में जाकर उसके पास तक पहुंचना अपेक्षाकृत आसान होता है। बस पैरों को सही जगह पर रखने का थोड़ा अनुभव होना चाहिए, ताकि सूखी पत्तियों या टहनियों पर पैर न पड़े जो चटकने की आवाज करके शिकारी की स्थिति का पता दे देती हैं।

शिकार करते समय स्थिर रहने की कला का एक और महत्वपूर्ण पहलू है 'जम जाने' की क्षमता, यानी उस समय आप जिस भी स्थिति में हों, शिकार के आपकी ओर देखने पर बिल्कुल स्थिर हो जाना। अर्ध-झुकी हुई स्थिति में यह कभी-कभी थोड़ा अटपटा लग सकता है, लेकिन सीधा होना या नीचे बैठना घातक हो सकता है, क्योंकि ज़रा सी भी हलचल से शिकारी का भेद खुल जाएगा। सबसे अच्छा तरीका है कि आप बिल्कुल स्थिर रहें, चाहे दस मिनट तक भी उसी अर्ध-झुकी हुई स्थिति में क्यों न रहें। मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि यह कभी-कभी बेहद थकाने वाला हो सकता है।

इन तरीकों से मैंने कई बार हाथियों का पीछा करते हुए उनके कुछ गज के करीब जाकर उन्हें शांति से चरते हुए देखा है, और उन्हें मेरी मौजूदगी का ज़रा भी एहसास नहीं हुआ। लेकिन हल्की सी भी सरसराहट, मेरी गंध, या पैरों की हल्की सी भी सरसराहट उन्हें तेज़ी से भगा देती। हाथी की नज़र बहुत कमज़ोर होती है, और अगर आप मिलिट्री की खाकी-हरे रंग की वर्दी पहने हों और बिल्कुल स्थिर खड़े रहें, तो भी वे अक्सर आपकी ओर देखेंगे, लेकिन उन्हें आपकी मौजूदगी का पता नहीं चलेगा।

जैसा कि मैंने पहले भी कहा है, इन्हीं कारणों से मुझे हाथियों का शिकार करना पसंद नहीं है। साथ ही, कई तथाकथित बदमाश हाथी असल में बदमाश होते ही नहीं हैं। जैसा कि मैंने पहले भी बताया है, शिकारी और किसान अक्सर हाथियों पर गोली चलाते हैं और इस प्रक्रिया में उन्हें घायल कर देते हैं, जब वे मानव जाति से क्रोधित हो जाते हैं। फिर, तथाकथित बदमाशों के खिलाफ दर्ज की गई कई घटनाएं तो कभी हुई ही नहीं, क्योंकि हाथी का शिकार करने के इच्छुक लोग कभी-कभी मनगढ़ंत कहानियां गढ़ते हैं और ग्रामीणों को बढ़ा-चढ़ाकर रिपोर्ट लिखने के लिए उकसाते हैं ताकि कलेक्टर उस बदमाश हाथी पर प्रतिबंध लगा दे। कलेक्टर आमतौर पर आदेश जारी करने से पहले ऐसे मामलों की बहुत सावधानीपूर्वक और गहन जांच करते हैं; लेकिन कभी-कभी, इन सभी सावधानियों के बावजूद, ऐसे हाथी मारे जाते हैं जो वास्तव में बदमाश होते ही नहीं हैं।

इसलिए मैंने सूचना पर ज्यादा ध्यान नहीं दिया, जब तक कि लगभग तीन सप्ताह बाद पेन्नाग्राम कस्बे में रहने वाले मेरे शिकारी रंगा का पत्र नहीं आया। उसने बताया कि चार दिन पहले गेरहेट्टी से लगभग सात

मील दूर अनाइबिद्दामदुवु नामक स्थान पर एक हाथी ने एक पुजारी महिला को मार डाला था। इस नाम का शाब्दिक अर्थ है 'वह तालाब जिसमें हाथी गिरा'। यह एक प्राकृतिक तालाब है, जो अनाइबिद्दाहल्ला नदी के तल पर खड़ी चट्टानों से बना है। अनाइबिद्दाहल्ला नदी चिन्नार नदी की एक सहायक नदी है, जो स्वयं दक्षिण भारतीय नदियों में सबसे बड़ी कावेरी नदी की सहायक नदी है। इसके अलावा, यह तालाब गहरा है और कभी सूखता नहीं है। मुझे बताया गया है कि कई साल पहले एक हाथी पानी के लिए अपनी सूंड का इस्तेमाल करते हुए उसमें गिर गया था और उसके चारों ओर मौजूद खड़ी और फिसलन भरी चट्टानों के कारण बाहर नहीं निकल पाया था। हाथी अच्छे तैराक होते हैं और उनमें अदम्य शक्ति और सहनशक्ति होती है, लेकिन उनका शरीर भी बहुत बड़ा होता है। तो यह बेचारा प्राणी, लगातार तीन दिनों तक तालाब में गोल-गोल तैरने के बाद, धीरे-धीरे डूब गया और उन लोगों की काफी बड़ी भीड़ के सामने दम तोड़ दिया, जो पेन्नाग्राम से ग्यारह मील की दूरी तय करके इस 'तमाशा' को देखने आए थे।

रंगा का पत्र मिलने के बाद, और चूंकि उससे मिले हुए काफी समय बीत चुका था, मैंने चार दिन की छुट्टी ली और पेन्नाग्राम के लिए रवाना हो गया। मैंने उसे वहां से लिया और गेरहेट्टी वन बंगले तक जाने वाली अठारह मील या उससे अधिक की बेहद खराब वन सड़क तय की, रास्ते में अनाइबिद्दामदुवु से भी गुजरा।

गेरहेट्टी के वन रक्षक ने मुझे बताया कि वह हाथी आस-पास ही था, साथ ही लगभग दस हाथियों का एक झुंड भी था। ये सभी जानवर बंगले के सामने वाले पानी के गड्ढे पर पानी पीने आते थे, और झुंड में कई जानवर लगभग उसी आकार के थे जिस आकार का वह हाथी था, इसलिए यह पहचानना मुश्किल था कि कौन सा हाथी कौन है। इस वजह से किसी भी खास पदचिह्न का निश्चित रूप से पीछा करना संभव नहीं था।

इसके अलावा, अधिसूचना में इस जानवर का वर्णन बहुत अस्पष्ट था; इसमें केवल इतना बताया गया था कि अगले पैर की परिधि 4'10" थी, जिससे हाथी की ऊंचाई लगभग 9'.8" हो जाती है, क्योंकि अगले पैर की परिधि का दोगुना लगभग ऊंचाई होती है। रंग काला बताया गया था, लेकिन सभी हाथी नहाने के बाद काले हो जाते हैं, हालांकि वे जल्द ही खुद को रेत या मिट्टी से ढक लेते हैं। जंगल की रेत अलग-अलग रंगों की होती है, जो लाल से लेकर भूरी, धूसर और लगभग काली तक होती है। इसलिए यह भी कोई विशिष्ट पहचान नहीं थी। हाथी की पहचान करने वाली एकमात्र विशेषता यह थी कि उसके दो दांत, जिनकी लंबाई तीन फीट से अधिक बताई गई थी, नोक के पास मिलते और एक दूसरे को काटते थे।

इसलिए आप समझ सकते हैं कि आखिरी कारक ही एकमात्र ऐसा तरीका था जिससे मैं इस विशेष जानवर की पहचान कर पाता, क्योंकि यह संदेह था कि वह मुझे पास जाकर उसकी ऊंचाई मापने की अनुमति देगा या नहीं! लेकिन यह देखने के लिए कि क्या उसके दांत एक-दूसरे को काट रहे थे, हाथी को सामने से देखना ज़रूरी था, क्योंकि किसी कोण से देखने पर दांत बिना काटे भी एक-दूसरे को काटते हुए दिखाई दे सकते हैं। मैं निश्चित रूप से गलत जानवर को गोली नहीं मारना चाहता था, इसके अलावा इससे होने वाली भारी परेशानी और आधिकारिक स्पष्टीकरण से भी बचना चाहता था।

इसका मतलब यह था कि मैं उस हाथी के माप तक आने वाले किसी भी पदचिह्न का चयन कर सकता था और उनका पीछा तब तक कर सकता था जब तक कि मुझे वह जानवर न मिल जाए जिसने वे पदचिह्न बनाए थे। फिर मैं जानवर को सामने से देखने के लिए आगे बढ़ता ताकि यह पता लगा सकूँ कि क्या उसके दांत आपस में मुड़े हुए हैं। यदि ऐसा होता, तो वह मेरा हाथी होता। यदि ऐसा नहीं होता, तो मुझे फिर से तालाब में वापस जाकर पदचिह्नों के दूसरे समूह का पीछा करना पड़ता। यह याद रखना आवश्यक है कि मेरे पास केवल चार दिन थे, और इन चार दिनों में से एक दिन रंगा को लेने, गेरहेट्टी आने और आवश्यक पूछताछ करने में ही बीत चुका था।

उस रात करीब दस बजे मैंने तालाब के पास हाथियों के चरने की आवाज़ सुनी। यह निस्संदेह हाथियों का झुंड था, और वह शरारती हाथी उनके साथ नहीं होगा। इसलिए मैं फिर से सो गया।

भोर होते ही मैं रंगा और वन रक्षक के साथ मिलकर एक पदचिह्न का पीछा करने के लिए निकल पड़ा। पानी के गड्ढे के किनारे पर हर आकार के हाथियों के पैरों के निशान बिखरे पड़े थे, जहाँ हाथियों के झुंड ने पिछली रात पानी पिया था। इनमें कुछ बहुत छोटे हाथियों के भी पदचिह्न थे, जिनकी ऊँचाई मुश्किल से तीन फीट से ज़्यादा रही होगी।

तालाब के चारों ओर घूमते हुए, मुझे तीन पदचिह्न मिले जो उस हाथी के आकार के लगभग बराबर थे। मैंने देखा कि इनमें से दो पदचिह्न तालाब के उसी तरफ बने थे जहाँ हाथियों का झुंड पानी पी रहा था, जबकि तीसरा पदचिह्न उस हाथी का था जो पानी की ओर बिल्कुल अलग दिशा से आया था। इसलिए मैंने अनुमान लगाया कि यह तीसरा जानवर ही वह हाथी हो सकता है, और हम एक कतार में उसका पीछा करने लगे। रंगा आगे-आगे पदचिह्नों का पीछा कर रहा था; मैं उसके पीछे-पीछे अपनी दोहरी बैरल वाली 450/400 जेफ्री राइफल से उसे कवर करते हुए चल रहा था; वन रक्षक मेरे पीछे था, उसका काम पीछे से होने वाले हमले से बचाव करना था, यदि हाथी अर्धवृत्ताकार घूमकर हमारे पीछे चर रहा हो।

पानी से निकलने के कुछ ही दूर बाद ज़मीन लंबी भाले जैसी घास से ढकी हुई थी, जिससे पिछली रात हाथी के गुज़रने के निशान साफ़ दिखाई दे रहे थे, जो चारों ओर से कुचले हुए थे। फिर भाले जैसी घास हटकर लैंटाना और वेट-ए-बिट थॉर्न जैसी कांटेदार झाड़ियाँ उग आईं। यहाँ भी हमारे शिकार के गुज़रने का रास्ता देखना अपेक्षाकृत आसान था, लेकिन कांटों के कारण हमारा आगे बढ़ना मुश्किल हो गया, क्योंकि वे हमारे कपड़ों को नोच रहे थे और फाड़ रहे थे।

फिर भी रास्ते साफ़ थे और हम लगभग एक मील तक अच्छी गति से आगे बढ़े, तभी हम एक छोटी पहाड़ी की तलहटी पर पहुँचे। इस पहाड़ी की ढलानें घने बाँस से ढकी हुई थीं, और हाथी इसी से गुज़रते हुए पहाड़ी पर चढ़ गया था। वह बाँस की पत्तियों के सिरों से निकलने वाली कोमल कोंपलों को चरने के लिए भी रुका था, जैसा कि रास्ते में मिले टूटे हुए बाँस के तनों के ढेर में उसके द्वारा मचाई गई तबाही से स्पष्ट था। यहाँ उसने काफी मात्रा में गोबर किया था, और जब हम पहाड़ी की चोटी पर पहुँचे और दूसरी तरफ नीचे

उतरे, तो यह स्पष्ट हो गया कि हाथी ने उस सुबह तड़के तक भोजन किया था; क्योंकि गोबर ताज़ा था और ठंडा होने का समय नहीं मिला था।

यहां से आगे का हमारा सफर बेहद धीमा और श्रमसाध्य हो गया। घने बांस ने हमें पूरी तरह से घेर लिया था और हममें से किसी के भी लापरवाही से कदम रखने पर सरसराहट या तेज चटकने की आवाज आती थी, यह इस बात पर निर्भर करता था कि हम पत्तियों पर पैर रख रहे हैं या बांस की टहनियों पर।

मैंने रंगा की कोहनी को छुआ और उसे स्थिर खड़े रहने का इशारा किया, गार्ड और मैंने भी ऐसा ही किया। हम दस मिनट से अधिक समय तक हाथी के भोजन करने की जानी-पहचानी आवाज़ या पाचन प्रक्रिया के दौरान उसके विशाल पेट से निकलने वाली गहरी गड़गड़ाहट सुनने की कोशिश करते रहे। लेकिन जंगल अपेक्षाकृत शांत था, सिवाय हमारे चारों ओर गूंजते भूरे जंगली मुर्गों की चहचहाहट और सामने की पहाड़ी पर दूर से आती लंगूर बंदरों की आवाज़ के।

ज़ाहिर तौर पर हमारा शिकार आराम कर रहा था, या शायद हमारे सामने फैली गहरी घाटी में और नीचे चला गया था। चूंकि बाद वाला ज़्यादा संभावित लग रहा था, इसलिए हम दबे पांव, धीरे-धीरे और सावधानी से उसके पीछे-पीछे चलने लगे। हमें अपनी नज़रें नीचे रखनी पड़ीं ताकि हम किसी ऐसी चीज़ पर पैर न रख दें जिससे हमारी मौजूदगी का पता चल जाए। आधा मील और चलने पर हम घाटी में पहुँच गए, जहाँ झाड़ियाँ बहुत घनी थीं; जंगली बेर, बेल और विशाल इमली के पेड़ हर जगह बहुतायत से उगे हुए थे, जिससे पंद्रह से बीस गज से आगे देखना असंभव था। दो सौ गज और चलने पर हम गोलामोथी नदी की एक छोटी सहायक नदी के पथरीले तल पर पहुँच गए।

हाथी यहाँ नदी के तल के किनारे-किनारे चलकर पचास गज आगे एक रेतीले स्थान पर नदी पार कर गया था। नदी का वह किनारा, जिस पर वह चढ़ गया था, काफी ढलान वाला था, इसलिए अब हमारे सामने हाथी के ठीक ऊपर होने का खतरा मंडरा रहा था, जो किसी 'दुष्ट' हाथी से सामना करने का सबसे अच्छा तरीका तो बिल्कुल नहीं था।

हम बहुत धीमी गति से और यथासंभव खामोशी से आगे बढ़े। हमारा शिकार खाना बंद कर चुका था और अब फिर से चलने लगा था। हमने जल्द ही देखा कि वह उस पहाड़ी की चोटी के पार स्थित किसी दूसरी घाटी की ओर जा रहा था जिस पर हम चढ़ रहे थे। यह निष्कर्ष निकालते हुए हमने अपनी गति बढ़ा दी, लेकिन अभी हम केवल एक चौथाई मील ही आगे बढ़े थे कि हमें हाथी के पेट से भारी भोजन पचाने की गड़गड़ाहट की आवाज सुनाई दी।

मैंने रंगा और वन रक्षक को एक मजबूत इमली के पेड़ पर चढ़ा दिया और खुद अकेले ही आवाज़ की दिशा में दबे पांव आगे बढ़ा। हाथी बांसों से घिरे एक छोटे से गड्ढे में था। जाहिर है वह आराम कर रहा था, या शायद लेटा हुआ था, क्योंकि उसके खाने की कोई आवाज नहीं आ रही थी। इस समय तक गड़गड़ाहट भी बंद हो चुकी थी।

बहुत सावधानी से, लगभग इंच-दर-इंच, मैं गड्ढे में उतरा। फिर एक पल रुककर, मैंने अपने हाथ में थोड़ी सी नरम मिट्टी उठाई और उसे अपने सामने ऊपर उठाकर गिरा दिया ताकि देख सकूँ कि हवा किस दिशा से बह रही है। मिट्टी सीधी गिरी, जिससे पता चला कि गड्ढे में न के बराबर हवा थी। यह एक नुकसान था, क्योंकि शांत हवा में हाथी के मुझे सूंघ लेने की संभावना थी।

तो मैं और भी सावधानी से आगे बढ़ा, अगर ऐसा संभव था तो। बाँस के पेड़ मेरे ऊपर ऊँचे-ऊँचे खड़े थे, और मैं हर बाँह के पास पहुँचते ही उसके पीछे से झाँकता हुआ देखता। इसी तरह कुछ और कदम चलने पर मुझे अपने सामने एक स्लेटी रंग का बड़ा पत्थर दिखाई दिया। वह हाथी था, ज़मीन पर लेटा हुआ, और बदकिस्मती से, उसका मुँह दूसरी दिशा में था।

अब मेरे पास दो विकल्प थे: या तो मैं रास्ता बदलकर हाथी के सामने से आने की कोशिश करता, जहाँ से मैं उसके दांत देख पाता और गोली चलाने से पहले उसे ही शरारती हाथी के रूप में पहचान लेता, या फिर इससे कहीं आसान तरीका यह था कि मैं जहाँ खड़ा था वहीं से उसे उकसा देता। वह निश्चित रूप से पलटकर मेरी ओर देखता, जिससे मैं उसे पहचान लेता और उसके कुछ समझने से पहले ही गोली चला देता।

दूसरा और आसान रास्ता चुनते हुए, मैं बांस के एक झुंड के पीछे छिप गया और धीरे से सीटी बजाई। हाथी ने ध्यान नहीं दिया। शायद वह गहरी नींद में था, या उसने सोचा कि आवाज़ किसी जंगली पक्षी की है। फिर मैंने ज़ोर से जीभ चटकाई। इसका असर हुआ और हाथी झट से खड़ा हो गया और मेरी तरफ घूम गया।

वह एक भव्य हाथी था, लगभग दस फीट लंबा, और उसके हाथीदांत सुबह की धूप में शानदार ढंग से चमक रहे थे। लेकिन वे एक दूसरे से काफी दूर थे, बिल्कुल भी आपस में नहीं टकरा रहे थे। मैंने अपना समय गलत हाथी का पीछा करने में बर्बाद कर दिया था।

हाथी लगभग आधे मिनट तक हैरानी से मेरी ओर देखता रहा, उसकी छोटी-छोटी आँखें उस प्राणी को निहार रही थीं जिसने उसकी नींद में खलल डाला था। मैं लगभग उसके मन में चल रहे विचारों को पढ़ सकता था। हैरानी के बाद उसकी पहली प्रतिक्रिया झुंझलाहट थी और वह धमकी भरे अंदाज़ में एक-दो कदम आगे बढ़ा। मैंने एक और तेज़ सीटी बजाई, जिसकी आवाज़ से उसका साहस पस्त हो गया और वह दुम दबाकर जंगल की ओर भाग गया, उसके भागने की गड़गड़ाहट दूर जाकर गुम हो गई।

जब मैं रंगा और वन रक्षक को जिस स्थान पर छोड़कर लौटा, तब तक वे इमली के पेड़ से नीचे उतर चुके थे। उन्होंने जो आवाज़ें सुनी थीं, उनसे उन्हें स्पष्ट रूप से समझ आ गया था कि मुझे कोई ऐसा जानवर मिल गया है जो वह बदमाश नहीं है जिसकी हम तलाश कर रहे थे। फिर हम तीनों निराश होकर पानी के स्रोत की ओर वापस चल पड़े, न केवल हताश थे, बल्कि समय बर्बाद होने से नाराज़ भी थे।

जैसा कि पहले बताया गया था, लगभग समान आकार के दो और पदचिह्न थे। वे तालाब की कीचड़ में बने थे और उन्हें टेप से नापकर यह पता लगाने का कोई फायदा नहीं था कि कौन सा पदचिह्न उस

बदमाश के बताए गए आकार के सबसे करीब है; नरम कीचड़ किसी भी जानवर के पदचिह्न को बढ़ा देती है। रंगा ने एक पदचिह्न का पीछा किया, और गार्ड और मैंने दूसरे का, इस समझ के साथ कि हम आगे की चर्चा के लिए पंद्रह मिनट में पानी के गड्ढे पर लौटेंगे।

कुछ ही देर में मुझे समझ आ गया कि जिस जानवर का मैं पीछा कर रहा था, वह झुंड का ही एक हिस्सा था, क्योंकि झाड़ियों के बीच से चरती हुई गायें और उनके बच्चे दिखाई दे रहे थे जो उसके साथ थे। वह निश्चित रूप से शरारती हाथी नहीं था, और मेरी घड़ी के अनुसार ठीक पंद्रह मिनट बाद मैं मुड़ा और पानी के स्रोत की ओर वापस चल पड़ा। रंगा के पास घड़ी नहीं थी, इसलिए वह अभी तक नहीं आया था, तो मैं शांति से बैठकर वन रक्षक द्वारा लाई गई थर्मस से गर्म चाय की चुस्की लेने लगा। लगभग दस मिनट बाद, वह यह बताने आया कि हाथी पानी के स्रोत से एक चौथाई मील दूर घूमकर अर्धवृत्ताकार चक्कर लगाकर जंगल की एक पट्टी से गुजरा जो बंगले के ठीक पीछे, विपरीत दिशा में एक पहाड़ी की ओर जाती थी।

यह खबर आशाजनक लग रही थी, इसलिए हम तुरंत चल पड़े। जल्द ही हम उस जगह पर पहुँच गए जहाँ से रंगा ने रिपोर्ट दी थी। जल्द ही यह स्पष्ट हो गया कि हमारा नया शिकार एक यात्री था, क्योंकि वह शायद ही कभी रुका था, बस कभी-कभार रसीले नए पत्तों की एक छोटी सी डंडी तोड़ रहा था। वह हाथी हमें जंगल बंगले के पीछे वाली पहाड़ी से होते हुए, अगली दो पहाड़ियों को पार करके, लगभग सीधी रेखा में तलावड़ी धारा तक ले गया।

कुल मिलाकर हमने उस नदी के तल तक पहुँचने से पहले चार मील से अधिक की दूरी तय की, जहाँ हमने पाया कि हाथी दक्षिण-पश्चिम की ओर मुड़ गया था और सीधे तलावड़ी नदी की ओर बढ़ रहा था। मुझे पता था कि

कावेरी नदी पंद्रह मील की दूरी पर थी, और मुझे लगने लगा कि हमारा लक्ष्य अचानक उस बड़ी नदी तक पहुँचने का निश्चय कर चुका है। एक बार ऐसा करने के बाद, और विशेष रूप से यदि वह तैरकर दूसरी ओर पहुँच गया, तो उसका पीछा करना असंभव होगा, क्योंकि वहाँ का इलाका न केवल अत्यंत घना है, बल्कि सौ मील से भी अधिक दूर नीलगिरी और बिलिगिरिरंगन पर्वतों तक फैला हुआ अखंड जंगल और पहाड़ी क्षेत्र है।

इसलिए हम बिना सोचे-समझे पूरी गति से आगे बढ़ गए, लेकिन हमारा हाथी कई घंटों की बढ़त ले चुका था, और उसके लंबे और दृढ़ कदमों को देखकर यह स्पष्ट था कि वह यात्रा करने के लिए दृढ़ संकल्पित था।

दोपहर की तेज धूप में नदी की नरम रेत अब झुलसा देने वाली गर्म हो गई थी। इससे मेरा चलना मुश्किल हो रहा था और यह रेत मेरे जूतों में इस तरह रिस रही थी जैसे नदी या समुद्र की महीन रेत रिसती है। बीच-बीच में नदी का तल पथरीला हो जाता था और दूर-दूर तक महीन रेत की जगह गोल, पानी से घिसे हुए बड़े-बड़े पत्थर दिखाई देते थे। ऐसी जगहों पर हाथी पत्थरों से बचने के लिए नदी के किनारों की झाड़ियों

को चीरता हुआ आगे बढ़ रहा था, और हम भी ऐसा ही कर रहे थे, लटकती लताओं से बचते हुए कमर झुकाए हुए, और मेहनत से पसीने से तरबतर।

पंद्रह मील पैदल चलने के बाद हम तलावड़ी और कावेरी के संगम के पास पहुँच गए। बड़ी नदी से कुछ सौ गज की दूरी पर, तलावड़ी धारा को उत्तैमलाई गाँव से बिलिगुंडलू जाने वाला एक कच्चा रास्ता पार करता है। हाथी ने यहाँ से दिशा बदल ली थी और उत्तैमलाई की ओर दो मील और चलने के बाद, बड़ी नदी के किनारे स्थित एक दलदल की ओर दक्षिण की ओर मुड़ गया। यह दलदल, जिसे करतेई पलाम के नाम से जाना जाता है, जिसका अर्थ है बाइसन का खोखला स्थान, मुझे अच्छी तरह से ज्ञात था। वर्षों पहले यह बाइसन के झुंडों का नियमित ठिकाना हुआ करता था, जो कोयंबटूर तट से सलेम तट तक कावेरी नदी को तैरकर पार करते थे। साल के इस समय दलदल कुछ जगहों को छोड़कर काफी सूखा था, लेकिन हर जगह हरी-भरी घास उगी हुई थी, जबकि घने पेड़ों के समूह पूरे क्षेत्र में फैले हुए थे।

अब हमें ऐसे संकेत मिले कि हाथी ने खाना शुरू कर दिया था, और जैसे ही हम दलदल के केंद्र की ओर बढ़े, ताजे गोबर के ढेर से पता चला कि जानवर ज्यादा दूर नहीं था।

ज़मीन भी दलदली हो गई थी, और मैंने एक बार फिर रंगा और गार्ड को वापस भेज दिया ताकि कीचड़ में तीन लोगों के चलने से होने वाली आवाज़ को कम किया जा सके। प्रगति बहुत धीमी थी, क्योंकि मुझे न केवल हाथी से सावधान रहना था, बल्कि हर कदम पर ज़मीन का ध्यानपूर्वक निरीक्षण भी करना था, ताकि अचानक कमर तक चिपचिपी काली मिट्टी में न धंस जाऊं। फिर भी, कई बार मैं घुटनों तक कीचड़ में धंस गया, और खुद को बाहर निकालने के लिए मुझे काफी मशक्कत करनी पड़ी और खूब शोर मचाना पड़ा, तब जाकर मुझे ज़मीन पर पैर जमाने का मौका मिला।

कई बार मैंने रुककर सुनने की कोशिश की, पर कुछ सुनाई नहीं दिया। फिर अचानक, बिना किसी चेतावनी के, सरकंडों वाली घास में ज़ोरदार सरसराहट हुई और हाथी लगभग बीस कदम दूर खड़ा था, पूरी तरह से लथपथ और चिपचिपी कीचड़ से सना हुआ जिसमें वह लेटा हुआ था। वह एक विशाल नर हाथी था, जिसके चमकदार सफेद दांत समरूप रूप से मुड़े हुए थे। लेकिन वे उस दुष्ट हाथी के टेढ़े दांत नहीं थे। निराशा और घृणा ने मुझे इतना घेर लिया कि मैंने उस बेचारे हाथी को लगभग भगा ही दिया, और जब मैं अपने अनुयायियों के पास लौटा, तो मेरा मूड बिल्कुल भी अच्छा नहीं था, जैसा कि वे स्पष्ट रूप से देख सकते थे।

शाम के चार बज चुके थे, और हमें तलावड़ी नदी के किनारे-किनारे लगभग पंद्रह मील वापस लौटना था, साथ ही गेरहेट्टी बंगले तक चार मील और। दूसरा विकल्प यह था कि हम बिलिगुंडलू में डेरा डालें और अगली सुबह लौटें; लेकिन इससे मेरे बचे हुए दो दिनों में से आधा दिन और बर्बाद हो जाता। इसलिए मैंने वापसी का आदेश दे दिया, जिससे मेरे साथी बहुत नाराज़ हुए। उन्होंने मुझे याद दिलाया कि हमारे पास किसी भी तरह की रोशनी नहीं है, इसलिए हमारी यात्रा का अधिकांश भाग अंधेरे में ही तय करना होगा,

क्योंकि चाँद नहीं है। कहीं हमें हाथी भी न मिल जाए! मुझे डर है कि मेरा जवाब संक्षिप्त था, और मैंने इस हाथी को, और सभी हाथियों को, एक ऐसे क्षेत्र में भेज दिया जहाँ उन्हें बहुत गर्मी लगेगी।

वापसी का वह सफर लड़खड़ाने, फिसलने, चट्टानों पर घिसटने, ठूंठों से टकराने या बेलों में उलझने का एक लंबा सिलसिला सा लग रहा था, और हाथी का कोई आभास या आवाज भी नहीं सुनाई दे रही थी। लगभग आधी रात हो चुकी थी जब हम लड़खड़ाते हुए गेरहेट्टी बंगले में पहुँचे, पूरी तरह थके हुए और बच्चों की तरह चिड़चिड़े। हम सुबह होते ही उठ गए थे, लगातार चलते रहे, कांटों, घास, नदी की रेत और दलदल से होते हुए लगभग चालीस मील का सफर तय कर चुके थे। हमें बहुत तेज भूख और प्यास भी लगी थी।

अगली सुबह मेरे पैरों में ऐंठन और दर्द था। वन रक्षक ने अपना टखना दिखाया, जो उसने तलावड़ी नदी के किनारे कहीं मोड़ लिया था, और उस दिन के काम से छुट्टी मांगी। केवल रंगा ही स्वस्थ और एक और कठिन दिन के लिए तैयार लग रहा था। दलिया, बेकन और अंडे, और कड़क कॉफी ने मुझे नई ऊर्जा दी, जबकि रागी का एक बड़ा गोला, जो एक छोटा अनाज होता है, उबालकर लगभग एक छोटे तोप के गोले के आकार का बनाया गया था, जिसे कॉफी के साथ खाया गया, रंगा को रात तक संतुष्ट रखेगा।

रात भर हम सब इतने थके हुए थे कि कोई आवाज़ नहीं सुन पाए थे, लेकिन पानी के कुंड पर जाने से पता चला कि हमारे सोते समय हाथियों का झुंड वापस लौट आया था। वहाँ दो बड़े हाथियों के ताज़े पदचिह्न भी थे, जिनमें से एक शायद वही पहला हाथी था जिसका मैंने पिछले दिन पीछा किया था, जबकि दूसरा वह जानवर था जिसका मैंने बिल्कुल भी पीछा नहीं किया था। तीसरे हाथी को, जैसा कि हम अच्छी तरह जानते थे, हमने कार्तई पलाम में बहुत दूर छोड़ दिया था।

फिर भी, कुछ भी संयोग पर नहीं छोड़ा जा सकता था; इसलिए हमने पिछले दिन की ही योजना का पालन किया और इन दोनों जानवरों का पीछा करते हुए तब तक आगे बढ़े जब तक हम उन तक नहीं पहुँच गए। सुबह 9:30 बजे तक हम उस पहले बैल तक पहुँच गए जिसका हमने पीछा करने का फैसला किया था। वह पिछले दिन पीछा किए गए दोनों बैलों से थोड़ा छोटा था, और वह बदमाश बैल नहीं था! निस्संदेह यह उन तीन जानवरों में से तीसरा था जिनके पदचिह्न हमने पिछले दिन देखे थे। पानी के गड्ढे पर वापस जाकर, हम शेष रास्ते पर चल पड़े और दोपहर 2:30 बजे हमें उसका निशान बनाने वाला जानवर एक बड़े और घने इमली के पेड़ के नीचे चुपचाप खड़ा मिला। वह भी बदमाश बैल नहीं था। मैंने उसे तुरंत पहचान लिया, वह वही पहला जानवर था जिसका मैंने पिछले दिन पीछा किया था और जिसे मैंने बांसों के बीच लेटे हुए परेशान किया था।

इस प्रकार यह स्पष्ट था कि वह 'बदमाश' आस-पास कहीं नहीं था। मेरे पास उपलब्ध चार दिनों में से तीन दिन बीत चुके थे, लेकिन मैं अभी भी उस दिन से आगे नहीं बढ़ पाया था जिस दिन मैं आया था।

पांच बजे हम बंगले पर वापस आ गए और चाय का एक बड़ा प्याला बना रहे थे। तभी साढ़े पांच बजे आठ मील दूर स्थित एंचेटी से बैलगाड़ियों का एक काफिला रात बिताने के लिए वहाँ पहुँचा, क्योंकि वहाँ एक बदमाश हाथी मौजूद था। बैलगाड़ियों ने बताया कि एंचेटी से लगभग आधे रास्ते में, जहाँ गोलमोथी नदी

सड़क को पार करती है, उन्हें एक बड़े हाथी के पदचिह्न मिले थे, जो कई बार सड़क पार कर चुका था और जाहिर तौर पर नदी के मुहाने के पास ही मंडरा रहा था।

आखिरी क्षण तक हार न मानने का दृढ़ निश्चय करके, रंगा और मैंने जल्दी खाना खाया और अभी भी थके हुए वन रक्षक को कार में बिठाकर उस घाट की ओर चल पड़े जिसके बारे में गाड़ीवालों ने बात की थी।

जब हम वहाँ पहुँचे तो शाम के 7 बज रहे थे और लगभग अंधेरा हो चुका था। कार की रोशनी से हाथी के पदचिह्न दिखाई दिए, जहाँ गाड़ीवालों ने बताया था। नदी पार करते समय, टॉर्च की मदद से हमने अपने दोस्तों की गाड़ी के पहियों से बनी संकरी लकीरों पर हाथी के थाली जैसे पदचिह्न देखे। हाथी गर्म मौसम में दिन के समय बाहर नहीं घूमते, और इससे साफ पता चलता है कि हमारे आने से पहले उसी शाम हाथी सड़क पर था। शायद उसने कार की आवाज़ सुनी हो, या हमारी बत्तियाँ देखी हों, और हमारे पहुँचने से ठीक पहले वहाँ से चला गया हो।

हमने जल्दी से स्टुडेबेकर का हुड नीचे कर दिया। मैंने अपनी सीलबंद बीम वाली स्पॉटलाइट रंगा को दे दी, जिसे मैंने पीछे वाली सीट पर बिठा दिया, लेकिन गार्ड को आगे वाली सीट पर ही रहने दिया। मैं खुद मुड़े हुए हुड पर बैठ गया, मेरे पैर ड्राइविंग सीट पर थे, और मेरी राइफल और टॉर्च तैयार थीं। जल्द ही चारों ओर घना अंधेरा छा गया, क्योंकि हम गोलमोथी नदी के किनारे लगे ऊंचे मुथी और जुमलम के पेड़ों और बांस के झुंडों से घिरे हुए थे, जिनके तने नदी के सूखे रेतीले तल पर ऊपर-नीचे बहने वाली जंगली हवा की धाराओं से अजीब तरह से चरमरा रहे थे।

हालात बहुत खराब थे। पहली बात तो यह कि हमें पता नहीं था कि हमने जो पदचिह्न देखे थे, वे उस हाथी के ही थे या नहीं। वे किसी भी हाथी के हो सकते थे। हमें बस इतना पक्का पता था कि वे गेरहेट्टी के आसपास मौजूद तीन बड़े नर हाथियों में से किसी के नहीं थे। दूसरी बात, उस हाथी के लिए उस घाट पर वापस जाने का कोई कारण नहीं था जहाँ से वह अभी-अभी गुजरा था, क्योंकि उसके पास घूमने के लिए पूरा जंगल था। तीसरी बात, हम सब जानते थे कि एक हाथी के लिए दस मील की दूरी आराम से चलने में मुश्किल से दो घंटे लगते हैं, और जब वह वास्तव में दौड़ रहा होता है तो उसकी गति बहुत तेज होती है। चौथी बात, हवा चारों दिशाओं में बह रही थी, और हमारी गंध को एक चौथाई मील के दायरे में मौजूद किसी भी हाथी तक ले जा सकती थी और अगर वह हाथी नहीं होता, तो उसे भगा सकती थी। दूसरी ओर, एक हल्की सी उम्मीद थी कि अगर वह हाथी होता, तो हमारी गंध उसे आकर्षित कर सकती थी।

तो हम घोर अंधेरे में रात 8:30 बजे तक इंतज़ार करते रहे, और फिर कहीं ऊपर की ओर से एक खोखले लट्ठे के पलटने की धीमी आवाज़ सुनाई दी। आखिरकार हाथी चलने लगा और आवाज़ से लग रहा था कि वह लगभग चार-पाँच सौ गज दूर है। फिर पंद्रह मिनट तक सन्नाटा छाया रहा, तभी पास ही से एक शाखा के टूटने की तेज़ आवाज़ आई, जिससे पता चला कि हाथी चर रहा था और साथ ही नदी पार करने की ओर बढ़ रहा था।

मुझे पता था कि उसने अभी-अभी जो शाखा तोड़ी थी, उसके सिरे से नए पत्ते खाने में उसे कम से कम तीस मिनट लगेंगे, ताकि उसके पास आने से पहले काफी समय मिल जाए। नदी के मोड़ से आते समय कार, जिसमें हम बैठे थे, उसे साफ दिखाई देगी, और पूरी संभावना थी कि अगर वह शरारती हाथी नहीं था, तो हमें देखते ही वह चुपचाप जंगल में गायब हो जाएगा। लेकिन मैंने हवा पर ध्यान नहीं दिया था; तभी अचानक तेज़ हवा हमारी तरफ से हाथी की ओर बहने लगी।

कुछ मिनटों तक सन्नाटा छाया रहा, फिर हमें कार के सबसे नज़दीक नदी के किनारे झाड़ियों में हल्की सरसराहट सुनाई दी। यह एक धीमी सी आवाज़ थी, मानो झाड़ियों में किसी छोटे जीव की आवाज़ हो। तभी अचानक कुचले हुए बांस के टूटने की भयानक आवाज़ सुनाई दी। फिर से गहरा सन्नाटा छा गया। मानो हवा भी थम सी गई हो, ताकि अगली घटना के लिए पूरा समय मिल सके।

यह एक दौड़ते हुए नर हाथी की कान फाड़ देने वाली चीख थी, जो बांस और झाड़ियों के ढहने की आवाज़ के साथ मिल गई थी क्योंकि वे हमारी ओर दौड़ते हुए उस विशालकाय हाथी के सामने गिर पड़े थे।

रंगा ज़रा भी नहीं हिचका! स्पॉटलाइट की किरण घने अंधेरे को चीरती हुई आगे बढ़ी। मेरी टॉर्च की रोशनी, उस कहीं ज़्यादा चमकदार स्पॉटलाइट की रोशनी के साथ मिलकर, एक विशालकाय हाथी को दिखा रही थी, जिसका पूरा शरीर काला था, सूंड ऊपर और अंदर की ओर मुड़ी हुई थी, और उसके दो नुकीले सफेद दांत सिरे पर एक-दूसरे को काटते हुए, हम पर गरजते हुए आ रहे थे!

पचास गज की दूरी से मेरी दाहिनी बैरल से निकली गोली उसके गले में जा लगी। गोली लगते ही वह रुक गया और गुस्से से चीखने लगा। निस्संदेह, यह उसके लिए बहुत भयानक था! धमाके, दर्द और तेज रोशनी ने उसे भ्रमित कर दिया और वह आधा जंगल की ओर मुड़ गया। मेरी दूसरी गोली, जो जल्दबाजी में कनपटी पर चलाई गई थी, उसके सिर के एक तरफ लगी। वह जंगल में भागा, अपने अगले पैरों पर लड़खड़ाया, फिर उठा और जैसे ही मेरी तीसरी गोली उसके शरीर में लगी, वह बांसों में गायब हो गया। लगभग पंद्रह मिनट तक हम जंगल में भारी आवाज़ें सुनते रहे, क्योंकि हाथी लड़खड़ाता, गिरता और फिर उठकर भागता रहता था।

कार स्टार्ट करके, मैंने रिवर्स किया और गेरहेटी लौट आया। उस रात मैं चैन से सोया, रंगा ने सुबह मुझे गरमागरम, कड़क चाय का मग देकर जगाया।

सुबह 6:30 बजे तक हम घायल बदमाश के पीछे-पीछे चल रहे थे। उसके गले के घाव से खून की बड़ी-बड़ी धारें बह रही थीं और उसके धड़ से होकर आसपास की झाड़ियों पर फैल रही थीं, जो उसके गुजरने से लाल हो गई थीं। जल्द ही हम भी उसके खून से लाल हो गए, क्योंकि हम उसके पीछे-पीछे झाड़ियों में से होकर आगे बढ़ रहे थे।

वह कई जगहों पर लेटा हुआ था, या गिर पड़ा था, जहाँ की हरी घास गहरे लाल रंग से रंग गई थी। वह कई पेड़ों के तनों से टिका हुआ था जो अभी भी उसके खून से लथपथ थे। सचमुच, अगर आप हाथी को

मारने का काम पूरा नहीं करते, तो आप अपने लिए एक खूनी राह बना लेते हैं। मुझे इस बेचारे जानवर पर बहुत दया आई, भले ही वह इंसानों का खूंखार हत्यारा था।

दो मील चलने के बाद मैंने उसे एक पेड़ के तने से टिके हुए, आधा घुटने टेके और आधा लेटे हुए पाया। खून की कमी से वह इतना कमजोर हो गया था कि मुश्किल से हिल पा रहा था, हालाँकि मेरी ओर बढ़ते हुए उसने मुझे साफ़ देखा। जीवन का एकमात्र संकेत उसकी छोटी-छोटी खून से लाल आँखें थीं, जो मेरी ओर आते देख चमक रही थीं और हिल रही थीं। पंद्रह गज की दूरी से मैंने अंतिम प्रहार करने के लिए अपनी राइफल उठाई। मानो मृत्यु को सलाम करते हुए, वह ताकतवर जानवर सिर से पैर तक काँप उठा और अपने विशाल शरीर को पूरे दस फीट तक सीधा खड़ा कर लिया। सूंड ऊपर की ओर मुड़ गई, बड़े कान बाहर की ओर फड़फड़ाए, और वह अपने अंतिम आक्रमण में दो कदम आगे बढ़ा, तभी 450/400 कैलिबर की भारी गोली उसकी कनपटी पर लगी और वह कुल्हाड़ी से मारे जाने की तरह ज़मीन पर गिर पड़ा।

हालांकि गेरहेटी का 'क्रॉस-टस्कर' एक हत्यारा था, लेकिन वह एक बहादुर योद्धा भी था, और मैंने उसे सम्मान दिया जब वह मेरे अभी भी धुआं उगलते थूथन के सामने पड़ा था - जीवन में शक्तिशाली और अपनी मृत्यु में उससे भी अधिक शक्तिशाली!

5

संगम पैंथर

बैंगलोर स्थित मेरे घर पर यह खबर पहुंची कि एक तेंदुआ, जिसे भारत में आमतौर पर 'पैंथर' के नाम से जाना जाता है, शहर से लगभग सत्तर मील दक्षिण में स्थित संगम नामक स्थान के आसपास लोगों को मार रहा था।

दक्षिण भारत में आदमखोर तेंदुओं का मिलना दुर्लभ है। एक तो, यहाँ के जंगल उत्तर भारत की तुलना में इतने विस्तृत या इतने निरंतर पर्वतीय नहीं हैं, विशेषकर विशाल हिमालय पर्वतमाला की तलहटी में। इसका अपवाद पश्चिमी घाट है, जो लगभग चार सौ मील से अधिक दूरी तक पूरी तरह से जंगलों से ढका हुआ है, जिसकी औसत चौड़ाई दस से पंद्रह मील है। लेकिन अन्य वन क्षेत्र काफी छोटे हैं और लगभग चारों ओर से खेती से घिरे हुए हैं। इस कारण मांसाहारी जानवर, और विशेष रूप से तेंदु, अपना ध्यान मवेशियों और बकरियों के झुंडों तक ही सीमित रखते हैं, जिनमें यह देश प्रचुर मात्रा में पाया जाता है, और कुछ हद तक गाँव के आवारा कुत्तों पर भी, जिन्हें स्थानीय भाषा में 'पाईडॉग' कहा जाता है, जो आम बंदरों की तरह ही इस क्षेत्र के लिए अभिशाप हैं। हाइड्रोफोबिया के टीके के आने से पहले, पागल कुत्तों के काटने से होने वाले संक्रमण से प्रतिवर्ष बड़ी संख्या में लोगों की मृत्यु होती थी, क्योंकि ये आवारा कुत्ते, विशेष रूप से गर्म मौसम में, लगातार रेबीज से संक्रमित होते रहते हैं। बंदर हमेशा से ही एक बड़ा खतरा रहे हैं, जो फसलों और फलों के पेड़ों को भारी नुकसान पहुंचाते हैं। बंदर का भारतीयों के लिए गहरा धार्मिक महत्व है, और इसे नुकसान पहुंचाने के किसी भी प्रयास का कड़ा विरोध किया जाता है। इसलिए, पैंथर—कम से कम जहां तक 'पाइडॉग' और बंदरों का संबंध है—भूमि की बहुत बड़ी सेवा करते हैं।

पश्चिमी घाट, जिसके बारे में मैंने अभी बात की है, में भारी वर्षा होती है, जो प्रति वर्ष सौ इंच से भी अधिक होती है। यह क्षेत्र घने बांस, लंबी घास और घनी सदाबहार वनस्पतियों से ढका हुआ है—जो मच्छरों, कीड़ों, जोंकों, मक्खियों और अन्य कीट-पतंगों के लिए प्रजनन स्थल हैं।

पैंथर को ज़्यादा पानी पसंद नहीं होता और वे हर तरह के कीटों से घृणा करते हैं! इसलिए, एकमात्र ऐसे क्षेत्र में जहाँ वे बेरोकटोक प्रजनन कर सकते हैं, वे मुश्किल से ही पाए जाते हैं! अतः, प्राकृतिक व्यवस्था के कारण, दक्षिण भारत के अन्य सभी जंगलों में पाए जाने वाले पैंथरों को आमतौर पर भरपूर भोजन मिलता है और वे किसी तरह नरभक्षी बनने की बुरी आदत से बच जाते हैं। इसका एक उल्लेखनीय अपवाद गुम्मलपुर का पैंथर था, जिसकी कहानी मैंने कहीं और बताई है*; उस मामले में कुछ विशेष परिस्थितियाँ थीं जिनके कारण उसने नरभक्षी बनना शुरू कर दिया था।

बैंगलोर में अक्सर ऐसी खबरें आती थीं कि लोग तेंदुओं और बाघों के हमले का शिकार हो रहे हैं, जिनमें से ज़्यादातर हमले तेंदुओं द्वारा किए जाते थे। लेकिन इन अफवाहों पर किसी ने खास ध्यान नहीं दिया

क्योंकि मौके पर की गई जांच से हमेशा एक ही बात सामने आती थी। कोई ग्रामीण अपनी बंदूक से या कोई अनुभवहीन शिकारी तेंदुओं पर गोलियां चलाता, आमतौर पर छर्रे, और उसे बस घायल कर पाता। फिर, जंगल के नियमों से अनभिज्ञ होकर, वह तेंदुओं का पीछा करने की कोशिश करता, लैंटाना की झाड़ियों या चट्टानों के बीच से, और इस चक्कर में बुरी तरह घायल हो जाता—कभी-कभी तो गंभीर रूप से। बीते वर्षों में, ऐसे हमलों के 75 प्रतिशत से अधिक मामलों में सेप्टीसीमिया से मौत हो जाती थी। सल्फा दवाओं के आने से, मरने वालों की संख्या घटकर 10 प्रतिशत से भी कम हो गई।

इसलिए जब ऐसी खबरें आईं तो किसी ने ज्यादा ध्यान नहीं दिया। भला क्यों देते? उनके पास करने के लिए और भी काम थे। इसके अलावा, भारत में अफवाहें हमेशा बहुत बढ़ा-चढ़ाकर पेश की जाती हैं! एक मामूली खरोंच को भी भयानक हमले में बदल दिया जाता है, और मामूली हमले को हत्या बता दिया जाता है। जब वास्तव में कोई हत्या होती है, तो प्रेस में उसे कई हत्याओं के रूप में बताया जाता है।

इसलिए, जब मैंने सुना कि संगम में एक पैंथर ने एक महिला को मार डाला और बाद में एक बच्चे को मारकर खा लिया, तो मुझे विश्वास नहीं हुआ। फिर पैंथर ने तीसरी और चौथी बार भी हत्या की। प्रेस को यह खबर मिली और यह अखबारों के पहले पन्नों पर छाई रही।

बैंगलोर, मैसूर और मद्रास से कई शिकारी उस जानवर का शिकार करने निकले, लेकिन एक महीने तक पैंथर ने किसी को नहीं मारा। एक शिकारी ने पैंथर को मार गिराने में सफलता प्राप्त की; और यह तथ्य, साथ ही मनुष्यों की हत्याओं का रुक जाना, इस बात का संकेत देता प्रतीत हुआ कि जिस पैंथर को मारा गया था वह आदमखोर ही था। शिकारी अपने-अपने शहरों में लौट गए।

फिर पैंथर ने एक बार फिर शिकार किया, लेकिन उसे अपने शिकार को खाने से रोक दिया गया, जो एक आदमी था और एक झोपड़ी जैसे कमरे में चार आवारा कुत्तों के झुंड के साथ सो रहा था, जिनके साथ वह खरगोश और कभी-कभी हिरण का शिकार किया करता था।

शेड के प्रवेश द्वार पर कंटीली बाड़ लगी हुई थी। छत जस्ता की चादरों के ढीले टुकड़ों से बनी थी, और दीवार जमीन में गाड़े गए लकड़ी के खंभों से बनी थी, जिनके बीच के अंतराल कंटीले ...

पैंथर शेड में घुस गया। कुत्ते एक जगह जमा हो गए लेकिन कुछ नहीं किया, और हमलावर उनके पास से गुज़रते हुए उस आदमी का गला पकड़ लिया। एक तीखी चीख के साथ ही उसकी मौत हो गई।

पास की झोपड़ी में रहने वाले लोग शेड में कुत्तों के भौंकने और गुर्राने की आवाज़ से परेशान थे। वे सोच रहे थे कि आखिर क्या हो रहा है, लेकिन कोई भी बाहर जाकर देखने को तैयार नहीं था। तभी पैंथर ने उसी छेद से मरे हुए आदमी को शेड से बाहर खींचने की कोशिश की, जिससे वह अंदर आया था। छेद काफी बड़ा नहीं था। इसलिए पैंथर खुद उसी छेद से अंदर घुस गया और आदमी को अपने पीछे खींचने की कोशिश की। लेकिन शरीर कांटों में फंस गया और अटक गया। फिर पैंथर ने ज़ोर से धक्का दिया, जिससे बाड़ का संतुलन बिगड़ गया और वह जानवर के ऊपर ज़ोर से गिर पड़ी। इससे वह बहुत डर गया होगा, क्योंकि वह लाश को कांटों में फंसा छोड़कर भाग गया।

पैंथर के लगातार शोरगुल से पास की झोपड़ी में रहने वाले लोग घबरा गए, जो इतनी देर से सांस रोककर सुन रहे थे। वे चिल्लाने लगे और दूसरे ग्रामीणों को जगा दिया। काफी देर बाद, कुछ बहादुर आदमी लालटेन लिए, बंदूकें, लाठी और डंडे लेकर बाहर आए, तो उन्हें मरा हुआ आदमी तो मिला, लेकिन पैंथर नहीं।

अब फिर से दहशत फैल गई, और मुझे यह खबर गांव के पटेल (मुखिया) ने दी, जो खास तौर पर इसी उद्देश्य से बैंगलोर आए थे। उस समय मुझे दो दिन की आकस्मिक छुट्टी मिल सकती थी, और रविवार को तीसरी छुट्टी मिल जाती थी। इसलिए मैं उनके साथ जाने और उन तीन दिनों के भीतर पैंथर को मारने की कोशिश करने के लिए सहमत हो गया।

संगम जाने वाली सड़क बैंगलोर से छत्तीस मील दूर कंकनहल्ली कस्बे से होकर गुजरती थी, जहाँ से यह कावेरी नदी के तल की ओर तेज़ी से उतरने लगती थी। रास्ते के आखिरी दस मील बेहद खराब थे, और मेरी स्टडबेकर कार इस खराब व्यवहार के विरोध में अपने सभी जोड़ों से ज़ोर-ज़ोर से हिलती, चरमराती और कराहती हुई आवाज़ें निकाल रही थी। बेतुके ढलानों और तीखे कोणों पर बने घुमावदार मोड़ (जहाँ सभी मील के पत्थर और फर्लांग के तख्ते काले रंग से रंगे हुए थे ताकि जंगली हाथी उन्हें उखाड़ न सकें, क्योंकि उन्हें सफेद रंग से सख्त नफरत होती है) मेरी यात्रा के अंत की ओर इशारा कर रहे थे, और जल्द ही एक छोटी लेकिन बेहद कठिन यात्रा के बाद मैं उस छोटे से यात्री बंगले पर पहुँच गया।

'संगम' शब्द का अर्थ 'मिलन' या 'संगम' होता है, और यह सबसे उपयुक्त था, क्योंकि यह कावेरी नदी और उसकी सहायक नदी, अर्करावर्ती नदी के संगम को चिह्नित करता था, जो बैंगलोर के उत्तर में अपने स्रोत से लगभग एक सीधी रेखा में दक्षिण की ओर बहती है।

कावेरी नदी यहाँ पश्चिम से पूर्व की ओर बहती है, संगम इसके उत्तरी किनारे पर मैसूर राज्य क्षेत्र के भीतर स्थित है। कावेरी का दक्षिणी किनारा उत्तरी कोयंबटूर जिले (कोलेगल वन प्रभाग) के जंगलों में आता है। संगम से लगभग तेरह मील पूर्व में मैसूर राज्य क्षेत्र समाप्त होता है और इसके दोनों ओर सलेम जिला स्थित है, जिसके बाद नदी का उत्तरी किनारा सलेम जिले के अंतर्गत आता है और उत्तरी कोयंबटूर जिला दक्षिणी किनारे पर फैला हुआ है। उत्तरी कोयंबटूर और सलेम दोनों जिले मद्रास प्रेसीडेंसी के अंतर्गत आते हैं।

संगम एक खूबसूरत वन क्षेत्र है, जहाँ सामान्य मौसम में उत्कृष्ट मछली पकड़ने का आनंद लिया जा सकता है। नदी के किनारे रेत के टीलों और चट्टानों के बीच मगरमच्छों का शिकार भी किया जा सकता है। जंगल के मैसूर की ओर चित्तीदार हिरण, सांभर, भौंकने वाला हिरण, जंगली सूअर, पक्षी और कभी-कभार भालू, तेंदुआ या बाघ भी दिखाई देते हैं। हाथी अक्सर कोयंबटूर किनारे से नदी पार करते हैं। दक्षिणी किनारे पर, कोयंबटूर के जंगलों में, ऊपर बताए गए सभी जीव-जंतुओं की संख्या अधिक है, साथ ही बाइसन के कई बड़े झुंड भी पाए जाते हैं। हाथी और भालू विशेष रूप से बड़ी संख्या में मौजूद हैं।

नदी के किनारे और बंगले के पास उगने वाले विशाल मुट्ठी के पेड़ों के नीचे कार खड़ी करने के बाद, मैं उस छोटे से गाँव की ओर गया जहाँ हाल ही में कुत्ते की देखभाल करने वाले की हत्या हुई थी। मैंने वहाँ जाकर खुद घटनास्थल का मुआयना किया और पड़ोसियों से घटना का विस्तृत ब्यौरा सुना, जिन्होंने उस दिन बहुत कुछ सुना था, लेकिन उस बेचारे की मदद के लिए कुछ नहीं किया था। मेरे साथ लौटे पटेल भी उस कहानी में शामिल हो गए।

बहुत पूछताछ और बहस के बाद यह स्पष्ट हो गया कि इस पैंथर को पकड़ना बेहद मुश्किल होगा, क्योंकि नदी के उत्तरी किनारे पर उसके पास घूमने के लिए जंगल का बहुत बड़ा इलाका था, और दक्षिणी या कोयंबटूर की तरफ फैले कई वर्ग मील के जंगल को तो छोड़ ही दीजिए। लेकिन बाद वाले क्षेत्र को उचित रूप से खारिज किया जा सकता था, क्योंकि बाघों के विपरीत, पैंथर आमतौर पर बड़ी नदियों को तैरकर पार करना पसंद नहीं करते, हालांकि मजबूर होने पर वे अच्छी तरह तैर लेते हैं।

सबसे पहला और जाहिरा तौर पर एकमात्र उपाय चारा लगाना था। पटेल की सक्रिय सहायता से, मैंने पाँच बड़े बछड़े खरीदे। इनमें से पहले को हमने बंगले से लगभग आधा मील पश्चिम में और नदी के किनारे से लगभग उतनी ही दूरी पर बाँधा; दूसरे को नदी के लगभग समानांतर और उससे एक मील पश्चिम में; तीसरे को दूसरे से एक मील पश्चिम में; चौथे को अर्करावर्थी की सहायक नदी के दूर वाले किनारे पर, बंगले से लगभग आधा मील पूर्व में और कावेरी से उतनी ही दूरी पर; और पाँचवें को चौथे चारे से एक मील पूर्व में बाँधा। इस प्रकार पाँचों चारे लगभग एक सीधी रेखा में, नदी के दोनों ओर, लगभग आधा मील अंतर्देशीय थे और पश्चिम में सबसे दूर वाले चारे और पूर्व में सबसे दूर वाले चारे के बीच की दूरी चार मील थी।

बंगले में लौटने से पहले ही सूरज डूब चुका था। ठंडे खाने से मेरी भूख शांत हुई, जिसे मैंने बंगले के छोटे से बरामदे में बैठकर खाया और दो गर्म कप चाय के साथ पिया। अपनी पाइप जलाकर मैं दीवार से पीठ टिकाकर बैठ गया और नदी की धीमी आवाज़ सुनता रहा, जो अपने पथरीले तल पर तेज़ी से बह रही थी। रात काफी अंधेरी और बादलों से घिरी हुई थी। बादलों के बीच से कभी-कभार दिखने वाले तारे रात में तारे देखने के लिए पर्याप्त नहीं थे, इसलिए मैं अंदर चला गया और सो गया।

अगली सुबह हमने चारे की जाँच की। सभी जानवर जीवित थे। मैं उसी सड़क पर चला गया जिससे मैं पिछले दिन आया था, घुमावदार मोड़ों और घाट वाले हिस्से को पार करते हुए। कहीं भी पैंथर के पदचिह्न नहीं दिखे। चित्तीदार हिरणों का एक झुंड और तीन सांभर - अलग-अलग जगहों पर - रात के दौरान सड़क पार कर चुके थे, लेकिन कोई अन्य जानवर नहीं गुजरा था।

बंगले की ओर लौटते समय, सड़क से वापस आने के बजाय, मैं जंगल से होते हुए पहाड़ी से नीचे उतरा और अर्करावर्ती नदी के सूखे तल पर पहुँच गया। वहाँ से मैं दक्षिण की ओर मुड़ा और रेत में चलते हुए संभावित पदचिह्नों की तलाश करने लगा। कोई पदचिह्न नहीं मिला, लेकिन चित्तीदार हिरणों का वही झुंड जो सड़क पार कर गया था, रेत पर भी चल रहा था। कुछ देर बाद, मैं अपने चौथे शिकार स्थल से गुजरा और उस स्थान पर पहुँचा जहाँ अर्करावर्ती नदी कावेरी नदी से मिलती है।

मेरे पास उपलब्ध तीन दिनों में से डेढ़ दिन बीत चुका था, और मुझे पैंथर के पदचिह्न तक नहीं दिखे थे। स्थिति निराशाजनक लग रही थी।

दोपहर के भोजन के बाद, मैंने पूर्व दिशा में, कावेरी नदी के किनारे-किनारे लगभग साढ़े तीन मील चलने का फैसला किया, जहाँ नदी लगभग बीस फीट तक संकरी हो जाती थी। इस स्थान पर नदी एक गहरी खाई से होकर गर्जना करती हुई बहती थी, जिसे मेके-दात के नाम से जाना जाता है। कन्नड़ भाषा में इस शब्द का अर्थ है 'बकरी की छलांग'। लोककथाओं के अनुसार, वर्षों पहले, कोयंबटूर की ओर जंगली कुत्तों द्वारा पीछा की जा रही एक जंगली भेड़ नदी के किनारे तक पहुँच गई थी, और उसने बीस फीट की छलांग लगाकर मैसूर की ओर अपनी जान बचाई थी।

यहां, संकरे द्वार से होकर बहते हुए उग्र जल के शोर में अन्य सभी ध्वनियां दब जाती हैं, और एक आदमी अपनी पूरी ताकत से चिल्लाने पर भी मुश्किल से अपनी आवाज सुन पाता है।

मैं चट्टानों के किनारे पर बैठ गया और उफनती, तेज़ बहती नदी को देखता रहा। सौ गज दूर, नदी के निचले हिस्से में जहाँ सतह फिर से शांत हो गई थी, कभी-कभार कोई मछली पानी से बाहर उछलती, मानो जीवन के प्रति अपार उमंग और आनंद प्रकट कर रही हो। एक मछली-बाज साफ नीले आसमान में चक्कर लगा रहा था। थोड़ी देर बाद, मैं उठा और बंगले की ओर वापस चल दिया। मुझे अभी तक किसी पैंथर के पदचिह्न नहीं मिले थे।

रात आसमान साफ था। हालांकि चांद नहीं था, लेकिन पिछली रात के बादल भी नहीं थे और जंगल में तारों की रोशनी इतनी थी कि कुछ गज तक देखा जा सके।

बंगले के चौकीदार के पास एक 'पाइडॉग' (भारत में देसी कुत्तों को इसी नाम से जाना जाता है) था, और अपनी आदत के विपरीत और समय की कमी के कारण, मैंने उससे आधी रात तक उसे उधार देने का अनुरोध किया। पहले तो उसने आनाकानी की, लेकिन तीन रुपये के लेन-देन के बाद वह मान गया।

उस दिन सड़क पर चलते हुए, मेरी नज़र लगभग एक मील दूर, उसके किनारे पर पड़ी एक चट्टान पर पड़ी। मैंने कुत्ते को लिया, उसे चट्टान के नीचे बाँधा और सड़क पर आगे बढ़ गया। कुत्ते की नज़र से ओझल होते ही, मैं दाईं ओर मुड़ा और जंगल में घुस गया, फिर चट्टान के दूसरी तरफ़ पहुँच गया। चुपचाप मैं ऊपर चढ़ गया और उसके शिखर पर लेट गया। चट्टान अभी भी धूप से गर्म थी, जो दिन भर उस पर पड़ती रही थी।

यह सोचकर कि उसे छोड़ दिया गया है, कुत्ता बारी-बारी से भौंकने, रोने और चिल्लाने लगा। कुत्ते बहुत बुद्धिमान होते हैं, उन्हें चारा बनाकर बांधना अनुचित है। गायों और बकरियों के विपरीत, वे खतरे को तुरंत भांप लेते हैं और, भले ही उन पर हमला न हो, घंटों मानसिक पीड़ा झेलते हैं। मैं एक ऐसे कुत्ते को जानता हूँ जिसे एक पैंथर के लिए चारा बनाकर बांधा गया था—हालाँकि उसे कोई नुकसान नहीं हुआ—वह इतना घबरा गया कि अगले दिन बीमार पड़ गया और एक हफ्ते के भीतर मर गया।

मैं चट्टान की चोटी से देख रहा था। लगभग एक घंटा बीत गया, और फिर अचानक एक धुंधली, धूसर आकृति सड़क पर तेजी से दौड़ती हुई आई। वह कुत्ते से लगभग दस फीट की दूरी तक तेजी से दौड़ी, फिर रुक गई। क्या यह पैंथर हो सकता है?

तारों की रोशनी इतनी ही थी कि अंधेरा पूरी तरह से न छाए, उससे ज़्यादा नहीं। मुझे धुंधली सी एक आकृति कुत्ते को घूरती हुई दिखाई दी। कुत्ता गुर्राया और घुसपैठिए की ओर मुड़ गया। मैंने सोचा, ज़रूर कोई पैंथर होगा, और मैंने अपनी राइफल का निशाना उसकी ओर साध लिया, ताकि बैरल पर लगी टॉर्च का स्विच दबा सकूँ।

घुसपैठिए ने 'हा! हा! हा! हा! हा!' कहा, और उसके बाद अपमानजनक लेकिन तेज़ आवाज़ में 'ची! शी-ए! शी-ए!' की आवाज़ आई।

यह एक लकड़बग्घा था, दक्षिण भारत का आम धारीदार लकड़बग्घा। कुत्ता और भी भयंकर रूप से गुर्राया; फिर उन्माद में भौंकने लगा।

अब एक मनोरंजक नाटक शुरू हुआ, जैसा कि रात में जंगल में पहरा देने वालों को कभी-कभार देखने का सौभाग्य मिलता है। लकड़बग्घा सड़क से हटकर झाड़ियों में घुस गया, जहाँ वह 'गुड्डा! गुद्दार! गर्रार! गुर्र-र्र-आ!' कहने लगा और अंत में अपनी आदत के अनुसार 'ची-आर! शी-आर!' कहने लगा।

कुत्ते ने शोर की ओर मुँह किया और ज़ोर से भौंका। लकड़बग्घा सड़क पर फिर से प्रकट हुआ, कुत्ते से थोड़ा आगे, लेकिन उसे देखता हुआ, और कर्कश आवाज़ में बोला, 'हा! हा! हा! गुड्डुर! गर्रार! शी-ए!'

अपने अफ्रीकी रिश्तेदारों, चित्तीदार और भूरे लकड़बग्घे के विपरीत, जिनमें से चित्तीदार लकड़बग्घा वही जाना-पहचाना 'हंसने वाला लकड़बग्घा' है जिसके बारे में हम सबने सुना है, भारतीय लकड़बग्घा आमतौर पर शांत स्वभाव का जानवर होता है, जो अकेले या ज़्यादा से ज़्यादा जोड़े में शिकार करता है। चित्तीदार लकड़बग्घे झुंड में चलते हैं। आम तौर पर, सभी लकड़बग्घे डरपोक जानवर होते हैं, हालांकि वे अपने आकार के हिसाब से बेहद ताकतवर होते हैं और उनके जबड़े इतने शक्तिशाली होते हैं कि वे आसानी से किसी आदमी की बांह, हड्डी समेत, काट सकते हैं।

बहुत कम ही ऐसा होता है कि वे असाधारण साहस का प्रदर्शन करते हैं, जिसका एक उदाहरण मैंने एक बार देखा था। मैं एक पैंथर के शिकार के पास बैठा था। तभी उसका मालिक आया और खाने लगा। मैंने गोली नहीं चलाई, क्योंकि मैं उसे मारने से पहले उसका लिंग जानना चाहता था। मुझे बताया गया था कि आस-पास एक नर और एक मादा पैंथर रहते हैं, और मादा के साथ लगभग छह महीने के दो शावक भी हैं। मैं यह सुनिश्चित करना चाहता था कि मैं गलती से माँ को गोली न मार दूं।

जब मैं हिचकिचा रहा था, तभी एक लकड़बग्घा वहाँ आ गया, और उसका आना उस समय बहुत ही नाटकीय था। वह मानो कहीं से अचानक आ गया हो, और मुझे उसके आने का पता तब चला जब वह उसी तरह की आवाज़ें निकालते हुए, बेखौफ होकर पैंथर के पास दौड़ा, जैसा मैंने अभी बताया है। अपने शिकार पर लेटा हुआ पैंथर, जलती हुई आँखों से उस नए आने वाले को घूर रहा था, और भयंकर गुर्रा रहा था।

लकड़बग्घा पैंथर की पहुँच से बस पाँच फीट की दूरी पर आ गया, और उसने इतनी भयानक आवाज़ें निकालीं कि मानो नरक के राक्षसों का समूह चिल्ला रहा हो।

पैंथर और भी ज़ोर से गुर्राकर शोर बढ़ा रहा था, और बीच-बीच में अपने पंजों से लकड़बग्घे पर वार कर रहा था। लकड़बग्घा हर वार से बचकर पीछे हट जाता, फिर तेज़ी से आगे बढ़कर पैंथर के पीछे पहुँचने की कोशिश करता। पहले तो पैंथर भी लकड़बग्घे को देखते हुए पीछे मुड़ता, और भी ज़ोर से गुर्राते हुए अपने पंजों से लकड़बग्घे की तरफ़ छोटे-छोटे वार और थप्पड़ मारता। लेकिन लकड़बग्घा हमेशा उसकी पहुँच से बाहर रहता, और लगातार जोश से चीखता-चिल्लाता, गुर्राता और घुरघुराता रहता।

उस अशोभनीय शोर से भयभीत—या शायद घृणा से—तेंदुए ने अंततः अपने शिकार से उठकर धीरे-धीरे पीछे मुड़कर कई बार गुर्राते हुए लकड़बग्घे की ओर चलना शुरू किया। लकड़बग्घा तब तक अपना अजीब शोर मचाता रहा जब तक कि वेदंघे के झाड़ियों में गायब नहीं हो गया। फिर वे स्वयं भी बड़े उत्साह से—और निस्संदेह, पूरी तरह से उचित उत्साह से—शिकार पर टूट पड़े।

लेकिन जिस लकड़बग्घे को मैं चट्टान से देखता रहा, वह निस्संदेह उस आवारा कुत्ते से थोड़ा डरा हुआ था। वह अक्सर सड़क के एक या दूसरे किनारे गायब हो जाता था। फिर सूखी पत्तियों के बीच से उसकी हल्की फुहार सुनाई देती, जब वह इधर-उधर, अलग-अलग जगहों पर लौट आता और अपनी अटपटी, विचित्र और अक्सर हास्यास्पद आवाजें निकालता रहता।

इन दो अनुभवों से मैंने यह सीखा कि लकड़बग्घे अपनी लगातार, कर्कश आवाज से अपने विरोधियों को डराने की कोशिश करते हैं। पहले लकड़बग्घे ने तेंदुए को उसके शिकार से भगा दिया था, जबकि दूसरा लकड़बग्घा कुत्ते को डराने की कोशिश कर रहा था, शायद उसे सड़क से हटाने या झाड़ियों में धकेलने के लिए, जहाँ से वह उस पर आसानी से झपट्टा मार सके।

लेकिन कुत्ता बंधा हुआ था, इसलिए हिल नहीं पा रहा था, जो लकड़बग्घे को समझ नहीं आया। एक घंटे तक इस तरह का शोर मचाना मेरे लिए मनोरंजक नहीं रहा, और मुझे एहसास हुआ कि यह शोर, खासकर लकड़बग्घे की वजह से, आसपास के किसी भी पैंथर को, चाहे वह आदमखोर हो या कोई और, भगा देगा। इसलिए, एक छोटा सा पत्थर ढूंढकर, मैंने उसे लकड़बग्घे पर फेंका। मेरा निशाना चूक गया, और पत्थर सड़क की सख्त सतह पर ज़ोर से गिरा। लकड़बग्घा घबराकर उछल पड़ा और झाड़ियों में भाग गया, जबकि कुत्ता भौंकना बंद करके धीरे-धीरे रोने लगा। मुझे लगा कि मैंने एक अवांछित मेहमान को वहां से भगा दिया है।

लगभग पंद्रह मिनट बीत चुके थे कि मुझे फिर से दबी-दबी टप-टप की आवाज़ सुनाई दी, जिसके तुरंत बाद लकड़बग्घे की अजीब आवाज़ें आईं। कुत्ता भौंका और गुर्राया। मैंने लकड़बग्घे पर एक और पत्थर फेंका। वह रुका; लेकिन दस मिनट बाद फिर से शुरू हो गया। एक बार फिर पत्थर; एक बार फिर सन्नाटा, फिर एक नई शुरुआत। लगभग पाँचवें पत्थर के बाद ही लकड़बग्घे को लगा कि वह जगह किसी तरह

अस्वस्थ हो गई है, और आखिरी बार 'आह! आह! आह! ची-ई! शी-ए!' कहते हुए वह वहाँ से चला गया। दस बज चुके थे।

मेरी घड़ी में आधी रात होने में पाँच मिनट बाकी थे, तभी मुझे इंसानों की आवाज़ें सुनाई दीं। थोड़ी देर बाद, मैंने दो लालटेन की टिमटिमाती रोशनी देखी, जो दूर से कई आदमियों के कदमों को रोशन कर रही थी। कुत्ते ने उन्हें देखा और उसका कराहना बंद हो गया।

जब दल कुत्ते के पास पहुंचा, तो मैंने ग्यारह आदमियों को गिना, जिनमें से दो लालटेन लिए हुए थे, और एक को छोड़कर बाकी सभी किसी न किसी प्रकार के डंडे और लाठी लिए हुए थे।

उनमें से एक अपवाद था जिसके पास बंदूक थी। जाहिर है वे मेरी ही तलाश में आए थे। मैंने उनकी आवाज सुनी और चट्टान से नीचे उतर आया।

फिर उन लोगों ने मुझे बताया कि लगभग एक घंटे पहले ही, पैंथर उसी गाँव की एक झोपड़ी में घुस गया था जहाँ कुत्ते के रखवाले पर हमला हुआ था। उसने छप्पर की दीवार में छेद करके अंदर प्रवेश किया और सो रही पाँच महिलाओं में से एक, लगभग पच्चीस साल की एक महिला को पकड़ लिया। जब उसे घसीटकर ले जाया जा रहा था, तो वह ज़ोर से चीखी, जिससे कमरे में मौजूद अन्य चार लोग, उसके पिता, दो भाई और माँ, जाग गए।

इसी बीच, पैंथर उस छप्पर में बने छेद से लड़की को बाहर खींचने की कोशिश कर रहा था जिससे वह अंदर आया था। लड़की ने ज़ोरदार संघर्ष किया। पैंथर ने उसे छोड़ दिया और बेरहमी से काट लिया। भाइयों में से एक ने झोपड़ी के अंदर के अंधेरे को दूर करने के लिए माचिस जलाई। उसके पिता ने सराहनीय साहस और सूझबूझ दिखाते हुए, अपने हाथ में आए एकमात्र हथियार को पैंथर पर फेंक दिया। वह हथियार पीतल का एक भारी पानी का घड़ा था, जो पैंथर के बगल में ज़ोर से लगा। आदमखोर जानवर, चाहे बाघ हों या पैंथर, स्वभाव से हमेशा थोड़े डरपोक होते हैं और यह पैंथर भी इसका अपवाद नहीं था। अपने शिकार को छोड़कर, वह छप्पर में बने छेद से झोपड़ी से बाहर निकल गया।

घायल महिला की चीख-पुकार और चारों ओर मची अफरा-तफरी ने पूरे गांव को जगा दिया था। पुरुष लालटेन लेकर, जितना हो सके उतने हथियारों से लैस होकर बाहर आए। ग्यारह लोगों का दल मुझे ढूंढने के लिए विश्रामगृह आया था, और जिस चौकीदार से मैंने कुत्ता उधार लिया था, उसने उन्हें उस जगह का रास्ता बताया जहां मैं बैठा था।

मैंने एक आदमी को रस्सी खोलने और कुत्ते को साथ लाने के लिए कहा और जल्दी से बंगले की ओर वापस भागा। मैंने स्टुडेबेकर की पिछली सीट से अपनी प्राथमिक चिकित्सा किट निकाली। फिर हम गाँव की ओर तेज़ी से बढ़े, जहाँ एक भयानक दृश्य मेरा इंतज़ार कर रहा था। बेचारी लड़की के दाहिने कंधे पर चीं-चीं का घाव था, और फिर पेट पर भी, जहाँ पैंथर ने उसे दूसरी बार तब पकड़ा था जब वह भागने की कोशिश कर रही थी। उसका एक स्तन और छाती का पूरा हिस्सा चीर-फाड़ गया था, जहाँ उसके गंदे पंजों ने उसके

मांस में गहरे धंसकर उसे बुरी तरह से घायल कर दिया था। उसकी जैकेट और साड़ी टुकड़े-टुकड़े हो गई थी, और वह खून से लथपथ पड़ी थी, अपने इस भयानक अनुभव के बाद वह बेहोश पड़ी थी।

मैंने तुरंत समझ लिया कि मेरे पास जो थोड़ी-बहुत प्राथमिक चिकित्सा सामग्री थी, वह इस स्थिति के लिए बिल्कुल अपर्याप्त थी, लेकिन हमने जल्दी से पोटेशियम परमैंगनेट के गाढ़े घोल से घावों को धोया और दूसरी साड़ी से फाड़ी गई पट्टियों से उसके सीने और पेट पर पट्टी बाँध दी। उसके पिता, दो भाई और गाँव के तीन मददगार पुरुषों ने उसे रस्सी से बने पलंग पर लिटाकर स्टुडेबेकर गाड़ी तक पहुँचाया। उसे जितना हो सके आराम से लिटाकर, मैंने उसके तीन पुरुष रिश्तेदारों को गाड़ी में बिठाया और कंकनहल्ली कस्बे के लिए रवाना हो गया, जहाँ पास का ही गाँव का अस्पताल था। हम सुबह साढ़े तीन बजे के बाद वहाँ पहुँचे, जहाँ मैंने डॉक्टर को जगाया और घायल महिला को उनके हवाले कर दिया। बहुत अधिक खून बह जाने के कारण उसकी हालत बहुत खराब लग रही थी।

साढ़े चार बजे तक मैं कंकनहल्ली स्थित यात्री बंगले के बाथरूम में था, जहाँ मैंने अपने खून से सने कपड़े उतारे और ठंडे पानी से स्नान किया। मेरे पास बदलने के लिए कपड़े नहीं थे, क्योंकि उस समय की अफरा-तफरी में मैं उन्हें संगम पर ही छोड़ आया था। इसलिए मैंने बंगले के वेटर से एक साफ धोती और एक कंबल उधार लिया।

भोर होने वाली थी जब मैंने डाकघर का दरवाजा खटखटाया, एक अत्यंत विनम्र पोस्टमास्टर को उसकी नींद से जगाया, आवश्यक विलंब शुल्क का भुगतान किया और बैंगलोर को एक तत्काल टेलीग्राम भेजकर चार और दिनों के लिए छुट्टी बढ़ाने का अनुरोध किया।

जब मैं बंगले पर लौटा तो घायल महिला का छोटा भाई रोते हुए मेरा इंतज़ार कर रहा था। वह अस्पताल से आया था और मुझे बताया था कि उसकी बहन का अभी-अभी निधन हो गया है। कुछ देर बाद, पिता आकर मुझसे अपनी बेटी के शव को कार में बिठाकर संगम ले जाने के लिए कहने लगा, जहाँ कावेरी नदी के किनारे उसका अंतिम संस्कार किया जाएगा और अंत में उसकी राख नदी में बिखेर दी जाएगी। यह एक ऐसा अनुरोध था जिसे मैं मना नहीं कर सका। बंगले के नौकर ने मुझसे कहा कि उसे अपनी धोती और कंबल वापस चाहिए। इसलिए मुझे अपने खून से सने कपड़े दोबारा पहनने पड़े।

हम वापस अस्पताल गए, लड़की के बेजान शरीर को पिछली सीट पर रखा और संगम के लिए अपनी वापसी यात्रा शुरू की, पुलिस स्टेशन में दो घंटे की देरी हुई, जहां हमने घटना की रिपोर्ट दर्ज कराई।

नदी के किनारे एक शांत तालाब में मगरमच्छों से मुक्त स्नान करने, ताज़े कपड़े बदलने, ठंडा दोपहर का भोजन करने और चाय के दो बड़े मग पीने के बाद, मैं एक जर्जर पुरानी कुर्सी पर लेटकर स्थिति का जायजा लेने लगा। मेरी भरी हुई पाइप, जिससे निकलता सुकून देने वाला धुआँ खुरदरी टाइलों वाली नीची छत की ओर घुमावदार तरीके से उठ रहा था, पिछली रात की घटनाओं के बाद मेरे तनाव को काफी हद तक कम करने और नींद से आँखें बंद होने से रोकने में सहायक रही।

मेरे पास बचे हुए चार दिन और पाँच रातों में मैं क्या करूँ, ताकि इन बेचारे गाँव वालों को बार-बार होने वाली इन भयानक घटनाओं से बचा सकूँ? तथ्यों से यही संकेत मिलता था कि: (1) पैंथर जानवरों का चारा नहीं खाता, (2) उसके पास छिपने के लिए बहुत जगह है, और (3) वह लोगों को झोपड़ियों से बाहर खींच लाने के लिए प्रवृत्त रहता है। फिर, सोचते-सोचते मुझे नींद आ गई।

दोपहर 3 बजे मेरी नींद खुली और सोते समय मुझे एक संभावित कार्ययोजना सूझी। वह यह थी:

संगम नाम का छोटा सा गाँव, जिसमें लगभग एक दर्जन झोपड़ियाँ थीं, एक केंद्रीय गली के दोनों ओर सामान्य ढंग से बसा हुआ था। मुझे याद आया कि इस गली के दक्षिणी किनारे पर, नदी के तट से कुछ ही दूरी पर, ग्रामीणों के मवेशियों के छोटे-छोटे झुंड एक साझा बाड़े में रखे जाते थे, जो बांस की बाड़ से घिरा हुआ था और बीच-बीच में कटी हुई लैंटाना की झाड़ियाँ लगी हुई थीं। गाँव में बचे हुए इकलौते कुत्ते, जो मारे गए व्यक्ति के थे, उस झोपड़ी जैसे कमरे में बंद थे जहाँ उसकी हत्या हुई थी, और वह कमरा पश्चिमी तरफ बड़े मवेशी बाड़े से सटा हुआ था। मेरे मन में यह विचार आया कि अगर मैं रात में मवेशियों के बीच छिप जाऊँ, तो न केवल मैं अचानक हमले से पूरी तरह सुरक्षित रहूँगा, क्योंकि अगर पैंथर पास आएगा तो मवेशी बेचैन होकर पर्याप्त चेतावनी देंगे, बल्कि यह बेचैनी और कुत्तों का भी खतरे की घंटी बजाना, मुझे पैंथर की उपस्थिति का पता लगाने में मदद करेगा, अगर वह गाँव में प्रवेश करता है। इस बीच, मैं अपने पांच जीवित चारे बांधकर रखूंगा, इस उम्मीद में कि शायद उनमें से कोई एक मछली पकड़ ले।

इस योजना को ध्यान में रखते हुए, मैंने रात के लिए गर्म कपड़े पहने और ओस से बचने के लिए खाकी ऊनी 'बालाक्लावा' टोपी पहनी। मेरे सामान्य रात्रिकालीन सामान में इस बार चाय का एक बड़ा थर्मस, कुछ बिस्कुट और मेरा पाइप शामिल था, क्योंकि मुझे पता था कि इस स्थिति में धूम्रपान करने से कोई नुकसान नहीं होगा।

पैंथर की मौजूदगी के कारण, गाँव वाले सुबह छह बजे से काफी पहले ही अपनी झोपड़ियों के अंदर चले गए थे, दरवाजों को ताज़े कटे कांटों से बंद कर दिया था। मैंने मवेशी बाड़े के बीचोंबीच अपनी जगह ले ली। मेरे चारों ओर लगभग पचास गज का क्षेत्र था, जिसमें लगभग सौ साधारण दिखने वाले मवेशी इधर-उधर बिखरे पड़े थे।

पहले तो जानवरों को मेरी मौजूदगी से चिढ़ हुई और वे मुझसे दूर कोनों में जमा हो गए, जिससे मैं बाड़े के बीचोंबीच अकेला रह गया। मैंने उनसे दोस्ती करने की कोशिश शुरू की। एक जानवर ने मेरी चाय की थर्मस को लात मारकर गिरा दिया और लगभग तोड़ ही दी! इसके अलावा, कुछ बैल काफी आक्रामक थे और अगर मैं उनके बहुत करीब जाता तो वे अपने सींगों से मुझ पर वार करते। एक घंटे साथ बिताने के बाद, स्थिति थोड़ी शांत हुई और मैं धीरे-धीरे झुंड के बीचोंबीच पहुँच गया, जहाँ लगभग आधे जानवर ज़मीन पर आराम कर रहे थे। मैं भी नीचे बैठ गया।

जैसे-जैसे घंटे बीतते गए, सन्नाटा बना रहा, सिवाय कभी-कभार किसी जानवर की हल्की सी आवाज़ या किसी दूसरे जानवर के हिलने-डुलने की आहट के। एक गाय मुझसे घुलमिल गई और दोस्ती जताने के लिए अपना थूथन मेरी छाती से रगड़ने लगी। आखिरकार वह संतुष्टि से मेरे बगल में ज़मीन पर लेट गई।

फिर मवेशियों के कीड़े मुझे कई जगहों पर बेरहमी से काटने लगे। मैंने खुद को ज़ोर से खुजलाया, हालाँकि मुझे पता था कि ऐसा करने से जलन और बढ़ जाएगी। ठंड बढ़ती गई, और जल्द ही मुझे उस गाय के गर्म शरीर से सटकर आराम करने में खुशी हुई, जिसने मेरे साथ यह अजीब दोस्ती शुरू की थी। बीच-बीच में झुंड की कोई गाय संतुष्टि से 'मूं' करती, या फुफकारती, या लात मारती, या ज़मीन पर गिर जाती, या फिर उठने की कोशिश करती।

समय धीरे-धीरे बीत रहा था और कीड़े काट रहे थे। दोपहर एक बजे गाँव के उत्तर में स्थित छोटी पहाड़ी पर एक सांभर ने आवाज़ लगाई। यह एक हिरणी थी जिसने पुकार लगाई थी, और वह बार-बार पुकार रही थी। फिर उसकी आवाज़ एक ककार की आवाज़ में गूंज उठी, जिसकी कर्कश आवाज़ पहाड़ी की निचली ढलानों पर बनी नालियों में गूंज रही थी।

इस समय तक सांभर हिरणी ने आवाज निकालना बंद कर दिया था, जबकि काकर पक्षी ऊपर चढ़ रहा था और बीच-बीच में कर्कश आवाज निकाल रहा था। जिस भी चीज ने उन्हें डराया था, वह पहाड़ी से नीचे आ गई थी।

लगभग बीस मिनट बाद, पहाड़ी की तलहटी से नदी के किनारे तक फैले जंगल में चित्तीदार हिरणों ने एक-दूसरे को चेतावनी भरी आवाजें निकालकर पुकारना शुरू कर दिया। या तो कोई बाघ या कोई तेंदुआ आसपास था, और अगले कुछ मिनटों में पता चल जाता कि वह मांसाहारी जानवर सिर्फ एक सामान्य प्राणी था या वह खूंखार शिकारी जिसका मैं इंतजार कर रहा था।

लगभग घोर अंधेरा हो चुका था जब मवेशी बेचैन हो गए। ज़मीन पर लेटे हुए सभी मवेशी एक साथ उठ खड़े हुए, और मैंने भी ऐसा ही किया, उस मिलनसार गाय के पास ही रहा। कुछ बैलों ने हिनहिनाहट की, और पूरा झुंड उस गली की ओर मुड़ गया जो छोटे से गाँव को दो भागों में बाँटती थी और मवेशियों के बाड़े की सीमा पर बनी कंटीली झाड़ियों के पास से गुज़रती थी।

जानवर बहुत बेचैन हो गए और बाड़े के दूसरे छोर पर, झाड़ियों और गली से दूर, झुंड बनाकर इकट्ठा होने लगे। पास के शेड में मौजूद चारों कुत्ते पहले ज़ोर-ज़ोर से भौंक रहे थे; अब वे धीरे-धीरे रोने लगे। जो भी चीज़ उन्हें डरा रही थी, वह ठीक उसी समय उस गली से गुज़र रही थी।

मैं मवेशियों के बीचोंबीच फंस गया था और मुझे बहुत सावधानी बरतनी पड़ रही थी ताकि कहीं मेरे चारों ओर फड़फड़ाते हुए कई सींगों में से किसी एक से मेरा सिर न टकरा जाए। मैंने झुंड के बीच से रास्ता बनाते हुए आगे की पंक्ति तक पहुंचने की कोशिश शुरू की, इस उम्मीद में कि शायद मुझे कुछ दिखाई दे, लेकिन अंधेरा और झाड़ियाँ कुछ भी नहीं दिखा रही थीं।

मुझे उस शेड में बंद कुत्तों के भौंकने और कराहने की आवाज़ सुनाई दे रही थी। मेरे कान हल्की से हल्की आवाज़ भी पकड़ लेते थे, लेकिन मवेशियों और कुत्तों के शोर ने मुझे ज़्यादा कुछ सुनने का मौका नहीं दिया। कुछ मिनट बाद, मुझे खरोंचने की हल्की सी आवाज़ सुनाई दी। ध्यान से सुनने पर मुझे पता चला कि यह आवाज़ गली में थोड़ी दूर से आ रही है। आवाज़ तेज़ और बेचैन होती गई। तब मुझे एहसास हुआ कि पैंथर कुछ दूरी पर बनी एक झोपड़ी के दरवाज़े को खरोंच रहा था।

मवेशियों के झुंड को चीरते हुए, मैं दबे पांव बाड़ के पास पहुंचा, इस उम्मीद में कि राइफल की टॉर्च जलाते ही मुझे पैंथर की एक झलक मिल जाएगी। जिस झोपड़ी में पैंथर खुजली कर रहा था, उसमें रहने वाले लोग ठीक उसी क्षण चीख-पुकार मचाने लगे; सन्नाटा भयानक शोर से टूट गया।

मुझे लगा कि आदमखोर झोपड़ी में घुसने में कामयाब हो गया है, इसलिए मैंने सब कुछ भूलकर बाँस और काँटों से बने उस दरवाजे की ओर दौड़ लगाई जो किलेबंदी का प्रवेश द्वार था। शाम ढलते ही मैंने एक विशाल Y-आकार का लट्ठा मजबूती से वहाँ फंसा दिया था, और उसे बड़े-बड़े पत्थरों से निकालने में मुझे कुछ कीमती पल लग गए।

मैंने उसे एक तरफ खींचकर टॉर्च जलाई, उस भारी-भरकम दरवाजे को वापस धकेला और गली में कदम रखा। चारों ओर कुछ भी दिखाई नहीं दे रहा था।

पीछे से होने वाले हमले से बचने के लिए मैंने अपनी पीठ कंटीली बाड़ की ओर कर ली और चारों दिशाओं में प्रकाश की किरणें डालीं, लेकिन फिर भी मुझे कुछ दिखाई नहीं दिया। पैंथर हवा में गायब हो गया था। इस बीच, चीखें और चिल्लाहटें लगातार जारी रहीं।

फिर मुझे यह ख्याल आया कि शायद पैंथर इतने समय से झोपड़ी के अंदर ही था, वहां रहने वालों पर हमला कर रहा था और उन्हें मार रहा था, और इस खतरनाक विचार को ध्यान में रखते हुए मैंने बीच के बीस गज की दूरी को सावधानीपूर्वक तय करना शुरू कर दिया।

जब मैं प्रवेश द्वार के पास पहुँचा, तो देखा कि वह कसकर बंद था। मैंने कैदियों को आवाज़ दी। पहले तो शोरगुल के कारण वे मुझे सुन नहीं पाए। फिर मैंने और ज़ोर से, कई बार आवाज़ दी। तब जाकर शोरगुल धीरे-धीरे कम हुआ।

मैंने अंदर रहने वालों को दरवाजा खोलने के लिए चिल्लाकर कहा। उन्होंने दरवाजा नहीं खोला। तभी अंदर से एक भयानक आवाज आई, जिसने पूछा कि मैं इंसान हूँ या शैतान? मैंने जवाब दिया कि मैं ही हूँ और पैंथर जा चुका है। आवाज ने कहा कि अंदर रहने वाले सुबह होने पर ही दरवाजा खोलेंगे। इसी बीच, मेरी टॉर्च की रोशनी से झोपड़ी के दरवाजे पर ताज़े पंजे के निशान साफ दिखाई दे रहे थे, जहाँ से पैंथर ने अभी-अभी अंदर घुसने की कोशिश की थी।

मैं बाड़े में वापस लौटा, दरवाजा दोबारा बंद किया, वाई-आकार के लट्ठे और पत्थरों को वापस अपनी जगह पर रखा और उस जगह पर वापस चला गया जहां अलार्म बजने के समय मैं गाय के सहारे लेटा हुआ था।

मुझे यह देखकर बहुत दुख हुआ कि झुंड के जानवरों के पैरों की आवाज़ से मेरा थर्मस टूट गया था और अब मैं वो गर्म चाय नहीं पी सकता था जिसकी मुझे बहुत चाह थी। मेरे बिस्कुट भी चट हो गए थे, और जब मैं दुखी मन से उस गाय को देख रहा था, तो उसने बिस्कुटों में लिपटे कागज़ का आखिरी टुकड़ा भी खा लिया। सौभाग्य से, मैंने अपनी पाइप और तंबाकू जेब में रखी हुई थी, और इसी के सहारे मैंने बाकी रात आराम से बिताई, एक बार फिर गाय के पास सटकर।

मैं भोर होते ही बंगले पर थका-हारा और निराश होकर लौटा। सबसे बुरी बात यह थी कि मेरा पूरा शरीर जूँ के काटने से भरा हुआ था और उसमें भयानक खुजली हो रही थी। इसके अलावा, मुझे यह भी अच्छी तरह पता था कि अगले दस दिनों में हर घाव में मवाद भर जाएगा और मुझे बहुत असहज समय से गुजरना पड़ेगा।

ठंडे पानी से नहाने और कपड़े बदलने के बाद, गर्म चाय, डिब्बाबंद बेकन और ब्रेड-बटर ने मेरी उदासी को कुछ हद तक कम किया और सुबह 7:30 बजे तक मैं सो गया। दोपहर के भोजन के लिए उठा और फिर दोपहर 3 बजे तक सो गया। उसके बाद मैं उठा और एक नई योजना बनाने लगा।

मवेशियों के साथ दोबारा बैठना नामुमकिन था, क्योंकि अगर पिछली रात की तरह मुझे फिर से उतने ही कीड़े काट लेते, तो मुझे कीड़े के काटने से होने वाला बुखार हो सकता था। फिर भी, यह बात निर्विवाद थी कि जब पैंथर गली से गुजरा था, तब मवेशियों और कुत्तों दोनों ने मुझे सचेत करने में सराहनीय मदद की थी।

अंततः मुझे एक नया विचार आया, जो इस स्थिति में एकमात्र समाधान प्रतीत हुआ। कुत्ते के बाड़े की छत जस्ता की चादरों के टुकड़ों से बनी थी। मैंने तय किया कि मैं उस छत पर लेट जाऊँगा, अच्छी तरह से छुपकर और गली की ओर देखते हुए, ताकि अगर पैंथर फिर से गली से गुजरे तो मैं उसे गोली मार सकूँ। मवेशी और कुत्ते भी अलार्म बजाकर मेरी मदद करेंगे। मैं छत पर कटे हुए कांटों के ढेर लगाकर अपनी पीठ और दोनों किनारों की रक्षा कर सकता था। पैंथर जैसा कोई भी भारी शरीर, जो जस्ता की छत पर कूदेगा, उसके बाद होने वाले शोर से उसकी उपस्थिति का पता अवश्य चल जाएगा। यह न केवल एकमात्र समाधान प्रतीत हुआ, बल्कि वास्तव में समस्या का एक अच्छा समाधान भी था।

इसलिए मैं अपना रात्रिकालीन सामान, बिस्कुट और चाय (जो मैंने बंगले के चौकीदार से उधार ली हुई एक खाली बीयर की बोतल में डाली थी) लेकर गाँव की ओर तेज़ी से चल पड़ा। गाँव वालों को अपनी नई योजना बताने के बाद, कुछ इच्छुक लोगों ने बकरी के बाड़े की जस्ता की छत पर काँटेदार टहनियों के ढेर चौकोर आकार में लगा दिए। कुछ अन्य लोग सूखी घास लाए, जिसे उन्होंने मेरे लेटने के लिए काँटेदार टहनियों के चौकोर ढेर के अंदर छत पर बिछा दिया।

शाम 6 बजे मैंने अपनी जगह ले ली। दो कमियाँ लगभग तुरंत ही सामने आने लगीं: पहली, गली की ओर मुँह करके लेटना पड़ता था, इसलिए मुझे इस तरह लेटना पड़ता था कि मेरे पैर मेरे सिर से थोड़े ऊँचे हों, क्योंकि जस्ता की छत पीछे से आगे की ओर थोड़ी ढलान वाली थी, ताकि बारिश का पानी आसानी से

बह जाए; दूसरी, मुझे ज़्यादातर समय पेट के बल लेटना पड़ता था, क्योंकि मेरी ज़रा सी भी हरकत जस्ता की छत पर साफ़ सुनाई देती थी। लेकिन फ़ायदे ये थे कि मैं पीछे से होने वाले अचानक हमले से सुरक्षित था; मुझे गली का साफ़ और निर्बाध दृश्य दिखाई देता था और मैं विशेष रूप से मवेशियों या कुत्तों के बेचैन होने पर उनकी आवाज़ें साफ़-साफ़ सुन सकता था; और अंत में, मैं उन भयानक कीड़ों से दूर था।

लेकिन वह रात बिल्कुल शांतिपूर्ण थी, इस बात का कोई संकेत नहीं मिला कि पैंथर गाँव से दो-तीन मील की दूरी तक आया था। अगली सुबह बंगले पर लौटकर मैंने फिर स्नान किया और दिनभर सोता रहा। हर दिन कुछ लोग मेरे जीवित चारे की जाँच करते थे, लेकिन किसी भी जानवर को कोई नुकसान नहीं पहुँचा था।

उस रात मैं एक बार फिर छत पर जा बैठा। रात के 2 बज चुके थे, आसपास के जंगल से कोई आहट नहीं सुनाई दी थी, और मुझे बहुत नींद आ रही थी। अचानक, जैसे सपने में होता है, मैंने मवेशियों को बेचैनी से हिलते-डुलते सुना। मेरे नीचे बने बाड़े में मौजूद कुत्तों में से एक गुर्राया। फिर चारों कुत्ते एक साथ भौंकने या चिल्लाने लगे।

धीरे-धीरे आगे देखते हुए, मैंने गाँव की गली को दोनों दिशाओं में देखना शुरू किया। उस समय तारों की रोशनी पर्याप्त नहीं थी, बस इतनी ही थी कि रात का अंधेरा न छाए। दाईं और बाईं ओर की गली धुंधली सी दिखाई दे रही थी और आसपास के वातावरण से थोड़ी हल्की थी। मुझे कुछ सुनाई नहीं दे रहा था और कुछ दिखाई भी नहीं दे रहा था।

तभी मुझे एक बहुत ही धीमी सी आवाज़ सुनाई दी। ऐसा लग रहा था जैसे कोई कोबरा फुफकार रहा हो। जी हाँ, फिर वही आवाज़! और वो मेरे ठीक सामने और नीचे से आ रही थी। क्या ये किसी साँप की फुफकार थी या फिर वो हल्की सी आवाज़ जो कोई पैंथर अपने ऊपरी होंठ की त्वचा को पीछे की ओर मोड़ते समय निकालता है?

मैंने नीचे की ओर देखा और पहले तो कुछ दिखाई नहीं दिया। कुछ ही सेकंड बाद, उस धुंधली रोशनी में, मेरी नज़र में एक हल्की, लंबी आकृति उभरी, गली के आसपास के धुंधलेपन से कहीं ज़्यादा हल्के रंग का एक धब्बा। मैंने उसे घूरकर देखा और मुझे लगा कि वह हिल रही है। इस बार फुफकार की आवाज़ ज़्यादा साफ़ सुनाई दी। ऐसा लग रहा था कि वह आवाज़ उसी हल्के धब्बे से आ रही है। मेरे नीचे बने शेड में मौजूद कुत्ते अब रोने और सिसकने लगे। मवेशी बहुत बेचैन थे।

मुझे एहसास हुआ कि मैं जहां लेटा था, वहां से राइफल नीचे की ओर नहीं कर सकता था; मुझे शायद एक फुट और आगे बढ़ना होगा, जब तक कि मेरा सिर और कंधे उस जस्ता की चादर के किनारे से पूरी तरह बाहर न निकल जाएं जिस पर मैं लेटा था। मैंने ऐसा करना शुरू किया, लेकिन मेरी पूरी सावधानी के बावजूद, भूसा सरसराया और जस्ता की चादर से हल्की सी चरमराहट की आवाज आई।

उस धुंधले धब्बे से एक भयावह गुर्राहट सुनाई दी, और मैं समझ गया कि मैं पकड़ा गया हूँ और अगले कुछ ही सेकंड में पैंथर शायद जस्ता की छत पर कूदकर मुझ पर हमला कर देगा।

बचे हुए छह इंच आगे बढ़ते हुए, मैंने राइफल को छत के किनारे से नीचे किया और टॉर्च का स्विच दबाया। दो चमकते गोले एक धब्बेदार शरीर से प्रकाश को प्रतिबिंबित कर रहे थे, जो छलांग लगाने के लिए झुका हुआ था। इतनी नज़दीकी दूरी से केवल एक गोली ही पर्याप्त थी और उन धधकते गोलों से जीवन की चिंगारी धीरे-धीरे बुझ गई: धधकते सफेद रंग से वे मंद नारंगी, फिर हल्के हरे, फिर एक खाली झिलमिलाहट में बदल गए, और अंत में बैंगनी-नीले रंग में, क्योंकि प्रकाश अब निर्जीव रेटिना द्वारा परावर्तित हो रहा था।

अगली सुबह मैंने एक बूढ़ी मादा पैंथर को देखा, जिसके नुकीले दांत लगभग ठूंठ जैसे हो गए थे। उसका शरीर बेहद पीला था; यहाँ तक कि उसके रोसेट भी बेढंगे और धुंधले थे। उसके पंजे कुंद और घिसे हुए थे। उसमें किसी भी तरह की विकृति या पहले के किसी घाव का कोई और निशान नहीं था। ऐसा लगता था कि केवल बुढ़ापा और जानवरों को मारने की शारीरिक अक्षमता के कारण धीरे-धीरे भुखमरी से मरने की आशंका ने ही संगम पैंथर को मानव जाति पर आक्रमण करने के लिए मजबूर किया था - एक ऐसा युद्ध जो चाहे कितना भी भयानक और डरावना क्यों न हो, अंततः इस बिल्ली प्रजाति की मृत्यु में ही समाप्त होता है। आधुनिक बंदूकें और मानवीय बुद्धि जंगल की सहज प्रवृत्ति, चालाकी और भूख की पीड़ा के आगे कुछ भी नहीं हैं।

---

*नाइन मैन-ईटर्स एंड वन रोग, जॉर्ज एलन एंड अनविन, 1954 में।

6

The Ramapuram Tiger

यह कहानी एक ऐसे बाघ की है जिसने तीन महीनों तक लगभग आधे जिले पर राज किया, जो लगभग साठ मील लंबा और लगभग साठ मील चौड़ा इलाका था। हालाँकि उसका शासनकाल अपेक्षाकृत छोटा था, फिर भी वह बेहद हलचल भरा था, क्योंकि इस थोड़े से समय में रामपुरम का बाघ अपने 3,600 वर्ग मील के क्षेत्र में सचमुच हर जगह मौजूद था। स्कारलेट पिम्परनेल की तरह, उसे हर कोई ढूंढ रहा था, लेकिन कोई भी उसे पकड़ नहीं पाया, जब तक कि उसका अंत अप्रत्याशित तरीके से नहीं हो गया।

उत्तरी कोयंबटूर ज़िला मुख्यतः पहाड़ियों और जंगलों से बना है। दक्षिण में कोयंबटूर के निचले मैदानी इलाकों से घिरा यह ज़िला अचानक डिंबम ढलान तक ऊपर उठता है। दक्षिण-पश्चिम में नीलगिरी या नीली पर्वत श्रृंखला के जंगल हैं। पश्चिम में मैसूर के जंगल हैं। उत्तर-पश्चिम में पहाड़ियों की एक और ऊँची श्रृंखला है - बिलिगिरिरंगन। उत्तर, उत्तर-पूर्व और पूर्व की ओर कावेरी नदी बहती है, जिसके दोनों किनारे घने जंगलों से ढके हैं, और इसके उत्तर-पूर्वी और पूर्वी हिस्से सलेम ज़िले के जंगलों से सटे हुए हैं।

उत्तरी कोयंबटूर जिले में इस नाम के योग्य केवल एक ही कस्बा है: कोललेगल, जो उत्तर-पश्चिमी कोने पर स्थित है और कावेरी नदी से लगभग आठ मील दूर है। कोललेगल से चार सड़कें निकलती हैं। पश्चिम और उत्तर की ओर मैसूर जाने वाली सड़कों का इस विवरण में कोई उल्लेख नहीं है। तीसरी सड़क दक्षिण की ओर जाती है और लगभग सीधी है तथा बिलिगिरिरंगन पहाड़ियों के पूर्वी तल के साथ-साथ चलती है। इस सड़क पर सत्रह मील चलने पर लोकनहल्ली नामक बड़ा गाँव आता है; लोकनहल्ली से तेरह मील आगे बैलूर है, जहाँ से 'बाइसन रेंज' शुरू होती है और अड़तालीसवें मील के पत्थर पर हसनपुर तक और कोललेगल से बावन मील दूर ढलान के शिखर पर स्थित डिंबम तक पहुँचती है।

चौथी सड़क दक्षिण-पूर्व दिशा में जाती है और कोल्लेगल से लगभग पच्चीस मील दूर रामपुरम गाँव से होकर गुजरती है, जहाँ से यह दक्षिण की ओर मुड़कर चौबीस मील आगे बरगुर तक जाती है, फिर पाँच मील आगे तामरकाराई तक और अंत में डिंबुम ढलान के दक्षिण-पूर्वी छोर तक जाती है, जहाँ से यह मैदानी इलाके में स्थित अंदियूर गाँव की ओर तेज़ी से नीचे उतरती है। इस सड़क की कुल लंबाई लगभग इक्यासी मील है।

कोल्लेगल-लोकनहल्ली-बैलूर-डिंबम सड़क पर ट्रकों का आवागमन बहुत कम होता था और प्रतिदिन एक बस सेवा चलती थी; जबकि रामपुरम, तामरकाराई और अंदियूर जाने वाली सड़क अपने अंतिम साठ मील के हिस्से में जीपों या पुराने जमाने की ऊंची ग्राउंड क्लीयरेंस वाली अमेरिकी कारों को छोड़कर मोटर वाहनों के लिए अनुपयुक्त थी। इलाका बेहद दुर्गम था, जिसमें पत्थरों से भरे तेज उतार-चढ़ाव थे। यह एक संकरा रास्ता बन जाता था, जो बैलगाड़ियों के पहियों से गहरा कटा हुआ था और दोनों

ओर घने जंगल से घिरा हुआ था। जंगल की धाराओं के रेतीले—और अक्सर पथरीले—तल इस रास्ते को थोड़ी-थोड़ी दूरी पर पार करते थे। गहरी घाटियों में विशाल बांस के जंगल फैले हुए थे, जिनकी झुकी हुई टहनियाँ कार के बोनट को छूती थीं, जब कार धीमी गति से चलती थी और उसका रेडिएटर लगातार गर्म होता रहता था। कभी-कभी रास्ते में कोई गिरा हुआ बांस का तना या पेड़ की टूटी हुई शाखा पड़ी होती थी, जिसे हाथी की भूख मिटाने के लिए तोड़ दिया गया हो। फिर चालक रुकता है, और अपनी कुल्हाड़ी, जिसे यहाँ 'चॉपर' कहा जाता है, से बाधा को काटता है और उसे एक तरफ खींच लेता है, फिर आगे बढ़ता है जब तक कि उसे कोई दूसरी ऐसी ही बाधा न मिल जाए। इस उपयोगी 'चॉपर' के बिना, यह रास्ता पार करना असंभव होता।

बाघ आमतौर पर घनी वनस्पतियों को नापसंद करते हैं और कम झाड़ियों वाले जंगलों में रहना पसंद करते हैं, जबकि हाथी और बाइसन ऐसे जंगलों को पसंद करते हैं। बाघ की इस पसंद के कई कारण हैं, जिनमें से एक यह है कि घनी झाड़ियाँ बाघ को अपने शिकार का सावधानीपूर्वक पीछा करने से रोकती हैं और उसके अंतिम समय के प्रभावी हमले में बाधा डालती हैं। दूसरा कारण यह है कि बाघ का वैध शिकार —सभी प्रकार के हिरण, जंगली सूअर और, ज़ाहिर है, गाँव के मवेशी—घने जंगलों में प्रवेश नहीं करते, जिनमें मुख्य रूप से हाथी और बाइसन रहते हैं, जिनसे बाघ आमतौर पर दूर रहता है। तीसरा कारण यह है कि घनी झाड़ियों में जोंक, कई प्रकार के कीड़े-मकोड़े और मक्खी (जिसे भारत में घोड़ा मक्खी या पशु मक्खी कहा जाता है) जैसे कीट पनपते हैं; बाघ इन कीटों से बेहद नफरत करते हैं।

रामपुरम का आदमखोर कावेरी नदी के किनारे, छह हजार फीट से अधिक ऊँचाई पर स्थित पोन्नाचाई मलाई नामक पर्वत क्षेत्र से आया बताया जाता है। इस पर्वत की ढलानों पर शोलागा और अन्य भारतीय बागान मालिकों के स्वामित्व वाले कुछ छोटे कॉफी बागान मौजूद हैं। कहा जाता है कि रामपुरम के आदमखोर ने एक साधारण मवेशी चोर के रूप में अपना धंधा शुरू किया था, जो बागान मालिकों और मजदूरों के पालतू पशुओं को चुराने के लिए इन बागानों पर छापा मारता था। बताया जाता है कि उसने कई पशुओं को मारकर खा लिया था, जब तक कि एक बागान मालिक, जो अपने साथियों से कहीं अधिक साहसी था, कोयंबटूर शहर गया और वहाँ से एक बेहद मजबूत दिखने वाला जाल खरीद लिया।

यह जाल लोहे का बना था, जिसमें दांतों की दो अर्धवृत्ताकार पंक्तियाँ थीं। जब इन्हें खोलकर अलग रखा जाता था, तो इनका फैलाव लगभग ढाई फीट तक होता था। दांत लगभग दो इंच लंबे थे। जबड़ों को एक बेहद संवेदनशील ट्रिगर द्वारा अलग रखा जाता था, जिसे छोड़ने पर एक असाधारण रूप से शक्तिशाली स्प्रिंग बिजली की गति से जबड़ों को शोर मचाते हुए एक साथ ले आती थी, जिससे नुकीले दांत आपस में फंस जाते थे।

कुछ ही समय बाद, बाघ ने एक दुधारू गाय को मार डाला और उसे खाई में घसीटकर सूखे पत्तों के ढेर के नीचे छिपा दिया, बिना खाए। शिकार का पीछा किया गया और उसे खोज निकाला गया। जाल को गाय के पिछले हिस्से के पास सावधानीपूर्वक लगाया गया, जहाँ बाघ आमतौर पर भोजन के लिए लौटते

समय अपना काम शुरू करता था। जिन सूखे पत्तों से शिकार छिपाया गया था, उन्हीं पत्तों का इस्तेमाल जाल को छिपाने के लिए किया गया। बाघ वापस आया, और दुर्भाग्य से और दूसरों के भविष्य के दुर्भाग्य के लिए —उसका सिर जाल में फंस गया, जिसने उसकी गर्दन के दोनों ओर, कानों के ठीक पीछे, उसे मजबूती से जकड़ लिया।

जाल को एक खूंटी से जमीन में गाड़ दिया गया था। बाघ ने जाल पर हमला किया और खूंटी को उखाड़ने में कामयाब हो गया, जबकि जाल उसके गले में मजबूती से जकड़ा हुआ था। फिर वह भारी जाल को घसीटते हुए जंगल में भाग गया, और लगभग दो मील दूर एक जगह पर जाल दो बड़ी चट्टानों के बीच बुरी तरह फंस गया। बाघ ने खुद को छुड़ाने की कोशिश की, लेकिन जाल पहले से भी ज्यादा मजबूती से फंस गया।

दर्द से कराहते हुए बाघ दहाड़ा और बुरी तरह छटपटाया। उसकी दहाड़ें आधी रात तक बागान मालिक और उसके डरे हुए मजदूरों को सुनाई देती रहीं, जो दो मील दूर अपने बागान में थे। आखिरकार, जानवर खुद को छुड़ाने में कामयाब हो गया, इस दौरान उसका बायां कान और आंख कट गई, साथ ही गर्दन और चेहरे पर भी गंभीर चोटें आईं। इसके बाद करीब एक हफ्ते तक इलाके में उसकी दर्द से कराहने की आवाजें दिन-रात सुनाई देती रहीं।

फिर एकदम सन्नाटा छा गया। सबको लगा कि बाघ अपने ज़ख्मों से मर गया है। बागान मालिक और उसके नौकर गिद्धों पर नज़र रखे रहे, जो शायद शव को देख लेते और भोजन के लिए ज़मीन पर झपट्टा मारते हुए मरे हुए जानवर की मौजूदगी का पता बता देते। लेकिन आसमान में ऊँचे उड़ते हुए गिद्ध ही दिखाई दिए, जो नीचे धरती पर मौत के संकेतों की तलाश में ध्यान से देख रहे थे; लेकिन कोई भी झपट्टा नहीं मारा, क्योंकि बाघ मरा नहीं था।

दो सप्ताह बीत गए; फिर एक दोपहर, एक छोटे कॉफी बागान की ओर जाने वाले रास्ते पर, शोलागा जनजाति का जेकेन और उसकी अठारह वर्षीय पत्नी सवार हुए। भारतीय रीति-रिवाज के अनुसार, जेकेन आगे चल रहा था और उसकी पत्नी उससे लगभग एक गज पीछे, सिर पर अनाज की बोरी रखे हुए थी। वे एक सूखे नाले को पार कर चुके थे और उसके किनारे पर चढ़ ही रहे थे कि तभी, इन क्षेत्रों में नदी के किनारों पर उगने वाली गन्ने जैसी घास के एक झुंड में से एक बाघ ने लड़की पर झपट्टा मारा और उसे ज़मीन पर पटक दिया।

मुड़कर देखा तो जेकेन ने अपनी पत्नी को ज़मीन पर लेटे हुए देखा, जो भयभीत और विनती भरी आँखों से उसे घूर रही थी। बाघ उसकी पीठ पर बैठा था, उसके दोनों पंजे उसके कंधों पर थे, और उसका खुला मुँह उसके सिर के ठीक ऊपर था। यह एक ऐसा बाघ था जिसकी बाईं आँख और बायाँ कान नहीं था, और उसकी गर्दन और चेहरे के घाव अभी तक भरे नहीं थे!

जेकेन पत्थर की तरह जम गया। वह हिल नहीं सकता था, बोल नहीं सकता था, बस भय और विस्मय से अपनी जगह पर जड़वत खड़ा रहा। बाघ ने भयानक गुर्राहट की, और अपने पहले से ही घायल चेहरे को

और भी भयावह बना लिया। फिर उसने लड़की को उसके दाहिने कंधे से पकड़ा और अपने शिकार को लेकर नदी पार कर गया—लड़की का सिर नीचे की ओर झुका हुआ था, उसके बिखरे बाल और बायां हाथ-पैर रेत में घिसट रहे थे। एक पल बाद, बाघ और लड़की नदी के उस पार जंगल में गायब हो गए।

जाहिर है, बेचारी महिला बेहोश हो गई थी, या शायद डर से मर गई थी। जेकेन ने अपनी पत्नी को आखिरी बार उसी समय देखा था, और हमले के समय भी उसने जरा सी भी चीख नहीं निकाली थी।

एक महीने बाद रामपुरम से दो मील की दूरी पर एक चरवाहे को बाघ ने मार डाला। इस मामले में, उसके आधे खाए हुए अवशेष एक झाड़ी में मिले। तीसरी मानव हत्या लगभग तीन सप्ताह बाद, कोललेगल-लोकनहल्ली-बैलूर-डिंबम सड़क पर लगभग इक्कीसवें मील के पत्थर के पास हुई। इस बार एक सड़क मजदूर, एक अधेड़ उम्र की महिला, शाम पांच बजे से ठीक पहले अपने साथियों के सामने हमले का शिकार हुई। वह कुछ मिनटों के लिए काम रोककर जंगल में कुछ कदम अंदर गई थी, तभी एक बाघ अचानक कहीं से उस पर झपटा और उसे उठाकर ले गया। वह बुरी तरह चीखी, और आस-पास मौजूद लोगों ने बाघ को साफ देखा था। बाघ का चेहरा चोटिल था और उसका बायां कान और आंख नहीं थी!

ऐसा हुआ कि उस समय उत्तरी कोयंबटूर क्षेत्र के लिए मेरा शिकार लाइसेंस समाप्त हो चुका था। यह क्षेत्र दो वन प्रभागों में विभाजित है: उत्तरी कोयंबटूर और कोललेगल प्रभाग। यद्यपि प्रशासनिक दृष्टि से कोललेगल उत्तरी कोयंबटूर जिले के अंतर्गत आता था, लेकिन वन विभाग ने हाल ही में जिले को दो अलग-अलग वन प्रभागों में विभाजित कर दिया था। मेरा लाइसेंस, जो समाप्त हो चुका था, उत्तरी कोयंबटूर और डिंबम क्षेत्र को कवर करता था; जबकि लोकनहल्ली, बैलूर और रामपुरम कोललेगल प्रभाग के अंतर्गत आते थे। मैं अपना पुराना लाइसेंस नवीनीकृत कराना चाहता था और आवश्यक शुल्क भेजने ही वाला था कि मैंने अखबारों में इस बाघ द्वारा किए गए नवीनतम अत्याचार के बारे में पढ़ा। इससे मेरा मन पक्का हो गया और दस दिनों की विशेषाधिकार छुट्टी का लाभ उठाते हुए, मैं सुबह-सुबह बैंगलोर से निकल गया और कोललेगल स्थित वन विभाग के कार्यालय में, जो 87 मील दूर था, कार्यालय खुलने से पहले ही पहुँच गया। मुझे आवश्यक शिकार लाइसेंस और बाघ के बारे में सभी उपलब्ध जानकारी प्राप्त करने में ज्यादा समय नहीं लगा।

जिस इलाके में आदमखोर सांप सक्रिय था, वह मेरे लिए अपेक्षाकृत नया था, इसलिए मैंने शुरुआत में रामपुरम में स्थित छोटे से वन लॉज में डेरा डालने का फैसला किया, जो पच्चीस मील दूर था, और मैं बेहद ऊबड़-खाबड़ सड़क से गुजरने के बाद डेढ़ घंटे में वहां पहुंच गया।

ज़ाहिर है, सबसे पहला काम रामपुरम के निवासियों का विश्वास जीतना था, उन्हें यह बताकर कि मैं उन्हें बाघ से छुटकारा दिलाने आया हूँ। लोग मुझे नहीं जानते थे और उन्होंने कुछ अस्पष्ट बातें बताईं, जिससे यह संकेत मिला कि बाघ पोन्नाचाई मलाई, जहाँ उसने अपना पहला शिकार किया था, और बैलूर के बीच कहीं भी हो सकता है, जो लगभग साठ मील की सीधी दूरी पर स्थित है।

जैसा कि मैंने आपको बताया है, बैलूर कोललेगल से लगभग तीस मील दूर कोललेगल-लोकनहल्ली-डिंबम सड़क पर स्थित एक छोटा सा गाँव था। इसलिए, मैं या तो कार से कोललेगल लौटकर वहाँ से बैलूर जा सकता था, या रामपुरम में कार छोड़कर रामपुरम से बैलूर तक लगभग उन्नीस मील की दूरी पैदल चलकर त्रिभुज के तीसरे भाग को तय कर सकता था। मैंने बाद वाला विकल्प चुना, क्योंकि इससे मुझे आरक्षित वन से सटे कई वन बस्तियों से गुजरने का अवसर मिलता, जहाँ मुझे बाघ के बारे में कुछ जानकारी मिलने की उम्मीद थी।

तदनुसार, अगली सुबह भोर होते ही मैंने रामपुरम स्थित छोटे से फॉरेस्ट लॉज को छोड़ दिया और बैलूर की ओर अपनी यात्रा शुरू की। रास्ता आम तौर पर दक्षिण-पश्चिम दिशा में जाता था, जो कहीं-कहीं विरल रूप से खेती वाले क्षेत्र से होकर गुजरता था और कहीं-कहीं झाड़ियों वाले जंगल से होकर जाता था, जो आरक्षित वन की सीमा के भीतर, दक्षिण में कुछ मील दूर स्थित छोटी पहाड़ियों की श्रृंखलाओं के किनारे-किनारे चलता था।

मैं कुछ छोटे-छोटे गांवों से गुजरा, लेकिन सभी निवासी या तो अपने घरों के अंदर थे या अपनी झोपड़ियों के प्रवेश द्वार पर बैठे हुए थे। उनके कुछ मवेशी बाहर बाड़े में बंद थे या झोपड़ियों के आस-पास की थोड़ी-बहुत घास चर रहे थे, क्योंकि आदमखोर की कहानी दूर-दूर तक फैल चुकी थी और ऐसी घटनाओं से उत्पन्न होने वाला सामान्य भय पहले ही कायम हो चुका था।

मैं धीरे-धीरे चलता रहा और जहाँ भी संभव हुआ, पूछताछ करता रहा। इन बस्तियों में रहने वाले लगभग सभी शोलागा लोगों ने बताया कि उन्होंने पिछली रात या पिछले बहत्तर घंटों के भीतर आसपास बाघ की दहाड़ सुनी थी। एक जगह मुझे बाघ के पैरों के स्पष्ट निशान दिखाए गए, जो हाल ही में जोते गए खेत को पार कर रहा था, जो मालिक की झोपड़ी से मात्र सौ गज की दूरी पर था। मैंने आगे बढ़ने से पहले भविष्य के संदर्भ के लिए उन निशानों की विस्तृत माप ली, लेकिन जल्द ही यह स्पष्ट हो गया कि इस क्षेत्र के लोग या तो इतने घबराए हुए थे कि वे पूरी तरह से झूठी और बढ़ा-चढ़ाकर बातें बता रहे थे, या फिर रामपुरम और बैलूर के बीच उन्नीस मील के क्षेत्र में बाघों की संख्या असामान्य रूप से अधिक थी। क्योंकि, प्राप्त जानकारी के अनुसार, पिछले तीन-चार दिनों में प्रत्येक बस्ती में एक बाघ आया था!

शाम लगभग 5 बजे मैं बैलूर गाँव पहुँचा, जहाँ लगभग बीस झोपड़ियाँ थीं। यहाँ मेरी मुलाकात सड़क निर्माण दल के उन सदस्यों से हुई जिन्होंने इक्कीसवें मील के पत्थर के पास महिला की हत्या देखी थी। उन्होंने मुझे वही बताया जो मैंने पहले ही लिख लिया है और विशेष रूप से बाघ के विकृत शरीर पर ज़ोर दिया, जिसे उन्होंने स्पष्ट रूप से देखा था जब वे भय से वहीं खड़े रह गए थे, जबकि बाघ अपनी चीखती हुई शिकार, सड़क निर्माण मजदूर महिला को लेकर झाड़ियों में भाग गया था।

सबसे नज़दीकी वन विभाग का लॉज डिंबम की दिशा में मोटर रोड पर लगभग साढ़े तीन मील आगे था। रिजर्व सड़क के दोनों ओर फैला हुआ था। शाम के 5:30 बज रहे थे और मुझे पता था कि एक घंटे में

रात हो जाएगी, इसलिए मैंने आखिरी साढ़े तीन मील की दूरी तेज़ी से तय की और अंधेरा होने से कुछ ही देर पहले छोटे से वन बंगले पर पहुँच गया।

बंगले से लगभग तीन मील पश्चिम में स्थित बिलिगिरिरंगन पहाड़ियों की विशाल श्रृंखला के पीछे सूरज डूब चुका था, और शाम के समय पेड़ों पर बैठे मोर और जंगली मुर्गों की चहचहाहट ने मेरा स्वागत किया जब मैं बरामदे में घसीटकर लाई गई एक पुरानी टूटी कुर्सी पर बैठ गया। पश्चिम की ओर से नीचे उतरते हुए एक सांभर हिरण की दूर से आती हुई आवाज मेरे कानों को मधुर संगीत की तरह लगी, क्योंकि वह बंगले को तलहटी से अलग करने वाली घनी घाटी के ऊपर से गुजर रहा था। इस घाटी के असंख्य वृक्षों की चोटियाँ ढलते हुए धुंधलके में एक काले कालीन की तरह लग रही थीं।

आधा घंटा भी मुश्किल से बीता था कि चारों ओर घना अंधेरा छा गया, जिसकी हल्की-हल्की टिमटिमाहट लाखों जुगनुओं की झिलमिलाहट से गूंज रही थी। वे हर जगह तैर रहे थे, मानो अंधेरे में नन्हे-मुन्ने परी हों, और अपनी चमकीली लालटेनें आस-पास के हर झाड़ी या पेड़ की चोटी तक पहुंचा रहे हों। कभी-कभार उनकी चमक एक साथ मिलती थी, और जिस पेड़ या झाड़ी के चारों ओर वे झुंड बनाते थे, वह हजारों छोटे जीवों द्वारा बनाई गई एक विशाल और एकसमान प्रकाश की चमक से कांप उठता था। जंगल की रात का अंधेरा एक क्षणिक, प्रकाशमान और अलौकिक चमक के सामने छंट जाता था—लेकिन केवल एक पल के लिए—जब तक कि फिर से वह दुर्लभ संयोग नहीं आ जाता।

मैंने जल्दी ही रात को लॉज के छोटे से केंद्रीय कमरे के फर्श पर सोकर आराम किया; लेकिन लगभग 2 बजे, एक बाघ की कराहने की आवाज ने मुझे जगा दिया। घाटी से गुजरते हुए मैंने उसकी आवाज रुक-रुक कर सुनी, जब तक कि वह दूर जाकर धीमी नहीं हो गई।

सुबह तड़के मैं बैलूर गाँव पहुँच गया, जहाँ मैंने दो स्थानीय शिकारियों की मदद ली और चारे के लिए तीन जवान बैल खरीदे। इनमें से एक को हमने बंगले के पश्चिम में घाटी से बहने वाली धारा के किनारे बाँध दिया, जहाँ मैंने रात में बाघ की आवाज़ सुनी थी। दूसरे को सड़क से मात्र 100 गज की दूरी पर, गाँव और वन बंगले के बीचोंबीच एक छोटे से जंगल में बाँध दिया। तीसरे को बाँधने के लिए हम वापस इक्कीसवें मील के पत्थर तक गए, जहाँ सड़क बनाने वाले मजदूर की हत्या हुई थी। इस जगह के पास ही सड़क एक वन धारा से होकर गुजरती थी, जिसे ओड्डुम बेट्टा हल्ला के नाम से जाना जाता था; इसके किनारे बाँस से ढके हुए थे, सिवाय वन विभाग द्वारा बनाए गए एक छोटे से खुले स्थान के, जिसमें विभिन्न वन पौधों के पौधे प्रायोगिक रूप से उगाए जा रहे थे। मेरे सहायकों ने मुझे बताया कि एक बाघ अक्सर इस खुले स्थान से गुजरता है, और मैंने पाया कि यह बात सच थी, क्योंकि तीन अलग-अलग स्थानों पर पुराने और अपेक्षाकृत नए, दोनों तरह के पदचिह्न दिखाई दे रहे थे। मैंने इन पदचिह्नों में से सबसे नए पदचिह्न की जांच की और उनकी तुलना पिछले दिन गांव में लिए गए पदचिह्नों के माप से की। दोनों ही पदचिह्न नर बाघ द्वारा बनाए गए थे, लेकिन विभागीय वृक्षारोपण में मिले पदचिह्न कहीं अधिक उम्रदराज और भारी जानवर के थे।

हमने तीसरा चारा खुले मैदान में ठीक उसी जगह बांधा जहां से ऑडम बेट्टा हाल्ला धारा इस बागान के पास से बहती है।

यह सब हो जाने पर शाम के 5:30 बज चुके थे, और बैलूर गाँव लौटते समय एक हट्टे-कट्टे, सुंदर दिखने वाले शोलागा ने मुझसे संपर्क किया और अपना परिचय जेकेन के रूप में दिया, जो उस लड़की का पति था जो आदमखोर बाघ का पहला शिकार बनी थी। उसने बताया कि पोन्नाचाई मलाई की ढलानों पर स्थित कॉफी बागान से गुजर रहे यात्रियों के एक समूह ने, जहाँ वह काम करता था, उसे सूचित किया था कि एक साहब रामपुरम बाघ का शिकार करने आए हैं। अपनी पत्नी की हत्या का बदला लेने के इरादे से, उसने बागान मालिक से रामपुरम जाने की अनुमति ली ताकि वह मेरी सहायता कर सके। रामपुरम पहुँचकर उसे बताया गया कि मैं बैलूर चला गया हूँ, और वह तुरंत मेरे पीछे-पीछे बैलूर पहुँच गया।

मैंने जेकेन को उसके प्रस्ताव और मुझे ढूंढने में की गई मेहनत के लिए धन्यवाद दिया और तुरंत उसे अपना निजी सहायक नियुक्त कर लिया। मुझे उसका रूप-रंग और बाघ को पकड़ने के लिए कोई कसर न छोड़ने का उसका दृढ़ निश्चय पसंद आया। जेकेन ने मेरी सहमति पर मुस्कुराते हुए मुझे धन्यवाद दिया, लेकिन उसने भुगतान लेने से साफ इनकार कर दिया; वास्तव में, उसने स्पष्ट कर दिया कि यह उसके प्रस्ताव की शर्त थी।

मैं फॉरेस्ट लॉज लौट आया और जेकेन और बाकी दो सहायकों को अगली सुबह जल्दी निकलने और इक्कीसवें मील के पत्थर के पास रखे चारे को देखने का निर्देश दिया। मैं खुद बाकी दो चारे देखने गया। अगली सुबह मैंने यही किया, पहले घाटी में नदी के किनारे बंधे बैल को देखा, फिर फॉरेस्ट बंगले और बैलूर गाँव के बीच में बंधे चारे को। दोनों बैल सुरक्षित थे और जहाँ उन्हें बांधा गया था, उसके आस-पास की रेत में कहीं भी पग कुत्तों के निशान नहीं मिले। फिर मैं बाकी की दूरी पैदल चलकर बैलूर गाँव पहुँचा, जहाँ मैंने अपने तीन स्काउट्स के लौटने का इंतज़ार किया; एक घंटे के भीतर वे आ गए और मुझे बताया कि तीसरा चारा जीवित है।

जेकेन और एक शोलागा को गाँव में छोड़कर, मैंने दूसरे व्यक्ति को अपने साथ लिया, जिसने दावा किया कि वह उस क्षेत्र के वन पथों से भलीभांति परिचित है, और पश्चिम की ओर तब तक चलता रहा जब तक हम बिलिगिरिरंगन की तलहटी में नहीं पहुँच गए। चूंकि यह सारा इलाका मेरे लिए अपरिचित था, इसलिए मैंने उसे आगे चलने को कहा और अपनी राइफल तैयार रखते हुए पीछे से उस पर नज़र रखी। शोलागा लोग जन्मजात वनवासी होते हैं, और मेरे मार्गदर्शक ने ज़रा भी घबराहट नहीं दिखाई, जब हम एक कतार में, एक वन पथ से ऊपर और दूसरे से नीचे, अंधेरी नालियों को पार करते हुए आगे बढ़े, अक्सर बाँस की लटकती पत्तियों या काँटेदार झाड़ियों से बचने के लिए कमर झुकाते हुए। लेकिन हमें किसी ताज़े बाघ के पदचिह्न का कोई निशान नहीं दिखा।

एक जगह से एक विशाल नर पैंथर गुजरा था, और दूसरी जगह से एक मादा पैंथर अपने शावक के साथ गुजरी थी; लेकिन यह स्पष्ट था कि जिस बाघ की हम तलाश कर रहे थे वह उस रास्ते से नहीं गुजरा था।

दोपहर के लगभग 3 बज चुके थे जब हम फॉरेस्ट लॉज वापस लौटे और देर से ठंडा दोपहर का भोजन किया। शोलागा ने आग जलाई, जिस पर मैंने कुछ पानी उबालकर हम दोनों के लिए कई कप चाय बनाई। फिर मैंने परिसर में बने छोटे से कुएं से पानी निकाला, ताकि ठंडे पानी से नहाने का आनंद ले सकूं।

पांच बजे मैं शोलागा के साथ बैलूर गाँव लौटा, जहाँ मैंने उसे और जेकेन को निर्देश दिए कि वे और तीसरा शोलागा अगली सुबह इक्कीसवें मील के पत्थर पर स्थित चारागाह पर जाएँ। जब मैं बंगले पर लौटा तब तक सात बज चुके थे। उस रात मैं चैन से सोया, और किसी बाघ की दहाड़ ने भी मुझे नहीं विसर्जित किया। सुबह जल्दी ही मैं बाकी दो चारागाहों की जाँच के लिए निकल पड़ा। दोनों जगह बाघ सुरक्षित थे।

फ़ॉरेस्ट लॉज लौटकर मैंने सादा भोजन किया और फिर बैलूर की ओर चल पड़ा, रास्ते में बाघ के पदचिह्नों पर सावधानीपूर्वक नज़र रखता रहा। कोई बाघ उस रास्ते से नहीं गुजरा था और सुबह 9:15 बजे मैं अपने साथियों का इंतज़ार कर रहा था। वे दस बजे से पहले लौट आए, इस बार यह बताने के लिए कि बाघ ने रस्सी को काटकर चारा हटा दिया था।

सौभाग्य से मैं ऐसी स्थिति के लिए तैयार था और अपने साथ टॉर्च और रात में शिकार करने का अन्य सामान एक थैले में लाया था। हम जितनी जल्दी हो सके वापस भागे और दोपहर के कुछ ही समय बाद उस जगह पहुँच गए जहाँ बैल को बाँधा गया था। लगभग बीस फीट दूर नरम मिट्टी में बाघिन के पैरों के निशान साफ दिखाई दे रहे थे, और जाँच करने पर पता चला कि हत्यारा बाघिन थी, न कि कोई बाघ। वहीं से उसने बैल पर अंतिम हमला किया था, जिससे बैल की मृत्यु हो गई थी, उसने उस रस्सी को काट दिया था जिससे उसका पैर बाँधा गया था।

हमें पता नहीं था कि शिकार कितनी दूर ले जाया गया है, इसलिए मैंने अपने साथियों से कहा कि वे दोपहर 3 बजे तक इक्कीसवें मील के पत्थर के पास मेरा इंतज़ार करें, जबकि मैं घसीटने के निशान का पीछा करूँगा। अगर मृत बैल को कुछ दूर ले जाया गया होता, तो मैं बाघिन के लौटने का इंतज़ार करने के लिए एक छिपने की जगह बना लेता और पूरी रात वहीं बिताता। ऐसी स्थिति में, मैं तीन बजे तक वापस नहीं आ पाता और उन्हें बैलूर लौट जाना होता। दूसरी ओर, अगर बाघिन ने शिकार को ज़्यादा दूर नहीं छोड़ा होता, तो मैं अपने साथियों के पास लौट आता और उनसे एक अच्छी तरह से मचान बनाने को कहता।

मैंने देखा कि बाघिन शिकार को पहले दो सौ गज तक आधा घसीटती रही, तब तक वह निचले इलाके और नाले के आसपास उगे बांस के घने जंगल से निकल चुकी थी। फिर उसे घनी लैंटाना की झाड़ियाँ मिलीं, जो जाहिर तौर पर उसके रास्ते में रुकावट बन गईं, क्योंकि वह मरे हुए बैल को ढो रही थी। यहाँ उसने जाहिर तौर पर उसे अपने कंधे पर लाद लिया, जैसा कि बाघ कभी-कभी अपने शिकार को ले जाने के लिए करते हैं, और फिर उसके निशान का पीछा करना बेहद मुश्किल हो गया।

किसी जानवर के खुर घसीटने या बैल के सींगों से जगह-जगह टहनियाँ टूट गई थीं, और यही उनके गुजरने के एकमात्र दिखाई देने वाले निशान थे। सड़ती हुई वनस्पति और गिरे हुए लैंटाना के पत्तों की चादर ने पगडंडियों के निशान ढूंढने की सारी उम्मीदें खत्म कर दी थीं। स्वाभाविक रूप से, चलना भी बहुत धीमा

था, और मुझे यह स्थिति बिल्कुल भी पसंद नहीं आ रही थी, क्योंकि मेरा लगभग पूरा ध्यान पगडंडी का पीछा करने पर ही केंद्रित था, जिससे मैं अचानक हमले से पूरी तरह सावधान नहीं रह पा रहा था। अंत में लैंटाना की घास खत्म हुई और खुला जंगल शुरू हो गया, जिसमें जगह-जगह पेड़ और बौने खजूर के पेड़ फैले हुए थे।

दो बार मुझे वह जगह दिखी जहाँ बाघिन ने अपना बोझ रखा और फिर उसे उठा लिया। अब यह स्पष्ट हो गया था कि उसका कोई विशेष गंतव्य था, संभवतः कोई मांद जहाँ उसके बच्चे थे और जिनके लिए वह मांस ले जा रही थी।

पगडंडी ऊपर की ओर बढ़ती जा रही थी; इलाका धीरे-धीरे पथरीला होता जा रहा था, और अंत में, पेड़ों के तनों के बीच एक दरार में, मुझे एक छोटी पहाड़ी दिखाई दी, जो शायद मेरे खड़े होने की जगह से लगभग एक चौथाई मील दूर और लगभग 200 फीट ऊपर थी। पगडंडी सीधे पहाड़ी की ओर जा रही थी। अब तक मुझे काफी हद तक यकीन हो चुका था कि जिस जानवर का मैं पीछा कर रहा था, वह आदमखोर नहीं था, क्योंकि आदमखोर के बारे में जुटाई गई सभी जानकारियों के अनुसार वह बाघ था, बाघिन नहीं, हालांकि उसका लिंग पूरी तरह से निश्चित नहीं था। हालांकि, यह एक ज्ञात तथ्य था कि आदमखोर ने अपनी बाईं आंख और कान खो दिए थे, इसलिए अगर मुझे अपने पीछा किए जा रहे जानवर की एक झलक मिल जाती, तो मैं जल्द ही जान जाता कि वह सही जानवर है या नहीं।

उस झलक को कैसे पाया जाए, यही समस्या थी। इसका सबसे आसान जवाब था कि तब तक आगे बढ़ते रहें जब तक हमारी मुलाकात न हो जाए, लेकिन यह मुझे बिल्कुल भी पसंद नहीं था, क्योंकि भले ही बाघिन आदमखोर न हो, फिर भी वह निश्चित रूप से किसी भी ऐसे इंसान का स्वागत नहीं करेगी जो उस मांद का दरवाजा खटखटाए जहां उसके बच्चे थे।

लेकिन मैं आगे बढ़ता रहा। अब निशान का पीछा करना आसान हो गया था, क्योंकि बाघिन चट्टानों और पत्थरों से टकराई थी, जहाँ खून के धब्बे मृत बैल के गुजरने का संकेत दे रहे थे।

अब आधी दूरी तय हो चुकी थी; बाकी आधी दूरी मुझे शिखर तक ले जाएगी। चट्टानें ढेरों में पड़ी थीं, और जिस रास्ते पर मैं चल रहा था वह उनके बीच से टेढ़ा-मेढ़ा होकर गुजर रहा था, मानो बाघिन अपना रास्ता चुनते हुए चल रही हो ताकि उसका कोई भी बोझ चट्टानों के बीच न फंस जाए। तीन बजने में दस मिनट बाकी थे; सूरज नंगी चट्टानों पर बेरहमी से चमक रहा था, और बदले में वह गर्मी भट्टी के दरवाजे से निकलती हुई गर्मी की तरह मेरे चेहरे पर वापस आ रही थी। मेरे कपड़े पसीने से भीगे हुए थे, जो नदियों की तरह मेरे चेहरे से बहकर मेरी आँखों में जा रहा था, जिससे मेरी आँखें जल रही थीं और उनमें जलन हो रही थी, और मेरे होंठों के कोनों तक पहुँच रहा था। मैंने अपने होंठ चाटे और मुझे याद है कि उस पल की उत्तेजना में लगभग अनजाने में ही मैंने नमकीन स्वाद महसूस किया।

गर्म चट्टानों पर चलते हुए मेरे रबर के बूटों से कोई आवाज़ नहीं आई। एक के बाद एक मोड़ आते गए, और हर मोड़ पर मुझे पता था कि आगे क्या है। फिर मैं एक ढलान वाली चट्टान पर पहुँचा जो ऊपर

उठती ज़मीन से लगभग तीन सौ डिग्री के कोण पर मिलती थी, जिससे एक असली गुफा की बजाय एक उथला गड्ढा बन गया था। काले रंग की धारियों वाले, नीचे से सफेद, गहरे भूरे रंग के दो बड़े गोले एक-दूसरे पर गिर रहे थे और 'पकड़ो पकड़ो' का ज़ोरदार खेल खेल रहे थे। वे बाघ के दो बच्चे थे, और वे खेल रहे थे!

मैं थम सा गया; बस राइफल के हल्के से लोड होने की हल्की सी आवाज आई, जो सुनाई नहीं दी। पर इतना ही काफी था! हालांकि वे सिर्फ शावक थे, लेकिन पीढ़ियों से चली आ रही सहज प्रवृत्ति उनमें समाई हुई थी। उन्होंने खेलना बंद कर दिया, खुद को छुड़ाया और घबराहट भरी निगाहों से मेरी तरफ देखने लगे।

मुझे आज भी वह दृश्य याद है: एक शावक के चेहरे पर मासूमियत भरी हैरानी का भाव था, और दूसरे के चेहरे पर झुर्रियां पड़ गई थीं, मानो वह घबराहट में फुफकार रहा हो।

वो फुफकार एक भयंकर तूफान का संकेत थी, क्योंकि उसने सो रही बाघिन को जगा दिया। गरजती हुई दहाड़ों की एक श्रृंखला के साथ वो गुफा से बाहर निकली, शावकों के ऊपर से छलांग लगाई और सीधे मेरी ओर आ गई।

दूरी लगभग बीस गज रही होगी। जैसे ही वह आगे बढ़ी, मैंने उसकी आँखों के बीचोंबीच निशाना साधा। फिर पाँच गज दूर जाकर वह रुक गई; वह पेट के बल ज़मीन पर लेट गई, आँखें धधक रही थीं और मुँह चौड़ा खुला हुआ था, जबकि उसकी दहाड़ और गुर्राहट से वह ज़मीन भी काँप रही थी जिस पर मैं खड़ा था। वह देखने में तो एकदम सटीक थी, लेकिन निश्चित रूप से आदमखोर नहीं थी!

आश्चर्य की बात यह थी कि वह घर की ओर नहीं दौड़ी। आखिरी क्षण में उसका साहस जवाब दे गया। वह मुझे सरल शब्दों में कह रही थी: 'जल्दी निकल जाओ, और मेरे बच्चों को नुकसान मत पहुँचाना वरना मैं तुम्हें मार डालूँगी।'

मुझे ऐसा करने में खुशी हुई। धीरे-धीरे मैं पीछे हटता गया, अपनी निगाहें उसकी आँखों से हटाए बिना, राइफल के निशाने को जरा भी हिलने दिए बिना, मेरी तर्जनी उंगली अभी भी ट्रिगर पर थी।

और वह वहीं डटी रही! ऐसा लगा जैसे उसे समझ आ गया हो कि मैं जा रहा हूँ। उसी क्षण मुझे एहसास हुआ कि वह मुझे नुकसान नहीं पहुँचाना चाहती थी; वह तो बस अपने बच्चों की रक्षा कर रही थी। शायद वह डरी हुई थी। मैं भी डरा हुआ था! लेकिन मैं उसे नुकसान नहीं पहुँचाना चाहता था, न ही उस प्यारे, खुशहाल छोटे परिवार को तोड़ना चाहता था।

इसलिए मैं पीछे हटता चला गया। बाघिन दहाड़ती रही। अब मैं उस पहली चट्टान के कोने से मुड़ चुका था जिसने उसे मेरी नज़रों से छिपा रखा था। तभी मैंने हिम्मत करके पीछे मुड़कर देखा कि मैं कहाँ जा रहा हूँ, हालाँकि मेरा चेहरा अभी भी बाघिन की ओर ही था, जिसने अब दहाड़ना बंद कर दिया था, लेकिन गुर्रा रही थी। मैं जानता था कि जब तक वह ये आवाज़ें निकालती रहेगी, मैं सुरक्षित हूँ; मुझे पता चल जाएगा कि वह कहाँ है।

एक और बड़ा पत्थर पार करने के बाद, मैं मुड़ा और जल्दी से पीछे हट गया, इससे पहले कि वह अपना इरादा बदलकर मेरे पीछे आती। उसने गुर्राना बंद कर दिया, और मैं समझ गया कि असली खतरा आ गया है। हो सकता है वह अपने बच्चों के पास वापस चली गई हो, या हो सकता है वह मेरा पीछा कर रही हो। मैं जितनी जल्दी हो सके पहाड़ी से नीचे उतरा, बार-बार पीछे मुड़कर देखता रहा। जल्द ही मैं पेड़ों और खजूर के पेड़ों के पास पहुँचा, फिर लैंटाना की पट्टी के पास, जिस पर मैं बड़ी मेहनत से पगडंडी पर चला था, और अंत में बांस और सड़क के पास।

शाम के 4:30 बज रहे थे और निर्देशानुसार मेरे साथी बैलूर लौट चुके थे। मुझे नौ मील का सफर तय करना था और अंधेरा होने में सिर्फ दो घंटे बचे थे। फिर भी, मैंने सड़क किनारे पाँच मिनट बैठकर एक सिगरेट का आनंद लिया। मुझे लगा कि मैं इसका हकदार हूँ। मैं इस बात के लिए भी शुक्रगुजार था कि मुझे बाघिन को गोली नहीं मारनी पड़ी, क्योंकि उन दो शावकों का दृश्य अभी भी मेरी यादों में ताजा था।

बैलूर गाँव पहुँचने में मुझे साढ़े छह बज चुके थे। वहाँ मेरे तीनों साथी मेरा इंतज़ार कर रहे थे, मेरी कहानी सुनने के लिए उत्सुक थे। जब मैंने उन्हें कहानी सुनाई, तो वे इस बात से सहमत हुए कि किसी बाघिन का अपने बच्चे को पूरी तरह से काबू में न कर पाना असामान्य बात थी।

जब मैं जंगल में बने बंगले की ओर अपनी यात्रा के अंतिम चरण में उस छोटे से गाँव से निकला, तब तक अंधेरा छा चुका था। लेकिन चूंकि गाँव और बंगले के बीच लगभग आधे रास्ते में, सड़क से कुछ ही दूरी पर एक खुले मैदान में हमारा एक चारा बंधा हुआ था, तो मेरे मन में आया कि मैं वहाँ जाऊँ। यह विचार मेरे मन में क्यों आया, यह मैं ठीक से नहीं बता सकता क्योंकि मैंने बैलूर जाते समय उस जगह को पहले ही देख लिया था। यह एक सहज आवेग था, और मैंने अपना पूरा जीवन सहज आवेगों का अनुसरण करते हुए बिताया है। मैं उस छोटे से रास्ते पर मुड़ गया जो सड़क से दूर उस खुले मैदान की ओर जाता था जहाँ चारा बंधा हुआ था। चारों ओर घना अंधेरा था, सिवाय साफ नीले-काले आकाश में चमकते तारों की हल्की रोशनी के। मेरे आस-पास की झाड़ियाँ भूतिया आकार ले रही थीं, और सड़क के किनारे लगे 'बारिश के पेड़' की शाखाओं के बीच हवा रुक-रुक कर सरसरा रही थी। बीच-बीच में, एक बड़ा सागौन का पत्ता बहुत ही धीमी आवाज के साथ जमीन पर गिरता था, मानो रात का कोई विशाल पतंगा आराम करने के लिए बैठ रहा हो।

मैं उस छोटे जंगली अंजीर के पेड़ के पास पहुँचा जिसके नीचे मेरा चारा बंधा हुआ था। वहाँ परछाइयाँ ज़्यादा गहरी थीं, और चारा भूरे रंग का था। जब तक मैं उसके बहुत करीब नहीं पहुँचा, तब तक वह मुझे दिखाई नहीं दिया। पास आते ही वह लड़खड़ाते हुए खड़ा हो गया, मानो मेरे आने से चौंक गया हो, ठीक वैसे ही जैसे मैं उसकी अचानक हरकत से चौंक गया था। वह अभी भी सुरक्षित था। मैं उसके चारों ओर घूमकर दूसरी तरफ गया, ताकि उसके पिछले पैर से बंधी रस्सी की जाँच कर सकूँ, कहीं वह मुड़ तो नहीं गई थी।

और उसी क्षण आदमखोर ने हमला कर दिया।

मेरे लिए सौभाग्य की बात थी कि मैं बैल के दूसरी तरफ चला गया, जिसके परिणामस्वरूप बैल मेरे और बाघ के बीच आ गया। लेकिन मैं स्वीकार करता हूँ कि मैं पूरी तरह से हैरान रह गया था।

जिस जंगल से मैं अभी निकला था, वहाँ से ज़ोरदार भौंकने की आवाज़ आई। बैल घूम गया। मैं उसके पीछे कूद पड़ा, मेरी पीठ अंजीर के पेड़ के तने की ओर थी और मैं लगभग रस्सी से टकराकर गिरते-गिरते बचा। एक विशाल धूसर आकृति बैल की पीठ पर उछल पड़ी, और अचानक पड़े भार से बैल गिर पड़ा।

लेकिन बाघ ने बैल की गर्दन या गला नहीं पकड़ा था। वह तो बस बैल पर कूद पड़ा ताकि मेरे पास पहुँच सके। सौभाग्य से, बैल के गिरने से बाघ की छलांग नाकाम हो गई, वरना वह पलक झपकते ही उसके पीछे आ जाता।

गिरे हुए बैल के छटपटाते शरीर से बाघ खुद को अलग कर ही रहा था कि मेरी गोली उसकी आंखों के बीच जा लगी। वह बुरी तरह से पीछे की ओर मुड़ा, अभी भी बैल के ऊपर लेटा हुआ था, और बैल अब बाघ को अपनी पीठ पर लिए हुए लड़खड़ाते हुए खड़ा हो गया, उसका सिर और अगला हिस्सा आगे की ओर झुका हुआ था।

बिना सोचे-समझे, मैंने अनायास ही अपनी दूसरी गोली उस जगह पर चलाई जो मुझे बाघ के बाएं कंधे के पीछे लगी। बाघ गिर पड़ा! बाघ बाघ से लुढ़ककर मेरी ओर आया, और मेरी तीसरी गोली उसके गले में जा लगी।

बैल टस से मस नहीं हुआ। बाघ ने बेतहाशा लात मारी। और फिर अंत में सब कुछ शांत हो गया।

राइफल की टॉर्च की रोशनी से पता चला कि मेरी पहली गोली बाघ की खोपड़ी को चकनाचूर कर गई थी। दूसरी गोली थोड़ी नीचे लगी थी। भारी .405 कैलिबर की गोली बाघ की छाती के पिछले हिस्से को चीरते हुए निकल गई और उसके पेट में एक बड़ा छेद कर दिया। मेरी तीसरी गोली, जो बिल्कुल अनावश्यक थी, बाघ के गले से आर-पार हो गई, जिससे एक गहरा छेद हो गया। लेकिन मैंने उस बेचारे बाघ को मार डाला था जिसने अनजाने में मेरी जान बचाई थी।

मेरे हाथ कांप रहे थे, मेरे घुटने लड़खड़ा रहे थे, और अचानक मुझे बहुत ज़्यादा बीमार महसूस होने लगा। उस शाम की घटनाओं के बाद यह प्रतिक्रिया अचानक हुई। मैं अंजीर के पेड़ की ओर पीठ करके ज़मीन पर बैठ गया और अपना हाथ माथे पर रखा, जिसे छूते ही मुझे बर्फ़ जैसा ठंडा महसूस हुआ, यह देखकर मैं हैरान रह गया।

मैं कितनी देर तक इस हालत में रहा, यह मुझे नहीं पता। फिर मैंने अपनी पाइप ढूंढी, उसमें तंबाकू भरा और उसे जलाया। पहले कुछ कशों ने मेरे बुरी तरह से घबराए हुए मन को शांत किया और मैं जल्द ही सड़क पर वापस आ सका और बैलूर गांव की ओर अपने कदमों के निशान पर चलने लगा।

मैंने देखा कि निवासी सड़कों पर जमा थे, उत्साह और उम्मीद से भरे हुए। क्योंकि आसपास की पहाड़ियों में मेरी तीन गोलियों की आवाज गूंज उठी थी, जो घाटियों और पथरीली चोटियों पर दूर तक फैली

हुई थी। उन्होंने अनुमान लगाया था कि बंगले के रास्ते में मुझ पर हमला हुआ था, लेकिन वे सोच रहे थे कि क्या यह हमला आदमखोर जानवर ने किया था, या किसी भालू या हाथी ने।

मुझे अंधकार से निकलते देख, वे सब मेरा स्वागत करने के लिए दौड़ पड़े, मेरे तीनों नौकर सबसे आगे थे। मैं सड़क किनारे बैठ गया और उन्हें सारी कहानी सुनाई। उनके होंठों से हैरानी और अविश्वास की आहें निकलीं, फिर उन्होंने मुझे बधाई दी और मेरी सुरक्षा के लिए हार्दिक धन्यवाद व्यक्त किया।

मेरे सामने गरमागरम दूध का एक बड़ा बर्तन और केले का एक गुच्छा रखा गया। उपहार के लिहाज से यह कुछ खास नहीं था, लेकिन इससे ग्रामीणों की हार्दिक कृतज्ञता व्यक्त हुई।

आधे घंटे के भीतर ही लगभग पूरा गाँव लालटेन और मिट्टी के तेल की मशालें, एक मजबूत डंडा और रस्सियों के कुंडल लेकर बाघ को पकड़ने के लिए इकट्ठा हो गया। हम वापस उसी जगह गए और पचास से अधिक लोग उस विचित्र दृश्य को देख रहे थे, उनकी आँखें आश्चर्य से चौड़ी हो गई थीं। जेकेन को देखना विशेष रूप से दयनीय था। उसने अपने चाकू से मरे हुए बाघ पर वार करना शुरू कर दिया—मेरे लिए यह बहुत दुखद था, क्योंकि वह उस खाल को और नुकसान पहुँचा रहा था जो पहले से ही मेरी गोलियों से लगभग खराब हो चुकी थी। मैंने धीरे से, लेकिन दृढ़ता से, उसे रोका; फिर वह अपनी मृत पत्नी को याद करके फूट-फूट कर रोने लगा।

एक बलवान और बहादुर व्यक्ति के गहरे रोते हुए दृश्य को देखना सुखद नहीं होता; यह संक्रामक होता है, और मुझे अपने गले में एक अजीब सी गांठ महसूस हुई - एक ऐसी गांठ जो काफी देर तक कम नहीं हुई।

अब बताने के लिए ज़्यादा कुछ नहीं बचा है, सिवाय एक अजीबोगरीब घटनाक्रम के। अगली सुबह, बंगले पर आते समय, जेकेन उस जगह से गुज़रा जहाँ मैंने पिछली रात सड़क छोड़ी थी। पचास गज आगे जाकर उसने शौच करने का फैसला किया और एक बेर की झाड़ी के पीछे छिप गया। वहाँ उसे पहली बार पता चला कि बाघ पिछली रात मेरा इंतज़ार कर रहा था; ज़ाहिर है वह आसपास ही था, और उसने या तो मुझे सड़क पर आते हुए देखा था या मेरी आवाज़ सुनी थी।

जेकेन ने मुझे अपनी खोज के बारे में बताया और मैं खुद जाँच करने के लिए उसके साथ वापस चला गया। मैंने पाया कि उसकी बात सच थी। नरम रेत पर बाघ के पदचिह्न स्पष्ट रूप से अंकित थे, जबकि तारा-प्लम झाड़ी के नीचे की नरम घास और घनी झाड़ियाँ बाघ के शरीर के भार से अभी भी आंशिक रूप से दबी हुई थीं, हालाँकि उसे वहाँ घात लगाकर बैठे हुए बारह घंटे से अधिक समय बीत चुका था और वह मेरे आने का इंतजार कर रहा था।

फिर भी कुछ लोग मुझसे कहते हैं कि ईश्वरीय विधान, मार्गदर्शक शक्ति, अंतर्ज्ञान या छठी इंद्री जैसी कोई चीज नहीं होती; आप इसे जो चाहें कह लें। मुझे तो ईश्वरीय विधान को समझने से भी ज्यादा मुश्किल इन अविश्वासियों को समझना लगता है!

7

मुदियानूर का महान पैंथर

मुडियानूर एक छोटे से गांव का नाम है जो एक उपजाऊ घाटी के दक्षिण-पूर्वी छोर के पास बसा हुआ है, जो मोयार नदी और नीलगिरी पर्वत श्रृंखला की विशाल चट्टानों के उत्तर में और बिलिगिरिरंगन के नाम से जानी जाने वाली छोटी पर्वत श्रृंखला की तलहटी के दक्षिण में स्थित है।

इस अशांत धरती पर यह छोटी सी घाटी काल्पनिक कहानियों की उन मायावी 'सुखद घाटियों' के जितना संभव हो सके उतना करीब आती है, जिनके सपने हम अपनी बेचैन नींदों में देखते हैं। यह निश्चित है कि दोनों छोरों पर स्थित पर्वत श्रृंखलाओं के कारण कमजोर मानसून के मौसम में भी वर्षा अवश्य होगी। मिट्टी अत्यंत उपजाऊ है, विशेष रूप से पत्तों की खाद और महीन लाल दोमट मिट्टी से भरपूर है, क्योंकि हाल के वर्षों तक यह उस प्राचीन जंगल का हिस्सा थी जिसे सभ्यता के विस्तार के कारण धीरे-धीरे, लेकिन निरंतर रूप से पीछे धकेला जा रहा है। दिन के समय जलवायु समशीतोष्ण रहती है और रात में पर्वतीय चोटियों से बहने वाली ठंडी हवाओं के कारण काफी सर्द हो जाती है।

मुडियानूर के अधिकांश लोग किसान हैं, हालांकि कुछ लोग पशुपालक भी हैं, जो पशुओं के विशाल झुंड पालते हैं और उन्हें दिन के समय आसपास के जंगलों में चराने के लिए ले जाते हैं। इन पशुओं के दूध का उपयोग पूरी तरह से घी बनाने में किया जाता है, जो पिघला हुआ मक्खन होता है और पूरे भारत में खाना पकाने में इस्तेमाल होता है। मिट्टी के तेल के डिब्बों में भरा घी पहाड़ी पर बने घुमावदार रास्ते (जिसे घाट कहा जाता है) से ऊपर भेजा जाता है, जहाँ यह रास्ता डिंबम नामक छोटे से गाँव में मैसूर से सत्यमंगलम जाने वाली मुख्य सड़क से मिलता है। वहाँ घी के डिब्बों को बैलगाड़ियों—और कभी-कभी ट्रकों—पर लादकर बिक्री के लिए ले जाया जाता है। मैसूर और सत्यमंगलम में, और विशेष रूप से पास के शहर गोबिचेट्टीपलयम में, घी के अच्छे बाज़ार हैं।

इसलिए यहाँ की आबादी खुशहाल और समृद्ध है। घाटी में बहुत कम ही विदेशी आते हैं, क्योंकि बैलगाड़ी का रास्ता लगभग मोटरगाड़ियों के चलने लायक नहीं है।

कभी-कभी बाघ या तेंदुआ झुंडों पर हमला कर देते हैं; तो कभी किसान सुबह उठकर देखते हैं कि रात भर चरने वाले हाथियों ने उनके खेतों के कुछ हिस्सों को रौंद डाला है। जंगली सूअर और हिरण फसलों को मामूली नुकसान पहुंचाते हैं, लेकिन इन्हें छोटी-मोटी आपदाएँ माना जाता है और इन्हें अपरिहार्य भाग्य का नियम समझकर स्वीकार कर लिया जाता है।

इस 'महान पैंथर' का नाम इसलिए पड़ा क्योंकि यह अपने असाधारण रूप से बड़े आकार के कारण जाना जाता था। माना जाता था कि यह नीले पहाड़ों के दुर्गम इलाकों से आया था, शायद अनाइकुट्टी या सेगुर से, और मोयार नदी (जिसे आमतौर पर मैसूर खाई कहा जाता है) के पार से आया था। इसने गाँव के

मवेशियों पर हमला करना शुरू कर दिया, और बाघ की तरह गर्दन तोड़कर उन्हें मार डाला, इसलिए कुछ समय तक इसे बाघ ही समझा जाता रहा।

फिर, बढ़ते साहस के साथ, यह पैंथर मेरे मित्र ह्यूगी हेलस्टोन की जागीर में मौजूद उत्तम दुधारू गायों के झुंड को परेशान करने लगा। यह जागीर, मोयार वैली रेंच, एक उत्कृष्ट फार्म है, जो स्वाभाविक ही है, क्योंकि इसके मालिक एक असाधारण व्यक्तित्व हैं। पेशे से एक प्रतिभाशाली इंजीनियर, उनका दिमाग एक आविष्कारक की तरह तेज है—तेजी से सोचने और मूल्यों का आकलन करने में माहिर—और अपनी चतुराई से उन्होंने कई उपकरण और यांत्रिक सुधार विकसित किए हैं। इसके अलावा, ह्यूगी जन्मजात शिकारी हैं। उन्हें जंगल और उसके जानवर बेहद पसंद हैं, और उन्हें बंदूक चलाने या उसमें कुछ बदलाव करने में सबसे ज्यादा खुशी मिलती है। यांत्रिक प्रतिभा और जंगल के प्रति प्रेम के इस दुर्लभ संयोजन से मोयार वैली रेंच का जन्म हुआ; क्योंकि अथक परिश्रम और कौशल, दृढ़ संकल्प और हर बाधा को पार करने की इच्छाशक्ति के साथ, ह्यूगी ने सचमुच घने जंगल के बीचोंबीच अपना रेंच बनाया।

विशाल वन वृक्षों को काटना और साफ करना आवश्यक था। ह्यूगी ने इस स्थिति का फायदा उठाते हुए उन्हें कोयले में परिवर्तित किया और फिर उसे ट्रकों में भरकर दूर-दराज के शहरों में बेचा। ईंटें, तराशे हुए पत्थर, सीमेंट, गारा और भवन निर्माण में प्रयुक्त अन्य सभी वस्तुएं भी उन्हीं स्थानों से मंगाई जाती थीं। बढ़ई भी बाहर से मंगाए गए, जिन्होंने ह्यूगी के कुशल मार्गदर्शन में, जल्द ही बेहतर वन-लकड़ी का उपयोग भवन निर्माण कार्यों में कर लिया। देखते ही देखते एक आधुनिक इमारत खड़ी हो गई। पवनचक्की बैटरी-चार्जर के साथ, घर में बिजली की रोशनी, एक रेफ्रिजरेटर और कई आधुनिक सुविधाएं थीं। इसके अलावा, कृषि मशीनरी भी आयात की गई, जिससे मोयार वैली रेंच देखते ही देखते एक समृद्ध फार्महाउस बन गया।

ह्यूगी के कई व्यावसायिक हित हैं और वे अक्सर विदेश यात्रा करते हैं। कभी-कभी वे कुछ हफ्तों में लौट आते हैं, लेकिन कभी-कभी वे महीनों तक अनुपस्थित रहते हैं, और यह कहानी उनकी एक लंबी अनुपस्थिति से संबंधित है। उन्होंने बड़ी विनम्रता से मुझे किसी भी समय अपने फार्म पर आने का सौभाग्य दिया था, और विशेष रूप से मुझसे अपने पशुओं पर नज़र रखने का अनुरोध किया था। इसलिए एक दिन, जब हमें ह्यूगी के देखभालकर्ता, वर्गीस नामक व्यक्ति का पत्र मिला, जिसमें बताया गया था कि एक बड़े पैंथर ने ह्यूगी के सबसे अच्छे अल्सेशियन कुत्ते को मार डाला है, तो कुछ करना आवश्यक हो गया।

उस समय मैं किसी बहुत ज़रूरी और अहम काम में डूबा हुआ था और अगले दो हफ़्तों तक छुट्टी लेना नामुमकिन था। वर्गीस का पत्र गाँव की डाक से हम तक पहुँचने में छह दिन लग चुके थे। लेकिन मेरे बेटे डोनाल्ड ने पैंथर से निपटने का ज़िम्मा उठाया और मैंने खुशी-खुशी उसे यह काम सौंप दिया। स्टडबेकर कार का एक एक्सल एक महीने पहले टूट गया था और मैं अभी भी बॉम्बे से उसके बदले एक्सल के आने का इंतज़ार कर रहा था, इसलिए डोनाल्ड अपने दोस्त के घर कार उधार लेने के लिए जल्दी से चला गया।

इस बिंदु से मुझे लगता है कि बेहतर होगा कि डोनाल्ड खुद ही बाकी की कहानी सुनाए, क्योंकि अभियान से लौटने पर उसे खरी-खोटी सुनाने के अलावा मैंने इस मामले में कोई और भूमिका नहीं निभाई।

जब पिताजी ने मुझे मुडियानूर जाने को कहा, तो पहली समस्या यात्रा के लिए कार ढूंढने की थी, क्योंकि उनकी स्टडबेकर कार खराब पड़ी थी। इसलिए मुझे स्कूल के एक दोस्त रुस्तम दुधवाला का ख्याल आया। रुस्तम एक अच्छा इंसान है और उसके पास तीन-चार कारें हैं। थोड़ी सी बातचीत में ही मुझे उसे कार में दिलचस्पी दिलाने में कोई दिक्कत नहीं हुई। यात्रा के लिए ज़रूरी सामान इकट्ठा करने और पिताजी का भाग्यशाली बाघ-आशीर्वाद उधार लेने में मुझे सिर्फ चार घंटे लगे, जो उन्हें सालों पहले बुद्धिया नाम के एक जंगली आदमी ने दिया था। मुझे पता है कि पिताजी इस आशीर्वाद के बारे में बात नहीं करते, क्योंकि उन्हें लगता है कि लोग उनका मज़ाक उड़ाएंगे, लेकिन मुझे यह भी पता है कि उन्हें इस पर बहुत विश्वास है। यह आशीर्वाद असल में बांस के एक छोटे टुकड़े में लिपटा हुआ है, जिसे हाथी की पूंछ के बाल से बांधा गया है। इसके अंदर क्या है, यह मुझे नहीं पता। इसे गले में पहना जा सकता है, क्योंकि बांस एक डोरी से बंधा हुआ है, लेकिन पिताजी आमतौर पर इसे अपनी जेब में रख लेते हैं।

जाने से ठीक पहले मैंने अपने एक और दोस्त, सेड्रिक बोन को साथ ले जाने का सोचा। वह एक शौकीन फोटोग्राफर और अच्छे स्वभाव का व्यक्ति है, और मुश्किल परिस्थितियों में भी शानदार ढंग से रह सकता है। सेड्रिक आने के लिए तैयार हो गया, और जल्द ही हम तीनों मुडियानूर के लिए निकल पड़े। मैं अपने साथ .423 माउज़र राइफल ले गया, जो पिताजी की पुरानी .405 विंचेस्टर राइफल से कहीं बेहतर है। वह खुद यह जानते हैं, लेकिन सभी पुराने ख्यालों वाले लोगों की तरह, उन्हें भी पुरानी चीज़ों से चिपके रहना पसंद है। मैं अपने साथ .3006 स्प्रिंगफील्ड राइफल भी लाया था, जिसे मैं खाने के लिए हिरण का शिकार करने के लिए रिजर्व राइफल के रूप में रखता था। मेरे पिताजी मुझे हिरण मारने के खिलाफ उपदेश देते रहते हैं और मैं उनकी बात सुनने का नाटक करता हूँ। जब वह आस-पास होते हैं, तो बेशक, ऐसा करना वर्जित है; लेकिन जब वह नहीं होते, तो मामला बिल्कुल अलग होता है।

'मुदियानूर जाने वाले रास्ते के आखिरी सत्रह मील बहुत खराब थे, और हमें वहाँ पहुँचने में लगभग आठ घंटे लग गए। वर्गीस ने मुस्कुराते हुए मेरा स्वागत किया, हालाँकि मुझे लगा कि वह थोड़ा निराश था क्योंकि पिताजी साथ नहीं आए थे। आजकल यही समस्या है। मेरे जैसे युवाओं की अक्सर कद्र नहीं की जाती और बड़े-बुजुर्ग हमें कुछ हद तक गैरजिम्मेदार समझते हैं। वे भूल जाते हैं कि वे भी कभी जवान थे।'

खैर, वर्गीस ने हमें बताया कि गाँव के मवेशियों के अलावा, उस बड़े पैंथर ने तीन दिन पहले श्री हेलस्टोन की एक गाय को भी मार डाला था। इसलिए तत्काल समस्या यह थी कि कुछ अधपके बैलों के रूप में जीवित चारा खरीदा जाए, और इस उद्देश्य के लिए रुस्तम बहुत काम आया।

‘मैं आपको रुस्तम के बारे में कुछ बताता हूँ। वह बाईस साल का है और पारसी है, जो भारत में शुरुआती फारसी प्रवासियों के वंशज हैं। वह एक बहुत अमीर परिवार से आता है, जिसके पास मुंबई में लाखों रुपये की संपत्ति है, जिससे एक दिन में इतनी आमदनी होती है कि मुझे कई बार खरीदा जा सकता है। इसके अलावा, रुस्तम के पिता एक चतुर व्यापारी हैं, जिनकी आमदनी संपत्ति से होने वाली मासिक आमदनी से भी अधिक है। वह बहुत ही खेल प्रेमी हैं और अपने बेटे से बहुत प्यार करते हैं, लेकिन कभी-

कभी रुस्तम को शिकार पर जाने देने के मामले में वे बेवजह सख्त हो जाते हैं। जब ऐसा होता है, तो रुस्तम और मैं आमतौर पर अपने पिता को श्री दुधवाला से मिलने के लिए आमंत्रित करने का जुगाड़ कर लेते हैं, क्योंकि जब ये बुजुर्ग मिलते हैं और एक-दो घंटे बातचीत करते हैं, तो हमारी शिकार यात्रा पक्की हो जाती है।'

खैर, मैं आपको जो बता रहा था, उस पर वापस आते हैं। रुस्तम चार जवान बैल लाया, जिन्हें हमने उस जगह के पास अलग-अलग जगहों पर बांध दिया, जहाँ हाल ही में उस बड़े पैंथर ने शिकार किया था। इनमें से पहला हमने जंगल की सीमा रेखा के पास बांधा, जो श्री हेलस्टोन की जागीर से सटी हुई है। दूसरा हमने लगभग एक चौथाई मील दूर, घने बांस के जंगल से घिरी एक छोटी झील के पास बांधा। तीसरा हमने मुडियानूर गाँव के बाहरी इलाके में बांधा, और आखिरी मुडियानूर में आने वाले बैलगाड़ी के रास्ते पर ही बांधा। पिताजी हमेशा चारे के साथ अपना मचान लगाते हैं; लेकिन चूंकि वर्गीस ने श्री हेलस्टोन के पोर्टेबल मचान का उपयोग करने की पेशकश की थी, इसलिए मैंने शिकार होने के बाद ही अपना मचान लगाने का फैसला किया।

हमने अपने शिकार को सुरक्षित रखने के लिए उसके पिछले पैरों को जमीन में गाड़े गए मजबूत खूंटों से बांध दिया, क्योंकि जीवित शिकार के गले में रस्सी डालना एक गलती होती है। कभी-कभी तेंदुआ, और खासकर बाघ, गले में रस्सी बंधे जानवर पर हमला करने से हिचकिचाते हैं। वे गर्दन पकड़कर मारते हैं, और रस्सी को लेकर वे संशय में रहते हैं, क्योंकि यह उनके रास्ते में बाधा बन सकती है।

आखिरी समय में वर्गीस ने हमें बताया कि पिछले दो दिनों से बंगले के आसपास एक बाघ मंडरा रहा था। इसलिए, मैंने रस्सी की जगह श्री हेलस्टोन की चेन का इस्तेमाल उनके बंगले के पास जंगल की सीमा पर बंधे चारे को सुरक्षित करने के लिए किया। ऐसा इसलिए क्योंकि मुझे लगा कि अगर बाघ इस बैल को मार देता है तो वह रस्सी तोड़कर उसे ले जा सकता है। चूंकि कोई और चेन नहीं थी, इसलिए बाकी तीन चारे रस्सी से ही बंधे रहने दिए गए।

रुस्तम उस रात मुडियानूर गाँव के आसपास के खेतों में जंगली सूअर का शिकार करने जाना चाहता था, लेकिन मैंने उसे रोक दिया, क्योंकि गोली चलने से पैंथर घबरा सकता था। अगली सुबह, हमारे चारों शिकार ज़िंदा थे और हम निराश हो गए। लेकिन जैसा कि पिताजी ने मुझे सिखाया है, शिकार धैर्य का खेल है, इसलिए मैंने रुस्तम को चुप रहने और एक-दो दिन तक किसी भी प्रगति की उम्मीद न करने को कहा। तीसरी रात को बड़े तेंदुए ने बंगले के पास जंगल की सीमा पर बंधे बैल को मार डाला। संयोग से उसी रात बाघ ने जंगल के तालाब के पास बांसों के बीच बंधे दूसरे शिकार को भी मार डाला।

अब मेरे सामने एक मुश्किल खड़ी हो गई थी। मैंने मन ही मन कहा, "पैंथर भाड़ में जाए, मैं बाघ को मारूंगा।" लेकिन कुछ और बातें भी ध्यान में रखनी थीं: रुस्तम ने मुझे याद दिलाया कि मेरा मकसद उस पैंथर को मारना था जिसने मिस्टर हेलस्टोन के मवेशियों को मार डाला था। इसलिए पैंथर का शिकार करना मेरी ज़िम्मेदारी थी। मुझे पता था कि वह सही कह रहा है और पिताजी भी यही कहते। फिर भी, बाघ का

शिकार करने का मौका गंवाना मुझे थोड़ा मूर्खतापूर्ण लग रहा था, और मैंने रुस्तम को पैंथर का शिकार करने के लिए मनाने की बहुत कोशिश की। लेकिन उसमें अपने पिता की कुछ व्यावसायिक समझ थी, और वह अपनी पुरानी दलीलों पर अड़ा रहा। इसलिए, जब मुझे एहसास हुआ कि मैं फंस गया हूं, तो मुझे हार माननी पड़ी।

'सेड्रिक ने मेरे साथ आकर बैठने का फैसला किया, क्योंकि उसे लगा कि मेरे साथ रहने से बड़े पैंथर को देखने की संभावना रुस्तम के साथ जाने की तुलना में अधिक है। उसे लगा कि रुस्तम बहुत शोर मचाएगा और बाघ के शिकार के पास आने से पहले ही उसे भगा देगा।'

तो मैंने काम शुरू किया और श्री हेलस्टोन का पोर्टेबल मचान उस पेड़ पर टांग दिया जो मरे हुए बैल से लगभग तीस गज की दूरी पर था। रुस्तम ने भी ग्रामीणों से उस पेड़ पर मचान लगवाया जो उस जगह के पास था जहाँ दूसरे बैल को बाघ ने मारा था। मैं यह बताना भूल गया था कि इन चारों चारों को बांधते समय मैंने सावधानी बरती थी और उन्हें पेड़ों के पास बांधा था, ताकि बाद में मचान लगाने में कोई परेशानी न हो।

दोनों दल शाम करीब 4 बजे बंगले से निकले। रुस्तम को लंबी दूरी तय करनी थी, इसलिए वह और वर्गीस, अपने साथ सैंडविच, पानी की बोतल, टॉर्च, गर्म मफलर, कंबल और अन्य सामान लेकर तेज़ी से चल पड़े। सेड्रिक और मैं अपने खाने के पैकेट और एक पानी की बोतल के साथ जंगल की सीमा तक धीरे-धीरे चलते रहे। हमें लगा कि कंबल की कोई ज़रूरत नहीं है क्योंकि मौसम गर्म लग रहा था।

किसी मचान पर बैठना बहुत उबाऊ होता है, और मुझे हमेशा एक जगह स्थिर रहना मुश्किल लगता है। मेरे पिताजी ने मुझे कई बार कहा है कि मूर्ति की तरह बैठना बहुत ज़रूरी है, लेकिन वे ऐसा कैसे करते हैं, यह मुझे नहीं पता। मैं उनके साथ कई बार बैठा हूँ और उनका तरीका है कि वे अपने पैर मोड़कर आराम से बैठ जाते हैं, पाइप पीते हैं, थर्मस से थोड़ी सी चाय पीते हैं, और फिर पूरी रात मूर्ति की तरह बैठे रहते हैं। लेकिन मेरे साथ तो तरह-तरह की चीजें होती हैं। मेरे पैरों में झुनझुनी होने लगती है, मेरी पीठ अकड़ जाती है और दर्द करने लगती है, और मच्छर मुझे बहुत परेशान करते हैं: वे न सिर्फ मुझे काटते हैं, बल्कि मेरे कानों और नाक में भी घुस जाते हैं और उनसे छुटकारा पाने का एकमात्र तरीका है कि जब वे खून चूसने के लिए बैठें, तब उन्हें ज़ोर से थप्पड़ मार दिया जाए। पिताजी कहते हैं कि मचान पर ऐसा करना ठीक नहीं है; लेकिन शायद वे भूल जाते हैं कि मेरा खून, जवान होने के कारण, शायद मच्छरों को उनके खून से ज़्यादा आकर्षित करता है। मुझे पूरा यकीन है कि आप समझ जाएंगे कि बूढ़े लोगों को युवा लोगों को यह बताने में काफी आनंद आता है कि उन्हें क्या नहीं करना चाहिए।

खैर, जब शाम सात बजे अंधेरा हुआ, तब तक मच्छर हम दोनों, सेड्रिक पर बुरी तरह से हमला कर रहे थे। मैंने सेड्रिक को मच्छरों को मारने से मना किया था, शायद इसीलिए जब मैंने ऐसा किया तो उसने मुझे एक-दो बार धक्का दिया। समय बीतता गया, और फिर लगभग पौने आठ बजे, हमने एक लंबी सी वस्तु देखी, जो अंधेरे में भूरे रंग की दिख रही थी, मानो कहीं से प्रकट हुई हो। मुझे यह स्पष्ट करना होगा कि, हालांकि चाँद नहीं था, चारों ओर तारों की हल्की रोशनी थी जो जंगल में हमेशा अधिक चमकते हुए दिखाई

देते हैं। कम से कम इतनी रोशनी तो थी कि बड़े पेड़ और वह भूरी वस्तु दिखाई दे रही थी, लेकिन मरा हुआ बैल नहीं, जो काला था। खैर, वह भूरी आकृति उस जगह की ओर बढ़ी जहाँ बैल पड़ा था, और थोड़ी देर बाद हमने जंजीर की खड़खड़ाहट सुनी, उसके बाद खाने की आवाज़ और हड्डियों के चटकने की आवाज़ आई। धीरे-धीरे मैंने अपनी राइफल कंधे पर उठाई, लेकिन किस्मत से राइफल की नली से बंधी मेरी टॉर्च पेड़ से टकरा गई और हल्की सी आवाज़ हुई। शिकार की दिशा से एक ज़ोरदार गुर्राहट सुनाई दी और वही धूसर वस्तु जंगल की सीमा पार करके मेरी बाईं ओर चलने लगी। थोड़ी देर में वह गायब हो गई, और फिर लगभग दस मिनट बाद, मेरी दाईं ओर, लगभग हमारे नीचे, फिर से दिखाई दी। मुझे चाटने की आवाज़ सुनाई दी, और ऐसा लगा कि पैंथर वहाँ अपने पिछले पैरों पर बैठा है। इस बार मैंने राइफल को ठीक से निशाना बनाया और अपनी टॉर्च का स्विच दबाया। तेज़ रोशनी से पैंथर ज़मीन पर कुत्ते की तरह बैठा हुआ दिखाई दिया, जो मुश्किल से बीस गज दूर था। उसने मेरी ओर देखा, और मैंने तुरंत निशाना साधकर ट्रिगर दबा दिया। मेरी सबसे अच्छी दोस्त, .432 राइफल, दहाड़ उठी, और पैंथर एक तरफ गिर गया। मुझे लगा कि अब वह मर चुका है, लेकिन फिर वह अचानक उठा और उस पेड़ के नीचे जंगल में कूद गया जहाँ हम बैठे थे।

यह सब होते हुए सेड्रिक बहुत उत्साहित था, क्योंकि पैंथर के गायब होते ही वह नीचे उतरने के लिए तैयार हो गया। मैंने उसे रोका, और उसने कहा, "चलो, उसके पीछे चलते हैं।" लेकिन मैंने उसे मूर्खता न करने के लिए कहा और कहा कि बेहतर होगा कि हम सुबह तक इंतजार करें।

हम वहां करीब एक घंटे और बैठे रहे। मच्छर इतने असहनीय हो गए कि हमने नीचे उतरकर बंगले में वापस जाने का फैसला किया। मैं पहले नीचे उतरा और सेड्रिक ने मुझे राइफल थमा दी। फिर वह पानी की बोतल लेकर मेरे पीछे आया। आखिरी छह फीट उसने छलांग लगाकर पार किए और जैसे ही वह धड़ाम से जमीन पर गिरा, पास से एक भयानक दहाड़ सुनाई दी। मैं मुड़ा और टॉर्च जलाकर राइफल को आवाज की दिशा में तान दिया, लेकिन हमें कुछ भी दिखाई नहीं दिया। कुछ मिनट इंतजार करने के बाद, हम कुछ कदम आगे बढ़े, लेकिन वहां लैंटाना की झाड़ियाँ बहुत घनी थीं और अंधेरे में आगे बढ़ना असुरक्षित लग रहा था। फिर हम उस जगह गए जहां पैंथर बैठा था जब मैंने गोली चलाई थी, और खून के निशान ढूंढने लगे।

टॉर्च की रोशनी में कोई निशान नहीं दिख रहा था और मेरे मन में यह चिंताजनक ख्याल आया कि शायद मेरी गोली पैंथर को पूरी तरह से चूक गई हो। मैंने दबी आवाज़ में सेड्रिक से इस बारे में बात की, लेकिन उसे पूरा यकीन था कि मेरी गोली पैंथर को लगी थी। फिर भी, मुझे संदेह था और आखिरकार हमने मचान पर वापस जाने का फैसला किया, इस बहुत कम संभावना के साथ कि शायद मेरी गोली चूक गई हो और पैंथर बाद में अपने शिकार के पास लौट आए।

मच्छरों और सुबह होते ही शुरू हो चुकी भीषण ठंड के कारण बाकी की रात बेहद असहज रही। फिर भी हमने हिम्मत नहीं हारी और भोर होते ही हम दोनों बेहद उदास और निराश हो गए। हम पेड़ से नीचे उतरे और लगभग एक घंटे तक नीचे हरी घास पर लेट गए, ताकि सूरज को उगने का मौका मिले और

हमारी अकड़ी हुई मांसपेशियां ढीली हो जाएं। फिर, सात बजने के कुछ ही देर बाद, हमने गंभीरता से खून के निशान ढूंढना शुरू किया। थोड़ी देर में मुझे तसल्ली मिली जब मुझे कुछ बूंदें मिलीं जहाँ पैंथर लैंटाना में घुसा था, और फिर झाड़ियों के अंदर लगभग चालीस गज की दूरी पर काफी मात्रा में खून मिला। अब यह बिल्कुल स्पष्ट हो गया था कि उसे बुरी तरह चोट लगी थी और वह यहीं लेट गया था; और यह भी कि पिछली रात जब सेड्रिक पेड़ से नीचे कूदा था, तब इतनी जोर से गुर्राने वाला वही पैंथर था। दरअसल, यह समझ में आया कि पैंथर ने उस समय हम पर हमला नहीं किया था और हमें सोते हुए पकड़ लिया था।

'सेड्रिक ने उस जगह की तस्वीर खींची। वह उन कैमरा प्रेमियों में से एक है जो लगभग हर चीज की तस्वीरें खींचते हैं।'

मैंने देखा कि इस बिंदु से सौ गज से भी अधिक दूरी तक खून का निशान दिखाई दे रहा था। इस दूरी के भीतर वह एक बार फिर लेट गया, जिससे यह पुष्टि हो गई कि उसे गंभीर चोट लगी थी। फिर खून का निशान धुंधला हो गया, शायद इसलिए कि वसा, या झिल्ली के एक टुकड़े ने गोली के छेद को ढक लिया था और बाहरी रक्तस्राव को रोक दिया था।

'झाड़ियाँ काफी घनी थीं और हमने हर जगह ध्यान से तलाशा, लेकिन कोई पैंथर नहीं मिला। जंगल की सीमा रेखा आगे बढ़ती रही, और मैं उसके किनारे-किनारे चलता रहा, लैंटाना की झाड़ियों में झाँकते हुए उस जानवर को देखने की उम्मीद कर रहा था।'

मैं शायद सौ गज और आगे बढ़ गया था, सेड्रिक लगभग बीस कदम की दूरी पर अपने कैमरे के साथ जंगल की खुली सीमा के किनारे-किनारे चल रहा था, तभी अचानक यह घटना घटी। ज़ाहिर है, पैंथर खुले मैदान के दूसरी तरफ एक झाड़ी के नीचे छिपा हुआ था और मेरी नज़र से बच गया था। उसने मेरे गुज़र जाने का इंतज़ार किया और फिर, अपनी खास खाँसी भरी आवाज़ के साथ, मुझ पर हमला कर दिया। सेड्रिक लगभग उसी जगह पर था जहाँ पैंथर छिपा हुआ था, और यह एक रहस्य है कि कैसे पैंथर ने उसे नहीं देखा और मुझ पर हमला करने के बजाय उस पर हमला कर दिया, और यह सेड्रिक के लिए बहुत बड़ी किस्मत की बात है। शायद पैंथर मुझे देखने और अपने अचानक हमले की तैयारी में व्यस्त था। खैर, उसने हमला तो किया, लेकिन उस खाँसी भरी आवाज़ को सुनकर मैं समय रहते पलट गया और उसे आते हुए देख लिया। सौभाग्य से, पिछली रात मेरी चलाई गोली ने उसके दाहिने अगले पैर को चकनाचूर कर दिया था, जो घिसटता हुआ आगे बढ़ता गया।

मैंने अपनी राइफल को अपने बाएं कंधे पर रखा—जहां से मैं गोली चलाता हूं—मैंने ट्रिगर दबाया और गोली उसके गले में जा लगी। वह आगे की ओर सीने के बल गिर पड़ा, अभी भी जोर से गुर्रा रहा था, और इससे मुझे दूसरी गोली चलाने का समय मिल गया।

तभी मैंने देखा कि सेड्रिक मेरे ठीक पीछे था और उत्साह से झूम रहा था। वह मेरी सीधी गोलीबारी की चपेट में आ गया था, और हो सकता है कि मैंने पैंथर की जगह उसे ही गोली मार दी होती। लेकिन इस अद्भुत उत्साही ने हमले की तस्वीर खींच ली। सेड्रिक में इतनी हिम्मत कैसे आई कि उसने तस्वीर खींची,

जबकि सौ में से निन्यानवे आदमी, जो उसके जैसे निहत्थे थे, दुम दबाकर भाग जाते, यह मेरी समझ से परे है। इससे बस यही पता चलता है कि फोटोग्राफी के प्रति उसके जुनून ने उसे बाकी सब कुछ भुला दिया। वह मुझे बताता है कि उसने बस कैमरा निशाना लगाया और बिना सोचे-समझे शटर दबा दिया।

जब हम खुशखबरी सुनाने के लिए बंगले पर लौटे, तो हमने पाया कि रुस्तम और वर्गीस पहले ही वापस आ चुके थे, वे लगभग 2 बजे तक जागे रहे थे। इस समय तक मच्छर उन पर हावी हो चुके थे, और चूंकि बाघ दिखाई नहीं दिया था, इसलिए रुस्तम और उसके साथी ने दिन का काम समाप्त करने और झपकी लेने के लिए बंगले पर वापस जाने का फैसला किया था।

'हम पैंथर को नौ बजे तक अंदर ले आए और लगभग एक घंटे में उसकी खाल उतार ली। यह काफी बड़ा नर पैंथर निकला, जिसकी नाक से पूंछ तक की लंबाई 7'8" थी।'

दोपहर का भोजन जल्दी करने के बाद, मैंने रुस्तम से कहा कि हमें उस बैल को देखने जाना चाहिए जिस पर वह बैठा था। मैं आपको यह बताना नहीं भूलूंगा कि इस बीच, वर्गीस ने तीसरे और चौथे जानवर का पता लगाने के लिए कुछ लोगों को भेजा था। वे लोग लौटकर हमें यह सूचना देने आए कि दोनों जानवर अभी भी जीवित हैं।

जब हम रुस्तम के मचान पर पहुँचे, तो हमने पाया कि बाघ अपने शिकार के पास लौट आया था, संभवतः रुस्तम के नीचे उतरने के बाद सुबह तड़के। शायद वह देख रहा था और उसे पता चल गया था कि रुस्तम ऊपर है। बाद में जब आसपास कोई नहीं था, तो वह देर रात का भोजन करने वापस आया था। बैल का लगभग तीन-चौथाई हिस्सा खा चुका था।

रुस्तम बेहद निराश था, लेकिन उसने फिर से उठने का पक्का इरादा कर लिया था। तभी मुझे एक विचार आया। समझदारी से, या नासमझी से, मैंने वर्गीस को एक आदमी के साथ हमारा चौथा चारा लाने भेजा, जिसे मुडियानूर गाँव की ओर जाने वाले रास्ते पर बाँधा गया था। उस जानवर को लाने में लगभग दो घंटे लगे, और हमने उसे पुराने शिकार के अवशेषों से लगभग तीस कदम दूर बाँध दिया। ऐसा करने के पीछे मेरी यह उम्मीद थी कि अगर बाघ पुराने शिकार पर लौटने में हिचकिचाए, जो दो दिन से मरा पड़ा था और बुरी तरह बदबू मार रहा था, तो शायद वह उस पर हमला कर दे। रुस्तम ने इस योजना का विरोध किया, क्योंकि उसे लगा कि बाघ एक दिन पहले मरे हुए बैल की जगह एक ज़िंदा बैल को देखकर डर जाएगा। लेकिन मुझे लगा कि जोखिम लेना उचित होगा।

शाम करीब 5:30 बजे, हम तीनों, रुस्तम, सेड्रिक और मैं, मचान में घुस गए। हमने पहले से ही छिपने के लिए ताज़ी हरी पत्तियाँ बिछा रखी थीं, क्योंकि पिछली रात की पत्तियाँ गर्मी से मुरझा गई थीं। रुस्तम को पहली तस्वीर लेनी थी, और मैं उसके बाद। सेड्रिक ने एक और रोमांचक तस्वीर लेने की उम्मीद में अपने प्यारे कैमरे में फ्लैश बल्ब और रिफ्लेक्टर लगा रखा था।

शाम ढलते ही पास के तालाब से तरह-तरह के अनगिनत कीड़े-मकोड़े निकलकर हमारी जिंदगी को मुश्किल बना देते थे। लेकिन हम जवान थे और बेहद उत्सुक थे। रुस्तम लंबे समय से बाघ का शिकार करने के मौके का इंतजार कर रहा था।

आठ बज गए, फिर नौ और दस, लेकिन थोड़ी देर बाद हमें बाघ की कराहने की आवाज सुनाई दी, जो तालाब से लगभग एक मील दूर पहाड़ी से नीचे उतर रहा था। लगभग पैंतालीस मिनट बीत गए, तभी हमारे बाईं ओर घने बांसों के बीच से एक ककार ने कर्कश आवाज निकाली। यह स्पष्ट था कि बाघ आ रहा था, और हम सभी तीव्र उत्साह से भर गए थे।

हम इंतज़ार करते रहे। यहाँ पिछली रात मेरे मचान की तुलना में बहुत ज़्यादा अँधेरा था, क्योंकि यहाँ बाँस थे। मैंने रुस्तम से फुसफुसाकर कहा कि वह तब तक इंतज़ार करे जब तक बाघ या तो ज़िंदा बैल पर हमला न कर दे या अपने पुराने शिकार के पास वापस न आ जाए, तब मैं टॉर्च से निशाना लगाने में उसकी मदद करूँगा। सौभाग्य से, ज़िंदा बैल सफ़ेद रंग का था, और हम उसे धुंधला-सा देख पा रहे थे, और उसकी गुर्राहट और छटपटाहट सुन पा रहे थे, क्योंकि वह अपने पैर को रस्सी से छुड़ाने की कोशिश कर रहा था। यह स्पष्ट था कि उस जानवर को आने वाले खतरे और अपने अंजाम का कुछ आभास ज़रूर हो गया था।

दस मिनट तक सन्नाटा छाया रहा। फिर एक गहरी "भौंक" की आवाज़ आई और बाघ ज़िंदा बैल पर झपटा। रुस्तम दबी हुई उत्तेजना से कांप रहा था, लेकिन मैंने उसे शांत रखने के लिए उसका कंधा कसकर पकड़ लिया। उसके बाद बैल के गले से एक कर्कश गड़गड़ाहट की आवाज़ आई और उसकी गर्दन की हड्डियाँ चटक गईं और शव ज़मीन पर गिर पड़ा।

मैंने रुस्तम के कंधे पर अपनी पकड़ बनाए रखी। लगभग दस मिनट तक सन्नाटा छाया रहा, फिर बाघ ने बैल के पिछले हिस्से को काटना शुरू कर दिया, ताकि उसके अंदरूनी अंगों को फाड़कर बाहर निकाल सके।

फिर भी हम इंतजार करते रहे, और तभी हमें झिल्ली फटने की खरोंच जैसी आवाज सुनाई दी, जब बाघ ने बैल की आंतें बाहर निकालना शुरू किया। मैंने अनुमान लगाया कि अब तक उसका पूरा ध्यान अपने शिकार पर केंद्रित हो गया होगा; इसलिए मैंने धीरे से रुस्तम के कंधे से अपनी पकड़ ढीली की और उसे गोली चलाने के लिए तैयार होने का इशारा किया।

‘उसने अपनी राइफल उठाई, जैसे मैंने उठाई। लगभग दस सेकंड बाद मैंने अपनी टॉर्च का बटन दबाया। जैसे ही रोशनी निकली, बाघ, जो अपने शिकार पर हमारी ओर करवट लेकर लेटा हुआ था, मुड़ा और ऊपर देखा। उसी क्षण रुस्तम ने भी अपनी टॉर्च जला दी, और दोनों किरणों में बाघ साफ दिखाई दे रहा था, जैसे वह हमें घूर रहा हो। सेकंड बीतते गए, और मैं सोचने लगा कि क्या रुस्तम गोली चलाने वाला है। तभी, जैसे ही मैं ट्रिगर दबाने वाला था, दो बैरल वाली .405/400 राइफल की दहाड़ ने रात को चीर दिया।’

रुस्तम ने दोनों बैरल एक साथ चलाए थे, और उस भारी हथियार का झटका काफी जोरदार रहा होगा; मैंने उसे ज़ोर से पीछे की ओर गिरते हुए महसूस किया। फिर भी, दोनों गोलियां निशाने पर लगीं और कंधे के ठीक ऊपर बाघ की गर्दन में जा लगीं। जानवर ज़ोर से कांप उठा और फिर आगे की ओर गिर गया, मानो सो रहा हो। पूंछ कुछ बार फड़फड़ाई और फिर स्थिर हो गई। रुस्तम ने अपना पहला बाघ मार गिराया था।

'हमने आधे घंटे और इंतज़ार किया, लेकिन जानवर में कोई हलचल नहीं हुई; इसलिए हम मचान से नीचे उतर गए, टॉर्च की रोशनी बाघ पर ही टिकाए रखी। लेकिन वह ज़रा भी नहीं हिला। यह स्पष्ट था कि बाघ मर चुका था। जाँच करने पर रुस्तम यह देखकर बहुत खुश हुआ कि उसने एक शानदार नर बाघ को मार गिराया था, जिसकी लंबाई नाक से पूंछ तक 9 फुट 4 इंच थी।'

और इस तरह हम बेहद खुश होकर बैंगलोर लौट आए। रुस्तम को उसका बाघ मिल गया था, और मैं श्री हेलस्टोन के जानवरों को परेशान कर रहे पैंथर को मारने में कामयाब हो गया था। लेकिन हम तीनों में से मुझे लगता है कि सेड्रिक बोन सबसे ज्यादा खुश था क्योंकि उसने एक बेहद भाग्यशाली तस्वीर खींची थी और एक भयानक हमले से बाल-बाल बच गया था, अगर पैंथर ने मुझ पर हमला करने के बजाय उस पर हमला किया होता तो उसकी जान भी जा सकती थी।

मैंने पिताजी को पूरी कहानी सुनाई और उन्होंने हम दोनों को बधाई दी। लेकिन उस समय उन्हें इस बात का एहसास नहीं था कि सेड्रिक पैंथर और मेरी राइफल की गोली से बाल-बाल कैसे बचा था।

अगले दिन, जब उन्होंने तस्वीर देखी, तो उन्होंने बहुत सी अपमानजनक बातें कहना शुरू कर दिया। उस समय मुझे लगा कि वे कुछ ज्यादा ही कठोर और अनुचित थे; लेकिन अब जब मैं इसके बारे में सोचता हूँ, तो मुझे लगता है कि वह बूढ़ा आदमी सही था।

'मैंने दो बड़ी गलतियाँ की थीं। पहली, मैंने झाड़ियों में ठीक से नहीं देखा था और पैंथर को देखे बिना ही उसके पास से गुजर गया था। दूसरी, उत्तेजना में मैंने सीधे अपनी गोली की दिशा में लगभग बीस कदम की दूरी पर खड़े एक इंसान पर गोली चला दी थी। कहते हैं कि किस्मत नौसिखिए का साथ देती है, और इस मामले में भी ऐसा ही हुआ।'

8

राजनगर का हमलावर

यह कहानी सुनाए जाने के समय (नवंबर 1995), वह खूंखार जानवर अभी भी जीवित है, और उसे पकड़ने के मेरे सभी प्रयासों को विफल कर चुका है। न केवल मेरे प्रयास, बल्कि दो साल से अधिक समय तक कई अन्य शिकारियों के प्रयास भी विफल रहे।

यह हमलावर बाघ अपने आप में एक अनोखा बाघ है, क्योंकि इसकी आदतें बाघों से बिल्कुल अलग हैं और यह ऐसे इलाकों में रहता है जहाँ कई सालों से किसी बाघ के होने का कोई आभास नहीं है। इसकी आदतें बाघों से अलग इसलिए हैं क्योंकि इसके पहले के रिकॉर्ड में केवल मनुष्यों को अपने अगले पैरों से खरोंचकर घायल करने तक ही सीमित हैं। इस बाघ द्वारा किए गए ऐसे हमलों के तैंतीस मामले दर्ज हैं, जिनमें इसके शिकार मुख्य रूप से चरवाहे थे। किसी भी मामले में इसने अपने शिकार को न तो काटा और न ही मारा। हर मामले में इसने आदमी के सिर से लेकर चेहरे और गर्दन तक, और छाती और पीठ पर बुरी तरह खरोंचें मारीं।

इस व्यवहार को देखकर पहले तो मुझे लगा कि जिसे बाघ कहा जा रहा था, वह असल में एक 'तेंदुआ' ही था। लेकिन बाद में जब मैंने उसके कई पीड़ितों से पूछताछ की, तो उन सभी ने पुष्टि की कि हमला करने वाला बाघ ही था, न कि कोई तेंदुआ।

मुझे यह भी लगा कि जानवर के जबड़े, मुंह या चेहरे के किसी हिस्से में चोट लगी होगी, जिससे वह अपने शिकार को काटकर पूरी तरह से हमला नहीं कर पाया होगा। चरवाहों ने इस सिद्धांत को पूरी तरह से खारिज कर दिया और बताया कि दो साल के दौरान उसी बाघ ने उनके दो सौ से अधिक मवेशियों को मारकर खा लिया था। उन्होंने घटना के बाद कई शिकारों की जांच की थी और किसी भी मामले में ऐसा कोई सबूत नहीं मिला जिससे यह पता चले कि बाघ अपने दांतों का ठीक से इस्तेमाल करने में असमर्थ था। उसने न केवल बाघों की तरह गर्दन तोड़कर अपने शिकार को मारा था, बल्कि प्रत्येक जानवर को बहुत ही सामान्य और पूरी तरह से खाया था।

इस जानवर के बारे में अगली अजीब बात यह थी कि उसने अपने शिकार की शुरुआत जंगल के एक ऐसे हिस्से से की थी जो बाघों के लिए बिल्कुल अनुपयुक्त था, जिसमें छोटी झाड़ियाँ और कांटेदार वनस्पतियाँ थीं: पथरीली, लहरदार पहाड़ियाँ जिनके बीच-बीच में पत्थरों से भरी हुई खड़ी ढलान वाली छोटी नदियाँ बहती थीं, जिनके किनारों पर लंबी घास और कहीं-कहीं बांस के झुंड थे। यह ज्ञात था कि इस क्षेत्र में अक्सर पैंथर घूमते थे, और उन्हें यहाँ से गुजरने वाली मुख्य सड़क पर भी देखा गया था; लेकिन बाघ के बारे में मौजूदा पीढ़ी को कोई जानकारी नहीं थी।

यह वन क्षेत्र उत्तरी कोयंबटूर जिले में डिंबम ढलान के ठीक दक्षिण में स्थित है। डिंबम से 2,500 फीट से अधिक की तीव्र ढलान आपको इस शुष्क झाड़ीदार क्षेत्र में ले जाती है, जहाँ जगह-जगह ताड़ के पेड़ दिखाई देते हैं और मुख्य रूप से कांटेदार झाड़ियाँ और लैंटाना झाड़ियाँ पाई जाती हैं। अन्य वन्यजीव भी दुर्लभ हैं, जिनमें कुछ मोर और कभी-कभार दिखने वाली जंगली भेड़ें ही शामिल हैं। यह क्षेत्र अपेक्षाकृत छोटा है, उत्तर से दक्षिण तक लगभग पाँच मील और पूर्व से पश्चिम तक लगभग तीस मील लंबा है, जहाँ यह भवानी नदी से मिलता है, जो अंततः कावेरी नदी में मिल जाती है।

हमें बताया गया है कि यह बाघ मूल रूप से नीलगिरी के जंगलों से आया था, भटकते हुए मोयार नदी तक पहुंचा और फिर इस क्षेत्र में बस गया। इस इलाके के प्रति इसका लगाव आसानी से समझा जा सकता है, क्योंकि यह क्षेत्र छोटे-छोटे पशुपालन के बाड़ों से भरा हुआ है और सैकड़ों मवेशियों को चराने के लिए पूरी तरह से समर्पित है। इसलिए, प्राकृतिक जंगली जानवरों की कमी की भरपाई पालतू जानवरों की बड़ी संख्या से हो जाती है, जो किसी भी बाघ के लिए कहीं अधिक आसान शिकार होते हैं।

कहा जाता है कि शुरुआती दौर में बाघ सामान्य रूप से शिकार करता था, अपने शिकार को सामान्य रूप से खाता था और जब क्रोधित चरवाहे उसे उसके शिकार से भगा देते थे, तो वह सामान्य रूप से भाग जाता था। लेकिन, जैसा कि पुरानी कहावत है, 'किसी भी चीज़ की अति बुरी होती है!' या कम से कम, इस बाघ को ऐसा ही लगता था। चरवाहों ने स्पष्ट रूप से उसके लिए बहुत अधिक परेशानी खड़ी कर दी थी, क्योंकि वे बार-बार उसे उसके शिकार से भगाते थे।

पहला हमला, जैसा कि अक्सर होता है, एक चरवाहे लड़के पर हुआ जिसने दुस्साहस करते हुए बाघ पर पत्थर फेंका था, ठीक उसी समय जब बाघ एक अच्छी-खासी मोटी गाय को मारकर घसीट रहा था। बताया जाता है कि पत्थर बाघ के पेट में लगा; बाघ ने गाय को छोड़ दिया और लड़के पर हमला कर दिया, जिसके चेहरे और छाती पर उसने बुरी तरह खरोंचें मारीं। फिर वह वापस गया और गाय को ले आया, जिसे उसने बाद में शांति से खाया।

बाद में कई बार चरवाहों और लड़कों ने उसे उन जानवरों से दूर भगाने की कोशिश की जिन्हें उसने मार डाला था, या ले जा रहा था, या खा रहा था। हर बार बाघ ने घुसपैठिए पर हमला किया और उसे खरोंच दिया।

स्वाभाविक रूप से, जैसे-जैसे ऐसे हमले बढ़ते गए, वह और भी अकेला होता चला गया। वह स्पष्ट रूप से एक बहुत ही बुद्धिमान बाघ था और इस निष्कर्ष पर पहुँच गया था कि घुसपैठियों को मारना नहीं, बल्कि उन्हें खरोंचना उसके लिए अधिक लाभदायक था; क्योंकि इसके बाद वे उसे बिना किसी बाधा के अपने शिकार को खाने के लिए छोड़ देते थे।

और इस तरह समय बीतता चला गया। लगभग दो साल बीत चुके थे और उसके खरोंचों के शिकार लोगों की संख्या बढ़कर तैंतीस हो गई। इनमें से ग्यारह लोगों की मौत बाघ के पंजों में मौजूद सड़े हुए पदार्थ

से उत्पन्न रक्त विषाक्तता के कारण हुई। लेकिन इन मौतों को निश्चित रूप से बाघ द्वारा जानबूझकर की गई मौत नहीं माना जा सकता। ये तो हमले का केवल एक अप्रत्यक्ष परिणाम थीं।

और फिर, जुलाई 1955 में, पहला व्यक्ति वापस नहीं लौटा। यह ज्ञात था कि उस पर बाघ ने हमला किया था, क्योंकि उसकी मदद के लिए चीखों ने पास खड़े एक अन्य चरवाहे को यह जानकारी दी थी। यह व्यक्ति स्वाभाविक रूप से भाग गया था। पहले के मामलों में, पीड़ित आमतौर पर लड़खड़ाते हुए मुख्य सड़क या मवेशी गांव तक पहुँचने में कामयाब हो जाते थे, जो भी पास होता था। लेकिन यह पीड़ित वापस नहीं लौटा। लगभग दो घंटे बाद एक खोज दल उसकी तलाश में निकला। वे उस स्थान पर पहुँचे जहाँ हमला हुआ था। इस बार उन्हें मरी हुई गाय तो मिली, लेकिन चरवाहा नहीं मिला। दल में आगे खोज करने का साहस नहीं था, और चरवाहा फिर कभी नहीं मिला।

लगभग आधा दर्जन और हमले हुए, जिनमें से तीन में पीड़ित हमेशा की तरह बुरी तरह से खरोंचे हुए मिले। लेकिन बाकी तीन नहीं मिले। और न ही उन्हें फिर कभी देखा गया। इसलिए, जिस समय मेरी कहानी वास्तव में शुरू होती है, उस समय आधिकारिक आंकड़ा चार हत्याओं और छत्तीस घायलों का था; हर मामले में घायल केवल खरोंचों से ही हुए थे। क्या बाघ ने वास्तव में उन चार आदमियों को खाया था जिन्हें उसने संभवतः मार डाला था, या केवल उन्हें जंगल के किसी दूरदराज के हिस्से में घसीट कर ले गया था, जहां बाद में उन्हें सियार, लकड़बग्घे और गिद्धों ने खा लिया था, यह जानने का कोई साधन नहीं था।

मैंने अखबारों में कभी-कभार इस जानवर की हरकतों के बारे में पढ़ा था, लेकिन वन अधिकारियों से आधिकारिक रिपोर्ट मिलने तक मुझे कोई विस्तृत जानकारी नहीं थी। लगभग इसी समय मेरे पास कुछ दिनों की छुट्टी भी बची थी और मैंने सोचा कि इस बाघ को पकड़ने की कोशिश में इसका सदुपयोग करना सबसे अच्छा रहेगा।

मेरे पास मौजूद वन मानचित्र और प्राप्त जानकारी के आधार पर, यह संकेत मिला कि मेरा मुख्यालय बनाने के लिए सबसे उपयुक्त स्थान राजनगर नामक छोटा सा गाँव होगा, जहाँ एक छोटा सा वनगृह था जो मुझे और मेरे सामान को आश्रय प्रदान करेगा। यह स्थान, डिंबम होते हुए, बैंगलोर से ठीक 147 मील दूर है, और सड़क अच्छी होने के कारण, मैं अपनी स्टडबेकर कार से लगभग चार घंटे में, शाम लगभग चार बजे वहाँ पहुँच गया।

मुझे जरा भी अंदाजा नहीं था कि आगे कितना रोमांचक समय आने वाला है। मैं राजनगर से सिर्फ दो मील दूर था और सूखे झाड़ीदार इलाके से होते हुए सड़क पर गाड़ी चला रहा था, तभी मैंने अपने सामने तीन आदमियों को देखा, जिनमें से एक को बाकी दो सहारा दे रहे थे। जैसे ही मैं उनके पास पहुंचा, मैंने देखा कि बीच वाला आदमी खून से लथपथ था। कारण जानने के लिए रुकने पर मुझे पता चला कि कुछ ही मिनट पहले उस पर एक अनजान बाघ ने हमला किया था और उसे बुरी तरह खरोंच दिया था। और पूछताछ करने पर पता चला कि बाघ ने छुपकर उस पर हमला किया था। पीड़ित ने बताया कि इससे पहले कि उसे पता चलता कि वह खतरे में है, उसने एक धीमी सी गुर्राहट सुनी; फिर बाघ उसके बगल में प्रकट हुआ, अपने

पिछले पैरों पर खड़ा हुआ और उसके चेहरे और छाती पर बुरी तरह खरोंच दिया। वह बाघ के ऊपर गिर पड़ा और मदद के लिए चिल्लाया। फिर बाघ उसे छोड़कर आसपास घूम रहे मवेशियों की ओर दौड़ पड़ा। जब वह खून से लथपथ जमीन पर पड़ा था, तब उसने देखा कि बाघ ने एक अधेड़ भूरे बैल को मार डाला और फिर उसे घसीटकर ले गया। चूंकि कोई उसकी सहायता के लिए नहीं आया, इसलिए वह किसी तरह उठ खड़ा हुआ और मदद के लिए चिल्लाते हुए सड़क की ओर लड़खड़ाता हुआ बढ़ा। उसके दोनों साथी थोड़ी देर बाद उसके पास आ पहुंचे।

मैंने इस अवसर को ईश्वर का वरदान समझा और तुरंत कार्रवाई करने का निर्णय लिया। मैंने उससे अपने साथियों को हमले की सही जगह बताने को कहा। उसने मुझे जगह बता दी, और फिर मैंने एक व्यक्ति को अपने साथ घटनास्थल पर चलने के लिए कहा, जबकि दूसरा पीड़ित को लेकर राजनगर चला गया।

अब उन दोनों के बीच तीखी बहस छिड़ गई, दोनों ने गांव में ज़रूरी काम होने का बहाना बनाया। यह साफ़ था कि दोनों में से कोई भी बाघ से सामना करने का जोखिम नहीं उठाना चाहता था। इसके लिए मैं उन्हें दोष नहीं दे सकता था, क्योंकि बाघ अपनी क्रूरता पहले ही दिखा चुका था, जबकि मैं उनके लिए बिल्कुल अजनबी था। उन्हें इस बात की कोई गारंटी नहीं थी कि बाघ के आने पर मैं भाग नहीं जाऊंगा और अपने साथी को उसके चंगुल में नहीं छोड़ दूंगा।

बहुत मिन्नतें करने, दबाव डालने और यहां तक कि धमकियों के बाद, आखिरकार मैंने एक आदमी को बहुत अनिच्छा से मेरे साथ आने के लिए राजी कर लिया, जबकि दूसरा घायल आदमी के साथ आगे बढ़ गया।

फिर मैं और मेरा साथी सड़क छोड़कर जंगल में चले गए। पूरे रास्ते हमें हाल ही में घायल हुए उस आदमी के खून के छींटे दिखाई दिए। चट्टानी इलाके को पार करते समय ये छींटे बहुत अधिक थे, जिससे मुझे एहसास हुआ कि मेरी जल्दबाजी में हुई बातचीत के दौरान मैंने जितना सोचा था, उससे कहीं अधिक गंभीर रूप से वह घायल हुआ था। मुझे लगने लगा कि मुझे उसे अपनी कार में सत्यमंगलम ले जाना चाहिए था, जहाँ अस्पताल था, बजाय इसके कि उस बेचारे को जैसे-तैसे वहाँ पहुँचने के लिए छोड़ दूं। हालाँकि, मेरी इस लापरवाही के बावजूद, मेरे पास उस बाघ से आमने-सामने मिलने और हिसाब बराबर करने का एक अनूठा अवसर था।

थोड़ी देर बाद हम उस जगह पर पहुँचे जहाँ बाघ ने उस आदमी पर हमला किया था। पगडंडी पर पड़ी रेत खुद ही कहानी बयां कर रही थी। हम उस जगह को खोजने लगे जहाँ बाघ ने भूरे बैल को मारा था, और जल्द ही हमें वह जगह लगभग तीस गज दूर मिल गई। मेरा साथी अब आगे जाने से मना कर रहा था, और मैं भी उसे आगे जाने देना नहीं चाहता था, क्योंकि वह स्वाभाविक रूप से बहुत डरा हुआ था और आगे जाना उसके लिए मददगार से कहीं ज्यादा बोझ साबित होता।

इसलिए मैंने उसे घबराकर वहीं खड़ा छोड़ दिया और बाघ द्वारा बनाए गए घसीटने के निशान का पीछा करना शुरू कर दिया, क्योंकि वह भूरे बैल को घसीटते हुए उस खाई की ओर ले जा रहा था जो उस छोटी पहाड़ी और एक चौथाई मील दूर स्थित एक अन्य, कहीं अधिक ऊँची पहाड़ी के बीच में थी, जिस पर मैं रेंग रहा था।

दुर्भाग्य से, मैंने इतनी जल्दी कार्रवाई की उम्मीद नहीं की थी, और शिकार के लिए मैं जिन रबर के तले वाले बूटों को पसंद करता था, उनके बजाय मैंने साधारण चमड़े के जूते पहने हुए थे। लाख कोशिश करने के बावजूद, ये जूते कठोर ज़मीन और बिखरे हुए पथरीले पत्थरों पर आवाज़ कर रहे थे। फिर भी, मैं जितना हो सके चुपचाप चलता रहा, जब तक कि मैं नाले के पास नहीं पहुँच गया। फिर मैं रुका और चारों ओर देखा। यहाँ झाड़ियाँ बहुत घनी थीं, और जहाँ नाला वास्तव में घुमावदार था, वहाँ और भी घनी हो गई थीं। मेरी नज़र सामने वाली छोटी पहाड़ी की ढलानों पर पड़ी, जो काफ़ी खुली हुई थीं। बाघ या बैल का कोई निशान दिखाई नहीं दिया, और यह स्पष्ट था कि उसने उसे नाले में कहीं छिपा रखा होगा, और संभवतः इस समय उसे खा रहा होगा। अगर वह वास्तव में उसे नहीं खा रहा था, तो वह निश्चित रूप से आसपास कहीं लेटा होगा।

मेरे जूतों ने मुझे बहुत नुकसान पहुंचाया था और वे उस नाले की ओर मेरी प्रगति में बाधक साबित हो सकते थे। अगर मैं उन्हें उतारकर मोजे पहने हुए आगे बढ़ने की कोशिश करता, तो लगभग निश्चित रूप से किसी कांटे पर पैर पड़ जाता, और चारों ओर बिखरे नुकीले पत्थरों की तो बात ही छोड़िए। उसी समय, मुझे एहसास हुआ कि यह अवसर इतना अच्छा था कि इसे गंवाना नहीं चाहिए था, और इसे हर हाल में भुनाना चाहिए था। यह हज़ारों में एक मौका था, जो शायद मुझे दोबारा कभी न मिले। शाम के ठीक 5 बज रहे थे और सूर्यास्त में डेढ़ घंटा बाकी था।

जब मैं हालात पर विचार कर रहा था, तभी बाघ ने पहला वार किया। उसने मुझे साफ़-साफ़ सुन लिया था; शायद उसने मुझे देख भी लिया था। खैर, एक महान सेनापति की तरह उसने बगल से हमला करने का फैसला किया। मुझे ज़रा भी शक नहीं हुआ, वह उसी ढलान पर चढ़ गया था जहाँ से मैं नीचे आ रहा था, लेकिन थोड़े अलग कोण से, जिससे वह उस जगह के ऊपर और पीछे आ गया जहाँ मैं सोच रहा था। फिर वह पेट के बल रेंगता हुआ मेरी तरफ आया और मुझसे मुश्किल से दस फीट दूर एक बड़ी झाड़ी के पीछे छिप गया, और मुझे इसका बिल्कुल भी पता नहीं चला। इस मामले में, आने वाले खतरे को भांपने की मेरी छठी इंद्री बिल्कुल नाकाम रही। मैंने नाले की तरफ बढ़ने का फैसला ही किया था कि मेरे पीछे एक ज़ोरदार दहाड़ सुनाई दी और बाघ उछल पड़ा; मैं घूमा और एकदम करीब से गोली चलाई, लेकिन निशाना चूक गया।

शायद धमाके की आवाज़, शायद किसी ऐसे व्यक्ति से मिलने की अजीब स्थिति जो स्पष्ट रूप से चरवाहा नहीं था, या शायद मेरे पहने हुए चमकीले लाल और नीले रंग के चेक वाले कोट ने उसे डरा दिया। क्योंकि ज़ोर-ज़ोर से भौंकते हुए वह झाड़ियों में और नाले की ओर भागा। मैं भी जितनी तेज़ी से हो सकता था

उसके पीछे भागा और नाले के तल पर पहुँच गया, जहाँ मैं लगभग भूरे बैल पर गिर पड़ा। जाँच से पता चला कि बाघ ने मेरे आने की आहट या आभास होने से पहले ही अपना भोजन शुरू कर दिया था और हमले के लिए खुद ही आगे बढ़ गया था।

आस-पास कोई पेड़ नहीं थे, इसलिए मैं घनी झाड़ी के नीचे अंधेरा होने तक बैठा रहा, इस उम्मीद में कि शायद बाघ दोबारा दिखाई दे। लेकिन ऐसा नहीं हुआ, और 6:15 बजे मैं सावधानी से उसी रास्ते से वापस लौट आया। उस जगह पहुँचकर जहाँ मैंने अपने साथ आए चरवाहे को छोड़ा था, मैंने उसे वहाँ नहीं पाया और यह निष्कर्ष निकाला कि वह घर चला गया होगा। इसलिए मैं उस सड़क पर चला गया जहाँ मेरी स्टुडेबेकर कार खड़ी थी, और थोड़ी देर बाद राजनगर पहुँच गया।

यहां काफी भीड़ जमा थी, और उनमें से एक वन रक्षक से मुझे पता चला कि घायल चरवाहा अपनी पत्नी और भाई के साथ सत्यमंगलम अस्पताल के लिए रवाना हो चुका था। मेरे साथ आया चरवाहा, जिसे मैंने बाघ के हमले वाली जगह पर छोड़कर अकेले ही घसीटने के निशान का पीछा किया था, वापस नहीं लौटा था।

मुझे पता था कि वह उस जगह पर नहीं था जहाँ मैंने उसे छोड़ा था, और यह भी कि मेरे जाने के बाद बाघ भाग गया था। चरवाहा कहाँ चला गया? हम सभी समझ गए थे कि वह जंगल में या सड़क पर, उस बाघ के आतंक से घिरे इलाके में नहीं रुकेगा। उसका क्या हुआ होगा? मैं इस सवाल पर सोच रहा था, जबकि उसकी पत्नी और परिवार, जो भीड़ में मौजूद थे और मेरी बातें सुन चुके थे, रोने-बिलखने लगे।

अब काफी अंधेरा हो चुका था, और लापता आदमी को खोजना नामुमकिन था, क्योंकि अगर बाघ उसे ले गया होता तो उसके कोई निशान नहीं मिलते। फिर भी, मैंने वन रक्षक को अपने साथ चलने के लिए कहा और वापस उसी जगह पर गाड़ी चलाकर गया जहाँ मैंने पहले गाड़ी छोड़ी थी। वहाँ हम थोड़ी देर रुके और मैंने वन रक्षक को उस आदमी को नाम से पुकारने का निर्देश दिया। इससे कोई नतीजा नहीं निकला। हम सड़क पर एक मील और आगे गए और फिर गाँव लौट आए। अब मुझे यह स्पष्ट हो गया था कि पिछली शाम का मेरा साथी बाघ ले गया था। जाहिर है, जब मैं एक घंटा नाले में बैठकर बाघ के भूरे बैल के शव के पास लौटने का इंतजार कर रहा था, तब बाघ ने खुद ही कुछ शिकार किया और उस बेचारे चरवाहे को उठा ले गया।

उस रात हमें ज़्यादा नींद नहीं आई, क्योंकि जंगल में बने धर्मशाला के दरवाज़े पर बैठे उस आदमी के परिवार के रोने-धोने की आवाज़ें लगातार सुनाई दे रही थीं। आँसुओं से भरी उनकी आवाज़ों ने मुझे याद दिलाया कि मैं उसकी मौत के लिए ज़िम्मेदार था। यह बात मेरे अंतरात्मा पर बहुत गहरा असर डाल रही थी, क्योंकि अगर मैंने उस बेचारे को ज़बरदस्ती अपने साथ न लाया होता, तो वह आज ज़िंदा होता।

भोर होते ही मैं उस जगह की ओर वापस चल पड़ा जहाँ मैंने उसे छोड़ा था। वहाँ पहुँचकर मैंने संघर्ष के किसी भी निशान या बाघ के हमले के अन्य निशानों की तलाश शुरू की। लेकिन ज़मीन पर कुछ भी दिखाई नहीं दिया।

अपनी खोज के दौरान मैं चारों ओर बड़े-बड़े घेरे बनाता चला गया, लेकिन फिर भी कुछ नहीं मिला। उसका क्या हुआ, यह एक रहस्य था। मुझे पता था कि पिछली शाम जब मैं बाघ का पीछा कर रहा था, तब वह मेरे पीछे नहीं आया था। ज़्यादा संभावना यही थी कि अकेले खड़े रहने के डर से वह सड़क की ओर वापस चलने लगा हो। इसी अनुमान पर चलते हुए, मैं अब पीछे मुड़ा और धीरे-धीरे अपने कदमों के निशान पर चलने लगा, चारों ओर उसके किसी निशान की तलाश करने लगा।

जहां मैंने उसे छोड़ा था, उससे लगभग तीन सौ गज दूर मुझे पहला सबूत मिला - एक अजीब चमड़े की चप्पल, और उससे थोड़ी ही दूर पर उसकी दूसरी चप्पल। इस जगह पर सूखी घास फैली हुई थी, इसलिए कोई पदचिह्न दिखाई नहीं दे रहे थे। लेकिन चप्पलों की स्थिति से मुझे स्पष्ट हो गया कि उसने उन्हें उतार फेंका था, जाहिर तौर पर तेजी से भागने के लिए। चलते हुए चारों ओर खोजते हुए, मैंने अपने बाईं ओर एक झाड़ी के नीचे हवा में कुछ सफेद फड़फड़ाते हुए देखा। यह उस आदमी की धोती थी, जिसे भारत में लंगोटी कहते हैं। घास पर और झाड़ियों पर खून के छोटे-छोटे छींटे थे, और करीब से देखने पर पता चला कि बाघ झाड़ियों के बीच से होकर अपने शिकार तक कैसे पहुंचा था। यहां से बाघ उस आदमी को सड़क के लगभग समानांतर उसी नाले की ओर घसीटता हुआ ले गया, जहां मैं पिछली शाम बैठा था, लेकिन उस जगह से काफी आगे जहां उसने भूरे बैल को छिपाया था।

लगभग एक चौथाई मील चलने के बाद मैं अंततः इस छोटी नदी के पथरीले तल पर पहुँचा। वहाँ कुछ भी दिखाई नहीं दे रहा था और पूरी तरह सन्नाटा था। मुझे पता था कि बाघ ने अवशेष कहीं आस-पास ही छिपाए होंगे।

चुपचाप देखते हुए, लगभग सौ गज नीचे की ओर एक जगह से दो मैनाओं ने मेरा ध्यान आकर्षित किया। वे एक कंटीले बबूल के पेड़ की चोटी पर बैठी थीं, जहाँ वे उत्साह से चहचहा रही थीं और बार-बार नीचे की ओर देख रही थीं। जंगल के संकेत उन लोगों के लिए बहुत स्पष्ट होते हैं जो उन्हें समझ सकते हैं। मैनाओं ने या तो शव को ढूंढ लिया था, या वे बाघ को देख रही थीं, जो शायद मुझे देख रहा था।

नाले के बीचोंबीच चलते हुए, मैं दबे पांव आगे बढ़ने लगा, इस बार मैंने जो रबर के जूते पहने थे, उनसे चट्टानों पर कोई आवाज़ नहीं आ रही थी। बबूल के पेड़ तक आधे रास्ते में ही, मैनाओं ने मुझे देखा, उनकी चहचहाहट बंद हुई और वे उड़ गईं।

मैंने उस जगह को चिह्नित कर लिया था जहाँ वे बैठे थे, और सावधानी से आगे बढ़ा। बबूल के पेड़ के ठीक नीचे, नदी के किनारे से एक छोटी, लंबी, काली चट्टान निकली हुई थी, और इस चट्टान के पीछे लापता मुनियाप्पा के आधे खाए हुए अवशेष पड़े थे। उस जगह की नरम रेत पर बाघ के पदचिह्न भी दिखाई दिए, और उनकी सरसरी जाँच से पता चला कि वह जानवर एक नर बाघ था, जिसका आकार और बनावट बहुत बड़ी नहीं थी।

एक बार फिर, आस-पास कोई ऐसा पेड़ नहीं था जिस पर मैं बैठ सकूँ, सिवाय उस बबूल के पेड़ के, जो काँटों से भरा होने के कारण बैठने लायक नहीं था। संयोगवश, वहाँ कोई बड़ी झाड़ियाँ या बाँस के झुंड

भी नहीं थे जिनके नीचे मैं शरण ले सकूँ। हर तरह से, वह जगह बैठने के लिए सबसे अनुपयुक्त, बल्कि असंभव ही थी, जितनी मैंने कभी देखी थी। फिर भी, मुझे कुछ तो करना ही था, क्योंकि अब तक मेरे मन में कोई संदेह नहीं रह गया था कि मैं, कम से कम अप्रत्यक्ष रूप से, और संभवतः प्रत्यक्ष रूप से, बेचारे मुनियाप्पा की मृत्यु का कारण था।

मुझे पता था कि बाघ दोपहर से पहले अपने भोजन के लिए वापस नहीं आएगा। अगर मैं शव को ऐसे ही छोड़ देता, तो गिद्ध उसे कुछ ही घंटों में देख लेते और सारा मांस नोच लेते। इसलिए मैंने अपना खाकी कोट उतारकर शव पर फैला दिया और आसपास पड़े छोटे-छोटे पत्थरों से उसे थोड़ा दबा दिया। फिर मैं गाड़ी में वापस गया और राजनगर लौट आया।

यहाँ मुझे बुरी खबर देनी पड़ी, जिससे न केवल फिर से रोना-धोना शुरू हो गया, बल्कि शोक संतप्त पत्नी ने अपने पति के शव को तुरंत अंतिम संस्कार के लिए वापस लाने की मांग भी की। उसे मनाने में हमें पूरा एक घंटा लग गया कि वह मुझे उस शाम शव के पास बैठकर बाघ की तस्वीर लेने का मौका दे, जो उसकी मनमानी में पूरी तरह से हाथ से निकल जाता। आखिरकार, उसने बड़ी अनिच्छा से सहमति दी।

नाश्ते के बाद, मैंने एक 'युद्ध परिषद' बुलाई, जिसमें गाँव का पटेल, वन रक्षक और मैं शामिल थे। मैंने उन्हें शव की स्थिति समझाई और बताया कि मैं दोपहर को वापस आऊँगा और बाघ के लौटने का इंतज़ार करते हुए शव के पास बैठ जाऊँगा। उन्हें यह विचार मूर्खतापूर्ण लगा और मैं भी उनसे पूरी तरह सहमत था। लेकिन चूंकि कोई बेहतर सुझाव नहीं दे सका, इसलिए मेरे पास इसे करने के अलावा कोई विकल्प नहीं था, अन्यथा शव को गाँव वापस लाना पड़ता और बाघ पर हमला करने का मौका हाथ से निकल जाता।

दोपहर के कुछ ही समय बाद, मैं शव से कुछ ही गज की दूरी पर बैठा था, जिससे एक बेहद अप्रिय गंध आ रही थी। दरअसल, लाखों मक्खियाँ मेरे कोट पर बैठ चुकी थीं, और जैसे ही मैंने उसे उतारा, वे शव पर टूट पड़ीं।

मैंने अपनी नाक में रुई के छोटे-छोटे टुकड़े लगाकर इस अप्रिय स्थिति के लिए खुद को तैयार कर लिया था; लेकिन इन उपायों के बावजूद वह भयानक दुर्गंध मेरी सुरक्षा को भेदकर मुझ तक पहुंच गई, और कुछ समय बाद मुझे उल्टी जैसा महसूस होने लगा।

गर्मी असहनीय थी। चारों ओर सन्नाटा छाया हुआ था, सिवाय आसपास की झाड़ियों की शाखाओं से आती झींगुरों की चहचहाहट के।

तीन बज गए, फिर चार और फिर पाँच। साढ़े पाँच बजे एक मोर नदी के किनारे आकर बैठ गया। मैं वहाँ बिल्कुल स्थिर बैठा था, उसने मुझे देखा तक नहीं, जिससे यह साबित होता है कि जंगल में बिल्कुल शांत रहना कितना ज़रूरी है। वह नदी के किनारे ऊपर की ओर बढ़ा और जब वह दस फीट दूर था, तभी उसे अपने सामने दो अजीब चीज़ों का एहसास हुआ। वह तेज़ी से और भारी-भरकम तरीके से हवा में उठा, उड़ने से पहले उसने अपने पंखों को ज़ोर से फड़फड़ाया ताकि उसे गति मिल सके।

जैसा कि आप कल्पना कर सकते हैं, उस समय मैं अत्यधिक उत्तेजना और उससे भी अधिक भय की स्थिति में था, और इसके अलावा, आधे खाए हुए आदमी से उठ रही भयानक दुर्गंध के कारण मुझे उल्टी आने वाली थी।

फिर पंद्रह मिनट तक पूर्ण सन्नाटा छाया रहा: एक ऐसा सन्नाटा जो सर्वव्यापी था, जो हमें घेर लेता था, जो हर जगह मौजूद था, यहाँ तक कि हवा में भी। न तो जंगली झींगुर की हल्की सी आवाज़ थी, न ही किसी नन्हे पक्षी की चहचहाहट, और न ही ज़मीन पर गिरते सूखे पत्ते की हल्की सी सरसराहट। बस एक पूर्ण और परम शांति। सन्नाटा ऐसा ही महसूस होता है, जब कोई आदमखोर के प्रकट होने का इंतज़ार कर रहा होता है।

हालांकि मैं बिल्कुल स्थिर बैठा था, मेरी आंखें सामने और दोनों ओर की झाड़ियों को बारीकी से देख रही थीं। मेरी सभी इंद्रियां पूरी तरह से सचेत थीं, लेकिन उन पर न तो कोई दृश्य और न ही कोई ध्वनि दर्ज हो रही थी।

नाले में थोड़ी दूर पर एक जंगली मुर्गे की मधुर बांग ने तनाव को कुछ हद तक कम कर दिया। छह बज गए, फिर छह बजकर पंद्रह मिनट हो गए। एक चिड़िया ने अपनी अनोखी चहचहाहट शुरू कर दी। मैं समझ गया कि अब मुझे जाने का समय आ गया है। थोड़ी देर में पूरी तरह अंधेरा हो जाएगा, और फिर खुले में आदमखोर के सामने बैठे रहना सचमुच आत्महत्या के समान होगा।

मैं लड़खड़ाते हुए उठा और वापस कार की ओर चला, जहाँ मैंने पहले से ही कुछ लोगों को बुलाया था ताकि वे दुर्भाग्यशाली मुनियाप्पा के अवशेष वापस ला सकें। जब मैंने उन्हें इकट्ठा किया तब तक काफी अंधेरा हो चुका था। लेकिन मुझे पता था कि मेरी टॉर्च की रोशनी और उनकी संख्या हमें बाघ के किसी भी हमले से बचा लेगी। हम वापस खाई में गए, जहाँ हमने उस अभागे चरवाहे के अवशेषों को एक पुराने कंबल में लपेटा, जिसे वे लोग इसी उद्देश्य से अपने साथ लाए थे। फिर, जब छोटा जुलूस राजनगर की ओर बढ़ रहा था, मैं अपनी कार से वापस सड़क पर चल पड़ा।

अगले दिन सुबह-सुबह मैं फिर से उस छोटे नाले के पास मंडरा रहा था। बाघ उस जगह पर नहीं लौटा था जहाँ शव था, क्योंकि वहाँ कोई पदचिह्न नहीं थे। तब मैंने उस नाले के किनारे-किनारे उस जगह की ओर चलने का फैसला किया जहाँ दो दिन पहले भूरे बैल को छोड़ा गया था। मैं बहुत सावधानी से चल रहा था, क्योंकि नाले का किनारा कहीं-कहीं छह फुट से भी कम चौड़ा था और कहीं-कहीं पत्थरों का ढेर था या पूरी तरह से लैंटाना झाड़ियों से ढका हुआ था। भूरे बैल को उस जगह से आधे मील से भी ज़्यादा दूर छिपाया गया था जहाँ उस आदमी को खाया गया था। उसे एक झुकी हुई झाड़ी के नीचे अच्छी तरह से छिपाया गया था, जिसके बारे में मुझे पता था कि वह गिद्धों से सुरक्षित है। लेकिन जब मैं वहाँ पहुँचा, तो मैंने पाया कि बाघ रात में लौट आया था और उसे पूरी तरह से नष्ट कर चुका था। शायद उसने अपने शिकार में रुचि खो दी थी या हो सकता है कि उसने मुझे शाम को उसके पास बैठे हुए देखा हो और उसे शक हो गया हो। खैर, बात यह थी कि वहाँ कुछ भी नहीं बचा था और मुझे बाघ से मिलने के लिए दूसरे तरीके आज़माने होंगे।

उस दिन दोपहर तक और फिर शाम को भी मैं पहाड़ियों और घाटियों में, नदियों के किनारे-किनारे घूमता रहा। कई बार मुझे बाघ के पदचिह्न दिखाई दिए, लेकिन मैंने उसे एक बार भी नहीं देखा, न ही आसपास उसकी उपस्थिति का कोई संकेत मिला।

मैंने इस तरह तीन दिन बिताए, लेकिन परिणाम पूरी तरह से नकारात्मक रहे। मैंने केवल एक सप्ताह की छुट्टी ली थी और बाघ का शिकार करने के लिए मेरे पास मुश्किल से चार दिन बचे थे।

अगली सुबह मैंने नई रणनीति अपनाई। इलाके के बीचोंबीच स्थित एक बड़ी पहाड़ी की चोटी पर चढ़कर, मैंने बाघ की तरह पूरी ताकत से आवाज़ लगाई। हर दस मिनट में मैं यही आवाज़ दोहराता रहा, इस उम्मीद में कि कोई जवाब मिलेगा। दो घंटे बाद मैंने पास की एक पहाड़ी पर भी यही किया। कोई आवाज़ नहीं आई। शाम को भी मैंने यही तरीका अपनाया, लेकिन बाघ ने कोई प्रतिक्रिया नहीं दी। तब तक यह स्पष्ट हो चुका था कि वह आस-पास कहीं नहीं था।

पाँचवें दिन चरवाहे अपने मवेशियों के साथ फिर निकले। आप, जो इसे पढ़ रहे हैं, शायद इसे उनकी ओर से एक बहुत ही साहसी कार्य मानें, और निस्संदेह यह था भी। लेकिन आपको यह भी समझना होगा कि मवेशी अपने भोजन के लिए पूरी तरह से चरागाह पर निर्भर थे। चरागाह न होने का मतलब भोजन न होना था, क्योंकि किसी भी मवेशी गाँव में चारे के भंडार की व्यवस्था नहीं की गई थी।

उस सुबह मैं चरवाहों के साथ उनके जानवरों के बीच घूमने लगा, और शाम को भी मैंने यही किया। लेकिन रात हो गई और बाघ का कोई अता-पता नहीं चला। छठी सुबह मैं बहुत निराश था, क्योंकि मुझे लगा कि जिस जानवर की मैं तलाश कर रहा था, वह कहीं दूर चला गया है और मुझे उसे पकड़ने का दूसरा मौका नहीं देगा। लेकिन मैं और कुछ नहीं कर सकता था, सिवाय इसके कि उस इलाके में चर रहे मवेशियों के अलग-अलग झुंडों के साथ मिल जाऊं।

उस सुबह मैंने कई मील की दूरी तय की और मुनियाप्पा की हत्या के स्थान से लगभग आठ मील दूर था, तभी दोपहर के आसपास पुरुषों का एक समूह झाड़ियों से दौड़ता हुआ मेरे पास आया और मुझे बताया कि तीन मील दूर एक अन्य चरवाहे पर हमला हुआ है।

मैं उनके साथ जल्दी से उस जगह पहुँचा जहाँ वह आदमी लेटा हुआ था। मुझे एक बार फिर वही जाने-पहचाने निशान दिखाई दिए: चेहरे, छाती और बगल में गहरे खरोंच के निशान, लेकिन काटने का कोई निशान नहीं था। उस आदमी का बहुत खून बह चुका था और वह चलने में बहुत कमजोर था, इसलिए मैं जल्दी से अपनी कार में वापस गया और आदमियों को उसे सड़क तक ले जाने का निर्देश दिया। वहाँ से मैं उसे सत्यमंगलम ले गया, जहाँ मैंने उसे स्थानीय अस्पताल में बहुत बुरी हालत में छोड़ दिया। फिर मैं वापस सड़क पर उस जगह पर भागा जहाँ उसे ले जाया गया था, कार वहीं छोड़ दी और वापस जंगल में चला गया। उसके पीछे छोड़े गए खून के निशानों का पीछा करने में कोई कठिनाई नहीं हुई, और इसी निशान ने मुझे हमले की जगह तक पहुँचा दिया।

इस मामले में मुझे पता चला कि बाघ मवेशियों में से किसी को भी मारने में सफल नहीं हुआ था, जो भगदड़ मचाते हुए सड़क की ओर भाग गए थे। इसलिए बाघ की तलाश एक बार फिर निष्फल प्रयास प्रतीत हुई। मैं इधर-उधर भटकता रहा और बीच-बीच में बाघ की तरह आवाजें निकालता रहा, इस उम्मीद में कि वह मेरी ओर आकर्षित हो। कोई प्रतिक्रिया नहीं मिली और इस तरह एक और दिन समाप्त हो गया।

उस रात मैंने सोचा कि झाड़ियों से होकर गुजरने वाली लगभग पाँच मील लंबी सड़क पर गाड़ी चलाकर, स्पॉटलाइट का इस्तेमाल करते हुए, बाघ की आँखों को देखने की कोशिश करूँ, अगर वह कहीं आस-पास से गुजरे। मैंने रात लगभग 10 बजे इस योजना पर अमल करना शुरू किया, धीरे-धीरे गाड़ी चलाते हुए, हर चक्कर के अंत में पंद्रह मिनट का ब्रेक लेते हुए। इस नीरस प्रक्रिया के छह घंटे बाद मैं बुरी तरह से नींद में था और पेट्रोल भी बहुत कम बचा था।

इस तरह मेरी छुट्टी का सातवां और आखिरी दिन शुरू हुआ। हाल ही में हुए हमले के बाद चरवाहे अपने मवेशियों के साथ बाहर नहीं निकले थे, इसलिए आखिरी बार मैं अकेले झाड़ियों के बीच भटकता रहा, इस उम्मीद में कि शायद मुझे वह मायावी बाघ मिल जाए। दोपहर तक मैं अपनी कार से लगभग छह मील दूर था, तभी मैं मुड़ा और वापस लौटने लगा।

मैं पहाड़ी से नीचे उतर रहा था और उसके तल पर बने छोटे गड्ढे तक पहुँच ही गया था कि मेरे सामने एक और पहाड़ी खड़ी हो गई। इस घाटी में कोई धारा नहीं बहती थी, और यहाँ कुछ बौने बबूल के पेड़ थे, जो आम लैंटाना और अन्य झाड़ियों के बीच उग रहे थे। लगभग पचास गज आगे, बाघ अचानक प्रकट हुआ। हम दोनों ने एक ही क्षण में एक-दूसरे को देखा, और फिर एक छोटी सी छलांग लगाकर वह लैंटाना के झुंड के पीछे गायब हो गया।

राइफल को कंधे पर उठाकर मैं धीरे-धीरे आगे बढ़ा, इस उम्मीद और आशा के साथ कि वह मुझ पर हमला करेगा और मेरी नज़र में आ जाएगा। उसी समय मैं बुरी तरह डरा हुआ था और मेरा दिल ज़ोर-ज़ोर से धड़क रहा था।

हमला हुआ ही नहीं! मानो उसकी छठी इंद्री ने उसे बता दिया था कि यहाँ कोई पीड़ित नहीं, बल्कि एक ऐसा व्यक्ति है जो जानबूझकर उसे नष्ट करने आया है। वह मेरे झाड़ी के पास पहुँचने से पहले ही भाग गया होगा, क्योंकि वह वहाँ बिल्कुल नहीं था। मैंने उसके चारों ओर घूमकर हर जगह तलाशा, लेकिन वह मुझे फिर कभी नहीं मिला।

इस प्रकार मेरा सातवां और अंतिम दिन समाप्त हुआ। अब मेरे लिए बैंगलोर और अपने कर्तव्य पर लौटने का समय आ गया था।

हालांकि यह एक असफल शिकार की कहानी है—वास्तव में, पूरी तरह से नाकामयाबी की कहानी —मैंने इसे इसलिए बताया है ताकि पाठक यह समझ सकें कि ऐसे रोमांच हमेशा सफलता से परिपूर्ण नहीं होते। नाकामयाबी और निराशा कहीं अधिक आम हैं। लेकिन कड़ी मेहनत, अथक प्रयास, शिकार का रोमांच, मानवीय बुद्धि और पशु प्रवृत्ति के बीच संघर्ष—ये सभी कारक मौजूद हैं, और काफी हद तक

उत्साही व्यक्ति को उसकी नाकामयाबी की भरपाई करते हैं। हालांकि मुझे वास्तव में दुख हुआ कि मुझे चरवाहों को, कम से कम कुछ समय के लिए, इस जानवर के लगातार हमलों के भरोसे छोड़ना पड़ा, फिर भी मुझे इस बात का संतोष था कि मैंने अपना सर्वश्रेष्ठ प्रयास किया और मैं वापस लौटने की उम्मीद कर रहा था, जब शायद मुझे बेहतर किस्मत मिले।

मैंने मुनियाप्पा की विधवा को चेक सौंपा और बैंगलोर लौटने की अपनी यात्रा के शुरुआती बिंदु पर उस पांच मील लंबे रास्ते पर चल पड़ा। जैसे ही कांटेदार झाड़ियाँ कार के पीछे से गुज़रती गईं, मैंने उस बेहद चालाक और असाधारण बाघ को अस्थायी विदाई दी, जिसने न केवल हर मुठभेड़ में मुझे मात दी थी, बल्कि अपने शिकारों को काटने के बजाय केवल खरोंचने की अपनी विचित्र आदत का कारण भी सफलतापूर्वक छिपा रखा था—सिवाय उन लोगों के जिन्हें उसने वास्तव में मार डाला था।

***** समाप्त *****

sjeet